श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविठ्ठलेशो जय
यदंघ्रिकंजविलसत्सत्त्वं प्राप्य येनमः
तु वितुलमहं वंदे श्रीवल्लभतनूद्भव
॥१॥

॥श्रीगणेशाय नमः श्रीविठ्ठलेशो जयति
यदंघ्रिकंजविलसत्सान्निध्यं प्राप्य येनमः
तं वितुलमहं वंदे श्रीवल्लभतनूद्भवं ॥१॥
यंनामनावमारुह्य भवाब्धिमतरन्निजाः
तस्याहं संप्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शत
छंदोऽनुष्टुप् ऋषिः कर्ता देवो गोपीजनप्रि
यः कामात्तो बीजमेकांतनिष्ठो गोपालन
न्दनः २ शक्तिः श्रीराधिकाकांतनील
मेघातिसुंदरः सर्वेष्टफलसिध्यर्थे वि
नियोगः प्रकाशितः ४ श्रीवल्लभसुतः श्री
मान् श्रीकृष्णप्रेमपूरकमहालक्ष्मीगर्भ
पयःसिंधुतारागणाधिपः ५ श्रीमद्गोव
र्द्धनाधीशदर्शनात्साग्रकातरः श्रीवल्ल°
करांभोजलालितश्रीमुखांबुजः ६ व्रज
वासीजनानंददायकः सकलाघहृत्पुं
डरीकविशालाक्षो लक्ष्मणपकेलालनः ७॥
जगदार्त्तिहरी दीनपालकः करुणानि
धिः पूजितावनिगीर्वाणपादुकस्तत्स्तु
तिप्रदः ८ श्रीलक्ष्मणनटोच्छिरस्मातः

कुलदीपकः गिरिधारिमुखांभोजमनस्कोवि
तुलेश्वरः गोकलेशपदांभोजमाध्वीको
न्मत्तैः षट्पदः विशदीकृततद्भक्तिस्तन्नामा
मृतपानकृत् १० कुंडलाकौतगह्नश्रीस्व
ङ्कन्स्थापिताकृतिः तत्पादविलसल्लंकसौं
द्रीकृतहृदंबुजः ११ विद्वज्जनोधमानेक
लौलीविदांतपारगः नवभक्तिप्रचारैककर्त्ता
वल्लभकारकः १२ अस्वधर्मनिराकर्त्तास्व
धर्मप्रतिपालकः मायावामनःपुजनिराक
रणभास्करः १३ सर्वेष्टसिद्धिदातास्वकमनी
यकलेवरः सर्वविद्याप्रविणश्च सर्वसंसार
दुखदा १४ अतिगोनीरतात्पर्योनवनीत
प्रियःप्रियश्रीमद्वृन्दावनाशक्तस्त्रछितप्रा
णिकामदः १५ सोमयागप्रतिष्ठातासोम
वंशोद्भवाश्रयः प्रचंडदास्ययुक्तात्मापवि
त्रीकृमानवः १६ पंचास्यःसुखसेव्यश्चसु
खराशिप्रपंचकृत कालिंदीपुलिनावि
श्चितःपतितपावनः १७ व्रजनाथ्यव्रज्ञ
कल्पैकतश्रीगोकुलालयः श्रीकृष्णोग
समये गोनमानतुजड्य १८ जिताखिला
जगस्त्रोद्यपंडितःश्रीकरान्वयःसमानश्री
लदर्सितःपतितोद्धारकारकः १९ गुंजा
वलिलसद्धौ गोविनाणोसहोदरः स्वल्प
पलज्जितानेगयशाशालिश्रुद्धगौकः २०
सेवार्थविवृतेःकर्त्तासेवासमतत्परःत्रि
षविख्यातकीर्त्तिश्च विश्वधर्मप्रदर्शकः २१

तुच्छीकृतचतुर्वर्गोऽखतुमार्गविशारदः श्रीभाग
वततत्वार्थज्ञातातज्ज्ञानपोषकः २२ पुष्टिमा
र्गैकधर्मादिप्रकाशनपरायणः श्रीवतारठ
ग्रंथकर्त्ता नामातिकृतनूतनः २३ जगज्जः
द्गुरुः पूज्यो भक्ताङ्घ्रिसरोरुहः श्रीकणी
कजनयनस्वपांगादत्तसेवकः २४ श्रीवि
तमहिमाज्ञानकर्मनागोचिरित्क्रदः प्रतिष्ठ
ष्ठाश्रीवद्धवानलः कल्याणकारणः २५ प्र
स्थापितव्रजवादैकपदः परमसुंदरः ति
स्तारितनिजशृंगारस्पदकांतिचतुरो विभुः
२६ श्रीरुक्मिणीपतिः श्रीदः कुलिनस्य वं
वल्लभः पद्मावतिप्राणनाथः सर्वलोकैक
मंडने २७ श्रीमत्पुराणपुरुषः प्राणसंतोष
कारकः तुविप्रसिंह गोपीशः तत्पादासक्त
मानसः २८ लौकिकालौकिकार्थोद्दाता
कालात्मवल्लवित् संसारसागरमग्नजी
वोद्धृतिक्षमः २९ वृन्दावनमयः पूर्णः
कालिंदीवल्लभः प्रियः व्रजप्रियो व्रजास
क्तो हरिवक्त्राब्जसंलग्नः ३० श्रीमद्वाचार्य
तिपादाम्भोजयुग्मावलंबनः सर्वस्वयं
निवेतान्वगवर्ष्मेवस्फुटः ३१ के श्रुति
स्मृतिपुराणेतिहासवेत्ता व्रतपवादन्यथा
मतिहिमेकाचरविताताममालिका ३२ श्री
विट्ठलेशकुलनाममालिकायेपठंति जगति
तेजनाः प्राप्नुवंति रतिकुंजमंदये ३३ हृ
द्ध्येयेधायेतेयेतनामकौस्क मनूषणे मत्

: कल्पतुल्यात्माहृदयते सर्वे नूतले २४
तन्मजन्मसु गोपालोपासनयुक्तपुरा
ज्ञाकौस्तुभसारस्य ज्ञाते तत्त्वाधिकार
ण २५ नमो वल्लभका के चित् केचित्
क्या वल्लभकाः वयंतु विठ्ठलेशस्य दास
दास्या वल्लभकाः २६ इति श्रीरघुनाथ
जीविचितनामकौस्तुभनाम स्तोत्रसंपू
र्णं संवत् १९३० के मिती को ससुदी १४

कृष्णायनमः॥श्रीगोपीजनवल्लभायनमः॥अथश्री
हरिरायजीकृतसिक्षापत्रताकीटीकाश्रीगोपेश्वरजीलि
खतेहैं॥एकसमयश्रीहरिरायजीपरदेसपधारेहुते
औरश्रीगोपेश्वरजीघरसेवामेंहुतेश्रीहरिरायजीवडेभा
श्रीगोपेश्वरजीछोटेभाईसोश्रीगोपेश्वरजीकीवह
वोहोतअनुकूलसेवामेंतत्परभगवद्भावसंवलि
तसोश्रीवडजीलीलाविस्तारे।तवश्रीगोपेश्वरजी
सेवासंवंधार्थवहुतहीविरहभयो।सोदिनतीन
तोभोजननाहीकीयो।सोश्रीवडजीकेलीलाविस्ता
हरिरायजीमहीनाछेपहलेजानी
विचारेजोश्रीगोपेश्वरजी
विप्रयोगकरिवोहोतदुखपावेंगे।तातेंकछुसिक्षाके
पत्रपहलेतेपठाएचहिये।श्रीआचार्यजीमहाप्र
भुनकीकृपातेंजोकोईसिक्षापत्रवाचेगो।ताकेस
कलदुःखनिवर्तहोयगो।हृदयमेंभगवद्भावहोइ
गो।यहविचारसगरोसास्त्रपुराणश्रीभागवत
सर्वकोसिद्धांतसंयुक्तसिक्षापत्रलिखकेएकपत्रनि
त्यश्रीहरिरायजीअपनेमनुष्यहाथश्रीगोपेश्वर
जीकोपठावते।सोश्रीगोपेश्वरजीअपनीबेठकमें
एकगवाखमेंधरिराखते।वाचतेनाहीजानतेजो
भाईश्रीसनेहमसूपरवोहोतहे।सोसिक्षाकरतहे
सोहमतोभगवत्सेवाकरतहें।औरकछुजानत
नाहीं।यहविचारिकेंएकगवाखमेंधरिराखते
ऐसेकरतसिक्षापत्र४१पठाए।सोसवश्रीगो
पेश्वरजीधरिराखते वाचतेनाही।तवश्रीहरिरा
यजीअपनेमनुष्यनसोपूछेजोभाईश्रीगोपेश्वरजी
पत्रवाचतहें।तवमनुष्यननेंविनतीकरीजोम
हा॰।हमआयपत्रेंतोएकगवाखमेंधरिदेतहें।
व॰ [illegible] नाहीवृसत्तनपत्रलिखिकेहमदोविराज

२

रनहे पाछेंश्राषु वाचतहोय ताकीठीकनाही हमारे
गेतो वाचतनाहीतवश्रीहरिराइजीविचारेजोनाहीव
वेकहे ४२ एकताकोलिखपठायो सोईवहुतहे एकप
त्रवाचेगेतोसकलदुखनिवर्तहोइगो पाछेंश्रीहरि
राइजीपत्रनाहीलिखे पाछेंबहुतदिनमेंश्रीगोपेश्वर
जीकीवहुतीलीलाविस्तार सोश्रीगोपेश्वरजीकोव
हुतहीदुखभयो तीनदिनलोभोजननाहीकीये
सगरेमिलिकेंसमुझायहारेकाहूकीमानीनाहीकहे
यावस्त्रकेलेमेंसोसेवानहोइगी घरछोडिकेंवाहूवनमें
जाऊगो पाछेंएकसेवकहरिजीवनदाससोश्रीहरि
राइजीकोकृपापात्र श्रीगोपेश्वरजीहूहरिजीवनदास
परवहुतकृपाकरते सोउहवेंवश्रीगोपेश्वरजीकेंपा
सन्नायवहुतसमझायकेविनतीकरी सोश्रीगोपे
श्वरजीनेएकहूनमानी तवहरिजीवनदासनेंकही
यासमयश्रीहरिराइजीघरहोतेतोसमझावते औ
रकेवसकीवाततनाहीहे पाछेंहरिजीवनदासने
श्रीगोपेश्वरजीसोंपूछी जोकोइपत्रश्रीहरिराइजी
केंआयोहे तवश्रीगोपेश्वरजीनेंकहीजोआगेंतो
वहुतआवतेगवाखमेंधरेहेंअवदसपांचदिनतेतोआव
तेनाही तवहरिजीवनदासनेगवाखमेंतेपत्र ४२ निक
रिकेंश्रीगोपेश्वरजीकेआगेंधरे औरविनतीकीनी
जोमहाराजएकपत्रवाचियेतोसही तवश्रीगोपेश्वर
जीनेंएकपत्रअपनेश्रीहस्तमेंलीयो सोभगवदइछा
तेप्रथमपत्रहस्तमेंआयो तवश्रीगोपेश्वरजीउहपत्र
वाचतहीसगरोदुखदूरिहोइगो भगवदभावहृदय
मेंवढ्यो तवश्रीगोपेश्वरजीउठिकेंहरिजीवनदासवै
सवकोंअपनेहृदयसोंलगाइकेंकहेवैसवतुम्आ
येतोहमयहश्रीहरिराइजीकेपत्रवाचेनाक ... ो
सगरोदुखगयो पाछेंश्रीगोपेश्वरजीसिद्धांप ... ह

सोसववांचे।पाछैंश्रीगोपेश्वरजीनेंहरिजीवनदास
जीयहसिलापत्रकीटीकामेंकरूं।जीनूंनित्य
मेहराज।

श्वरजीप्रसन्नहोइकेंस्नानकीयो।पाछैंआपुभोजनकी
तो।सगरोपरिवारप्रसन्नभयो।पाछेंहरिजीवनदासको
बैठायपासश्रीगोपेश्वरजीभावमेंमग्नहोया।श्रीआचा
र्यजीश्रीगुसांईजीश्रीहरिरायजीकोस्मरणाकरिनम
स्कारकरिसिलापत्रकीटीकाकरनलागे।प्रथम
सिलापत्रकोश्लोककहतहैं।श्लो।सदाक्लिष्टमनाहू
स्वदर्शनैःक्लिष्टमानसः।लौकिकंवैदिकंचापिकार्यं
कुर्वन्ननाश्रयाः॥१॥याकोअर्थ॥अवश्रीहरिरायजी
सिलाकरतहैंजोलौकिकवैदिककार्यकेआवेसक
रिमनकोउद्वेगकरिकें।तथालौकिकवैदिककार्यके
आवेसकरिकेंश्रीप्रभुकेदर्शनकोजैयें।जोप्रभुतोसदा
आनंदरूपहैं।सोजीवकोसन्मुखआवेसरूपदेखिकें
दासीनहोयजाय।तातेंलौकिकसंसारकेकार्यसि
द्धहोय।अथवाविगरिजाय।परंतुमनमेंआवेसनक
रियें।तैसेंहीवैदिककार्यसिद्धहोवो।अथवाविगार
होय।ताहूवातमेंमनमेंआवेशनाहींकरियें।लौकिकवै
दिकमनमेंतुष्टकरिकेंजानियें।औरप्रभुकीसेवास
वंधीकार्यहैसोसिद्धहोय।तबमनकोप्रसन्नताराखि
ये।जोकदाचितबिगरेसेवानबनेंतोलेसमनमेंरा
खें।जोयहपुष्टिमार्गकीरीतिहै।जैसेंव्रजभक्तश्रीठाकुरजी
कोंगोचारनकोंवनमेंपधारतें।तबविप्रयोगमेंवेणुगी
तयुगलगीतगावतें।पाछेंजबश्रीठाकुरजीसंध्यासम
य...कुंजनकोंसुखदानार्थघरमेंपधारतें।तबव्रजभ

२. आनंदसौं दरसनसेवाकुरते तैसेंही पुष्टिमार्गमेंसेवासम
यसेवासौंन चूकिये अनोसरमेंश्रीठाकुरजीकौ स्वरू
पकै तथा श्रीहस्तके मुखारविंदकौ मनमेंध्यानकरियें
तबसमयसेवाको होय तबअत्यंतआतुरतासोंश्रीस्व
रूपफलात्मकपुरुषोत्तमतिनकौ दर्शनकरियै पाछै लौ
किककार्यवैदिककार्यग्रहस्थाश्रमकोधर्महै तातें लौ
किक अपकीर्तिकेभयतथा वैदिकमर्यादाकेलीयेआ
वश्यकरियै परंतु लौकिकवैदिकमेंमनआसक्तिनराखियै
मनएकश्रीठाकुरहीमेंराखियै तातेंमनमें लौसराखिकै
दर्शनकरियै प्रसन्नतासौंकरिये याप्रथमश्लोकमें
दरसनकौप्रकारकहे सेवाकौनाहीकहे सो यातैं जोस
त्वमेंमहिमाकी सेवा न होय सवकै भावकरि मानसीसेवा
होय यहमर्यादा यैमाहिरमेंछुटजाय अवचौरासिलो
करता है श्लोक ॥ निरुद्धवचताबाक्यमायस्यकुरुतेहर
तूसकसाभावक्यंनित्यं लीलासर्वोत्तमागता ॥ २ ॥
५ आपकेवचनकौ निरोधकरनो बोलनो नाही
आवश्यककार्यथैहोइसोईबोलनौ मुख्यसिद्धांत तो
यहहै जोभगवद्संबंधविनाएकैबाई न बोलनौ
परंतु लौकिकवैदिककार्य ग्रहस्थाश्रममेंवोलेविना
कार्यनचलैतौ आवश्यक होय सोईबोलनौ काहेतेंवा
नीकौनिग्रह होइतौसुखरतासोंयनहोइ औरभगव
द्भावहृदयमेंस्थिरहोइहै बहुतबोलेतें भगवद्भा
वहृदयतैंनिकसिजातहै वानी द्वारा तासीभगवद्धर्म
कीसततगतिहै तातेंजबवानीकौनिरोधहोइ तबम
नकौधर्मयहहै जो अनेकबिकारनभटकतहै सोमनमें
विचारिकैश्रीठाकुरजीकीअपारलीलाअनेकप्रका
रकी है तामेंमनस्थिरकरि लगाइदीजे काहेतेंमनकौ
गमनपवनतें अधिकहै तातें मनकौ कोटि ... पसे

परंतुरोकिबेसोंमनतोरहेनाही।तातेंश्रीठाकुरजी
कीलीलामेंलगाइयेंजन्माष्टमीअन्नकूटहोरीहिंडो
लाआदिरसदिननकेउत्सवतिनकोंअनेकलीलाभा
वकरिकेंपुष्टिमार्गकीरीतिसोंमनलगाइयेंतथानि
त्यलीलाप्रातःकालतेंश्रीठाकुरजीश्रीनंदराइजीकेय
जागतहैंकुंजमेंश्रीस्वामिनीजीकेइहांहूंजागतहैंत
थाखंडितामंगलभोगमंगलाआरतीसिंगारग्वाल
पालनराजभोगउत्थापनभोगसंध्यासैनपर्यंतरितु
अनुसारतथासैनपीछेहूसुखमनहोयमनलागेतो
रासलीलामानादिकनृत्यस्थलविहारइत्यादिक
मनसोंभावनाकरियेतथाश्रीआचार्यजीकेतुल
श्रीगुसांईजीकोस्वरूपकोविचारिश्रीठाकुरजीकोप्र
गायकोंतथायेलीलासामग्रीवागावस्त्रकोभावरू
हाहेंयहमनमेंविचारिकेंभावनाकरियेंक्रमसहि
तेलीलाकोंविचारकरियेंताकरिभगवदावेसहो
इअष्टप्रहरलीलाकोंस्मरणमनमेंराखनोभावन
नात्रयप्रकारहैंएकउत्तमसाकेमध्यमउत्तमप्रकार
पदजोभावकरिगुरुकेपासआपुजायस्नानकरि
मुख्यहोयप्रथमगुरुकीसेवाकरिकेंपाछेंगुरुकेसें
गामहिरिमेंजायतहांगुरुजोआग्याकरेंतथाविन
तीकरिसेवाकरेतोप्रभुकोंश्रमनहोइआरआज्ञानु
रूपप्रभुवेगिहीप्रसन्नहोइयहउत्तमप्रकारजान
आरमध्यमयहजोआपनेहृदयमेंप्रभुकोंपधरावें।तै
प्रभुतोहृदयालहेंपधारेहैं।परंतुप्रभुकोंश्रमहोयहै
पुष्टिमार्गकीरीतिनाहीं।याक्रमसोंसेवाकरें।२।अ
चौरहूसिलावकरतहैंश्लोक॥सेवापिका।पिकीव
निरूपंनैवचिंतनं।देहविक्रमेंनिखिलप्रभुसे
यो[illegible]॥याकोअर्थ॥अबकहतहैंजोसेव

हसों करनो । और काहूसों न
अपने शरीरसों सगरी सेवा न
श्रीठाकुरजीको श्रम होन होइ तो सहाय
ये औरहूसों करावनो । पुष्टिमार्गीय वैष्णव होय
या अपने कुटुंबमें समर्थ नाहि यो टी होय तो सों
रावनो । अवैष्णवसों सेवा सर्वथा नहीं करावनो ।
जहांलों जितनी सेवा अपनी देहसों बनसो करने
या तन सवरि के लौकिकावेसन करनो । अपनी का
में श्रीठाकुरजीकी सेवा करे तो शरीर इंद्रियन सब श्री
ठाकुरजीके सनमुख होइ भगवत्संबंधतें बहु सुख
होइ तातें आवश्य अपने शरीरसों नेमसहित भग
वत्सेवा करनो । यह नेम राखनो जो अपनी सेवा बिन
लौकिककार्य वैदिककार्य खानपान न करनो मन
में विचार करि सो [illegible] मनको समझावनो जो जा
भांति खानपानको नेम है प्रीतिसों तैसी प्रीतिसों
सेवा जो वैष्णवको मुख्य धर्म है यातें मनका स्विकार
नो महद्दासको धर्म है सेवा बिना कैसे रहे और लौ
किक वैदिक कार्य [illegible] तें ठौर मन भटकत है तहां
ते मनको निरोध करिके सेवा करे प्रथम तो मनको
निरोध राखे जो मन लौकिक वैदिक में नायतो भ
गवत्सेवा में उद्वेग होय तब सेवा में न श्रद्धा घटे
य तातें मनको निरोध सेवा में आवश्यक है तापीछे
[illegible]को निरोध करनो सेवा संबंधी कार्य बिना वा
[illegible] नाहीं लौकिक वानी ते मुखतें दोषतें सेवा
[illegible] रूपी रस तिरोधान होत है तातें मि
थ्यावानीको निरोध करे तैसे ही मिथ्याक्रियाको नि
रोध करनो भगवत्सेवाके [illegible] कार्य कछु
[illegible] न करनो जो सेवा संबंधी कार्य [illegible] श्री

दिकें और कार्य करें तो उह कार्य सिद्धि न होइ लौकिक वै
सहोय, याप्रकार स्नवानी क्रियाती नो को लौकिक
वैदिक ने निरोधकरि भगवत्सेवा करें और वैदिक कर्म वह
तहें लौकिक वैदिक सोय हू संसार में रहिके न करें तो सेवा
में अपकी तिहोय सेवा में प्रतिबंध होय तातें लौकिक
वैदिक कार्य हू लोगन के दिखायवे को श्रीठाकुरजी
की सेवा सो पो हो विवेक नो मन आसक्ति विना करें।
या प्रकार प्रभु को अंगीकार वस्त्र सामग्री सब न रिपाछे
अपने अर्थ नो विन वैदिक में उठावें। याप्रकार वे स्व
सेवा करें तो प्रभु अनुभव करावें। अथ अग्यारह कह
तहें श्लोक। यथोपकरणादीनां स्नानतद्धिर्थयत्ना
भार्यादी अनुरागोपि सेवा हेतुक एव हि ॥ या का
अर्थ। अब कहत हैं जो पाकादिक सामग्री की रह
वे और श्रीठाकुरजी की सेवा में सामग्री सिद्धि कर
णार्थ। कारैतें स्त्री भगवत्सेवा में सहाय होय तो
भगवत्सेवा में सहाय होय तो भगवत्सेवा भक्ती भो
तिसो होय यांभांति भगवत्सेवार्थ भार्या जो स्त्री त
हू से अनुराग रखनो। अपने विषयादिक के अर्थ
अनुराग सर्वथा न करनो ताको दृष्टान्त कहत हैं स
हादेवजी की स्त्री सती हुती सो महादेवजी को कह्यो
नाहीं मान्यो श्रीरामचन्द्रजी की परीक्षा लीनी जानी
कीजी को रूप धरि सो बातो महादेवजी ने जानी सो म
हादेव तो भगवद्भक्त भयो सो वासी सम्यय सती को
त्याग ही कीरो पाछे सती दक्ष प्रजापति के जग में अ
पनी देह भस्म कीयो पाछे हेमाचल पर्वत में प्रगटी त
हां अनेक तपस्या कीनी तव महादेवजी को मन सती
पर प्रसन्न न भयो तब श्रीठाकुरजी ने महादेवजी सों कही
जो तुम इतनो मेरो कह्यो करो पार्वती को अंगीकार
महादेवजी पार्वती को ब्याहि के अपने घर ले

ए तब पार्वतीने महादेवजीसों भगवल्लीला पूछी
तब महादेव प्रसन्न भये ताते वे सब होइवे सौं खि
विषयके अर्थ स्त्रीपर प्रसन्न न होय भगवत्सेवार्थ
जानुरागाधारें जा प्रकार भगवत्सेवा भलीभांति सो
होइ सोई करनो याभांति सेवाहेतु लौकिक हू करिये
अब और हू कहत हैं ४ श्लोक ॥ प्रतिकूले यथा त्याग
प्रभुसंबंधि वस्तुनः धनेषु निस्पृहस्यैव पयोगात्वेन रक्ष
णं ॥ याको अर्थ ॥ और जो स्त्री प्रतिकूल होय भगव
त्सेवामें प्रतिबंध करे तो वह स्त्रीको त्याग ही करिये
वा स्त्रीमें अनुराग न करिये ॥ काहेतें प्रभुसंबंधीन
होय ताको त्याग ही कह्यो है काहेतें प्रभुसंबंधि वि
नाजो स्त्री होय सो सर्वथा भगवद्भाव को नाश करे
ताते सिलाधार भगवद्भावमें वाको मन न लागे पुष्टि
मार्गमें श्री आचार्यजी के कुलद्वारा नाम निवेदन होय
मर्याद होय तो श्रीठाकुरजीके पधराइये सेवक होय मर्या
दा होय तो श्रीठाकुरजीको पधराइये सेवक होय मर्या
दा होय तो अपनी सेवा कराइये प्रतिबंध करे तो सी
ही वाको त्याग करिये और धनमें आसक्त न राखे नि
ही कीनाई हैं धनकी रक्षा करनी ही उत्तमोत्तम है सो
रख सुनि लिखा रहे हैं याकालमें जीवको धीरज तो काल
छूटि जात है सो धनकी रक्षा न करे तो धन सब छूटि जाय
पाछे जीवको धीरज नाहे तब धन बेली ऐ बहुत दुःख पा
वे सो न करे धनकी रक्षा आपने सुख अर्थ न करे यह जा
ने जो यह धन प्रभुको है सो प्रभुकी सेवा अर्थ राखे
है जो हृदयमें पूर्ण वैराग्य होय तो धनकी रक्षा न करे
जो वैराग्य दृढ न होय तो भगवत्सेवार्थ जानि राखे
है और भगवत्सेवा अर्थ ही धनको लगावे जो
भगवदर्थ द्रव्य न लगावे लौकिकमें लगावे यो
धनमें आसक्त मनको करिके भगवत्...

हूं वल्लभकुलमैं वैष्णवमैं न लगावें तो दुःखासुरावेस
होय तातें धन करि दितरहैं। धनकी रक्षा करि भगव
त्सेवा गुरुसेवा वैष्णवसेवामें विनियोग करें। या भां
ति विवेक विचार करि ईश्वर रहे तो भगवद्भाव हृ
दयमें बढे। पत्र अवलंब रहे कहत हैं। श्लोक॥ विवहा
दिषु कार्येषु वध्वा सेवार्थमानसः। भगवत्सर्वसंगो
पि स्वप्रमाणप्रेरवात्। या॥ श्लोको॥ अर्थ। ऊपर यह कहे जो
धनको लोभ विवसनेर खर्चे सो विवाहादिक कार्यमें
धन खरचे विना कैसें चलें। तहां कहत हैं जो अपनो वि
वाह तथा पुत्रादिकको विवाह होय तो प्रभुसेवाको
विचार करें जो भगवत्सेवामें जो ए मनुष्य होय तो भ
गवत्सेवा भली भांति सो होय यह विचारिकें जितनें
द्रव्य विवाहादिक कार्यमें लगावनो होय सो श्रीठा
कुरजीकी आज्ञा लेकें उहां द्रव्य खरच करें। या भांति प्र
भुकी आज्ञा पामाणिकें दास भावसों एकें जो किंचित लौकि
कार्य करें और भगवदीयको संग करिये सो कछु लौकि
कवैदिककी चाह ना स्वारथ के तीरेन करिये वे तन्म
मे प्राणप्रेष्ठ जो श्रीठाकुरजी हैं तिनकी वार्ता वर्णार्थ
भगवदीयको संग न होय तो बहिर्मुख होय जाय तातें भग
वदीयको संग आवश्यक ही करनो। निरपेक्ष भावसों अप
नी बडाई प्रतिष्ठा अर्थ भगवद्धर्म कछु न करनो हैन्प
होय आपनो धर्म जो निवारनो। अब चौथो कहत हैं श्लोक
वियोगानुभवं कुर्वन् सेवा नव समर्पनः। मूर्तौ भगवतो हृ
ष्टिभावध्यान तत्स्पर्शने। ७। याको अर्थ। भगवत्सेवामें
संयोगानुभव लीलारसको अनुभव करिये। जो सामग्री
धरियें ताको भाव विचारियें जो वस्त्रादिक धरियें ताको
भाव विचारियें जो वस्त्रादिक धरियें ताको भाव विचा
रियें। तव सेवा सो पोहो चिन्तनो स्मरण करियें तव वियोगा

५ भव करिये जैसे व्रजभक्त वेणुगीत युगलगीत में की
याही भांति विचारिये ॥ अब प्रभु कोनसी कुंज में
कहां कौन भक्तन के संग करत हैं ताको स्म
विकल्प होय जो मैं बडो दुष्ट हों तो म
न नाहीं होत तब यह श्लोक श्रीगुसांईजी
है ताको भाव विचारनो चित्ते न दुष्टो वचसा पि दु
ष्टकायेन दुष्क्रियया वदुष्टः तानेन दुष्टो भागोन्
दुष्टो मम अपराधः कतिधा विचार्य ॥१॥ या भांति दैन्य
करि वियोगानुभव करिये जब सेवा को समय होय
तब वेगि ही स्नान करि अपरस में पुष्टिमार्ग की रीति
सों मंदिर में जायके श्रीठाकुरजी के श्रीमुख को आग
आनंदमय दर्शन करि सकल विरह को दूरि करिये
भावसहित दर्शन करिये जैसे व्रजभक्त नंदरायजी के
घर आयके श्रीठाकुरजी को दर्शन करत हैं ता भाव को
स्मरण करिये तो व्रजभक्तन की कृपा तें या को भा
व दान होय ॥ अब श्लोक कहत हैं ॥ श्लोक ॥ विवीते
रिपुं कार्येषु स्पर्शनत्वेव भावेन सर्वास्तत्रैव तत्क्रिया
भावात्म स्वनुभावस्य भावेन नान्यथा ॥८॥ या श्लोक
स्पर्श को दरशन प्रकाश के है तामें नेत्र इंद्रिय को सुख भ
यो पाछें स्नान करि सेवा में सर्व इंद्रिय को विनियोग
होत है या प्रकार कहत हैं ॥ प्रथम मंगल तें पाछे चि
पाछें श्रीठाकुरजी को स्नान करावे अंगवस्त्र करि रि
तु अनुसार वागा वस्त्र धरावे या भांति सेवा में भग
वत्स्वरूप को परस भाव सों करे जो हृदय में सुख होय तो
व्रजभक्तन की भावना करि भाव विचारे जो आपने घ
र ते व्रजभक्त आभूषण वस्त्र विचित्र नाना ले के श्रीनंद
रायजी के घर प्रातःकाल आय सेवा करत हैं सो न्ह
वावत हैं शृंगारादिक करत हैं सो सुख हृदय में भयो है

प तहांताईराजाकीनाईभयमनमेंराखे।

नोसीतकालनेयतोयपनोहाथ

सर्वोत्मकभ
सेंश्रीठाकुरजीकीसेवाकरेंतोस्वरूपानंदकोअनुभ
होय ॥५॥ अबआगेंकहतहें। श्लोक ॥ हृदयस्यात्प्रसु
ष्ट्याअनन्यविसर्जभवे। स्वमूर्त्यावतिशुद्धायामाविरस्या
नुभवेंहरि ॥ टीका ॥ अर्थ। अबकहतहेंजोभगवत्सेवा
मेंअपनेहृदयकोइंद्रियकोअत्यंतशुद्धराखे लौकि
कविसविसयकीभावनाकरेंजोदिकदेहसंबंधी
कोदुखसुखमनमेंराखें। जोकिवेहिकदुखसुख
हेंसोयहदेहसंबंधीहें। औरभगवत्सेवासंबंधीदु
खसुखहेंसोआत्मसंबंधीजन्मजन्मकोहे। औरश्रीठाकुरजी
कीमूर्तिअतिशुद्धहेंतातेंलौकिकमायाकेगुणप्रभुविषें
कछुनविचारेंप्रभुकोश्रीअंगाक्षरपरसुखोदरादिसर्वअ
गंदरूपानंदहें औरशुद्धमनकरिकेंअनुभवयोग्यहेंका
मक्रोधमदलोभमत्सरनाकरिकेंरहितहें। औरसर्वेदुख
केहनारें परमानंदकेदाताहें। ऐसेंश्रीठाकुरजीकोअ
लौकिकगुणसंयुक्तमनमेंभावनाकरिस्वेहोरनेंअ

॥५॥ अबआगेंकहतहें। सो
साधनसंपतिकारयेत्यखिलोनिजान। शुद्धवि

धायह्रस्थं पश्चात्तो विसमयं । अथ जो
इसंसारमें आसुरीपदार्थ हैं सो दैवीपदार्थ हैं ।
दैवीमें होय प्रकार हैं । एक मर्यादा एक पुष्टि सो तिन
भेद न्यारे न्यारे कहत हैं तीनोंके भेद हृदयमें राख
अशान्तमाइ खसु खन पावे । पुष्टि पदारथ कहत हैं
भगवद्सेवामें जो साधनसंपति हैं । प्रथम अपनी
इजो भगवद्सेवामें लगी है तो दैवी जानिये जो म
वामें आलस होय क छूवे तकोई देस वकेस
नैकरै तो रोगादिक बाधक करै तब जानिये जो आ
दैवी रदेवी मन है यतो आसुरी हीसेवा करत मेंप
अनुभव होय जो मन आसुरी होय तो से
वाकरनमें मन नये नेक लो किंक मे भट वे । ताको स्वरूप
नेको अनुभव न होय । और देह संबंधी स्त्रीपुत्रादि
वस्तु देव भगवद्सेवामें विरोध करें तो आसुरी जानि
नोक मैं ममता जाको रचि होय तो मर्यादा जानिये
याही प्रकार द्रव्य जो भगवद्सेवामें विनियोग होय
तो दैवी जो कर्ममें मर्यादा नहीं है अन्याव उठे सो मर्यादा ले
द्रव्यमें नाय । चोरी जाय हैंडे होय सो आसुरी तातें जो प
दार्थ भगवद्सेवामें विनियोग होय तो दैवी जो कर्म ति
नको अनुरूप जाने जो भगवद्सेवामें विनियोग न हो
ताको अनुरूप जाने या भांति जो प्रभुकी सेवासंबंधी
पदार्थ हैं तिनको हृदयमें धारण करै जो मेरे काम
के हैं तब स्वयं भगवान् वस्तु हृदयमें प्रवेश करि स्वरू
को अनुभव करावें तातें सेवासंबंधी न होय तो पर
त्यागही करिये । भगवद्भावसंबंधी पदार्थ सामग्री
इत्यादिकको भाव हृदयमें राखिके भगवत्सेवा करिये
और इह कहन हैं सो । इत्यादिन्येन मनतष्टति

ष्टेदमलौकिकं स्वयंप्रविश्यभावात्मानुभवेकार्यतत्व
कं ॥ ११ ॥ याको अर्थ ॥ ऊपर कहे ता प्रकार सेवा के और
दैन्यता मन में होय तो श्रीठाकुरजी संतुष्ट न होय ताते न
भगवद्सेवा करि दैन्यता करि श्रीठाकुरजी को संतुष्ट क
रिये तव श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय काहेतें भगवान स्व
द्गुणपूर्ण ईश्वर के ईश्वर हैं ता सवस्तु की अपेक्षा नाहीं
है एक प्रीति दैन्यता प्रसन्न करिवे को उपाय है सो भ
गवदीय गाये है प्रीतम प्रीति हीन पैये जद्यपि रूपगुण
सीलसुघरता इन बातन न रिझैये ॥ १ ॥ सनकुलजन्म
कामसुभनहि पादे दपुराण पढैये गोविंद कहे सनेह
सुवा लौ रसना कहा नचैये ॥ २ ॥ ताते भक्त दैन्यता करि जो
कछु प्रीति सो समर्पै सो प्रभु अंगीकार करें जैसे पत्र नाम
दास छाला समर्पे सो प्रभु अंगीकार कीए तब प्रभु अ
तिक रि दैन्या संतुष्ट होय तव जीव पर कृपा करें तव अ
लौकिक रहे जो नित्य है सेवा योग्यता की सिद्ध करि
या पुहृदय में पधारे भावात्मक प्रभु तव अपने स्वरूप को
अनुभव करावे तव सगरो जैन तीखा मय ही से कह
प्राणीमात्र में दुःख न होय तव पुष्टिमारगीय फल सि
द्ध भयो ॥ १२ ॥ अब और हू कहत हैं श्लोक ॥ एवं विधंप
ल नित्यं चिंतयन् चेतसा सदा कुर्यात्पादरं कृष्ण
स्यावाप्यासेव सर्वथा ॥ १२ ॥ याको अर्थ ॥ ऐसें पुरुषोत्त
म परमात्म कृतिन को चिंतन चित में सदा सर्व काल
में कीयो करे तो काहू अन्य संबंध न होय जो नित्
न करे तो अन्यसंबंध होयतो ताकरि आसुरी
बुद्धि जाय ताते ऊपर कहे ताही प्रकार दैन्य
आतुरता संयुक्त चिंतन करे और भ
गवद सेवा करें लौकिक में दिख
साय सेवा न करें पुष्टिमारगीय

प. वैस्नवकौ मुख्य धर्म यही है दासभावसों फलरूपसेवापर
जानि सेवा करै अति आदरपूर्वक सदा यहू न विचारे जे
यमुनाजी सेवा करीतो कार्त्तिक करूंगो तितनेम करूं
अपनी देहको अनित्य जानि देह द्रीके सुख सब छो
डिकै भावदसेवा करै यह सबको परसिद्धांत है १२ अब
और हू कहत हैं श्लो० सात्तात्परोत्तरूपत्वात्सेवा पूर्व
वित्तहर्षणा यथागायत्र्यत्तत्र भावः संवलितो मन
१ श्री या ... सात्तात और परोत्त दोऊ समयके स्व
रूप संवलित भाव होय सेवा करै प्रथम सेवा समय सा
त्तात स्वरूपकी सेवा करि संयोगरसको अनुभव करै अ
नोसरमें पर... कुंजकी लीला विचारि विचारि विये
ग स्वरूपको अनुभव करै जैसे व्रजभक्त रासपंचाध्याई
में अपने घरते श्रीठाकुरजीके पास आय स्वरूपानंदको
अनुभव कराई यैं काहे तें प्रथमही श्रीठाकुरजीस्वरूपा
नंदको अनुभव न करावते तो अंतरध्यानमें विप्रयोग
दुख भक्तनको बहुत होतो जैसे लौकिकमें कोई धन
पावै और फेरि धन नष्ट होय तो वह बहुत मनमें दुख
पावै जाके पास जन्मतें ही मूलते धन न होय सो दुख
हू न पावै ता भांति गोपीजन थोरो सो अनुभव संयोग
रसको अनुभव कीये पाछें श्रीठाकुरजीके अंतरध्यान
में विप्रयोग रसको अनुभव कीये पाछें श्रीठाकुरजी प्र
गट भये तब जलस्थल क्रीडा सिद्धि भई जैसे ही पुष्टि
मार्गमें सेवा है वैस्नव भगवद्सेवामें सात्तात्स्वरूपा
नंदको अनुभव करै है ता समय सेवा सबंधी संयोग
के कीर्तन करै और अनवसर होइ तब परोत्त हि
मानि विप्रयोगके कीर्तन ... ते गीत
... गीत आदि ... तो गान करै परोत्तकी
सेवा होय सो सब सिद्धि करै या भांति संयोग विप्रयोग

विचारिसेवाकरेंतोंआगेंभावव्हेहै।सोप्रकारआगेंलो
कमेंकहतहैं।२३।श्लोकु॥ तदुत्तरंयथाभावःकेवलोवि
रहात्मकः फलंतथैवचात्रापिफलंतोकेवलस्यहि
२४।याकोअर्थ।।ऊपरकहेतोप्रकारभगवत्सेवागुन
गानकरेंसंयोगविप्रयोगमेंसदोऊभावव्हेंछिनहोय
करेंतोताकरिउत्तरदलजोकेवलविरहात्मभावको
दानप्रभुकरेंसोफलसुपुष्टिमार्गमेंहैं।सर्वोपरहै।या
उपरांतऔरफलकोइनाहीं।जरहुउत्तरदलभाववि
रहात्मकभावकोदानश्रीआचार्यजीदीयेंतवसर्वफ
लकीसिद्धिहोयचुकी।विप्रयोगमेंसंयोगपदार्थप्र
गुरूपहीदीसेंतवभावदसेवासमयसंयोगमेंहूविप्रयो
गहोयविकलहोयप्रेमलदरसमयहजानिप्रभुमो
कोछोडिकहांगयेयहस्मातातविरहवनताभक्तकोली
लासुखकरिविकलहोयजोप्रभुधूपमेंनागोपाइन
गायचरायवेकेसेजायगे।कोमलचरणहैं।नरकहारि
कानचलेजायमेंप्रभुविनाकेसेंकालविनाऊंगी
याभांतिकेप्टानकोटिविप्रयोगसमयहेलौकिक
देहसंवंधीभोगसवछूटिजायतवजानियेजोप्रेमल
क्षणाभक्तिकीप्राप्तिभई।यहसुखरसहे।२४।अवश्लो
कहतहैं।श्लोकु॥ फलासूयाफलंछसवदनंदि
चिंत्यतो॥
१५याकोअर्थ॥

समझतनाहीं।सोभाववदम्भभक्तहीजानतहैं

सिवादिक को त्याग भयो है और सेवा गुन गान करै ता में कछु
लौकिक वैदिक फल की आसा तथा अनेक प्रकार की आस
रखे ताको पुष्टिमार्गी प्रभु सुखात्मक फल न होय फल यही मन
में चाहे जो श्री कृष्णचंद्र के वदनारविंद मकरंद को स्वाद कहे ते
श्री [illegible] जी के मुखारविंद [illegible] श्री आचार्य जी ताते श्री ठा
कुर जी के अधर रस [illegible] मन [illegible] खाराखे सो भाव
सेवा में भावात मुखारविंद को रस न वाखार करे यही
सेवा को फल है [illegible] ताते श्री कृष्णचंद्र के वदन को
[illegible] संयोग में [illegible] वियोग में बहु
[illegible] विप्रयोग भावात्मक फल सिद्ध भयो
[illegible] श्री कृष्ण को वदनचंद्र [illegible] राखे ताते विरह है
[illegible] है और श्री कृष्ण है सो [illegible] भावात्मक है जभा
[illegible] भावात्मक [illegible] निसेवा [illegible]
[illegible] है और [illegible] ज्ञान संबंधी यह
[illegible] दिन के [illegible] स्वरूप प्रसिद्ध पुरुषोत्तम
[illegible] सो [illegible] श्री कृष्ण [illegible]
[illegible] भक्त [illegible] नाको कहे जो पुराण मा
[illegible] प्रभु की प्राप्ति कही
[illegible] नाको कहा कारन है
[illegible] जो [illegible] मार्ग में ज्ञानी नि
[illegible] तिन ज्ञानी को स्वरूप
[illegible] ता [illegible] योग पूर्ण
[illegible] ज्ञानी के [illegible] है अक्षर ब्रह्म की नाम
[illegible] तिन [illegible] में लय होत है उनको भक्ति रस की प्राप्ति
[illegible] ताते ज्ञानी के [illegible] स्वरूप को भावना
[illegible] श्री कृष्ण है सो [illegible] स्वरूप को भावना
[illegible] श्री कृष्ण [illegible] स्वरूप [illegible] रसात्मक
[illegible] है [illegible] आनंद को [illegible]

है। और श्रीठाकुरजी परमानंदरूप प्रसिद्धि श्रीभागवतजी
नामें कहे हैं जो श्रीपूर्णपुरुषोत्तम हैं सो वेदशास्त्र
में सर्वोपरि प्रसिद्ध हैं तातें एक श्रीकृष्णही को स्वतंत्र परम
पुरुषोत्तम जाननो। ब्रह्मादि सिवादिक भगवत्स्वतंत्र न
नों स्वतंत्र एक श्रीकृष्णही को जाननो॥ १७ श्लोक॥ एवं
वस्थापकतत्त्वसंकेवलो श्रीगिरोमतः तस्मैवास्वरूप
पूर्णः प्रभुश्रीवल्लभाभिधः॥ १८ याको ग्रंथ अवको स्व
जो तुम श्रीठाकुरजी की सेवा करिके कछु फलहू की वास
ना न मेरा रखत हो काहेतें वेदमें जितनी क्रिया कही
ताको फल हू यह है जो कछु फल न होय तो क्रिया व्यर्थ
होय यह वेदशास्त्र की मर्यादा है यह सन्देह होय नहीं
महत् है जो जा जीव को श्रीद्वारा ब्रह्मसंबंध जीव को भय
यो है ताकी पुष्टिमार्ग की रीति सों भगवत्सेवा की
न जायगी। तब वह सेवा करतमें साधन है श्रीकृष्णही
फल श्रीरससेवा सिद्ध भये पाछे श्रीकृष्णही फल तातें
पा पुष्टिमार्गमें साधनही में फलकी प्राप्ति भई और वेद
मर्यादामें क्रिया न्यारी है साधनरूप फलरूप भयो तब
पोदा की क्रिया नास भई और पुष्टिमार्गमें साधन है
में श्रीकृष्णसेवा सो श्रीठाकुरजी बन प्राप्ति होय तब श्री
ठाकुरजी के मुखारविंदरूप श्रीआचार्यजी की संपूर्ण
कृपा होय तबही यह जीव सरन आवे पुष्टिमार्गमें
भाव सेवा में रुचि होय श्रीआचार्यजी की कृपा वि
ना पुष्टिमार्गमें प्रवेश होय नहीं यह सिद्धांत नि
श्चय जाननो सो श्रीआचार्यजी की पूर्ण कृपा को न
कारहोय सो उपाय आगे श्लोकमें कहत हैं॥ १९ श्लो
तदाश्रयसदाकार्यो मनोवाक्कायवृत्तिभिः स्व
कीयतानदीस्युतद्वैमिलितापना॥ १९ या
अब श्रीहरिरायजी कृपाकरि सो उपाय कहत हैं

[illegible] निर्बन्ध पूर्वक [illegible] श्री आचार्य जी [illegible]
को आश्रय [illegible] श्री आचार्य जी [illegible]
[illegible] प्रसन्न होय और श्री आचार्य जी अनन्य पक्ष को
[illegible] मन होय तो [illegible] को [illegible] साधन [illegible]
[illegible] श्री गुसांई जी [illegible] अन्य देव ते नाम
[illegible] बाधते [illegible] अन्य देव [illegible]
[illegible] होय तो माया [illegible]
[illegible] वार की वातो में [illegible]
[illegible] भयो अन्य
[illegible] और जो श्री आचार्य जी म
[illegible] होय और साधन यो रावति और
[illegible] आश्रय [illegible]
[illegible] श्री आचार्य जी को दृढ आश्रय भयो
[illegible] श्री आचार्य जी [illegible] अनन्य [illegible]
[illegible] जिनको दृढ भाव
[illegible] श्री आचार्य जी को दृढ आश्रय
[illegible] श्री आचार्य जी प्रसन्न होय अपनो
[illegible] श्री आचा
[illegible]
[illegible] जो [illegible] श्री
[illegible] सो [illegible]
[illegible] श्री आचार्य जी [illegible] तो श्री
[illegible] मिलते ना
[illegible] है [illegible]
[illegible] श्री आचा
[illegible] जी को पुष्टि मार्ग
[illegible] श्री आचार्य जी प्रसन्न होय
[illegible] अपनी [illegible] जो [illegible]

नातरवैसलवगोवरउठायलेजायगो। यहसुनतही
ीआचार्यजीकोधकरित्यागकीनो। कितनेन नको
क्तरायभयो। तातेंभगवदीयमेंश्रीआचार्यजीमें
बुद्धिनराखें। १ यथ्रवग्रोरहुकहतहें। श्लो०॥ नदी
यपूचतदुधानरथ्याप्यविशेषतः। यथाहुगीभा
क्तौविषयाणामतिस्तथा। १६ यथा श्री० श्रो०॥ नदीय
यहजानतो। नदीयप्रसन्न
मेंलौकिकबुद्धिनराखें। यहप्रसन्नहोयमानकरेगो
होयगो तबश्रीआचार्यजीप्रसन्नहोयगे। कामीपुरुषहो
तोलौकिकदृष्टांतकहतहें। जैसेंकामीपुरुषहोय
सोलौकिकलावे सोकामनापरस्त्रीसोंकरेतो
दूतीद्वारापरस्त्रीकोबुलावे। सोदूतीप्रसन्नहोयके
कोसिद्धहोय परंतुवीचमेंदूतीप्रसन्नहोय
मसिद्धिहोयतातनस्नाहीसिद्धहोय। तातेंदूतीजोकार्यकी
नरहें सोइकामीपुरुषकरतहें। तातेंइतनोजोकार्यसि
सिद्धकरताहै। तापरहूअधिकस्नेहहोतहें जैसेंदूतीजो
भजवेभगवानकोमिले। तबहीयहजोदूतीकोकार्यसि
द्धहोय परंतुभगवानहूविनाभगवदीयकेसंगविनाप्रसन्नहोतहें
नालमिले। भगवदीयद्वारा भगवानप्रसन्नहोतहें
तातेंभगवदीयमेंभगवानमेंबराबरिबुद्धिस्थापन
करें। १६ अबग्रोरहूकहतहें। श्लो०॥ धनग्रहयथा
सोनथाभक्तस्थितेपिचो। विनियोगस्यमेवोहिप्रभु
भीवाभविष्यति॥ २० पा० टी०॥ अबकहतहेंजो
भगवदीयमेंभावभयोकवजानियें जैसेंधनग्रहस्थ
श्रीकृष्णकोंसमर्पतहें। भावसहितभगवत्सेवाकरत
तैसेंहीभावपूर्वकभगवदीयकीसेवाकरियें। धन
इसमनवचनक्रियाकरियें। जैसेंजैसेंश्रीकृष्णकों
विनियोगकरियें। तैसेंहीस्नेहसंयुक्तभगवदीय
नियोगकरियेतोभगवानहोयसोआगेकहतहें
नदीयांश्रीत्वन्तुष्टेतुष्टःकृष्णोनसंशयः

प॰ दीयानुनिजाचार्यश्रीके चरणशरण ॥२१॥ या ... श्री ... अवऊ
परकहे जैसें भावपूर्वक धन ग्रह श्रीठाकुरकों समर्पै तैसेंहीभा
वसहितभगवदीयकोंहू धन ग्रह समर्पै नहांकोईकहे जोभ
गवाननकीसेवातो आवश्यक है सोकरी चाहिये औरभगव
दीयकीसेवाकीयेतें कहाहोत है याभांतिकोईकहे नहां
कहत हैं जोभगवदीयकीसेवाकरिप्रसन्नकरिये भग
वदीयसंतुष्टहोइ तबभगवानहूसंतुष्टहोइ जोभगव
दीयसंतुष्टनहोइ तौभगवानकोइप्रकारसंतुष्टनहोइ
औसोजानिभगवदीयकोंसबप्रकारसंतुष्टकरिनोताक
रिकें निश्चय भगवानसंतुष्टहोइगे नहांकोइकहे जोत
दीयसंतुष्टनहोय वेसबजानिकें आपतेंबनेसोसेवाक
रिये औरवेसबकठिनआगपाकरे सोआपतेंबनेना
ही तबवेसबसंतुष्टनहोयतौभगवानहूसंतुष्टनहोय
याभांतिकोईकहे नहांकहत हैं जोजैसेंराजाकेवाल
ककीसेवाकरिये सोउह वालककौज्ञान नहोइ प्रस
न्नहोय बालककेसेवा तौकहे सोआपतेंबन
ते सोराजाआपनेमनमेंजानेजोयहमेरीबालककी
बहुतसेवाकरीहै यासोंबनीतितनीकरीहै यहजा
निकेराजाप्रसन्नहीहोय यहजानिआपतेंबने
तितनीवेसबकीसेवाकरिये तदीयनप्रसन्नहोइ
गे तऊकहूचिंतानाहीभगवानप्रसन्नहीहोइगे औवे
सबकितनीप्रकारकेहैं नहांकहत हैं जोअैसेवेसबहै
यतिनकीसेवाकरें एक श्रीआचार्यजीकेचरणारवि
दकीभक्तिमेंपरायणहोय अहर्निश यह स्तोत्रपरली
दके श्रीआचार्यजीकेसरणकीकामनाहोइ औसेभ
गवदीयकीसेवाकरें सत्संगकरैनोजीवकौअनन्य
ताश्रीआचार्यजीमेंहोय अवऔरहूभगवदीयकेल
क्षणकहत हैं ॥२१॥ श्रीआचार्यजी अनन्यभजनोत्सुकाकामलो

वर्जिता। निरपेक्षाचितास्त्विसर्वभूतहितेरता।२१।
।अर्थ। अबकहतहैं।जोऐसेभगवदीयकीसेवाके
पहे जोएकश्रीठाकुरजीसेवाहीकरिसंतुष्टहोंऔरदे
तरकोभजनस्वप्नमेंहूंनाहीजानतहैं।तनश्रीठाकुर
प्रसन्नहोय।औरकाहूवस्तुकीकामनानाहीहैंती
लोकपर्यंतब्रह्मानंदमोक्षपर्यंततुच्छजानेहैं।लौकि
कामक्रोधमदमत्सरता।विषयवासनाहीगंधवा
नहीहोय।औरलोभनहीहोयजोंसगरोधर्मद्रव्य
लीयेवेचैकाहेतैयहकलियुगमेंद्रव्यकरिसकल
कार्यलौकिकसिद्धहोतहैं।सोद्रव्यमेंजाकोदेहनको
नहोय।सोभगवदीयजानिये।औरनिरपेक्षभाव
भगवत्सेवाकरैहैं।कछुलौकिकवैदिककोकाम
नामनमेंनराखे औरमनकरिविरक्तरहेंस्त्रीपुत्रकु
टुंबगृहदेहसंबंधीसगरीजगतमेंदृढवैराग्यजाने
काहूसोअपनेस्वार्थकेलीयेकछुजाचेनाहीयहजाने
जोश्रीठाकुरजीसर्वकार्यसिद्धकरेंगे मेरोधर्मतोभगवत्
सेवाहीकरिवेकोहै।औरसर्वभूतप्राणीमात्रकेहित
राखें।काहूकोवुरोसर्वथानविचारैं मनवचनकर्म
करिसबकोहितहीकरैं।ऐसेभगवदीयकोसंगअरु
नैसहीकरीयमेंहैं।तिनकीसेवास्नेहपूर्वककरें।२२
अबऔरहूकहतहैं श्लोक। निमेषार्द्धक्षणसेवा
कथादिविहितादरा। एवंविधास्तदीयाश्चसंगार
पविशेषतः।२३। याको अर्थ। निमेषसराजा और
कोउलकोदेखिनसकैसोनकरै आपनेतेऔरवेस
वृथाहीभगवद्धर्मकरतहोयतोवाहूकीवडाईकरे
कैंधन्यहैतुमकोआपुकोजोगपतानजानेजोमेंव
हतधर्मकरतहूं यहजानेजोमेरेमेंतोभगवद्धर्मएक
लाहीहैं।याभाँतिदैन्यताराखे।इनकीसेवाहूआदर

सि.प.
११

रपूर्वककरै श्रीहरिकी कृपाहै आदरपूर्वककैसुनेक
तैंभगवत्सेवाकीयेतेसर्वदाभगवत्परायणहोयू
श्रीठाकुरकीकथासुनेतेभगवत्सेवामेंरुचिउपजेतातें
भगवत्सेवाहूकरनी ओरभगवत्कथाहूअतिआदरसे
सुननी याभांतिऊपरकहिआये ऐसेभगवदीयसर्वगु
णपूर्णहोय तिनको संगआवश्यकनेमपूर्वककरैक
हु लौकिकदोषजोभगवदीयदिखावेतोउहदोषमन
मेंरंचकहूनलावे यहजानेजो इनमेंदोषनाहीहैमो
हीकोअपराधकरिकैदोषदीसतहैं याभांतिसुद्धमन
सोभगवदीयकोसंगकरै उनकीसेवाकरै भगवदीय
कहै तामेंविश्वासराखिकैमनमैंस्नेहसंयुक्तकरैयाप्र
कारवेसवकरैतो श्रीआचार्यजीप्रसन्नहोय यातेंस्व
नवरंगे २३ श्लो० सर्वथासुद्धभावानांस्वकृतानां
कृपालुना सर्वंश्रीवल्लभाचार्यप्रसादेनभविष्यति २४
पा[illegible] ऊपरजितनोप्रकारकहे सवसुद्धभावसो
करै भगवत्सेवाहूसुद्धभावसोकरै गुरुसेवाहूसुद्धभा
वसोकरै श्रीहरिसेवाहूसुद्धभावसोश्रवणकरैसगरी
भावरहती तामेंसुद्धभावराखै सर्वभगवत्सामग्रीमें
सुद्धभावराखै भगवदीयप्रसन्नहोय कृपाकरैतोप्रभुहू
कृपाकरै तहांकोउकहैजो तुमइननेधर्ममहाकठिनहैंयह
कलियुगकेजीवसोकैसेवनिआवेगे जीवनतोएककहूं
[illegible] कठिननायेसिद्धहोतहै याभांतिसंदेहकरै
तहांकहतहैं तोश्रीवल्लभाचार्यजीयहकलियुगकेजी
वनकोंकृपाकरिकै[illegible]प्रगटेहैं यहपुष्टिमार्गसवी
रप्रकटकीयोहै सोश्रीमहाप्रभुजीकीकृपातेंसगरेधर्म
[illegible]मेंआवेगे जीवकोंतोसवहीकठिनहैंजीवक
[illegible]कादिदुष्टहैं ओरश्रीआचार्यजीकृपाकरैंतिनको
[illegible]दुर्गमहैं तातेंमनमेंराखश्रीआचार्यजी ग

कमलको आश्रयदृढराखे सर्वकार्य आश्रयहीतें निश्च
यसिद्ध होयगो। याभांतिश्री हरिरायजी प्रतिज्ञा करिकें कहत
हैं जो एक श्री आचार्यजी को आश्रय मनमें दृढराखो ताही
करि सर्वसिद्धि होइगी निश्चय पुष्टिमारगीय में फल हैं सो
श्रीमहाप्रभुजी दान करेंगे। याप्रकार प्रथम सिलापत्र को भा
व यथा बुद्धि अनुसार कह्यो॥२४॥ इति श्री हरिरायजी के प्रथ
म सिलापत्र ताकी टीका श्री गोपेश्वरजी कृत संपूर्ण॥१॥ अ
ब दूसरो सिलापत्र श्री हरिरायजी पठायो हैं, ताको व्याख्यान
श्री गोपेश्वरजी करत हैं, ऊपर प्रथम सिलापत्र को भाव
हृदय में धारन करें तो श्री आचार्यजी महाप्रभु वाके ऊपर
निश्चय कृपा करें। पुष्टिमार्ग में श्री लक्ष्मफलात्मक रसरूप
दान करें, तब श्री ठाकुर को स्वरूप हृदयारूढ होय, सो यह
दूसरि सिलापत्र में कहत हैं, जो ऐसो स्वरूप को अनुभ
व होय। श्लोक॥ यसोदोत्संगलालित नंदनंदन ग्रथित
वेणिक मुक्ताफलसैले डालो चलत्कुंडलकुंतल १
व्याख्या॥ अब कहत हैं श्री यसोदोत्संगलालित यह
विलक्षण भावात्मकस्वरूप है वसुदेवदेवकीके इहां जो म
थुरामें प्रागट्य हैं और श्री यसोदाजी के इहां जो स्वरूप प्र
गटे हैं सो केवल व्रजभक्तन को आनंददानार्थ हैं, सो श्री
यसोदोत्संगलालित जो रसात्मक सो है यह श्री आचार्य
जी के पुष्टिमार्गमें सेवनीय हैं, ताहूमें सो यह प्रकार है कल्प
कल्पमें द्वापर आवत हैं तब श्री नंदयसोदा प्रगटत हैं त
ब श्री ठाकुरजी प्रगट होत हैं, सो यसोदोत्संगलालित
पुष्टिमारगीय में सेवनारीति हैं, काहेतें कल्प कल्पमें क
बहूं ऐसा वतार होत हैं। और सारस्वतकल्पमें जो स्वयं
प्रभु आप पधारे हैं जो वेदकी ऋचाको वरदान दीए सो
सारस्वतकल्पके यसोदोत्संगलालित यह पुष्टिमार्ग
में सेव्य नाही हैं, सो श्री गुसांईजी के वचन हैं॥२॥

जानितेपरमंगलरूपयसोदोत्संगलालितं तस्मात्द्वितीयो
रासुरास्तानहेतुधा १ श्रीयसोदोत्संगलालितविला
ओरकौ जानिनाकौ स्वासुरजानियें सबलीलासबव
स्तुकेकारणरूपयसोदोत्संगलालितहैं तिनकौश्रीय
सोदाजी अतिस्नेहसों उत्संगमें लीएलालनपालन
करतहैं परमआनंदमेंमगनहैं यसोदाजी ऐसोमंगलरूप
प्रभुकोपायकेंसो श्रीगुसांईजीमंगलग्रंथमें कहेहैं मंगल
मिहश्रीनंदयसोदा नामसुकीर्तनमेंबहुचिरोत्संगसुला
लितपालितरूपं मंगलरूपकों गोदमेंयसोदाजीलिआ
यंमंगलरूपभए ऐसेस्वरूपकोध्यानकरतहैं श्रीयसोदा
जीकेआपहूंमंगलरूपभए ऐसेस्वरूपकोध्यानकरतहैं
श्रीयसोदाजीउछंगमेंपुत्रकोलेसुंदरघूघरवारेबार
हैं तिनकोंसवारिकेंबांधिगुहतहैं अथवाश्रीयसोदा
जीअपनीगोदमेंप्रभुकोंलेकेंअनेककोमेवामिठाईआरोगा
वतहैं अनेकप्रकारिकेखिलौनासोंखिलावतहैं कुमारिकाजोघ
रमेंमतहैं सोवेनीगुहतहैं अथवाश्रुतिरूपाश्रीचंद्राव
लीजीपद्मावतीलाभावसोंगुहेहैं अथवाश्रीठाकुरजीकि
याखभावकहतहैं श्रीयसोदाजी वृषभानकुमारीकोप्र
फेकासकेंहायदोऊस्वरूपकीवेनीसुंदरगुहतहैं याभांति
अनेकभावहैं श्रीमहाप्रभुजीकीकृपातेंअनुभवहोत
है याभांतिवेनीसमारिकेंसुंदरभालपरमोतीकीलर
सोभादेतहैं सोमानोंनीलकमलकेऊपरबरावरि
जलकीबूंदआयरहीहै तथास्यामचंद्रमाकेऊपरत
रागणाकीपंक्तिआयरहीहैं सीतलमंदसुगंधवायुते
कुंतलजोअलकैंसोचलायमानहैं सोपरमअद्भुत
सोभादेतहैं मानोंमुखकमलकेमकरंदवसहोयआ
लिजोभ्रमरकेपुत्रछोटेछोटेपंक्तिकीपंक्तिआयपा
नकरतहैं तथामुखचंद्रमापरअलकसोसर्पकेबच्चे

आयेहैं यामोतिनासिखातेनखपर्यंतश्रंगारकोभा
हित्हृदयमेंविचारे।अथवश्रोरहूकहतहैं।स्लोक॥ मु
क्ताकलावलीभालप्रांताकर्णविभूषिनः कस्तूरी
कंयुकभालभूषातिसुंदरा।भूयाकोश्र्थ कोफर
कीलरभालतेंटेककर्णतांईवंदीधरेहे
ह्रोयवककीपंक्तिपरमसोभादेन मु
कस्तुरीकोतिलकभालपरविराजमांन
गुसांईजीकेभालपरकुनसि १
कौतिलकहैंतातेंश्रीचंद्राव
भावसंवधीतिलककस्तूरीकोश्रीठा
कुरजीमुख्यस्वामिनीअपनेभाव
को भावात्मकहै।अत्र है
का॥ विलसत्कपोलहृदयचित्रनः
लद्युतिमंडित।अथाको अर्थ
श्रीरसमेजोदेहारकुसवकुमकआदिश्रंगारासोकपो
चित्रि सोदाऊकपोलमेंकमलपत्रपरमसो
स्वामिनीजीकेमनो
कोहे।का कमलपत्रजवव्याहहोतहेतवही
श्रोरश्रीस्वामिनीजीअपनोमनोरथक
हो
कुरजी जो
हाजीश्री
न
रतहैंजोह
चिरकालको तकश्रीठा
सेरव का
मनोरथपूर्णकरतहैं

नीजीसेकेकपोलपरकमलपत्रश्यामनेहस्तसोंसवा
रिकेअपनेप्याहकोमनोरथकरतहैंतोनित्यप्रदीभां
तिहमकोहीयोकरो याचक्षकेअनुसारदिनदूलहमेरो
कुमरवनैया याभांतिश्रीचंद्रावलीलागोयककरिपाछुश्री
ठाकुरजीकेगोदमेंश्रीस्वामिनीजीश्रीयसोदाजीपास
ला मैंकेकहतहैंतोयहतुमारोपुत्रश्यामचंचलवेसे
हतनाहीसोवेकोहरखेहैंएकठौरतोयारी
कोमननाहीलागततोनिपेजायलागेहैंतवश्री
यसोदाजीश्रीस्वामिनीजीकेउपरप्रसन्नव्हेयपश्रीठ
कुरजीकोअपनीगोदमेंलेतहैंविधनासोयचराप
सारियहप्रार्थनाकरतहैंतोवृषभानकुमारीतेमेरोपु
कोव्याहहोयश्रीस्वामिनीमांगतिहैंसोयुंसेवामिलाईसो
स्वामिनीजीकोगोदमेंलेतहैंयाभांतिश्रीठाकुरजीके
कपोलचित्रनहैं औरहीअंकुश्रीतजोकर्णमेंकुंडलपर
भसोभायमानहैंसोकुंडलश्रीतिचंचलहैसोकवहूम
कराकृतकुंडलधरतहैंकवहूमकराकृतकुंडलधरतहैं
सेम्याराकृतमेंसवकीप्रभातकोमनोरथमोराकृतमेंपरव
यमनतकोमनोरथसोकुंडलकीकांतिगंडस्थलपर
रुचनतहैंसोकोसोहैदर्पनकीछविकोहरतहै
नीलमनिकीकांतिव्यापावतहैंअवश्रीठाकु
नहै२ श्लो० विधुकांतलसद्घनभूषसोगन्ध
वनःनयननातविलसमालिहैसुलोभनथ
श्री सुंदरीविधुवदनश्रीराकोमृगनाभीतिलक
सोपरमउज्ज्वलश्रीचंद्रावलीजीकोभावहैसोमधुर
कवीहीकोमिलापकैरिवेकोहैसोश्रीस्वामिनीजी
धरामृतकोपानकरतरसकेआधिक्यतेमुखक
तेअधररसश्रवतहैसोचिबुकपरआवतहैसो
चंद्रावलीजीआस्वादनकरतहैंयाभावतेचिबु

ाविराजतहै नेनकमलमें अंजन श्रृंगाररसहीसों
तहैं सो नयननके कटाक्षसों हिवा भक्तनके परम
तहैं ताकरि व्रजभक्त मोहित होयकें अपनो गृहका
नभूलिजातहैं काहेतें नेत्र अतिकुटिल हैं अतिच
लहैं अतिचंचल घूर्णायमान हैं अनेक भावसों
भरेहैं सो श्रीगुसांईजी ललितत्रिभंगीग्रंथमें वर्णन
कीयेहैं रसहिसाके भक्तनको नेत्रद्वारा रस
पानकरावत हैं औरस्वनेके विहारको प्रकार नेत्रद्व
रसपानकरावत हैं और श्रीयसोदाजी मसिविंदुक
नामाहीरेहै जोमेरे पुत्रको काहूकी दृष्टि न लागे ताभि
मसिविंदुकापरमशोभितहैं सबके मनको हरत हैं ॥ अव
ओरहू कहत हैं श्लोक ॥ लालमिलन्नधररसअमृत
नानवाधक बाललीलाभावानि सलीलं रससाधनंतन्प
पयाको अर्थ ॥ ओरहू अधरते रसअमृत हैं सो
असोदाजी तापरजानत हैं सो बालककें स्नान
नहैं सो श्रीयसोदाजी होयरजानत हैं मुख चुंबनक
तहैं तब अधररसकी ननको लालनको आर
हरहोत हैं काहेते पुष्टिलीलामें अधरामृतपानकि
नाश्रीको रनहोय और श्रीठाकुरजीतो नित्य
तामें सबको अंगीकार करालनको पधारे
श्रीयसोदाजी व्रजगोपीजनको तथा श्रीनंद
नीको अधरामृतके संप्रात होय तातें बालभाव
रतहें सखानको गवालमंडलीमें फल रवबा
व्रजभक्तनको तो ताहू तामें अधरामृतहीको
में पशुपक्षीको वेणुद्वारा अधरसतें सवनको
कानहरतहैं अन्यसंबंध नाहीं होत है बाल
श्रीस्वामिनीजीको अधरामृतपानकरे हैं
श्रीयसोदाजीसो कहिकें श्रीठाकु
ों श्रीयसोदाजी

धराइकें लेजात हैं जो तुमारे पुत्र को खिलाइ लावें तब स
बको उं यह ज्ञान नहीं जो बालक को खिलावन को ले जा
त हैं काहू को विषम बुद्धि नाहीं होत एकांत में ले जाय
गुप्त रस की रीति प्राप्त नाकरत हैं श्री ठाकुर जी रसदान में
तत्पर हैं या भांति समस्त भक्तन के मनोरथ सिद्ध करत हैं
अब अष्टम श्लोक कहत हैं स्तोत्र का मुखांबुज निजांगुष्ट
वेसन परायण या भांति पद वृष्टि खगाति क्रियासक्ति वि
बोधक [illegible] या [illegible] अ [illegible] श्री ठाकुर जी सुरपालन में
पोढे हैं अपने अंगुष्ट को बारंबार मुख में प्रवेस करत
हैं ताको यह जतावत हैं जो चरणारविंद में कोटान
कोटि भक्तन के मन लागि रहे हैं तिन भक्तन के मन में
यह तापन्न के ऐसी रहत हैं जो हम को अधरामृत
को पान कबहू न भयो [illegible] यह सब कोन भांति को है सो भक्त
की आरति प्रभु सहि नाहीं सकत तातें बाल भाव सों
को [illegible] नाहीं या भांति चरणारविंद के भक्त को अ
धरामृत रस को पान करावत हैं अथवा प्रभु यह विचा
र करत हैं जो मेरे चरणारविंद में ऐसो कहा रस है जो सगा
रे भक्त चरणारविंद को पूजत हैं ध्यान धरत हैं सो रस
को मैं हूं ताहि देखों सो बाल भाव सों आपु हूं चरणारविं
द के रस को आस्वादन करत हैं अथवा कबहूं श्री हस्त के
अंगुष्ट मुख में मेलत हैं ताको अभिप्राय यह है
जो श्री ठाकुर जी के पास आइ हैं तिनको आपु श्री हस्त सों
पकरि अपने मुखारविंद में धारन करत हैं सो कबहूं एका
त में उन भक्तन के बाहिर निकास रमण करि पाछे पु
नि मुखारविंद में धरि लेत हैं लोगन के दिखायबे में बा
लक अंगुष्ट चूसत हैं स्वामिनी आदिकों अनेक रमण
बंधनादिक क्रिया को बोधन करत हैं या भांति श्री
ठाकुर जी को जैसो श्री ठाकुर जी को अधिकार है ताको

हीरसपानकरावतहैं।सोयदश्रोरहूकहतहैं।स्लोक।अनी
सन्तुजाफलमन्दिभूषनैनदनारलसन्च
मनिमाला तिसोहनं।७।याकै। श्रये गीदासो लगी
ती कीमाला ताको नामकंठश्री परमसोभा देनहैं
हीके पासखवरणैहै मनिका श्रोर माणिमाला ग्रंथ
करिश्रपनेभक्तनकोयहजनावतहैंजोमेतुमको श्रह
ठमेंराखनहों जुनाकीमाला खसर्णेनयाम
मयश्रनेकभक्तनके भावात्मकहैं तानिमभुश्रेमने
कीरिहैं।८।श्रवश्रोरहूकहतहैं।स्लोक।उरस्थव
त्सश्रुचश्रवैयात्रभूयाम सुलफलस्वसला
लतोहर।९।याकोश्रर्थ उरस्थलकेऊपरजेहै
कौनखवधनखापरमसोभादेनहैं।सोश्रीयसोदाजी
अपनेपुत्रकीरक्षाश्रर्थधरावेहै।श्रोरब्रजभक्तन
श्रनेकलीलामोघनकरावतहैं नखवानरासमे
हारलीलामेंहोतहैं सोवघनखा ठैयाहैं।ताको
अभिप्राययहहैजोकितनेकभक्तनकोहृदयटेटोहै
कौमनश्रीठाकुरजीकौश्रपनेवसकरनोहै सोवे
खाइदोश्रपनेहृदयमेंधरियहजनावतहैंजोमेंहूत्रिभ
हूंयाभांतिभक्तनकेमनमूंपैकरिभक्तनकोश्र
हृदयमेंराखेहैंतथाश्रनेकभक्तनकेघरश्रीठाकुर
लवहासऊपरराखवारीचाहिएताबनखन
सं दिहेविकनासिंघजीमगटकरिहं
ऊपरराखवारीराखिभक्तनकेसंगानिर्भयतासोंली
लाविहारलीलाकरतहैं।तातेपारीपरासिंघहैं।सो
प्रश्लीलासंबंधीहैं।ताहीतेश्रीठाकुरजीनखश्रय
कीरे याभांतिसगारेश्राभूषणब्रज
हैं।तातेंश्रीठाकुरजी
सोंपासराखेहैं।जोर

कृत होय तातें ओर तैसें श्री ठाकुरजी आगें रहत हैं तातें पु
ष्टिमार्गमें श्रृंगार कार्य जो भक्त तिनको हृदय तें होय और उपास्य
हैं नाहीं यामें लिखो वर्णन रखा प्रभु धरे हैं तातन रख भूषण के
पातसको पल और स्वरूप तिन भूषण तिनकी पुनह है गूंथी ऐसी
सुन्दर माला कंठ उपर विराजमान है सो स्वर्ण मनिका श्री
स्वामिनीजी कि भाव मुक्ता सो श्री चंद्रावलीजी के भावसें
श्री ठाकुरजी अपने हृदय में धारन कीये हैं अब और एक
हम है ॥ श्लो ॥ कं ॥ बाहु मध्ये लसद्रत्न जटितमो हसुंदर
पर युक्तं स्वर्णकंकनभूषणा ॥ टीका ॥ अर्थ ॥ सुंद
र बाहु में बाजूबंद रतन जटित है और प्रभु कंकन जडाऊ
होय भुजन में सो भावे हैं न है सो वाम भुजा में श्री स्वामि
नीजी को भावात्मक रतन भुजा में श्री चंद्रावलीजीके
भाव सो और पाटके गुच्छा में परोया ऐसे छोटे हैं हल के
सो ऊपर में कंकन परम सोभायत है ॥ ५ ॥ अब और एक क
हे हैं श्लो ॥ कं ॥ रत्नांगुलि लसद्रत्न जटितोत्तम मुद्रिक
किंकिणी परम् छाति किंकिणी जिन कटिस्थल ॥ ६ ॥ या
ख्या ॥ टी ॥ श्री हस्त की दस अंगुली सो दसों में रत्न जटि
त जडाऊ मुद्रिका सोहत हैं परम उत्तम सो दस मुद्रिका को
अभिप्राय यह है जो दस प्रकार के भक्तन के भावात्मक
हैं जारस के जो भक्त हैं तिनको ताही अंगुरी में धारन करेके
परम सुख देत हैं और कटिस्थल विषे पाट के गुच्छा
में परोई ऐसी जो किंकिनी रत्नस्वित नवली तामें सुं
दर घुंघरू लगी कंकनी सो कटि में बांधी है सो भक्तनकी कि
किंनी के नाद में अनेक कीर्तन को स्मरण होत है ॥ ६ ॥ अ
व और एक कहत हैं श्लो ॥ मनूपरपदन्यास ध्वनिमो
हित गोपिकाः ॥ दोउ चरनन रखविधु जो त्साजितनि साप
ति ॥ ११ ॥ या ॥ अर्थ ॥ चरण कमल में नूपुर परम सुंदर धा
रणा कीये हैं सो नूपुर की धुनि सुनि कें अनेक गोपीजन

श्रोरवालकीलाकोंस्वरूपाश्रितवरनिराव
सन्करावतहैं।सोश्रीनवनीतप्रियाजी
क्र प्रगटकरानहैंतनहैंस्वान
।।जानन्दचंद्रकेश्रा
चंद्रमा।। नहोतहैंचंद्रमाकेश्रीनित्यैसेनखचंद्र
ननकेहृदयमेंरहतहैंतिनकेहृदयमेंप्रकासहोय
हालरनोनखचंदुनेंश्रपनेज्योतिकेप्रकास
चंद्रमा।१।सूर्य।२।दर्पन।३।मणि।४।श्रादिसवके
यातंकोजीतेहैं।श्रोरदसननखचंद्रहैंतामेंवामच
रविंदमेंनखपुष्टिभक्तनिकेहृदयकेतिमरदूरिक
श्रोरदहननचरणकेनखमर्यादाभक्तनकेतिमरकोंदू
क. नहैं याभांतिनासिखांतनखपर्यंतस्वरूपवर्णन
रोहैं।२२।श्रवश्रोरहूकहतहैं।श्लोक।।स्वरूपप्रतिबिंबे
दृष्टिहास्यमुखांबुजः पंकांगरागरुचिरसद्यस्मुग्ध
रोमणि।२१।याकोश्रर्थ।।ऊपरकहेजैसेसुंदरवाल
रूपकीलीलाश्रीठाकुरजीकरतहैं।श्रपनोप्रतिबिं
बहेमणिजटितश्रंगनमेंदेखिपकरनकोहैस
प्रतिबिंबहस्तमेंनाहीश्रावतनवमुखमेंहास्यहोत
कबहेमणिजटितखंभहैं।तहांश्रपनोप्रतिबिंबदे
वारंवारकिलकिलकेहसतहैं।वजकीरजपवीगर्भ
गिरहीहैसोपरमसोभादेतहैं।मुग्धलीलाकिलव
कीनाईश्रनेकलीलाकरतहैं।परंतुमुग्धसिराम
हैंमानोकछूहीनाहीजानतहैं।याभांतिव्रजभक्त
सुखदेतहैं।२४।श्रवश्रोरहूकहतहैं।श्लोक।।स्व
नान्यज्ञानरहितसर्वलीलाविचक्षणः।।स्वरूपकोदि
वाणोमाननीमानदर्पहा।।१।।याकोश्रर्थ।।सर्व
गनकोयहदीसेजोवेवलवालकहीजानतहैं।।
छुश्रोरलीलाकोंनाहीजानतपरममुग्धहैं।श्रात्र

चरनयसोदाजीनंदरायजीरोहिनीजीत्र्प्रादिदेगोपगो
पीसबकों केवलवात्सल्यहीजानतुहैं श्रोरअंतरंगव्र
जभक्तहैं सोयहजानतहैं जोसबलीलामेंपरमचतु
रहैं कहामयोमात्रचरणकेत्र्प्रागेमुग्धताजनावतहैं
तोव्रजभक्तयहभावजानतहैं श्रोरकोटिकोटिकंदर्प
जिनकीसोभादेखिलज्जाकोपावतहैं श्रेसेलावण्य
जिनकेश्रीअंगपरमसोभायमानहैं मानलीजोश्री
स्वामिनीजीमानकोहरतहैं यहविलक्षणरीतिहैं जोरा
सकालावच्छिन्नसपारीलीलाकोंत्र्प्रनुभवकरावतहैं
सोश्रीगुसांईजीपालनामेंकहेहैं माननीमानहरण
श्रीयसोदाजीकेत्र्प्रागेंपालनामेंभूलतहैं ताहीसम
यमेंमानलीजोश्रीस्वामिनीजीकोंमानहरतहैं एसे
विरुधधर्माश्रयत्र्प्रलौकिकवात्सल्यकहे १४ श्लोकसव
गोपिकागूढचोरकृतसंकेतगोपन॥ परमानंदसंदो
हसंदोहदैविवर्जित॥ १५॥ याकोत्र्प्रर्थ॥ सवजोत्र्प्रप
नीगोपिकाश्रीस्वामिनीजीतिनकोगूढभावहै ति
नकेघरचोरीकरिसंकेतनकरतहैं पाछेत्र्प्रोरगोपीज
नकेत्र्प्रागेंस्वामिनीजीकोंसंकेतदुरावतहैं जोयह
नजानेंतोत्र्प्राछो॥ त्र्प्रथवासमस्तगोपीजनकेघरश्री
ठाकुरजीगूढभावसोंछिपिकेंपधारतहैं दूधदहीमा
खनसगरोसामग्रीत्र्प्रारोगिकेंपाछेजबगोपीत्र्प्राव
तहैं तबउनकोंएकान्तमेंसंकेतकरतहैं पाछेकोंत्र्प्रा
पत्र्प्रावतहैं॥ त्र्प्रथवामात्रचरणयसोदाजीकेत्र्प्रागेंउ
हसंकेतगोपनकरतहैं तथासमस्तभजनकेसंगसंके
तकरतहैं एकएकभक्तकेत्र्प्रागेंसंकेतगोपराखतहैं
यहजानतहैं जोहमहीकोंश्रीठाकुरजीमिलेहैं त्र्प्रोर
कोंनाहींयाभांतिश्रमनकरतहैं त्र्प्रथवासमस्तभक्त
केंमध्यमेंश्रीस्वामिनीजीबैठीहैं तबश्रीठाकुरजीसेन

में श्रीस्वामिनीजीको गूढभावसों वजावत हैं जो श्रोसको द
तजाने याभांति जतावत हैं सो फलानी ठौर आवो तहां
संकेत हैं तब श्रीस्वामिनीजी कछुवहानेतें घरको नाम
लेकें कछुमिसतें श्रीठाकुरजी के पास पधारत हैं या छें अ
नेकभांति लीला करि पाछें सब सखीन के आगें रस ली
ला गोप्य करत हैं परम आनंद रूप हैं तातें समस्त भक्तन
कों परमानंद को दान करत हैं और सर्व काल हूं यें
दुखक छिं रहित हैं ॥ १ ॥ अब आगें कहत हैं सो
असमर्थो हुर्खितानां प्रपंचसुखिनामपि । स्यान्निधिसु
खभावस्तेषां यावतोपकारकः ॥ २ ॥ याको अर्थ ॥ जो कि
कप्रपंचके अनेक प्रकारके दुखसों असमर्थो धर्मो इसदमठ
र तास्मादिमायासंबंधीनि नसबनके पोखनहारे हैं
अविद्यारूपप्रतनाहरनी जाको श्रीठाकुरजी मारिकें सम
स्तभक्तनकी अविद्या दूरि कीनी काहेतें भक्तनको साम
र्थ्य अविद्या दूरि करनको नाही हतो तातें श्रीठाकुरजी आ
पने भक्तनके अर्थ व्रजमें अवतार धारे हैं तातें सबन
की अविद्या दूरि करिकें अनेक लीला रसको अनुभव
कराय परम सुख दीये दुखनको नास कीयो काहेतें
स्यान्निधिसें भक्त दुख पावें सो सहि नाहीं सकत हैं ला
लनमें स्वतस्मुग्धभावको अंगीकार कीयें हैं मानों कछु
ज्ञान नहीं नाहीं काहेमें जानें भक्त तो स्वयं प्रगल होय
तो वात्सभाव छूटि जाय काहेतें ऐश्वर्य नासरूप तो यह
जानें जो समग्र जगतके पोखन कर्ता ये हैं इनको भोजन कहा
धरूं आभूषण वस्त्र खिलोना कहा देउं सगरो यश अ
रनीको है याभांति स्नेह छूटे तो पुष्टिभक्तकी प्राप्ति नहीं
प तातें श्रीठाकुरजी मुग्ध लौकिक बालककी नाईं लीला
करत हैं भूखे होत हैं तब रुदन करिकें हठ करिकें मातासों
भोजन मागत हैं तातें भक्तन पर कृपा करिकें लीला मुग्ध

भावकोधारनश्रीठाकुरजीकीरे॥मुग्धभावमेंयोरीवस्तुसोंसं
तुष्टहोतहै जोईश्वरतासहितप्रभुमांगेंतोभक्तसोंदीयोनाही
जाय जैसेंराजाबलिसोंतीनपेंडधरतीमागीहैं॥सोराजाब
लिसोंदीनीनगई॥तातेंमुग्धभावहोय ब्रजभक्तनकोसु
खदेतहैं॥ औरअपनेब्रजभक्तजोअंगीकृतहैं॥तिनकेबा
धाहैंदूरिकरनोहै॥ सोश्रीभागवतमेंकहेहैं॥कोउब्रजभक्त
कहतहैं॥श्रीयशोदाजूइतावों॥कोऊकहतहैं मथानीलावोको
ऊकहतहैं॥पादुकाल्यावो॥तुमकोंहमऽमाखनदेंइगी केउ
कहतहैंनाचो॥ तबश्रीठाकुरजीसबकोकह्योकरतहैंजे
प्रकारब्रजभक्तसुखपावतहैं॥सोईश्रीठाकुरजीकरत
हैं॥ १५॥ अबचौरहकहतहैं॥श्लोक॥प्रपंचेनासनाख्ये
यनिरोधकृतितत्परे॥बालभावग्रहपरदृशांदशाविंश
ह॥ १६॥ या श्लोकको अर्थ॥ श्रीठाकुरजीअपनेनिजभक्तन
केप्रपंचलौकिकव्यवहारनकेमनतेंनहींतेछोडायश्री
पमेंलगावतहैं॥तातेंब्रजभक्तनकेघरश्रीठाकुरजीचोरी
करनकोपधारतहैं॥ ब्रजभक्तनकोंमनदूधदहीमाखन
कीचोरीकरी॥तबब्रजभक्तनकेमनमेंश्रीठाकुरजीको
ध्यानभयो॥जोअबचोरीकरनकोंप्रभुआवनहारहो
औरवेतुनारक॥सिबभक्तनकोमनहरिलीनो॥ताकरिप
तिपुत्रगृहादिदेहसंबंधीसबभक्त भूलिजातहैं औरअप
बअविद्यारूपपूतनाकोमारिकें समस्तभक्तनकीअवि
द्याहरिलीनी॥औरअपनेभक्तनकेनिरोधकरनमेंतत्प
रहैं॥उद्धारब्रजवासीकरनहैं॥तैसोइंद्रकोयज्ञछोडायो
॥गिरिराजकीपूजाकरायअपुसगारीइंद्रियवैंसामग्री
अंगीकारकीनी॥संयोगात्मकसगरीलीलाकरीबा
हरकीसगरीइंद्रियनकोनिरोधकीरे॥औरवनांतर
हैसानरकीलीलाकरी॥मनइंद्रियकोनिरोधकीरे॥
जैसेंरासपंचाध्याईमें प्रथममुरलीबजायघरतेंब्र

भगवनकौं दुत्तायिस्मत्वती सर्वांगविलस्य विवाहि
कौसरीउद्रीसुकपिपाठ [illegible] नस्थानिहोस्ति येनस
[illegible] सौतस्वीउद्रीसुष्कपिय [illegible] विग
जे याम्का [illegible] योगविप्रयारानन [illegible] पनसत
नकौ निरोधसि दिर्कानी [illegible] वालनावकसियक्ता
[illegible] घापयातह नाव [illegible]
[illegible] पापिद्धसयाता [illegible] निर्के [illegible]
[illegible] कार्की [illegible] द्विनहोय वा
[illegible] क्रियानौति [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नके हृदयमें श्यावे तद होय जैसो मनोरथ होय ताही कार्य
में श्रीठाकुरजी तत्पर हैं । और वात जानतही नाहीं अप
ने निजभक्तनके हृदयके अभिप्राय बिना कछु ज्ञानही
मनमें नाहीं राखत । काहेतें व्रजमें श्रीयसोदाजीके घ
रपधारत हैं । सो केवल व्रजभक्तनके सुखके नाथ तें पुष्टि
मारगमें प्रभु भक्ताधीन हैं अन्य ज्ञानवार्ता रहित हैं १७
अब और हू कहत हैं । श्लोक । सेवनीयसा वधीने विप
रीतिगतिक्रिया । गूढलीलापरो भक्तगूढभावरसात्म
कः १९ या श्लोकको अर्थ । भक्तनके संग गूढलीलापरायण हैं
गूढलीला सो रासलीला । तामें अनेक प्रकारके रास हैं
गोपी विचविच माधो । तथा अष्टदलभावंती । तथा भक्त
भक्त प्रति याभांति अनेक रासलीलामें अनेक भांति
को विहार अनेक प्रकारसों जलक्रिया अनेक भांतिको
वनमें श्रीवृंदावनमें निकुंजकी कहे । और व्रजभक्त
नके घर वार स्वरूप तो कैसो रहोय अनेक लीला तथा
स्थिलमें गाइदुहावनमें अनेक लीला समुद्रको पार
नाहीं । तातें गूढलीलापरायण कहे । गूढभाव हैं जि
नके भावकी काहूकी खबरि नाहीं । श्रीठाकुरजीके भा
वकी काहूको खबरि नाहीं । गोपीजनके भावकी का
हूको खबरि नाहीं । रसात्मक श्रीठाकुरजी रसात्मक व्र
जभक्त सो रस प्रभु अनेक भांतिकी लीला करत हैं अ
रु रसात्मक कृपसो है तिसंग लालेत है । सो श्रीहरिरा
यजी श्रीगोपेश्वरजीको पत्रमें लिखे जो ऐसे प्रभुन
की सेवा अत्यंत सावधान होयके कर्तव्य है । का
हेतें प्रभुकी विपरीति गति है । विपरीति क्रिया है एक
छिनमें प्रसन्न होय एक छिनमें क्रोध करें तातें छि
छिनमें मन न राखिये प्रभुमें मन राखिये जो मति
कछु अप्रसन्न होय याभांति भययुक्त भगवत्सेवा

कह्यो॥१०॥ अब आगे कहत हैं॥ श्लो॰॥ श्रीमदाचार्यरूप
यातिशृति स्वगृहे हरिः॥ एवंविध सदा स्थेयो योगिनपार
रायथा॥११॥ याको अर्थ॥ अब श्री हरिराइजी कहत हैं जो
सिवृज भक्तन के भावात्मक स्वरूप अपने गृहमें विराजे
नहें सो श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी कृपाते कछु अपने
प्रेम स्नेह भक्ति और एक कछु साधनको बल मति जानीयो
रसात्मक भावात्मक प्रभु की सेवा अपने करि करि
श्री आचार्यजी की कानि तेऊ पा प्रभु ध
वेया पहें॥ परंतु श्री आचार्यजी को भाव अपने मनमें सदा
या प्रकार को भाव अपने मनमें नाहीं आवत
में विराजत हैं॥ या प्रकार के ध्यानमें योगिजनके तिनको
जानन्तो के सेहु प्रभु योगसाधन करत हैं॥ श्री आचार्यजी मह
अनेक जन्म लों अनेक योगसाधन ... सो प्रभु श्री आचार्यजी
स्वप्नमें हू दर्शन दुर्लभ हैं सो प्रभु अपने गृहमें विराजत हैं
प्रभु की कृपाते साक्षात् अपने ... सावधान ते सेवा करि
अपने मनमें सदा विचार करी ... प्रसन्न होय जाय
मति कहूं अपराध परे तो प्रभु अप्रसन्न होय॥ चिन्तनीयो न वसरे
अब आगे कहत हैं॥ श्लो॰॥ निरोध संसिद्ध सेव्या हाई
वासवेथाधिपा॥ यते निरोध संसिद्ध श्री हरिराइजी कहत हैं
त॥१२॥ याको अर्थ॥ अब श्री हरिराइजी ... सेवा समयमन
निरोधी ... भावात्मक सेवा ... होय तब
सेवा करनो उचित हैं॥ पाछे अनोसर होय ... [illegible]
हृदयमें चिन्तन करनो॥ [illegible]
हिय्वार्य ता भांति सेवा सबेथा अपनो धर्म
सिद्ध सो ता भांति सेवा सर्वथा चिन्तन क
नो॥ ताही भांति अनोसरमें सर्वथा ... निरो
निरोध सिद्ध होइगो॥ जे सें वृज भक्तन को निरो
भयो संयोग वियोग ... अनुभव ... तें सं
मय संयोग की भावना ... अनोसरमें विप्रयोग

हराग्रंथवीसस्लोकको कियेहैं ताभावके अनुसार श्रीह
रिरायजीयह सिक्षापत्रमें निरोधपुष्टिमार्गीयजीवनको
ताभांति सिद्धहोय सोप्रकार सबकहतहैं तातें निरोध
श्रीभागवतदसमस्कंधहै तेसेंहीयहसवोपरनिरोधप्र
कारकहै ॥ २० ॥ इतिश्रीहरिरायजीकृतद्वितीयसिक्षापत्र
तार्थदीपिकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्णं ॥ २ ॥ अब
अपरकहैंजो सेवाहूकरोगे तथा अनोसरमें चिंतनहूकरो
गे परंतु दुःसंगमिलेगो तबएकक्षणमें सगरे धर्मको नास
होयजाय जन्मजन्मको भावदुःसंगतें एकक्षणमें जा
तरहतहै तातें यापत्रमें दुःसंगतें बचेसो निरूपणकरत
हैं श्लोक ॥ निधिप्राप्तसुखरत्नो दुःसंगादि न सदा त्य
जापिलोकसंको व्यथाहानिजलादिभिः ॥ १ ॥ याकोअर्थ
अबश्रीहरिरायजीकहतहैं जो निधिप्राप्तहोय ताकी
रक्षाकर्तव्यहै जैसें काहूकों पैलकोद्रव्य मिल्यो सो गृहद्र
व्यकीरक्षाजतननकरें तोद्रव्यको चोरलेजाय तेसें
हीयहभगवद्भावरूपनिधि श्रीआचार्यजीकीकृपा
तेंप्राप्तभयोहै तानिधिकी दुःसंगतेंरक्षाआवस्यकरी
कर्तव्यहै तामें दुःसंगअनेकप्रकारकोहै लौकिकवि
षयव्यादितथाअन्यमार्गीयकोसंग तथादेहसंब
धीकुटुंबहूतोकिवलौकिककार्यमेंलगसबनतेमनकी
सिद्धमुख्यारखी तहांकहतहैं जो गृहस्थाश्रममेंरहनो
लौकिकवैदिककार्यविनाकैसेंबनें तहांकहतहैं
जोभगवद्सेवापुष्टिमार्गीयधर्मतो अपनेमनतें
स्नेहपूर्वककरे लौकिकवैदिकलोकनकेदिखाइवेके
लीयेकरै सेवासमयसेंवाछ्याहिनकरै सेवामेंलौकि
कबातचीतनकरै तेसेंदामोदरदाससंभलवार श्रीद्वारि
कानाथजीकीसेवाकरते सोजल अपनेहाथकूं पातेभ
रिलावते तबदामोदरदासके ससुरनेकही जो तुमजल

मरनहीं। औ ईमको वे हीन जलपी आवतहैं। तातें तुम जल
तो डीपासभरावैं। तबरामोदरदासनें कही। अबयें
हीकरो। पाछें अपनी स्त्रीसों कहे जो चलो जल लावें
तबस्त्रीभगवदीयहुती। तब वा लरिकेकुं पालनें दीकें जनें
चले जलभरिकें सुसरकी हाट आगें होइकें निकसे।
तबसुसर आयरामोदरदासके पायनपरयो। कह्यो मैं
चूक्यो जो तुमको कह्यो। अब तुम ही जलभरा स्त्रीज
नसेंमति भरावो। तबरामोदरदासनें कह्यो कालि
तें न भरावेंगे। या भांति भगवत्सेवामें लोकसंकोच
सर्वथा नाहीं करनो यहें छोटी बडी सेवा सब भाव श
केप्रेमसों करनो। या भांति दुःसंगको जाननो भग
वद्भाव है सो तो अग्निरूप है। और दुःसंग है सो ज
लभगवद्भाव को नासक है। १। अब औरहू कह
तहैं श्लोक॥ यन्निमज्जा वद्भावः सन्तः गुणविधान
ःनासयत्यसतिय द्रूपात्तथ्य बाहिनो जलं॥ २
को अर्थ॥ भगवद्भाव है सो अग्निरूप है। सो सन्त
जैसे अग्निमें काष्ठ परै तो और हू अग्नि
दै तेजपुंज जैसें ही भगवद्भाव सन्त संग पायकें बढ
तहोय। और भगवद्भाव अग्निमें दुःसंग रूपी जलतें भा
नास होय। जैसें थोरी सी अग्नि होय तामें जल नौंडा
रेहु तब अग्निको नास होय। तहां तोंकि कुमेर है पिन
चलै नाहीं तो कहा करै। दुःसंग रूपी जल सन्त संगरू
अंगारा खें जैसें अग्निको साहात जलको संबंध
तो अग्निको नास होय। और एक पात्रमें जलध
कें ऊपरधरे तो जलको नास होय। भगव:
अग्निको संबंध संगरूप काष्ठनें बढाये जाय
संग जलको पात्रमें धरि अपने हृदयमें अष्ट:
चारकरि दुःसंगको जरायदेइ। तबही बच्यो।

प·
गोवडेवडेभगवदीयदु:संगानेगिरेहैं तातेंदु:संगतेंसबहि
डरपतरहैं अवश्रीआचार्यजी कहत हैं श्लोक जलवल्लौकि
कसंगोतेंसात्त्विकभक्तनि नतु मूलतोनास्यद्भावं यथा
वैश्वानरंजलं ॥३॥ याकौअर्थ यहसंसारमेंलौकिकदु
:संगहै सोजलकोपात्रहिनासात्त्विक भगवद्स्वरूप
अग्निमेंनाहीडारनौं जोसात्त्विकनडारतो वैश्वानरजोअग्नि
तिकोभक्ततेनासहोय जैसेजडभरथस्वामीलौकि
कछोडिभगवत्भजनकोवनमेगये तहांहरनीज
लपीवनआई सोसिंहनादतेगर्भगिरचातिर सो
भरथकोदयाआई यहीदु:संगमिल्यो भगवद्भज
नसवभूलिगये एकहिरनीकेपीछेंतीनजन्मकोअं
तरायभयो ऐसोदु:संगवाधकहै तथाश्रीनंदरायजी
अपनेपुत्रकीरक्षाकरतहुते सोअंविकापूजनगये
तोश्रीठाकुरजीनसहिसके तहांसुदर्शनसर्पआयकें
नंदरायजीकोग्रसलीये तबश्रीठाकुरजीनेछोडाये
तातेंदु:संगअन्यसंबंधसिद्धभक्तहैं तिनकोवाध
कहै जोसाधनभक्तकोलगै तामेंकहाकहनो ताते
दु:संगकोंग्रहजानतो जोहमारेसर्वभावकोनास
हीकरेगो याप्रकारसत्संगतेरक्षाकरे अवश्रीआचार्यजीक
हतहैं श्लोक ॥ अतः सर्वभवेत्यक्त्वालौकिकासक्ति
तोजनो दु:संगमगतः इत्यानास्नीयनचान्यथा
॥४॥ याकौअर्थ अवश्रीहरिरायजीकहत हैं जोलौ
किकासक्तिरूपहै दु:संगतेसदाडरपतेहीरहनो
यहजानिजोजवलौकिकासक्तिहोइगी तवमेंसत्सं
गकरिलेहुंगो ताहीसमयदु:संगमिल्यो ताहीस
मयतत्काललौकिकासक्तिहोय भगवद्भावको
नासहीहोयगो तातेंदु:संगमिलेपहलेहीतसत्सं
गकीयाकरे तवदु:संगवाधकनकरे ताकोदृष्टांत

कहतहैं।जोजीवकेपीछेंकालफिरतहै।जोपहलेतेंसम
रणभजनकरिराखेतोपीछेंअंतकालसमयकालवा
धानकरैजोजानेंअवतोलौकिककरिलेहु।पीछेंभ
गवत्स्मरणकरुंगो।ताकोकालआवेसोएकक्षणमें
खायजाय।तववासमयकछूभगवद्धर्मनवने।तातें
हीपहलेतेंसत्संगहूनकरै।औभगवत्सेवास्मरणहूक
रै।सोजवलौकिकदुःसंगआवे।तवसत्संगकेप्रतापतें
वचजायगो।औरदूसरोउपायसत्संगविनादुःसंगतें
वचिवेकोनाहीहै।यहनिश्चयजाननो।अवऔरहू
कहतहैं।४।श्लोक॥सतांपरोक्षसत्संगजातभावावि
भाव्यता।नक्लिष्टवचोनैवमाननीयंसतोक्वचित॥
प।याकोअर्थ॥अवकरूपकहैंजोसत्संगकरिकेंदुःसं
गनवाधाकरैगो।तहांकोइकहैंजोसत्संगतोहोयघ
रीवनेगो।पाछेंसेवास्मरणलौकिकवैदिककार्यहू
सवकैसोवहियो।तवदुःसंगतेंकौनप्रकारवचेगो।
याभांतिकोकोऊकहैतहांकहतहैं।जोनित्तनेमकरिजे
सेंभगवत्सेवास्मरणकरै।तैसेंहीनित्यनेमकरिकेंस
त्संगएकघरीहोयघरीवनेतितनोहीकरै।पाछेंजव
सत्संगकेपरोक्षमेंजोजोवार्तामार्गकोसिद्धांतसत्सं
गमेंभयोहोय।ताकोस्मरणकरिअपनेधर्मकोहरव
जोश्रीआचार्यजीश्रीगुसांईजीनेंयाभांतिकहेहैं
औरमैंकहांकहतहूं।जोविरोधहोय।तातेंत्यागमेंमन
करें।याप्रकारकेहैं।सोकारणकोमनमेंकरें।याभांतिम
कोंजाकोभगवद्धर्ममेंलगायराखेंगो।सोदुःसंगतेंव
चेगो।जोजोवार्ताभगवदीयनकेमुखसोंसुनिये।तामें
आयदृढविश्वासकरिहेंवातनकीभावनामनमेंकरि
तवमनठिकानेंआवेजैसेंगायवरहेनेंचरिआवतहैं।
घरआयउहांफेरिवैठिकेंचर्वनकरिसवादलेतहैं।

सवैस्रवकोसंगाकैपिहोय । तासमय भगवद्धर्मकोस्रव
णकैसेंपाछुसत्संगकेपरोक्षमेंअपनेहृदयमेंमनकरिके
भावनासोंरसकोआस्वादनकरैं । सत्संगतेविरुद्धवच
नजितनेहें । तिनकोविचारिधर्मअधर्मकोविचारम
नमेंराखे । औरसत्संगतेविरुद्धवचननकहेंजामेंस
त्संगछूटिजाय । ऐसोनकरेंकबहूं । यवस्थाएंकहतहें
श्लोक ॥ भिरतस्यापिदुःसंगोजातोहरिणजातिना । केवलं
कलिदोषाभिःभूतास्वपिजनाःखलु ॥ अ ॥ दु
संगतेमनमेंभयराखे । अपनोकालजानें । काहेतेंदुसंग
दोषहोयतोंहरिजोभगवानसोदूरिजातरहतहें । सो
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुसंन्यासनिर्णयग्रंथमेंकहेहें
विषयाक्रांतदेहस्यः भावेसः सर्वथाहरिः । जहांदुःसंग
दोषकरिदेहविषयाक्रांतभई । तादेहमेंभगवदावेस
निश्चयनहोय । तातेंदुःसंगदोषमहाबाधकहै । औरज
गतमेंमृतप्राणीजोहैंसोसहजहीमेंदोषकरिभरयोहे
काहेतेंयहकलिकालमहाकठिनहें । अपनेमनकों
विश्वासनकरें । जोमेंबहुतसमझतहों मेरोदृढज्ञानवै
राग्यहें मेरोमननोमेरेवसहे यहनजानें । जासमयदुस्सं
गमिलेगो । तासमयज्ञानवैराग्यविवेकधैर्यएकक्षण
मेंसबजातरहेगो । तातेंअपनेमनकोइंद्रीकोंदेहको
कलिकेदोषरूपहीजानें । औरयहजानेंजोसत्संगके
प्रतापतेंमेंबचतहूं । सोजासमयदुःसंगमिलेगो ताही
समयमेंगिरूंगो । ऐसोज्ञानमनमेंजोराखे यहकलियु
गनेंसगरेप्राणीमात्रकीबुद्धिहरिलीनीहे कलिकोदोष
सबकोलग्योहे । सो अब औरहूकहतहें श्लोक ॥ सत्संग
तितेनैवभवितव्यंविशेषतः । अथवासर्वनोमौनंत
द्भावेविधिपतां ७ या ॥ अ ॥ ऐसोजोदुसंगदो
षसर्वधर्मकोनासकरें तिनतेंन्यारोयहजीवरहे

तवहीभगवद्भावविशेषहोय।औरउपायकोईनाहीहैंत
हांकोईकहेजोदुःसंगप्रवलहोय।अपनेवसनहोय।
अपनेघरकेपडोसमेंहोय।तथाकहूजीवकाहोय।तहां
दुःसंगहोय।अथवाअपनेकुटंबमेंहोय।अपनेतेरह
दुःसंगनिवारननहोय।औरजीवकातथाघरमेंरहे
विनातोवनेनाहीं।औरदुःसंगप्रवलहोयतो।नहीं
कहाकरें।तहांश्रीहरिरायजीकहतहैं।जोमुखतोयही
हैं।जोअपनेसमुझावतेअपनेउपायतेदुःसंगछूटत
होयतोछोडाईये।अथवाआपछोडिकेऔरठौरनि
वाहकीजे।औरजोअपनेकाहूभांतिदुःसंगछूटेतो
तहांमोनहोयरहिये।वोलियेनाहीं।जहांअपनेक
ल्यौनहोय।जहांअपनेमनकोभावभगवद्धर्मकी
वातोंकत्वहूनकोंहिये।मनतेमनन्यारोराखिये।काहे
तेंजाकोभगवद्धर्ममेंसुनिवेकीश्रद्धानहोय।तिन
केआगेंभगवद्धर्मसर्वथानकहिये।वाहीतेंभगव
न्मेंभगवद्धर्ममेंभेदनाहीं।एकहीपदारथहै।ता
नेभागवीनकोंअतिक्रमहोतहै।यहविचारदुःसंग
प्रवलहोय।तहांवादनकरिये।मोनरहिये।मनमें
रिसरनकीभावनाकरिये।श्रीआचार्यजीमहाप्र
नीविवेकधैर्याश्रयमेंकहेहैं।दुखहानौतथापाप
यकालायपूरनो।असकोवासुसकोवासर्वथासर
हरिःयाभांतिहरिसरणकीभावनामनमेंकरिव
चुपहोयरहिये।७।अववऔरहूकहतहैं।स्लोक
वृत्त्यन्यथावा।श्रीमायायेवचनाजना।सं
प्रेरकोपि।नतत्संगोदुःसंजनन।८।याकोअप
वकोईकहेजोदुःसंग।अथवाविरोधभगवद्ध
क्तिनकोकाहिये।तहांश्रीहरिरायजीकहतहैं।जै
वल्लभाचार्यजीकेवचननतेसिद्धांततेअन्यथा

सबैस्नवको संग के परिहोय॥ तासमय भगवद्धर्मकौं श्रव
णकरें॥ पाछें सत्संगके परोक्षमें अपनें हृदयमें मनकरिके
भावनासों रसको आस्वादनकरें॥ सत्संगतें विरुद्धवच
न जितने हैं॥ तिनको विचारि धर्मअर्थमें को विचारम
नमें रारवें॥ और सत्संगतें विरुद्ध वचननकहैं तामें स
त्संग छूटि जाय॥ ऐसो नकरें कबहूं॥ ये क्यों रहके कहत हैं
श्लो॥ भिन्नस्यापि दुःसंगजाताहरिणजा तिना केवलं
कलिदोषाभिः भूतांअपिजनाःक्षन्नाः धेया॥ अ॥ दु
संगतें मनमें भयराखें॥ अपनो कालजानें॥ काहेतें दुसं
गदोषहोय तो हरिजो भगवान सो दूरि जातरहतहैं॥ सो
श्रीआचार्यजी महाप्रभुं संन्यासनिर्णय ग्रंथमें कहे हैं
विषयाक्रांतदेहस्य॥ भावेसः सर्वथाहरि॥ जदुःसंग
दोषकरिदेह विषयाक्रांतभई॥ तादेहमें भगवदावेस
निश्चय नहोय॥ तातें दुःसंगदोष महाबाधकहै॥ औरज
गतमें भूतप्राणी जोहैं सो सहजहीमें दोषकरि भरयोहै
काहेतें यह कलिकाल महाकठिन है॥ अपने मनहूकौ
विश्वास नकरें॥ जो मैं बहुत समझत हों मेरो दृढज्ञानवै
राग्य है॥ मेरो मन तो मेरे वस है यह न जोनें॥ जासमय दुःस
ग मिलैगो॥ तासमय ज्ञान वैराग विवेक धैर्य एकक्षण
में सब जातरहेगो॥ तातें अपने मनको इंद्रीकों देहको
कलिके दोषरूप हीजानें॥ और यह जानें जो सत्संग के
प्रतापतें मैं बचतहूं॥ सो जासमय दुःसंग मिलैगो ताही
समयमें गिरूंगो॥ ऐसो ज्ञान मनमें जो राखें यह कलियु
गनें सगरे प्राणीमात्रकी बुद्धि हरिलीनी है कलिको दोष
सबकों लग्यो है॥ दुष्ट और हू कहत हैं॥ श्लो॥ सत्संग
नित्ते निवभवितव्यं विशेषतः॥ अथवासर्वतोमौनं त
दभावे विधिपतः॥ या॥ अ॥ ऐसो जो दुःसंगहै
सो सर्वधर्मको नासकरें॥ तिनतें न्यारो यह जीव रहें

तवहीभगवद्भावविशेषहोय॥ औरउपायकोईनाहीहैत
हांकोईएकहैजोदुःसंगप्रवलहोय॥ अपनेवसनहोय॥
अपनेघरकेपडोसमेंहोय॥ तथाकहूंजीविकाहोय॥ नहीं
दुःसंगहोय॥ अथवाअपनेकुटंबमेंहोय॥ अपनेगेहहै
दुःसंगनिवारननहोय॥ औरजीविकातथाघरमेंरहे
विनातोवनेनाही॥ औरदुःसंगप्रवलहोयतो॥ नहीं
कहाकरें तहांश्रीहरिरायजीकहतहैंजोसुखतोयही
हैजोअपनेसमुझावतेअपनेउपायतेदुःसंगछूटत
होयतोछुडाईये॥ अथवाआपछोडिकेओरठौरनि
वासकीजे॥ औरजोअपनेकाहूभांतिदुःसंगछूटेतो
तहांमोनव्हैरहिये॥ वोलियेनाही॥ जहांअपनेक
थानहोय जहांअपनेमनकोभावभगवद्धर्मकी
वातोकवहूनकहिये॥ उनतेमनन्यारोराखिये॥ काहे
तेंजाकोभगवद्धर्मसुनिवेकीश्रद्धानहोय॥ तिन
केआगेंभगवद्धर्मसर्वथानकहिये॥ काहेतेंभगव
न्नाममेंभगवद्धर्ममेंभेदनाहीहै॥ एकहीपदारथहै॥ ता
तेंभगवानकोअतिक्रमहोतहै॥ यहविचारदुःसंग
प्रवलहोय॥ तहांवादनकरिये मोनरहिये मनमें
हरिसरनकीभावनाकरिये॥ श्रीआचार्यजीमहाप्रभु
जीविवेकधैर्याश्रयमेंकहेहैं॥ दुःखहानौतथापापेभ
यकामाद्यपूरने॥ असक्येवा सुसक्येवा सर्वथासरणं
हरिः॥ याभांतिहरिसरनकीभावनामनमेंकरिके
चुपहोयरहिये॥ ७॥ अवओरहूकहतहैं॥ श्लोक॥ संस्प
र्शनंतथावार्ता॥ मा यायेवचेनाजना॥ संस्प
र्शकोवा वितत्संगोदुष्टसंजन॥ ८॥ याको अर्थ॥
कोईएकहैजोदुःसंग अथवाविरोधभगवद्धर्मके
तिनकोकहिये तहांश्रीहरिरायजीकहतहैं॥ जो
वल्लभाचार्यजीकेवचननेसिद्धांतनेअन्यथाव

५० नमाहें। ताके वचन अन्यथा करि जानने श्रीआचार्यजी
ने विरोध धर्म में बोध कैंप कोवे अन्यमार्ग की रीति
करें तिनको दृष्टि करिके मन में जाने जो याके वचन
माने ते मेरो सर्व धर्म को नास होय जायगो। तातें अ
न्यमारगीयन के पास न बैठिये। अन्य संबंध होय जाय
अन्यमार्ग को धर्म न सुनिये। अन्यमार्ग की क्रिया कछु
न करिये। सो गोविंददुबे की वार्ता में प्रसिद्ध है। एक सम
य गोविंददुबे मीरांबाई के घर गए। तहां मीरांबाई ने आ
दर सनमान करि गोविंददुबे को राखे। सो मीरांबाई भग
वत्भक्त हुती परंतु श्रीआचार्यजी के पुष्टिमार्ग में न हु
ती मर्यादामार्ग में हुती। सो यह बात श्रीगुसांईजी ने
सुनी जो गोविंददुबे मीरांबाई के घर हें। तब श्रीगुसांई
जी एक श्लोक लिखे। भगवन्मद पराग पुष्पान स्पृ
[illegible] तरे मरण विना। [illegible] यातें गजराज पुनी नाहि
समम पुरची कुरूनें। यह लिखिके एक व्रजवासी को दी
ए जो गोविंददुबे को दीजो। सो व्रजवासीने गोविंददुबे
को दीयो। सो गोविंददुबे बांचत ही उठि आए। तातें यह
पुष्टिमार्ग है सो जैसो है श्रीगुसांईजी गोविंददुबे सों क
ही सो हाथी को अंकुस नाहीं करि अवगाहत है ताकी असवा
री को मन भयो है। ऐसो भाव राखि पुष्टिमार्ग तें अन्य
धर्म चलावें ताको ऐसें जानने। जो दुष्टसंग है तत्का
ल ताको त्याग करनो। तब आचार्य कहत हैं श्लो
क स्वकुलरती नित्यवाद्यन्त्रयो जनं निरपेक्षसा
[illegible] सत्संग साधयेत् [illegible]टे। याको अर्थ [illegible] ऊपर कहे
जो अन्यमारगीय को संग न करें तहां को अर्थ कहें जो कि
[illegible] संग करें तहां कहत हैं। जो एक श्रीकृष्ण फलात्म
क भावात्मक व्रजपति तिनमें नित्य प्रीति नो तन प्रीत
होय और अवतार आदि में न होय। ऐसो अनन्यभाव ना

कोहोय॥औरएकश्रीकृष्णजीकेचरणारविंदकीभक्तिदृ
ढ़ावेयहीवोधकरें॥औरहृदयमेंयहीवासनारहैजोश्री
कृष्णकेचरणकमलमेंप्रीतिहीहोय॥औरदूसरोप्रयो
जनमनमेंनहोय निरपेक्षहोय॥काहूकीअपेक्षानरा
खें यहमनमेंजानेंजोएकश्रीकृष्णजीसर्वकर्ताहैं औ
रकोऊनाहीकाहूकोंभगवद्धर्ममेंदिखावे॥अपनीप्रति
ष्ठाअर्थेलोभअर्थेभगवद्धर्मनकरनहोय॥औरसा
त्त्विकहोय॥छलकपटकामक्रोधमदमत्सरताइन्ह
धर्ममेंनहोय॥ताकोंसंगकरें ऐसोधर्मनहोंदेखेंसोभ
गवदीयकोसंगकरें॥श्लोक॥ एवंनिश्चित्यसर्वेषुधी
ष्वन्येषुवापुनः॥महत्कुलप्रसन्नेषुकर्तव्यःसंगति
र्लोयः॥२७॥याको अर्थ॥सर्वऔरतेनिश्चिन्तहोय॥लौ
किकवैदिकऔरदेहसंबंधीअनेकउपाधिगृहकार्य
तमनकरिनिश्चिंतहोय॥भगवद्परायणहोय॥एतन्मा
र्गीयपुष्टिमार्गीयवैष्णवकोंअपनोजानें॥जोश्री
चार्यजीकेसरणआयेहैं॥हमश्रीआचार्यजीकेसर
णहैं येवैष्णवहमारेसंबंधीहैं॥ऐसोजानेंस्नेहवैष्णवप
होये॥तिनकोंसत्संगकरनेंयोग्यहै॥अन्यमार्गीयजीव
वहैं तिनसोंजाकोप्रयोजननहोय॥महत्कुलउत्पन्न
तमेंजन्महोय॥सोसात्विकवड़ेभक्तकुलमेंयसगए
मैं एकश्रीकृष्णजीकीसेवाएकश्रीकृष्णजीकोअप्र
इनहीकोसत्संगमनवचनक्रियाकरिकेंकर्तव्यहै
अथवाश्रीआचार्यजीकेअंगीकृतपुष्टिमार्गीयअना
ऐरनमर्यादासेवाश्रीकृष्णमेंजाकीरतिहोय॥ऐ
भगवदीयकोनिश्चयहीसत्संगकरनोवहें॥२८॥अ
रहंकृतनहें॥श्लोक॥श्रीमदाचार्यचरणौमनसिस
पतस्वतः॥ततएवकृपाकीपानोसिद्धकार्यस्यसर्व
२९॥याकोअर्थ॥श्रीआचार्यजीकेच

...मानंदहोयकरसस्वास्थहोय॥ मनवचनकरि
श्रीआचार्यजीकेचरणकमलमेंताकीबुद्धिहै॥ ति
गकरनो॥ जोश्रीपुरषोत्तमजीकीटीकाश्रीगोकु
जीकरीहै॥ तहांलिखेहैं॥ पद्मनाभदासस्रीखेभ
दीयकोटिकविरला॥ ऐसेभगवदीयकेहृदयमें
चार्यजीमहाप्रभुनित्यविराजमानहै॥ तिनकेसं
सकलकार्यसिद्धहोय भीजोकपराई॥ ताकेसुखे
ताहीकोसंबंधहोय॥ तोउहूंभीजे॥ तेसेहीभगवदीय
कोसत्संगतेभगवदीयहोय॥ ऐसेसकलीयभगवदी
यमिलनेबहुतदुर्लभहैं॥ औरजहांताई ऐसेसक
यभगवदीयकोसंगनहोय॥ तहांतोईकार्यहूंसिद्धन
होय॥ तातेभगवद्सेवानुमरनकरिणे॥ ऐसेभाव
दीयकेमिलिबेकोनापराधिरे॥ तोश्रीआचार्य
जीकृपाकरिके निश्चयमिलावें॥ तबश्रद्धापूर्वकहेम
होयउनकोसंगमनलगाइकेकरिये॥ जबवेभगवदीय
प्रसन्नहोय॥ कृपाकरिपुष्टिमार्गकोप्रकारलीलाभा
वबतावें॥ तबसबकार्यनिश्चयसिद्धहोय॥ ताहीतेंश्री
आचार्यजीमहाप्रभुनवरत्नग्रंथमेंआपुनिरूपनकी
रहै॥ निवेदनंतुस्मर्तव्यंसर्वथाताद्रसैर्जनैः॥ निवेदन
कोस्मरणताद्रसीवैष्णवसोंमिलिकेकरें॥ तोमारग
मेंस्फुरहोय॥ तातेंसत्संगहीअवस्यकर्तव्यहै॥ १॥ अव
औरइकहतहैं॥ श्लोक॥ अवैष्णवत्वेनेनत्वंनहिसुर्धन
स्वापिजीवेषुदोषवस्थाय तथातासामपवसुधु॥ २॥
॥ अर्थ॥ ओवकहतहैं॥ वैष्णव अवैष्णवकेसंजानि
सोतद्धनवकहतहैं॥ जोयहश्रीआचार्यजीनेंपुष्टि
मार्गप्रगटकीयोहै॥ श्रीगुसांईजीप्रकासकीयोहै॥ सोन
वलीमेंनामकेहेहैं॥ पुष्टिमार्गप्रवर्तकायनमः॥ यह
आचार्यजीकोनामहै॥ पुष्टिमार्गप्रकासकायनमः

यह श्रीगुसांईजीके नाम ॥ जो कोई पुष्टिमार्गकी रीतिसों विरु
द्ध आचरण करें ॥ ताकों अवैष्णव जानिये ॥ जो कोई पुष्टिमा
र्गकी रीति हैं ॥ तामें मान घटत हैं ॥ तिनकों वैष्णव जानि
ये ॥ काहेतें शुद्ध जीवसों अशुद्ध क्रिया बने हैं सो जीवती
न प्रकारके हैं जगतमें हैं सो पुष्टिप्रवाह मर्यादा ग्रंथमें
श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कहे हैं ॥ इच्छामात्रेन मनसा प्रवा
हसृष्टिं चकार ह ॥ वचसा वेदमार्गं हि पुष्टिं कायेन निश्चय:
श्रीठाकुरजी इच्छा करिकें मनतें सृष्टि प्रगट करी है सो प्र
वाही सृष्टि हैं ॥ वाको मन चंचल है भगवद्धर्ममें नाहीं ल
गे ॥ सदा दुष्टाचरण ही करें और वचन करिकें श्रीठाकुर
जी सृष्टि प्रगट करी है ॥ सो वेद कर्ममें लागी मर्यादा धर्म
में आसक्त है और श्रीठाकुरजी अपनी कायातें सृष्टि
प्रगट करी है सो वेदकर्ममें लागी ॥ सो पुष्टिजीव हैं ॥ तनसों
भगवद्सेवा ही बने ॥ या प्रकार तीन प्रकारके जीव हैं तो
तातें जो जीव दोषकरिकें भरयो हैं प्रवाही हैं तेसें ही
दुष्टाचरण करत हैं ताको अवैष्णव ही जाननो ॥ १२ ॥ स्व
धर्मो रहस्य कहत हैं स्लोक ॥ श्रीवल्लभश्रीमदाचार्य
तथा श्रीविठ्ठलेश्वर ॥ तथा लीलास्य सामग्री नैन तत्सं
पन्नदा च न: ॥ १३ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्रीहरिरायजी पु
ष्टिमार्गीय जीवनकों सिक्षा करत हैं ॥ जो यह भाव अह
निश मनमें राखियें ॥ अलौकिक पदार्थमें लौकिक बु
द्धि आवे तो वाको सर्वस्व नाश होय सो यह कहे हैं ॥ श्री
वल्लभ और श्रीवल्लभाचार्यजी और श्रीविठ्ठलनाथ
जी तथा लीला सामग्री सेव्य जन ता आदि श्रीआचा
र्यजी के पुष्टिमार्गीय सेवा सामग्री सब अलौकिक जा
ननी ॥ श्रीवल्लभ साक्षात् फलात्मक भावात्मक रसात्म
क श्रीयसोदोत्संगलालित सर्वांग सुंदर व्रजभक्त
सर्वस्व जीवनधन ॥ सोई श्रीवल्लभ अपने दैवीजीवनके

व.प.
8

उद्धारार्थ श्री आचार्यजी महाप्रभुजी को प्राकट्य है सो विव
अलौकिक प्रि रूप सों अलौकिक मार्ग प्रगट कीनो सो ई
श्री आचार्यजी आपनो दूसरो रूप श्री गुसांईजी को धारन
करि पुष्टिमार्ग को प्रकास कीयो जेसें श्री कृष्ण बनारसे
अनेक सिंगारी लीला सामग्री अलौकिक जाननी श्री कृष्ण
अलौकिक श्री नंदरायजी यसोदाजी आदि सब अलौ
किक बाललीला सखा में मग्न हैं सखा ग्वाल ये अलौ
किक सख्य भाव में मग्न हैं गोपीजन में अनेक प्रकार ह
ते स्वामिनी आदि को मुख्य श्री स्वामिनीजी वृषभानसुता श्री
यमुनाजी इनके पृथक अनेक सखी ये सब अलौकिक
श्री गिरिराज स्थलादिक पशु पक्षी वृक्ष भूमि गुल्म ल
ता औषधी निकुंज आदि ये सब लीला सामग्री आभू
षण वस्त्रादिक सब अलौकिक ते सें ही यह श्री आचा
र्यजी श्री गुसांईजी के पुष्टिमार्ग में सेवा प्रकार वरस
दिन के उत्सव नित्य सेवा के प्रकार सामग्री आभूष
ण वस्त्र सिंगार नवड पाट पिछवाई निज मंदिर म
णिकोठा तिबारी डोल तिबारी रसोई घर पानघर फूल
घर सामग्री घर भंडार चौक सेवक की नैनी आदि सब सा
मग्री सेवा संबंधी पदार्थ अलौकिक जानिये इनमें
भावात्मक पदारथ अलौकिक जानिये इनको भाव
सब जानिये इनमें लौकिक बुद्धि करनो महा अपरा
ध है यामें कछू पुष्टिमार्गीय सेवा करें पर मन यो
ग्य मन जैसा है सो आगें श्री [illegible] में कहत हैं श्लो [illegible] य
कृष्णाश्रित पुरुषों को नहिं [illegible] नैसुर्यादि
[illegible] बलाप नहिं दुखवतु नाम ध्याया को अ [illegible] घवको
पूर्व सव रजो सेवा सामग्री जु अस्थ अलौकिक लता
यो सोतु मत्र पत्नी युत सो कहत नहीं बिक हूं ग्रंथमें का
हूं सो सुनी हुई यामा तिको है सो तहां श्री हरिरायजी य

रिवैंतुमसोंकहतहैंजोयहवाततौअपनेचित्तमेंस्था
पनकरियौ॥सदाकबहूकोऊकालमेंभूलिकैंलौकिक
मतिजोनकियौ॥औरयहभावकाहूकेआगेमतिकहियौ॥
तुमारोअंगीकृतजाकोगुरुहृदययहसमझैंदृढश्रीआ
चार्यजीश्रीगुसांईजीकेचरणकमलमेंविश्वासहोइ
तिनसौमिलिकैंअलौकिकपदारथकोविचारकरनोअ
रुऔरविमुखजनजाकीलौकिकबुधिहै॥तिनप्रति
कबहूअलौकिकपदारथकोवाचकहियौ॥तहांकोइ
कहैजोसमुझेनाही॥ताकेआगेकहियेंनाहियहां॥न
तुमकेघोनकहियेनाकोकारणकहा॥याभांतिकोइ
कहैंतहांकहतहैंश्लोक॥सांमुख्यबोधनेनैवजा
यतेवाह्यधर्मतः॥एकोपिहिअसुहृदःसर्वनाशस्यतिधुव
१५॥याकोअर्थ॥औरवेआगेंअलौकिकप्रकारहैंसोन
कहनो॥याप्रुष्टिमार्गमेंभगवदीयबिनाअन्यहैंतिन
कोंकहियेनाअपनोधर्मजाय॥औरवेआगेंअवस्य
कछुकहनकेप्रकारसंयोगसोपवनतौजानवेरान
कोप्रकारवाहिरीजियें॥अलौकिकनाकोप्रकास
नकरिये॥काहेतेंअपनेहृदयकोधर्मवाहिरप्रकास
करेंतोवाह्यधर्मरसजातरहैहृदयनेप्रभुजानरहैं
तातेंमुख्यधर्महै॥सोवाहरप्रकाससर्वथाहीनकरनो
काहेतेंएकवेरायहऐसोजीवमेंदृढहै॥जोविवेक
बुद्धिअलौकिकमेंसोयहसबधर्मकोनिश्चयहीनास

करतहैं सो अलौकिक महारथ ...
कोईकोटानकोटि मैं कोई एकको अलौकिक बुद्धि सब ब
...री वस्तुकी लीला मैं देखैगो सगरी ... अलौकिक बुद्धि हो
ताको लौकिक क्रिया ... नाही तातें यह लीला मैं देखैगो
महानुभाव मैं ... है जो लौकिक ... तातें यह एक दोष
... मैं हैं तिनको सबंध धर्मको नास है कछु ... लौकिक बुद्धि कैसै कि
... या प्रकार पुष्टिमारगमें हैं तिनको श्री आचार्य जी
...ने भाव उत्पन्न होय सो स्वरूपानंद को अनुभव ...
... सो ... आश्रयमाभिर्वचनि ... नेनिरपेतो ...
... सें ... हैं न सर्वथा ... चित्त धीरन ताये ... हरिगान ...
... जीव ... पनै सो ... श्री गोपेश्वर जी
... ने ... यासि ... पत्र सें ... करतहैं तामें कहतहैं जे
... ते इन ... हम अनुभव को लिखेहैं सो तुम यह मति जा
...नो ... के संबंध करिकै लिखे हैं अथवा कछु
... भावना मन में सो ... है तुम
... श्री महाप्रभुजी की ... निरपेक्ष भाव सों लिखे
... अलौकिक भाव होय सो ... विराजत हैं सेवा सौ
... याते लिखे हैं तातें जो तुमारे चित्त मैं ... अनुभव
... प्रकारके हैं सो यह चित्त मैं निश्चय धार
... विजोग ... कोई के ... प्रकास क
... पदारथ ... नाहीं यह मार्ग श्री आचार्य ज
...प्रभुजी को है सो भावात्मक गोप्य है तातें स्ने
... चित्त में ... भाव को धारण करो गे जी

[illegible]

... सेंगा को ... नहीं तावे ... २ अब ऊपर कहें सत
... भावात्मक ... हृदय मैं भगवान प
... लीला ... मैं है ... विरह धर्म आश्रय है

तिनके स्वरूपकौं ज्ञान होय ॥ सो स्वरूप सब आगें सिद्धं
नपूर्वक निरूपण करत हैं ॥ श्लो ॥ ॥ प्रमोधमें श्रुति प्रोक्तं ॥
तथा भागवतेपि च ॥ अप्राकृतास्वरूपेषु नित्य भिन्न
न रूपक ॥ १ ॥ याकौ अर्थ ॥ प्रभुजो श्रीठाकुर हैं तिनके धर्म हैं
सो श्रुतिमें सगरो विस्तार करिकें कहे हैं ॥ और श्रीभाग
वतमें हू प्रभुके परिधर्म सब कहे हैं ॥ सो श्रुतिके श्रीभागव
तके दोऊ वचन प्रमान जानने ॥ जिनके हृदयमें श्रुति
के वचन और श्रीभागवतके वचन प्रमान नाहीं हैं सो
जीवको आसुर मानने ॥ जिनके हृदयमें श्रुतिके वच
न और श्रीभागवतके वचन प्रमान हैं तिनको सुद्ध
जीव दैवी जानने ॥ सो श्रुति हू भगवानके स्वरूपको अ
प्राकृत कहे हैं ॥ सो अप्राकृत और प्राकृतमें यह न्यारो है
है ॥ अप्राकृत है सो सगरो एक रस है जामें नाहीं है और प्रा
कृत है सो त्रिगुण मायाके गुणनकी प्रवेस जामें माया हू तो गुणनकौं धर
त है ॥ सो माया जन्य है ॥ कालपायकें नष्ट हो
य ॥ समय दुःख सुख सब लगे हैं ॥ तातें प्रभुको स्वरूप अप्र
ाकृत जानने ॥ यह प्राकृत जानने ॥ अप्राकृत स्वरूप प्रभुको जान्यो
कैसें जान्यो जाय ॥ अप्राकृत स्वरूप प्रभुको ज्ञान होय
नौ ॥ जब प्रभुके स्वरूपमें और नाममें दृढ निष्ठा होय
ठाकुरजीके स्वरूपकी सेवा करे बिना रह्यो न जाय ॥ और श्रीठाकु
रजीके दरसन बिना रह्यो न जाय ॥ और श्रीठाकुरजीकी लीला सम्बन्धी
जीके नाम श्रीठाकुरजीकी लीला ॥ जो श्रीठाकुरजीके
नाम बिना रह्यो न जाय ॥ सब जानिये ॥ जो श्रीठाकुरजी सम्बन्धी धर्म सगरो
रूपमें निष्ठा भई श्रीठाकुरजी सम्बन्धी ॥ तब जानिये यह जीव
मनें दृढ लगो है ॥ श्लो ॥ कर्त
प्रभुकी ॥ १ ॥ सब और रूप कहत हैं ॥ श्लो ॥ ॥ आपदाम
सब रूपत्व सर्वाधारत्व मुख्य को ॥ आपद
साधर्मो यात्रुतिह्येन ॥ २ ॥ याको अर्थ ॥ श्री

वि.प.
२६

तिन्सौं श्रीभागवत प्रभुकौं स्वरूप हैं तरूपतियाकह
जो जो श्रीठाकुरजी चाहिये सो रूपकौ धरि लेहें यापतें
तानके सुख देनाथैं सो श्रीभागवत में प्रगट दिखा
हैं तव हृदयारूढ़ सबजीव हितार्थकौं वोहोत दुखदीय
तव प्रभु नरसिंहरूप धरिके हिरनाकुसकौ मारि प्रह्ला
दकी रक्षा करि लीनी श्रीयसोदाजीकौं सुखबालभाव
हे तिनकौं बालक होय पलना में झूलत हैं और
भक्तनकौ पतिभाव है तातें उनकी रात्रि दान मानम
चनहूं करत हैं एककौ भाव छिन्न सर्वलीलाकरि
कहूं तें सर्वके आधाररूप मुख्य श्रीलक्ष्मी हैं केतक
थाते सर्व सामर्थ्ययुक्त हैं सगरे व्यापक
हैं सव ठौर श्रीलक्ष्मीजीकी सत्ता है और सवतें न्यारे हैं
यहीविरुद्ध धर्माश्रय सो सबमें हैं और सवतें न्यारे या
भांति वेद पुरान श्रुति श्रीभागवत में गायो जकौ स्व
रूप जो लिख्यौ तिनरूपनकौ जो हैं सो ब्रह्म और हैं कहत हैं
सो मन ॥ और या यथा जो नर गाथ श्रीभागवत तथा ते
यथारूप में देनमर्यादा पुष्टि में देना ॥ और या कौं यथा
यथा श्रुति सो श्रीभागवत में यथा भावकौ स्वरूप कह
तहैं एक भावलौं किंचिद्यथा नादि हैं प्रभुकौ आपको सव
कौ आधाररूप सो मर्यादा भक्त यथा यथा जाति भजन क
रत हैं श्रुति वेद तें नकरत हैं प्रेमलक्षणा विशेष आहि
के यथा भावसौं भजन करत हैं सो मर्यादा भक्त हैं और
प्रभुके अंतरंग भक्त हैं सो स्नेहभावसौं भजन करत
हैं जे हृदयस्थ सो रावजन भक्त ये पुष्टिभक्त हैं सो श्रीठाकुर
जी रस की हैं भक्तनके भाववारि न्यारे न्यारे हैं सो श्रीभा
गवत में कहे हैं जब अक्रूरजी श्रीठाकुरजी कौं मधुपुरी में
पधराय के लेगए हैं तहां जो जैसौ भाव हतो ताकौं तैसे
ई दरसन भये कंसकौ वैरभाव हतो तातें काल स्वरूप प्रभुकौ

देखे।गोपीजनपरमतत्वदेखे।मथुरास्थभक्तस्त्रीजनपरम
कोमलसुकुमारबालकरूपदेखे।जहांजेसोभक्तकोभाव
तहांश्रीठाकुरजीताहीभावसोंविराजतहैं।मर्यादाभक्त
ऐश्वर्यभावसोंआराधनकरतहैं।यहजानतहैं।प्रभुको
मुखप्पासनाहीकोटिब्रह्मांडकेकर्तापालनकरोसंघा
रकरें।तिनकोंहमकहादेहिंगे।प्रभुहमारीरक्षाकरतहैं।
यहभावतिनकेसोंप्रभुकछुमांगतनाहीं।औरपुष्टिम
क्तहें।तेदयसोंसहजभक्तआदिइनकोस्नेहभावहेंजो
रक्षणमेंमुखहोइगो।सोतउभलागतहैं।तहांश्रीठा
कुरजीमार्गकेअंगीकारकरतहैं।सोश्रीभागवतमेंभ
लिद्धहीनिरूपणहै।ऐश्वर्यभावमेंमर्यादारीतहैं।स्नेहभा
वमेपुष्टिरीतिहै।याभांतिस्वरूपभेदन्यारेन्यारेरसकों
अनुभवहें।सोदोऊमार्गप्रसिद्धिहैं।अरुवश्चौरसकहत
हें।श्लोक॥ सर्वेपिविभिद्यंते इतिश्रीमद्भागवते च॥ अंत
पुष्टिमारगीयअंतरंगविशेषयन॥४॥याकोअर्थसर्वसें
व्यापीहैं।भगवानसोसास्त्रपुरानश्रीभागवतमेंकहतहें
औरश्रीसुबोधनीजीआदिग्रंथनमेंश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुसर्वव्यापकप्रभुकोंकहेहें।परंतुअंतरंगपुष्टिमारगीय
भक्तनकोभावसर्वोपरिहें।काहेतें।रानीहें तथामर्यादा
मारगीयभक्तहें।सोसर्वव्यापकभगवानकोजीतिभजनक
रतहें।तिनकोस्वरूपानंदकोअनुभवनाहीहें।केवलमो
क्षकेअधिकारीहैं।औरपुष्टिमारगीयभक्तहें।सोसर्वोप
रिहें।श्रीठाकुरजीकेअंतरंगीसदासेवाशृंगारभोगआ
दिकरीस्वरूपानंदकोअनुभवकरतहें।तिनतेएककु
णश्रीठाकुरजीन्यारेनाहीरहतहें।यहपुष्टिभक्तविशेष
करिसर्वोपरहें।७।याअर्थकोंअरुकहतहें।श्लोक॥ विरुद्ध
मत्स्यत्वंस्वमुखायविद्यायते प्रभुः कुमारवत्सलीव्
जेमात्रपदांबुजा॥ याकोअर्थ।प्रभुकोस्वरूपप्रभुविरु

द्ध धर्माश्रय हैं. यह प्रकार भगवानको अवश्य हृदयमें क
रनो. वैष्णवको मुख्य धर्म यह है जो प्रभुको विरुद्ध धर्माश्र
य जाने. काहेतें जहां तांई प्रभुकी लीलामें असंभावना
विपरीत भावना होय सो भक्तबीजको नाश करै. ताको
प्रकार कहत हैं जो प्रभुकी लीलामें संदेह आवे ताको ना
[illegible] लीलामें कछु छोटीसी प्रभुकी होय अरु गुणको वी
[illegible] जैसो [illegible] जो रह जाय. और होय अरु गुणहीय
है याभांति असंभावना [illegible] यह न जाने जो प्रभु विरुद्ध
धर्माश्रय हैं. याही [illegible] रंग. और अनेक भांतिकी विपरीति
भावना होत है. जो प्रभु [illegible] के लीये [illegible] नकी योगा
नाहि लीलासें [illegible] प्रभु कहा करत हैं याभांति प्रभु
की लीलामें दोष बुद्धि आवै. सो विपरीत भावना. सो यह
असंभावना और विपरीत [illegible] जाय. जब श्रीठाकुरजी
को विरुद्ध धर्माश्रय जाने. प्रभु बालविहार वैष्णवको
[illegible] प्रभु [illegible] पांच बरषके परम सुंदर श्रीयसो
दाजी माताके अंकमें विराजत हैं. और प्रभु [illegible]
[illegible] करावत हैं. प्रभुको सगरी ली
[illegible] जैसे प्रभु [illegible] हैं. तैसे ही प्र
भुकी लीला [illegible] गवर्धन धरत हैं [illegible] श्री
[illegible] जो [illegible] है जो [illegible]
[illegible] श्रीभागवतमें नि
[illegible] याको [illegible] खिके पोग
[illegible] लीला कहे हैं जो [illegible] लीला [illegible] रा खिके पोग
[illegible] को माता जहत है जे प्रति
[illegible] मनुष्यको बालपनो [illegible] पाछे [illegible]
[illegible] श्रीठाकुरजीकी का
[illegible] लीला [illegible] लीला करत
[illegible] विरुद्ध धर्माश्रय प्रभुको जानतो नाही तो श्रीभा
[illegible] श्रीशुकदेवजी कहे हैं जो [illegible] लीला राखे दूसरी

लीलाकीरीत॥याश्लोककोव्याख्यानश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुश्रीसुबोधनीजीनिबंधसमार्थविषैवर्णनकरिकीयो
हैं॥कोमारंजहनुर्व्रजे॥औरनित्यलीलाठाकुरसपाद
नकीरीत॥ताहीभांतिपुष्टिमार्गमेंश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुसेवाप्रगटकीयो॥वरषकेवरसजन्माष्टमीदानरास
होरीफूलमंडलीहिंडोरासबनित्यलीलाकोअनु
भवसोलानहोतहै याभावतेवैष्णवनित्यलीलाकी
भेदजानिस्मरणभजनकरो॥२॥यवऔरएककहतहै
श्लोक॥व्रजराजकुमारस्य कुमारीचाभावधरि॥ गवां
रसरूपासस्तत्रगृहाविन:सर्वतावन॥अथाकोअर्थ
तातेंव्रजराजकुमारप्रभुयातेंहैं।जोकुमारीजोसोरहवरजा
रअस्तिकुमारिका।पाचपांचवरषकीहें।इनकेभावनी
यभावनामेंपात्रवरस्थकेप्रभुहें॥काहेतेंरसशास्त्रमें
यहकहेहैं जोजैसोभावस्त्रीकोहोय तैसोईपतिहोय
तवरसविशेषहोय॥तातेंकुमारीकेभावनीयरूपवे
पकीभावनाप्रभुमेंकरतहें॥तातेंकुमारीकोप्रभुकुमा
रूपसोंभावकीवृद्धिकरतहैं॥औरग्यारहवरषकीली
लाव्रजमेंपराहें॥तामेंबाललीलातेंपोगंडकिसोर
सवहीकरतहैं॥कुमारिकानेंगूढभावसोंकात्यायनीको
अर्चनकीयो॥गूढभावतेंछिपायकें।यातेंकीयो।तोहमी
रभावकोंनदुरायथसोराजीआदिव्रजमेंकोऊनजा
नेकाहेतेंगूढभावप्रगटभयेतेंरसजातरहतहै॥तातेंऐ
वसोछिपायकात्यायनीकोअर्चनकुमारिकानकीयो
ताकरिकेंश्रीठाकुरजीकोअपनेवसकीयो॥कुमारीको
गूढभावप्रभुजानिचीरहरणकरिसवांगरसनकरिके
तोविकटदेहसंपादनकरवायो॥पाछेवस्त्रदैअलौकिक
करिकेंदीयो॥वरदानदीयोजोसरदरितुमेंरासकरिकेंमु
रमनोरथपूरणकरेंगो॥सोरासमेंग्यारहवरषकेकुमा

तेकि सार वस्तु को धारि कैं जैसो जैसो मनोरथ कुमारीन को
तौ॥ सो सब पूरन कीयो॥ या भांति गूढ भाव सो कात्यायनी
को आराधन करि प्रभु को वस कीयो कुमारिका॥७॥ अब श्री
पूरन कहत हैं श्लो॥ एतद्वयं मिश्र रूप कुमारा के वखोर
रा॥ मग्न प्रपितर्य वा स्त्रीयतौ गोप्य कुमारिका॥८॥
या॥ व्या॥ या भांति दोय वाक्य हैं॥ दोय प्रकार को भाव है
श्रुति वाक्यन ते चैश्वर्य भाव श्रीभागवत के वाक्य ते कु
मार सो मिश्रित रूप दोय रूप प्रभु के॥ सो केवल कुमार रूप
हरि कुमारिका के भाव कहे हैं॥ यद्यपि प्रभु की स्थिति
सगरे हैं॥ परंतु गोप्य कुमारिका के पास ही रस रूप प्रभु हैं कुम
रिका के भाव विना रस रूप प्रभु हैं नहीं ना ही है॥ काहे ते भा
वात्मक रस रूप प्रभु पात्र विना प्रगट रस रहे नाहीं ता
ते भाव रूप पात्र कुमारिका हैं॥ ता ते कुमारिका के पास एवं
भावात्मक प्रभु हैं॥ अब और हू कहत हैं श्लो॥ एवं
मानी रस स्वरूप रास क्रीडादि करि रूपि णां विरुद्ध धर्माश्र
य त्व बोधाय बहिर्युक्तं तौ॥ टी॥ या॥ व्या॥ सो रास ली
ला में ही पास है॥ रसात्मक प्रभु कुमारिका के ही पास है सगरे
नहीं जो रसात्मक प्रभु कुमारिका जाय श्रीठाकुर जी सगरे
मे वर्णन है॥ जो वेणु प्रवर्णन को सो भगमद भये
जन करा॥ नौ॥ रमणा कीयो तब सब जन को सो मदन भयो ग
वाकेँ प्रभु कुमारिका गुण गान तीन तिन को लेके पधा
रे श्रीठाकुर जी सो गुण गान तीन कुमारिका को तब हां ते तरुयान
पाछे बन हू को सो भगमद भयो॥ तब कहां ते जो प्रभु हृद
य के रुप गुण गान लीला भक्तन के हृदय में पधारे जो भक्तन की
न है यह तो केवल रागे रस मील व स्या भक्तन की
जाय मोजन कुंज तीन कुमारिका ने बाहर प्रग
मुखो नहि रवि नाही रस मय प्रभु खाय के गिरी सो
वैदोऊ भुजा सो उठयो है॥ तब उद्धव भक्त बोल ली
रमण प्रेष्ठ का सिद्धांत महाप्रभुजी॥ या स्यास्य रूप

सर्वदर्शनसंनिधि॥ तुमपासतो होउछायमहाप्रभुजी
कीनी तो अवदर्शनदेहु॥ पाछे सगरे भक्तघाइ केरिपुलिन
में गुनगानगायपाछें निःसाधनदीनारूदनकीयो॥ तब प्र
भुजनहीके भीतरतें बाहिर आगे॥ तातें कुमारीके पासही
प्रभु हैं औरस्वरूप आपुन ऐश्वर्यधर्मताकें याभांतिवि
रूद्धधर्मकहिकें आश्रयको बोधकीयो॥ सो वे स्वरूपको ज्ञा
न अवस्यजानोचाहिये॥ दोय स्वरूप होय रहतहें॥ तोक
हेंहि पुष्टिमारगीयतत्त्व ग्रंथतें गुडो गीतगोविंदाद्य
यद्यपितत्त्वनिरूपनै॥१४॥ याको अर्थ॥ नहांकोउएवहै
जो कुमारिका पुष्टिमारगीय हैं यसुस्थितियकें जानतो
कुमारिकाके धर्मजनकाइदे॥ तब जानिये पुष्टिमारगीय
धर्मआयो॥ ऐसो दृढ आनिमपुष्टिमारगहे॥ तातें यह निस
कुमारिकाके भावकी भावना मनमें करनी जनकी राम
सिकी रीत कुमारिकाकी कृपातें भावजबदृश्यादृढहो
इगो॥ तब प्रभुकों अनुभव होइगो॥ यह पुष्टिमें निश्चय
स्थि कुमारिकाके भावकी भावना मनमें करिये॥ सो श्रीआच
र्यजीके पुष्टिमारगमें जनहीके भावकी सेवा होय यहजा
नि रीतिसों सेवा करियें॥ श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी
के चरणकमलको आश्रयकें जनके भावस्वरूप पि
ताप्रत्रकों जानि तें गीतगोविंदमें मानादिक विह
रजयदेवनें कुमारिकाके भावकी लीला स्वजानने
याप्रकार प्रभु कुमारिकाके वस हैं॥ याप्रकारस्वजभ
नसंगरसपरवसहें॥ सो रसके ग्रंथ अनेक हें॥ तामेंग
नगोविंद आदिमें सबकथा गें॥ सो कुमारिकाकी लीः
याप्रकार मनमें जानि भावना करनी॥१८॥ अवश्रा
कहनें हें श्लोक॥ अन्यथा नंदवदनं तादृक्स्युत्पत्त
थं अनन्तु पुष्टिमारगीयदिरुधगुणसमयथा॥११॥ य
अर्थ॥ नंदरायजीके वचन सत्यजानने॥ काहेतें ह

प. १ रिकागोडदेयनेत्यारो नंदरायजी सोकेसवेदेनाथे
सोवेपुष्टिमारगीयहुती तातेप्रभुकीसेवामेलागी
तबनंदरायजीकेस्वको नाहीदीयो कुमारिकाकीबहु
तसराहनाकरी पुत्रकेसवार्थघरमेराखे सोश्रीनंदराइ
जीकेघरमेंबडेबडेगाइसीनंदराइजीके रतहकीसराहना
करतहे सोनंदरायजीकुमारिकानकीसराहनाकरतहे
तातेकुमारिकाकोलेहेभावनंदरायजीसोअधिकहेंतो
तेश्रीठाकुरजीकुमारिकाकेवसहें एसोपुष्टिमारगसबो
परहे तातेश्रीकृष्णभावात्मकरीतसोसदा विराजतहें
सोपुष्टिमारगमेंप्रभुविरुद्धधर्माश्रयस्वरूपसोंविराजतहे
अबआगेश्लोकमें विरुद्धधर्माश्रयकोभावप्रकासकी
वेकोकहतहे १६ श्लोक ॥ रसमारगीयधर्मास्तु तेनाथ
याविलक्षणा वालो रसिकभई तत्स्वरूपोनपुसःसदा
१२ ॥ याको अर्थ रसमारगकी रीतिमें मर्यादामें विरोधहे
औरपुष्टिमें विरोधनाही पुष्टिमें विलक्षणरीतिहे सो
कहतहें श्रीरामचंद्रजी [illegible] मेंधर्मस्थापनकीरी
तिहे तातेयेकपत्नीव्रत औरश्रीकृष्णावतारमेंसमस्त
व्रजभक्त गोपभायोसोरसमार्गधर्मकोस्थापनहे और
रलीलाकेरसमेंजहांरसमार्गरससास्त्रबखानतहे तहामर्या
मारगमेंविरोधहे काहेतें रससास्त्रमेपरकीयामेंरसकहत
नभावहे सोजहांपरकियारसणभयो तहांधर्मस्थाप
ननाही औरजहांधर्मस्थापनसास्त्रमेवर्णनहे त
हांपरस्त्रीकेमनकरिकेरमणविचारनोदोषहे य
हमर्यादामारगकीरीतिहे औरपुष्टिमारगमेंश्रीठाकु
रजीविराजतहें सोसगरधर्मनकोस्थापनकरतहेंऔर
समस्तव्रजभक्तनसोंरससास्त्रोक्तरमणहूकरतहें यहू
विलक्षणताहे यहविरुद्धधर्माश्रय औरपुष्टिमार्ग
मेंश्रीठाकुरजीबालकहेंपलनाझूलतहें औरपरम

रसिकनके मुकटमणि श्रीमहाप्रभुके षोडसग्रन्थके रा
के कारन वांछित हैं। अपने वस ई कोटानकोटि भांतिके
साधन कोई करो। अनतारि सिवादिक यादि कोटानकोटि
वरसते साधन करते हैं। कछु वस्य ओन होत हैं। वेदने न
नेत कहत हैं। कारनके वस प्रभु नाहीं। औ भक्तनके वस
रहे हैं। श्रीयसोदाजी भक्ति करि बांधे हैं व्रजभक्तनके स्व
राधाधीन हैं। भगवान इन हैं सो अन्तर न्यैन पथ आजानन
नाहीं। यह विरुधधर्माश्रय जाननो। अब औरहू कहत
हैं श्लोक। अभीतः सर्वथा भीतः सोपेक्षी निरपेक्षकः।
चतुरोऽपि महामुग्धः सर्वज्ञो पर एव च ॥ ३ ॥ याको अ
र्थ। प्रभु कैसे हैं अभीत हैं भय करि रहित हैं काहे
कालके कालते हैं। श्रीवक भृकुटी विलासतें कोटानको
टि ब्रह्माण्डको करैं संचय भृकुटी विलासतें कोटानकोटि ब्र
ह्माण्डको करैं नास है कूल सगरे खलगाड़ डरपत रहत हैं। तिन
को भयको लेस नाहीं है। और भय संयुत हैं। सो श्रीठकु
रजी जब माटी खाई तब श्रीजसोदाजी लकुटी लेके डरप
वत हैं जो माटी कों खायौ तब श्रीठकुरजी डरके रहे
ने ऐसे नैन मलमलिके कहत हैं मैं यामें माटी नाहीं खाई
या भांति भक्तसों डरपत हैं। और व्रजभक्तनसों डरपत
हैं जो ये अप्रसन्न होय। के बहुमान मति करें ऐसे प्र
भु हैं। और प्रभुको काहू वस्तुकी अपेक्षा नाहीं है अरु
एक लक्ष सारिखो घर है। लक्ष्मी सारिखी रानी। कौस्तुभ
मनि आभूषण इत्यादि सब अलौकिक पदारथ तिन
को कहा अपेक्षा है माया सारिखी दासी सर्व एक क्षण
में सिद्धि करे ऐसे निरपेक्षी हैं और भक्तनकी रंचक
वस्तु होय ताकी लेवेकी अपेक्षा हैं। व्रजमें यसोदाजी
तथा व्रजभक्तनसों नवनीत आदि दधि लौना आदि
के लीये प्रार्थना करत हैं। और प्रभु चतुरसिरोमनि हैं। को

प.
हित्रं सोऽसमैं जो कोई भयो है॥ ऐसा चले तिनको हेडल
॥ लाकी त्रियामन को भाव सब को जानत है॥ और भ
क्तनके आगे मैं मदमुग्ध है बालक है॥ भक्त रहत हैं सोई
आरोगत है॥ आप कछु जानत हीं नाही॥ और सर्वज्ञ
हैं सर्व ठौर व्यापक हैं सगरी सत्ता प्रभु की है॥ तिनते त्र
यलोक में कछु दूर रह्यो नाही॥ भक्तन के आगे आप आपको जु
नन नाहीं॥ विरक्तन में ज्ञान जानत है॥ ऐसे नन्द को लेके खेल
नती है॥ रुदन करत हैं॥ ऐसे विरुद्ध धर्माश्रय प्रभु हैं
॥ १४॥ अब और कहत हैं॥ श्लोकः॥ आत्मारामोप्यगो
पीनां सर्वदा रतिवर्द्धनः॥ पूर्णकामापि कामानां घटी
नो हीनभावतः॥ १५॥ या श्लोक में॥ प्रभु सदा आत्मारा
म हैं अपनी आत्मा में रमत हैं॥ वाहिर नाहीं॥ और गोपी
जनन के संग नित्य रमण करि नित्य नौतन रास की वृद्धि
करत हैं॥ और प्रभु पूर्णकाम हैं साक्षात मन्मथ के मन्मथ
हैं तिनको कामना सब वस्तु की॥ सबै काम तें पूर्ण हैं॥ सो सब
स्त्रिन के आगे हैं नन्द कामने नैनानन्द दिहकारि खावुत है
दधि लल्ली को मेष धरि आऊं मन्दन देत हैं॥ दीनता करि रहि
त हैं॥ इन्द्र केई ब्रह्मा त्रिलोकी जिनको नमस्कार करत हैं
सो दीनता करि के लोकन सों कहत हैं॥ अबकी बेर जो मैं तुम
रा हूं॥ तुम धनी मैं और को नाही जानत मो पर कृपा राखो॥
या भांति गोपिन के आगे दीनता के वचन करत हैं॥ यह विरुद्ध धर्मा
श्रय जाननो॥ १६॥ अब और कहत हैं॥ श्लोकः॥ स्वप्रका
शोप्यप्रकाशो वहिष्टोन्तः स्थितः सदा॥ अस्वतन्त्रः स्वत
न्त्रोपि समर्थोपि न तथापि च॥ १७॥ या श्लोक में॥ प्रभु अ
पनो प्रकास सगरी त्रिलोकी में करे हैं॥ और जाको प्रका
स तेज अभिमान भयो॥ तिनको तत्काल नाश करि अ
पनो ही प्रकास राखें हैं॥ और भक्तन के आगे अपनो प्रका
स जानत हीं नाहीं॥ भक्त करें सोई होय भक्त कहें सोई आप

रें बाहिर स्थित हैं। सदा सर्वे व्रजभक्तन के संग आने
द लीला करत हैं। और सर्वे प्राणीमात्र के अंतःकरण
स्थित हैं सदा। और प्रभु सदा स्वतंत्र हैं मन आवे ते
लीला करत हैं अपनी इच्छा ते रावल लोग में नास कर
रहि भक्तन के वस हैं व्रजभक्त कहत हैं इहां बैठो तहां ई
बैठत हैं भक्तन के आगे स्वतंत्र की बात नाहीं करत मन
के मनोरथानुसार प्रभु कारज करत हैं। सर्व सामर्थ्य युक्त
प्रभु हैं। वस्तु अवस्तु अन्यथा करन सर्व सामर्थ्य वान हैं
भक्तन के आगे अपने सामर्थ्य करि रहित हैं। गोरस में व्रज
भक्त लेम न आवत हैं लेजात हैं। अपने मनोरथ करत
हैं या भांति प्रभु को स्वरूप है। १५। अब आगे हूं वरनत हैं
श्लोक॥ एवं हि पुष्टिमार्गीय विरुद्धस्वगुणालये। कृष्ण
कृपालु सततं शरणं भावयेद्ध्रदि॥ १६॥ या को अर्थ। अ
ब श्री हरिरायजी कहत हैं। तो या प्रकार विरुद्ध गुण के
घर जो काहे ते जान्यो जाय नाहीं। ऐसे प्रभु रसात्मक भावा
त्मक यह पुष्टिमार्ग में विराजत हैं। साक्षात् श्री कृष्ण
फलात्मक परम कृपालु भक्तन पर सो उपकारी हैं। ताते
ऐसे श्री कृष्ण की संतत जो निरंतर अहर्निस सरण जे
यो मन क्रम वचन करि सर्व भाव सों सरण रहिये। अप
ने हृदय में सरण की भावना निरंतर राखिये। तब श्री
कृष्ण तो परम उदार हैं कृपालु हैं। स्या करि कृपा करेंगे
सो श्री आचार्यजी महाप्रभुन ने रत्न ग्रंथ में कहे हैं
तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्री कृष्णः शरणं मम। तथा
विवेकधैर्याश्रय में श्लोक। वा सु सदैवा सर्वथा स
र्वहरि॥ इत्यादि ठौर ठौर श्री आचार्यजी श्री गुसांई
जी कहे हैं। ताते सरण की भावना हृदय में कर्तव्य है। अव
लो महामंत्र सर्व सिद्धि करनो जानि अष्टाक्षर प्र
कार करि। सो विज्ञप्ति में श्री गुसांईजी कहे हैं। यदुक्तं न

१· यहतो श्रीकृष्णः शरणं मम ताते नव वार्ता तें निश्चिंत मोहि है
पारलौकिक गति वचनामृत तें श्रीकृष्ण जो परम अपा
र हैं तिनकी भावना अपने हृदय में न है सर्व वचन के
रि परम नेपनो यह निश्चय सिद्धांत है १६ अब आगे क
हत हैं श्लोक असाधनः साधनवान साधुरसाधुरे
वा शरणादेव निःशंकं फलं प्राप्नोति संशयः १७ या
श्लोक अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो कोई जीव में
एकहू साधन नाही है और कोई जीव अनेक प्रकार के
साधन करत हैं कोई जीव साधु हैं परम सुसील हैं का
म क्रोध मद मत्सर ता रहित हैं और कोई जीव असाध
हैं काम क्रोध मद मत्सर ता रहित नहीं अनेक दोष सों भ
रे हैं और उंच नीच जात स्वतना मनुष्य ब्राह्मण क्षत्री वैस
सूद्र चांडाल पर्यंत पशु पक्षी आदि स्थावर जंगम कोई
होहु जो श्रीठाकुरजी की सरण हैं तिनको निश्चय फ
ल की प्राप्ति होइगी यामें संदेह नाही प्रभु की सरण
यह सर्वोपरि धर्म है सरण प्रभु की भयो सो जीव सब
धर्म करि चुक्यो और अनेक साधन करत है सरण
द प्रभु की नाही आयो तहां ताई फल की प्राप्ति नाही
है ताते प्रभु की सरणागति तें सगरो फल सिद्ध होइगो नि
श्चय यह सिद्धांत भयो अब और हू कहत हैं श्लोक भ
क्ति मार्गे साधनं च फले च शरणं मेव हि सर्व धर्म परित्या
गे स्वतंत्रे चैव फले स्थितं १८ या श्लोक को अर्थ अब श्री
हरिरायजी कहत हैं जो भक्ति मार्ग में साधन हू श्रीकृष्ण
की सरण यह साधन फल न्यारे नाही साधन हू फल रू
प है ताते सरणहू स्वयं फल है सो भगवान गीता जी में
कहत हैं सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रजेत् या श्लो
क पर श्रीगुसांईजी न्यारी टीका स्वतंत्र कीनी है तामें स
रणही की भावना मुख्य करि निरूपण कीनो है एक श्री

लकोंआश्रयनाजीवमेंभयोंतहोंसंसारेधर्मसिद्धिभयो
तिसर्वतेमुख्यफलरूपश्रीहलकोंआश्रयहै यहभाव
तोनिरावस्थशरणाकरनकहैं याभांतिनिरूपणकी ए
१८ अवश्योरूपाहतहै। श्लोक। सोहेश्वरणांताऽहापु
स्वयोगात: कृपाचेनाहूसानाहि तदोनद्दासेभवेत्
र्दयाकोम्यूको श्रीहलाश्रवताऽरहिसामेंप्रसिद्धिस
णासिद्धिहोय श्रीआचार्यजीविपरोक्षमेंश्रीआचा
र्यजीद्वाराशरणासिद्धिहोय। श्रीआचार्यजीकेग्रंथ
वचनामृतद्वाराशरणाहोय तथाश्रीहलकेमाग
स्वहिसामेंतोप्रसिद्धिशरणाहोय। परोक्षहिसामेंम
हापुरुषभगवदीयमिलेतोमिलिकेंशरणाकोविचारके
रैसोयहपुष्टिमार्गकीरीतिहै। सेवासमयसाहोतस
णा। अनोसामेंभगवदीयतोमिलिकेंशरणाकीभा
वनाकरै। काहेतेंताद्रसीभगवदीयकीकृपातेंतोही
भगवदीयद्वारशरणासिद्धहोय। यामेंसंयोगविश्योग
होऽयकारकोशरणासिद्धहोतहै। सेवामेंतोसंयोगस
णाप्रसिसिद्धहीहै। शरणापरसेवकरतहीहैं। तुलसी
नित्यसमर्पनहीहैं। यहस्पाद्वातनशरणाभयो। अव
करिश्रेत: करणमेंशरणाभगवदीयसोंमिलिकें
दीयद्वाराहोय॥१८॥ अवक्षोरहकेहतहैं। श्लोक। नत्यका
वामपिनुपारोलेतहुतैवेचनै:स्वत: ...
मार्येक स्थितोभवतिसर्वथा॥२०॥ याकोअर्थ। ...
हैंसंयोगमेंसाक्षात्प्रसिद्धिशरणासिद्धहोय। श्री
चार्यजीकेपरोक्षमेंश्रीआचार्यजीकेवचनामृ
शरणासिद्धहोय। तोश्रीआचार्यजीपुष्टि
प्राकटकीरोहैं। तिनमेंस्थितहोयसर्वथातव
सिद्धिहोय। काहेतेंश्रीहलकेपरोक्षमेंश्री
श्रीगुसांईजीवल्लभकुलतिनकेपरोक्षमेंपर

रे तथा आपु भोजन करैं पोटे नव उनके वचनकी भावना
करै सगरे ग्रंथनकी भावना करै पुनि उनके पुष्टिमार्गकी
रीतिमें स्थित होइकै सरणकी भावना सर्वथा करै तो नि
श्चय सरण सिद्ध होय ॥ २० ॥ अब आगे कहत हैं श्लोक
संसारीणां सदा दुष्टसंगिनां मलहृष्यतां ॥ बहिर्मुखानां
मतानां कुतो मार्गस्थितिर्भवेत् ॥ २१ ॥ याको अर्थ अब
ऊपर कहे साक्षात सरणपरोक्ष दिसामें श्री आचार्यजी
द्वारा सरणसिद्धि होय श्री आचार्यजीके परोक्षमें उनके
ग्रंथवचनामृत द्वारा भगवदीयसों मिलिकें पुष्टिमार्ग
में स्थिति होय के मार्ग विचारी परंतु दुःसंग होय तो स
गरो कीयो एक क्षणमें जात रहे काहेते संसारी जीव है
सो सदा तें दुष्ट ही है तातें दुष्टके संगतें निश्चय दुष्ट हो
य तातें संसारासक्त जे जीव हैं तिनको संग कबहू नाही
कर्तव्य है तहां कहत हैं जो बहिर्मुख है सें जानि लौकि
कमें विषयादिकमें तनमनधनकरि उन्मत्त रहे हैं स्वेष्ट प्र
हरलोकिक आवेश है भगवद्धर्ममें मन ही न लगै
अभिमान अहंकार मनमें बहुत रहै ऐसे संसारी जीव
के हृदयमें यह पुष्टिमार्गकी वह स्थिति न होय ऐसे ब
हिर्मुख होय तो संग करै तो पुष्टिमार्ग तें नष्ट होइ ता
तें संसारी जीव बहिर्मुखको संग छोडि भगवदीयको सं
ग करि सरणकी भावना करै ॥ २१ ॥ अब आगे कहत हैं
श्लोक ॥ अनस्यैश्री मदाचार्य चरणाबुंज संश्रयः सदा
विधेयस्तेनैव सकल सिद्धिर्भविष्यति ॥ २२ ॥ याको अर्थ ॥ जो
कदाचित वल्लभकुल तथा तादृसी भगवदीयको संग
न होय ॥ और कछु ग्रंथज्ञानमें अभिनिवेस न होय तो
कहा करै ॥ तहां कहत हैं ॥ दुःसंग बहिर्मुखको संग छो
डि अपने निज तनी सेवा बनि आवै सो करै ॥ और अ
पने हृदयमें श्री आचार्यजी महाप्रभुको आश्रय दृढ

रखें। श्रीमहाप्रभुजी के चरनकमलकी भावना मनमें
रे। नित्यनेमकों स्थिरप्रहर मन लगाइके करें ताके
सकल मनोरथ सिद्धि निश्चय होंगे। सो काहेतें जो श्रीआचा
र्यजी महाप्रभु अलौकिक अग्निरूप हैं। सो जो वैष्णव महा
प्रभुजी के सरण आयके श्रीआचार्यजी के चरणकमल
कौ सदा मन लगाइके आश्रय सिथल न करें काहेतें भग
वदीय के संगते अवश्य वेगि सिद्धि वाही होत यह जो नि
के सिथल न होय जो भगवदीय कौ संग होय सो तब ही मि
आश्रय करूनो ऐसे न विचारें भगवदीय कृपा जानिये
वत मिले तहां तांई आश्रय कों बिना दुबुद्धि होय जो
य ताते मनते आश्रय न छोडें या भांति सिथल न होय
जो होनहार है सो होइगी जैसो ईश्वर चाहे तैसो होइगो
हाक सं। यह सिथल भाव मनमें न धरे जो संतते अपने
मनको राखिके श्रीआचार्यजी के चरणकमलमें लगा
वे सो श्रीआचार्यजी विवेकधैर्याश्रय ग्रंथमें वर्णन की
है अपराण पिकर्तव्य सा सामर्थ्य भावना तु ह
तिवेचना तु कछु है जो सो विमुख दाह नहीं भ
गवद सेवधर्म आदि को लनते सिथल ही है ताते मन
कौ सिथलकीयो भगवद धर्मते न राइ है ते यह
चाहत है ताते जद्यपि अपने हृदय है तैसो अपने मन
मे असुर की भावना न करे यह जानें जो यह मेत्र को सु
ख धर्म है यह ही जो प्रभु को हसनक रनो हाय को यह
धर्म है सेवा करनी जहर श्रवणसो भगवद कथा सुन
नी मुखसो भगवद नाम लेनो दे हमें आलस न राख
तत्काल उठनो भगवद धर्म में यह जाननो आजु का
सो करि लेहु काल्हि का जानिये कहा है या भांति
तानवैराग मनको छुदाय डरी है को भगवद ध
मेंलगाइ सिथलता मनसें न राखें या भांति श्रीमह

रे तथा आपु भोजन करें पोढें नव उनके वचनकी भावना
करें सगरे ग्रंथनको भावना सेवै ॥ उनके पुष्टिमार्गकी
री तिमें स्थित होइ कें सरणकी भावना सर्वथा करे तो नि
श्चय सरण सिद्ध होय ॥२०॥ अब आगे कहत हैं ॥ श्लोक ॥
संसारीणां सदा दुष्टसंगिनाम मत्त दैव्यतो ॥ बहिर्मुखाना
मतानां कुतो मार्गस्थितिर्भवेत ॥२१॥ याको अर्थ ॥ अब
ऊपर कहे सा क्षात सरणपरो लदि सामें श्री आचार्यजी
द्वारा सरणसिद्धि होय श्री आचार्यजीके परोक्षमें उनके
ग्रंथ वचनामृत द्वारा भगवदीयसों मिलिकें पुष्टिमार्ग
में स्थिति होय के सरण विचारे परन्तु दुःसंग होय तो स
गरो कीयो एक क्षणमें जात रहे ॥ काहे ते संसारी जीव हैं
सो स्वतें दुष्ट ही हैं ॥ तातें दुष्टके संगतें निश्चय दुष्टता हो
य तातें संसारासक्त जे जीव हैं ॥ तिनको संग कबहू नाही
करनो ॥ तहां कहत हैं जो बहिर्मुख वैसें जानिये लोकि
कमें विषयासक्ति मैं तन मन धनको उन्मत्त रहें ॥ दुष्ट प्र
हरतें विक आवेश रहें भगवद्धर्ममें मन ही न लगे
अभिमान अहंकार मनमें बहुत रहें ॥ ऐसे संसारी जीव
नके हृदयमें यह पुष्टिमार्गकी दृढ स्थिति न होय ॥ ऐसे ब
हिर्मुख होय तो संग करें तो पुष्टिमार्ग तें नष्ट होइ ॥ ता
तें संसारी जीव बहिर्मुखको संग छांडि भगवदीयको सं
गकरि सरणकी भावना करे ॥२१॥ अब आगे कहत हैं
श्लोक ॥ अनन्यैः श्रीमदाचार्य चरणांबुरुहाश्रयः सदा
विधेयस्तेनैव सकलं सिद्धिष्यति ॥२२॥ याको अर्थ ॥ जो
कदाचित् वल्लभकुल तथा तादृसी भगवदीयको संग
न होय ॥ और कछु ग्रंथवानी में अभिनिवेश न होय तो
कहा करें ॥ तहां कहत हैं ॥ दुःसंग बहिर्मुखको संग छो
डि आपने ते जितनी सेवा बनि आवे सो करे ॥ और आ
पने हृदयमें श्री आचार्यजी महाप्रभुको आश्रय दृढ

तातें श्रीमहाप्रभुजी के चरनकमल की भावना मनमें
करे. नित्यनेमकरि अष्टप्रहर मन लगाइ केवल तातें
सकल मनोरथ सिद्धि निश्चय होयगो. काहेते जो श्रीआचा
र्यजी महाप्रभु अलौकिक अग्निरूप हैं सो जो वैष्णव महा
प्रभुजी के सरण आयकें श्रीआचार्यजी के चरणकमल
को सदा मन लगाइकें आश्रय सिथिल न करें काहेते भग
वदीय के संगतें आश्रय वेगि सिद्धि वाही होत पर ज्यों नि
वे सिथिल न होय जो भगवदीय को संग होयगो. तब ही सि
आश्रय करूंगो. ऐसें न विचारें भगवदीय कृपा तो निश्चै
व मिले. तहां तांई आश्रय कों विना दुःखबुद्धि होय ना
य तातें मन तें आश्रय न छोडें या भांति सिथिल न होय
जो होनहार है सो होइगो जैसो ईश्वर चाहे तैसो होइगो ऐ
सो करि यह सिथिल भाव मन में न करें जो सतत अपने
मन को खेंचिकें श्रीआचार्यजी के चरणकमल में लगा
वें सो श्रीआचार्यजी विवेकधैर्याश्रय ग्रंथ में वर्णन की
ये हैं अशरणा विज्ञात सर्वस्या सामर्थ्यभावनात् इ
ति विवेचनात् श्रीहरि तो लौकिक पुरुष सरीखे हैं भ
गवद सर्व धर्मवारे कौं लतें सिथिल दीहे तातें मन
को सिथिल कीयो भगवद्धर्म तें न होइ है ईहते यह
चाहत है तातें जद्यपि असुर ध्वंस हैं तातें अपने मन
में प्रभुकी भावना करें यह जान जो यह वैष्णव को मु
ख्य धर्म है यही जो प्रभुको दृढ अनुराग आश्रय को यही
धर्म है सेवा करनी जहां अनुराग में भगवदीय या मुन्
नी तुम्हारो भगवदीय सिद्ध ना दरसें स्वभाव मन ग्रवनी
तत्कालन हते भगवद्दर्शन नहीं जानते आनुभ
सो करि लेहु काल्हि वस्ता नियव होइ है या भांति
तात वैराग्य विवेक दृढ करि हैं भगवद्धर्म
मन लगाइ सिथिलता मन में न गमे या ना निर्बल भाव

भुजीकौं आश्रयकरें २७ अबश्रीरहूकहतहैं लोकमें
स्वात्कंगतिकाचिंत्यव चिंतातिमक्कदि सोविकलेसस
वंधोहूयेंगीहूतनतुणं २५ याकोअर्थ अबवैस्नवकेस
हगालहहैं नोराक आपनेप्रभुकीकृतिनहीगतिजा
नें योस्त्रनापाश्रयनवरें यहवैस्नवकोमुख्यधर्महै सो
वजानियें अवलौकिकलोसकोसंबंधहोय तबमनमें
चिंताकरिपीडितनहोय काहेतेंहरिआपनेजनकोले
किकलौसपनेवआपकोहेतहैं तब यहजीकआप
नोधर्मनछोडेहरिसमरनकरें मनमेंचिंतानहोययह
श्रीआचार्य वैस्नवकेतहगाजैसेंविठ्ठलदासश्रीगुसांई
जीकेसेवकनारायनदासकेपासचाकरीकरतेतबना
रायनदासनेविठ्ठलदासकोएकपरगनेपरपठायोते
हां कछुकमासरहेतब नारायनदासनेविठ्ठलदासको
वेदीषानेमेंदीयो नित्यमारते सोविठ्ठलदासकीपी
ठकीखालउधरगई ऐसोदुखपायो परंतुयहनाहीकही
जोमेंवैस्नवहों पाछेंश्रीगुसांईजीपधारे तबविठ्ठलदा
सदर्सनकोंआयो तबश्रीगुसांईजीपूछेजोतेरीयहदसा
कैसें तबविठ्ठलदासनेकही रस्कोसहेहै सोभुगतेहु
है तबश्रीगुसांईजीनारायनदाससोंकहीजोयाभांति
मारते भोजीवपरआंई नाहीआई तातेंवैस्नवकोदु
रिलोसहेनहै पाछेंदेखनाथें सोश्रीआचार्यजी
महाप्रभुविवेकधैर्याश्रयग्रंथमेंआश्रयकेलक्षण
कहे हैं जोइतनेदुःखमेंहरिसमरनराखे येहिकपरलोक
चसर्वथासरणंहरिः दुखहानौतथापापेभयकामाद्य
पूरणे भक्तद्रोहेभक्ताभावे भक्तैश्चातिक्रमेकृते अशक्ये
वासुसाध्येवासर्वथाशरणंहरिः अपालिवचनकोविचा
रिजितनोलौकिककेविदेहसंबंधीदुखहोयतोसें
चिंतातुरहोयनहीं एकआपनेप्रभुहीकोसरणारहे य

स्यंगीकृतवै सवकेनकरताहैं। अब च्यौं रस्कुरत हैं। तौ
का धीकेस्वास्थमिति श्री मदाचार्यवचनामृतनात् त
दीयस्वामिहृदै रौतोषः कार्यस्तुतेनहि ॥ २५ ॥ या श्लो
क श्री श्रीआचार्यजी महाप्रभु नवरत्न ग्रंथमें वच
नामृत कहे हैं। जो किस्वास्थनया वेदहास्तुनकरिष्य
ति। इतिवचनात् आपने जन हैं तिनको भगवान्‌को
कि कवैदिकमें स्थिति नाहीं करनी। तहां छोड़ायए तें
कअपनो ही आश्रयसिद्धिकरत हैं तब नदीयजो है भ
गवदीय सो स्वामी के हृदयको अभिप्राय को चिंतन क
रत है जो लौकिक वैदिक कार्य प्रभु नाहीं सिद्ध कीयो सो प्रभु
भलीकरी लौकिक सिद्धहोतो तो मैं तो वैदिककार्य के
आवेसमें प्रभुको भूलिजातो जो वैदिककार्य सिद्ध हो
तो मैं वैदिक कार्य के आवेसमें प्रभुकों भूलिजातो ता
तें प्रभु करी सो बहुत भली करी। या भांति स्वामी के हृद
यके अभिप्रायको मनमें भावना करिकें तोष करि म
नप्रसन्न राखै ताको नदीय कहिये। अब और हू क
हत हैं। श्लोक। अथ तो हि लौकिक लौकिको नानतरः क्रिय
तोऽभ्युचित वाघत स्तुम कर्तव्यो चौरासीन्यप्रसादना
त ॥ २६ ॥ श्लो० ॥ या श्लोकपर कहे जो श्रीठाकुरजी लौ
किक वैदिक कार्य न सिद्धि करै तहां भगवदीय मनमें
संतोष करिकें लौ सन करै प्रसन्न रहे पाहें लौकिक वै
दिक कार्य न करतो गृहस्थाधर्म पहके सचकु याम
तको ई संदेह करे तहां कहत हैं जो लौकिक वैदिक
कार्य में मन लगायो। तातें प्रभु कार्य सिद्धि न कीयो
या भलो भयो अब लौकिक वैदिक कार्य में मन नाहीं सा
खूगो वने वाहरऊपरतें लोगनको दिखा
इवे के लीयें कछु रनो.
दृसेवासंवंधी लौ

ऐसें अपने मनकों खेंचलेय या भांति लौकिकसों हैं अ
पनो धर्म काहूकों न जनावे लौकिक वैदिक क्रियालो
गनमें जनावे या प्रकार भगवद् आश्रय करनों प्रभु
प्रसन्न रहें २६ अब श्लोक कहत हैं सो [illegible] दुःख
संगज चान्यत् लौकिका भिनिवेशात् सत्संगाभावं च वा
पि तथा मार्गस्थितैरपि २७ या [illegible] अ [illegible] लौकिककों
आवेस करावे ऐसो जो दुःसंगतिनकौ संग दुःख
प्रजानिये वाकों कछु शोक बहुत न करिये यह मनकी
टकई जैसे प्रह्लादजी भगवद्भक्त हैं सो अपने प्र
भुकौ स्मरण करै तहां पिताही प्रतिबंध भयो सो प्रह्
लादकौं बोहोत नहीं समझायो तब प्रह्लादने न माने
तब उन प्रह्लादकौं बहुत दुख दीयो जो तू भगवान
कौ स्मरण मति करै तब प्रह्लाद अपनो मरनो अंगी
दुख सह्यो परंतु भगवद् आश्रय न छोडे तब प्रभु प्र
सन्न होयकें प्रह्लादकी रक्षा कीनी हरन्यकस्यप
कौं मार्यो तैसेंही वैष्णवकों दुःसंग होय सो तो लौकि
क कार्यमें लगावे ताकों संग दुःखरूप जानि त्यागही
करै प सत्संग करैं तो भगवद्धर्ममें लगावें ताहीको
सत्संग करैं जो कदाचित् संगको अभाव होय न मिले
तो अपने पुष्टिमार्गकी रीति सेवा स्मरण न छोडे दु
संगको दुःखरूप जानि सबतें न्यारो रहे श्री आचार्य
श्रीगुसांईजीको आश्रय मनमें दृढ करिके मार्गकी सि
ति न छोडे नित्यनेमसों सेवा स्मरण करै यह सिद्ध
कौ मनमें राखनो २९ अब श्लोक कहत हैं सो [illegible]
तत्प्रभुपादाब्जस्वरूपया सर्वथा मतः नहीयानो
संगेन हरणाद्धरी भविष्यति २८ या कौ अ [illegible] त
भु जो श्री आचार्यजी पुष्टिमार्गीय जितने जीक
शरण आये हैं तिन सबनके प्रभु श्री आचार्यजी म

प्रभु हैं। ऐसे श्रीमहाप्रभुजी के पदकमल की कृपा तें
सर्वथा तदीयको संग होय। भगवत्सेवा स्मरण सब
अनिश्चावे सुष्टिमार्ग को सिद्धांत स्फुरण होय। ता
तें श्रीमहाप्रभुजी के चरणारविंद की कृपा तें ताद्
शी भगवदीयको संग होय। जहां तादृसी भगवदी
यके संग होय। तिनके संग तें श्रीमहाप्रभुजी (
कृपा हृदय रहे। सो चोरासी वार्ता में प्रसिद्ध
है। जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आसुरव्यामोह ली
ला दिखाई कासी में तब एक वैष्णव कासी ते भग
वानदास वैष्णव के पास आयके सब समाचार क
हे। तब भगवानदास ने कही। तो को भ्रम भयो है श्रीमहा
प्रभुजी ऐसी कबहू न करें। तब उन वैष्णवने कही मैं आप
नी आंखिन सों देखि के आवत हूं। तब भगवानदास मंदि
र के किवाड खोलि के वैष्णव को दरसन कराये आपु बै
ठे पोथी बाचत हे। तब उह वैष्णव के मन को संदेह गयो।
तातें तादृसी वैष्णव तें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी स्म
रण रहत नाहीं रहत हे। ऐसे भगवदीय को संग अवस्य
करनो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु हृदय में पधारे। भग
वदीय को संग ऐसो है। स्वात्यव चारे कहत हैं। श्लो
क। तेहु श्रेम स्मृति मनः खिन्नं भवति नित्यशः। यदा प्र
भुः परमा पूर्णाः कृपं स्थिपति दैन्यता। २। याको अ
र्थ श्रीहरिरायजी कहत हे जो ऐसे भगवदीय चाति
दुर्लभ हे मिलने में सबते परदुर्लभ। मो को नाहीं मिलत ता
तें मन में दुख खेद को पावत हो। सो तो मन में दैन्यता
नाही आवत जो मन में अति दैन्यता आवे तउ श्रीआ
चार्यजी महाप्रभु कृपा करें तातें मो को भगवदीय को सं
ग नाही यह दुख है तातें श्री और दैन्यता ना
खनी है का है तें श्रीआचार्यजी की कृपा

रि०प० श्रीभगवदीयकोसंगहोय तेसेंहीजबश्री आचार्यजी
३५ कीप्रभुकीकृपाहोय तेवहदिपिनवेनच्यनतदैन्यताहो
य जैसेंभगवदीयकेसत्संगतें प्रभुकृपाकरिदृढ्याहो
टहोय तेसैंहीश्रीयंनदैन्यासिद्धिभयेतेप्रभुहृदये
स्थायेंप्रसन्नहोय सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुश्री
सुबोधनीमेंकहेहें जोप्रभुप्रसन्नकरिवेकोएकदै
न्यताहीपरमसाधनहें सोत्रिविधिनामावलीमें
दीचाधमाईकेप्रसंगपरनामकहेहें दीनकृपाप्रगल्भि
कृपायनमः सगरेसाधनदूरभगकीयो श्रीठाकुरजी
कीलीलाकरीगुनगानकीयो पाछेंनिःसाधनहोय
रुदनकीयो तबश्रीठाकुरजीपूरनभये तातेंदैन्यता
बडोपदार्थहें तबश्रीआचार्यजीकीपूर्णकृपाहो
य तबदैन्यताआवे अबजाप्रकारदैन्यताआदिस
बधर्महृदयमेंस्थापकहोय सोउपायकहेहें श्लोकमें
वचनहें श्लोक तदाचार्यपदाम्भोजानुपस्था
पयिष्यति अस्माकंतुगतिर्नान्याश्रीकृष्णःशरणं
मम ॥ १॥ या श्लोककोअर्थ अबकहतहें यहजीवजबश्री
आचार्यजीकेचरणकमलमेंमनकर्मवचनकरि
आसक्तहोय तबदैन्यताआदिसगरेधर्महृदयमेंस्था
पनहोय यहसर्वोपरउपायहें औरकोइनाहीकारे
तें जबजीवश्रीआचार्यजीकोसरणआयमनवच
नकर्मकरिश्रीआचार्यजीकेपदकमलकोआश्रय
कीयो तबश्रीआचार्यजीतोकृपानिधिहें दैवीजीवृ
नपरकृपाकरनार्थउद्धारार्थप्रगटेहें सोभक्तिकीसव
आरतिकोदूरिकरेगे सोश्रीसर्वोत्तमग्रंथमेंश्रीगुसां
ईजीश्रीआचार्यजीकेनामकहेहें स्मृतिमात्रार्तिना
शनायनमः श्रीआचार्यजीकोस्मरणकरनमात्रही
सबआर्तिकोप्रभुहरे तातेंश्रीआचार्यजीकीकृपातें

है न्यनाम्रादिसगरे धर्म कृत्य में आवै। [illegible]

कहूं साधन नाही हैं। [illegible] श्री [illegible]

ही गति हैं। सो श्री गुसांईजी [illegible]

नात चरणै। श्री [illegible]

त्यैसै हि के पोरलो [illegible] श्री गुसांईजी [illegible]

मारे तान चरण श्री महाप्रभुजी श्री [illegible]

यह वृत्तान्त [illegible]

य कर्य [illegible]

के से गुसांई [illegible]

है जो श्री आचार्यजी श्री गुसांईजी [illegible]

[illegible]

५ जीकहतहैं तोश्रीहस्तकेहोयस्वरूपहैं क्रियात्मकभा
वात्मकस्वरूप मथुरातेवसुदेवजी ले आये सोक्रिया
त्मकस्वरूप औरश्रीयसोदाजीकेघरप्रगटे सोभावात्म
क सोभावात्मकश्रीहस्तकीहोयलीला वाललील
औरकिसोरलीलावाललीलाश्रीगोकुलमेंकिसो
रलीलाश्रीवृंदावनमें ताते वाललीलाकेभावते
सेवाकरें किसोरलीलाकेभावको स्मरणकरें सो
श्रीगुसांईजी कहत हैं श्लोक सदासर्वात्मनासेव्या
भगवान्गोकुलेश्वरः स्मर्तव्यो गोपिकावृंदैःक्रीडन्
वृंदावने स्थितः इत्यादिवचनकेअनुसारवाल
लीलाश्रीनवनीतप्रियाजीकेस्वरूपमें रासादि
लीलाश्रीगोवर्द्धननाथजीकेस्वरूपसों सोविप्र
योगात्मकस्वरूपश्रीस्वामिनीजी केहृदयमेंर
तहैं सोजवश्रीस्वामिनीजीके भावहैं तिनकीभाव
नाकरें तो श्रीस्वामिनीजीप्रभुकोकोनभांतिलडा
वतहैं कोनभांतिगुनगानकरतहैं प्रभुकेसंगको
नभांतिलीलाकरतहैं यहभावनाकरेतोश्रीस्वा
मिनीजी कृपानिधिहैं प्रसन्नहोय भावकोदानक
रें तबभावात्मकप्रभुको अनुभवहोय औरउपाय
नाहीं कांहेतें श्रीहस्तकेहृदयमेंसदाश्रीस्वामि
नीही स्थित हैं औरकछुश्रीस्वामिनीविनाश्रीह
स्तजानतहीनाहीं ताते श्रीस्वामिनीजीकोश्री
आचार्यश्रीस्वामिनीजीकहकरतहैं तिनकीभाव
नाभावात्मकहोयकीकरें तवश्रीस्वामिनीजीकृपाक
रें प्रसन्नहोय तवप्रभु आपनो अनुभवजतावें १
आचार्य कहतहैं श्लो० यस्मात्कंमति मापे
नतदाप्यवात्ति हृदि हरिः अतस्ता तत्स्वभावास्मिन्मा
र्जनेवाप्युज्जन्ते २ या० यहविप्रयोगभाव

नावाग्निमेंआपमेंतोनाहींहैं।काहेतें।यहभावात्मक
ग्नितोदास्यधर्ममेंदैन्यताहोय।तिनकेहृदयमेंहोय
सोदास्यधर्महूंअतिकठिनमहादुःखमेंहै।औरदैन्य
ताअतिदुःखमेंहै।सोकहतहैं।श्रीस्वामिनीजीकोसु
खचाहें।आपनोसुखनचाहें।सोदास।जैसेपरमन
न्ददासकीवार्तामेंहैजोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीभो
जनकोपधारो।ताहीसमयव्योपारीकोदूध्यगयोहतो
लोयायो।तबपरमानन्ददासव्योपारीकोबोलननाहीं
दीरि श्रीआचार्यजीकोअप्रसन्नकरिविदाकिये।ऐसोदास्य
धर्मकठिनहै।औरदैन्यकोप्रकाररासपंचाध्याईमेंप्र
सिद्धहै।जेनरध्यानसमयभगवाननेश्रीहूरूपकी
लीलाहूकीयो।गुनगानकीयो।तापीछेंनि:साधन
दैन्यताकीयोगपताभई।सोमेरेमेंदासधर्महूंनाहींहै
औरनि:साधननादैन्यतानाहींहै।तातेंभावाग्नि
निहृदयमेंहै।औरयहश्रीआचार्यजीकेपुष्टिमार्गहै
तामेंतोयहरीतहै।जोसीतलभावकरनुकरनी
जैसेकुंभनदासजीएकेरसनकेविरहमेंकिनेहि
केसुनाइविनुदेखेयाभांतिआतुरताहोयतबपु
मार्गकेभावकोअनुभवहोय।२।अबऔरहूकी
तेहैं।श्लोक॥तापभावपरंदैन्यंप्रकाशसर्वथा
दैन्यमनस्ययादीनवंधु:प्रादुर्भवत्यसौ।अयाय
धौ॥अबजाप्रकारदैन्यताहोय।सोउपायकहि
पहलेतोहृदयमेंतापहोय।जोसगरोजन्मवी
पुष्टिमार्गमेंसाक्षात्पुरुषोत्तमविराजतहैं
अनुभवकछुनभयो।मेरेमेंकछुधर्मनाहीं
प्रभुविषयकेतापहृदयमेंहोय।सोतापस
नाकोइएकिरताहीं।काहेतें।अनेकजन्मके
मानसिकहृदयमेंभरिरह्योहै

कौ धर्म दैन्यता करि हृदय मलीन जीवकौ है सो ज
बतापाग्नि प्रगट होय तब सगरे दोषनकौ नास होय
तापीछें दैन्यता आवे काहेतें दैन्यता मुख्य धर्म है सो
सुहृदय होय तब दैन्यता आवे तब देहकी और
हिसा होय जाय खानपान देहसंबंधी सुखसब छूटि
जाय याभांति हृदयमें प्रभुको प्रकाश होय काहेतें
हीनबंधु यह श्रीठाकुरजीको नाम है सो जीवकौ
दैन्यता होय तब प्रभुको स्वरूप आवे सो श्रीभाग
वतमें अठारह पुराणहै द्रौपदीकौ दैन्य भयो
तब प्रभुकौ रत्ता नरा रखे गजेंद्रको दैन्यता भई तब
प्रभु पधारे रासपंचाध्यायीमें भक्तनकौ दैन्यता जब
भई याभांति इतिगोप्यप्रगायंत्य प्रलपंत्यश्च चि
त्रधा रुरुदुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसा
याभावकी सिद्ध भई तापीछें तासामाविरभूच्छौरि
स्मयमानमुखांबुजः पीतांबरधरः स्रग्वी साक्षा
न्मन्मथमन्मथः याभांति प्रभु पधारे तातें अभि
मान अहंकार ते प्रभु दूरि है और दैन्यता प्रगट है
तातें दैन्यता होय ताके हृदयमें प्रभु प्रगट होय
अपने आनंदको अनुभव सर्वथा करावे प्रथम
ताप होय तापीछें दैन्य होय तहां कोई कहे दैन्य
ताको नभांति होय सो उपाय आगे श्लोकमें कहत है
२ श्लो तद्दैन्यं स्यात् स्वामिनीनां तापभावाब्धि
भावनात् तद्द्वयने भवेद्देवनाभाम चरणाश्रया
त् ॥ ध्रु या श्र अब दैन्यतासिद्धि तो श्रीस्वा
मिनीजी हैं श्रीस्वामिनीजी जब कृपा करे तब ता
पभावकी भावना होय तापभावकी भावना है व्र
जभक्तनकी रीति सो करनी सेवाके संयोगमें व्र
नी सेवा सो पोहोचि अनो सबमें पहरीति सो करनी

ग्रो। अपने मनकी कल्पनासों विप्रयोगकी भाव
ना करनी श्रीस्वामिनीजीके चरणकमलको आ
श्रय करि जा प्रकार श्रीस्वामिनीजी विप्रयोगकी भा
वना करत हैं। वेणुगीत युगलगीतनमें भावको वर्ण
न हैं। ता भावकी भावना करें श्रीस्वामिनीजीको स्व
रूप तापात्मक जानें। या भांति श्रीस्वामिनीजीके भा
वकी भावना करें। श्रीस्वामिनीजीके चरणको आश्रय
के सें सिद्धि होय सो आगें श्लोकमें कहत हैं। श्लोक॥
तदाश्रयस्य सिद्धिस्तु तद्भावपरिनिष्ठया। तन्निष्ठा
सतत ... नदीयजनसेवया॥४॥ याको अर्थ। श्री
स्वामिनीजीके चरणकमलको आश्रय या भांति करें
श्रीस्वामिनीजीके भावरूप श्रीआचार्यजी हैं। तातें श्री
आचार्यजीके चरणकमल हैं सो श्रीस्वामिनीजीके जा
नने। या भावसों श्रीआचार्यजीके चरणकमलको आ
श्रय करनो। ताकरि भावरूप विप्रयोगको दान होइ
गो। सो श्रीआचार्यजीके चरणकमलको आश्रय
कब होय। जब श्रीआचार्यजीके वचनामृत श्रीसु
बोधिनीजी आदि छोटे बडे ग्रंथको भावनामें निष्ठा
होय। तब श्रीआचार्यजीके स्वरूपको ज्ञान होय
तापीछें श्रीआचार्यजीके चरणकमलमें भाव होय
तब चरनकमलको आश्रय होय। सो श्रीआचार्य
जीके वचनामृत ग्रंथमें निष्ठा तब होय। जब पुष्टिमा
र्गीय भगवदीयकी सेवा करिये। भगवदीय कृपाक
रिकें तावें। तबही जान्यो जाय। तातें भगवदीय
की सेवा आवश्यक ही मन कर्म वचन करि कर्तव्य
है। तिनकी कृपातें सर्व सिद्ध होइगो॥५॥ अब आगें क
हत हैं। श्लोक॥ तदीयाद्दुर्लभो मोक्षस्तु: श्रीभागव
सेवना। अथवा दैन्यभावेन सततं

ईसमाधेय अर्थः अपर कहे हैं भगवदीयकी सेवाते सिद्धि होय
सो पुष्टिमार्गीय भगवदीय अति ही दुर्लभ है ॥ सो जहां
तांई पुष्टिमार्गीय भगवदीय न मिलै तहांतांई नित्य श्री
भागवत श्रीसुबोधनीजी कौ सेवन नित्य नेम करि
के कीयो सुन्यो करै तब भगवदीय मिलेगो तब सगरो भ
व बन आवेगो तहां तांई आपही श्रीभागवत बांचे जो
श्रीभागवत श्रीसुबोधनीजी में अभ्यास न होय तो
न न होय तो दैन्य ही करिकें निरंतर हरि जो भगवान स
बे दुःखके हर्ता तिनको स्मरण करै निरंतर दैन्यभाव
सों जब हरिको स्मरण जीव करैगो तब श्रीठाकुरजी दु
खनाही सहिसकैंगे कृपा करि पुष्टिमार्गीय भगवदीय
को संग मिलावेंगे तिनके संगतें सब कार्य सिद्ध होइंगे
६ अब आगें कहत हैं श्लोक ॥ अष्टाक्षर महामंत्रो व
क्तव्यः इति निश्चयः ॥ सर्वदा सर्वभावेन तेन सर्वं भवि
ष्यति ॥ ६ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो
जीवनतें स्वभावकरि दुष्ट हैं जो कछु न बनि आवे तो अष्टा
क्षरको महामंत्र जानि अष्टाक्षर श्रीकृष्णः शरणं मम
यह कह्यो करै काहेतें यह श्रीआचार्यजी महाप्रभु वेद
पुराण शास्त्र श्रीभागवतमें ते सार रस निश्चय करि प्र
गट कीयो है सो अपने दैवीजीवनके अर्थ तातें सबका
रनमें अष्टाक्षरको जप कबहूं भूलै नांही सर्वभावकरि
अष्टाक्षरको जप जो करैगो तिनके सर्वे कार्य निश्चय
सिद्ध होइंगे ॥ ७ ॥ अब आगें कहत हैं श्लोक ॥ अस्माके
न्यूनता वा सी मिलने पहि मन्नाहि ॥ एतावती हरिः
कस्यः पूरयिष्यति तामपि ॥ ८ ॥ याको अर्थ ॥ अब के प
रके है ता भावात्म विप्रयोगात्मक प्रभु अति दुर्लभ हैं
तातें जीव आपनेको न्यूनता तुच्छ माने या भांति प्रभु
के मिलिवेको जतन करै तब श्रीहरि सर्व दुःखके हर्ता

हरिहैं॥ सोसगरो मनोरथपूरणकरेगो॥ तोजीवतोस
मादकरि दुषहीहै॥ परंतु अपनपेको उत्तम अज्ञान
करिकैं मानतहै। ताहीते प्रभु अपनो अनुभव नाहीन
ावत काहेतें श्रीभागवतमें पिंगला सारिषी जाकी
महादुष्टक्रिया सो अपनपेको तुछमान्यो॥ याभांति पिं
गलावचन॥ संसारकूपेपतितं विषयैर्मुषितेक्षणं
ग्रस्तंकालाहिनात्मानं कोन्यस्त्रातुमधीश्वरः॥ यामें
तिनु अपनो दोषस्फुर्यो॥ तबन्यूनभाव होय प्रभुकी
प्रार्थना करी॥ तब प्रभु कृपाही करी॥ तैसैंही पुरूरवा
कीकथा श्रीभागवतमें कहीहै॥ पीछे अपनोदोष
स्फुर्यो॥ श्लोक॥ पुंश्चल्यापहृतं चित्तं कोन्वन्योमोह
यितुंक्षमः॥ आत्मारामेश्वरमृते भगवन्तमधोक्षजं॥
याकेअर्थ॥ या प्रकारजब अपनोदोषपुरूरवा
को स्फुर्यो॥ तबप्रभु कृपाकरी॥ सो यह जीवनपे श्री
आचार्यजी के सरनआयेहैं॥ यहतोदैन्यमार्गहै
यामार्गमें जहांताई दैन्यन आवे तहांताई फलसिद्धि
नाहीहै सो अपनेको उत्तमजानें तहांताई दैन्यना आ
वे॥ तातें अपनेको न्यूनतुछजानिकें प्रभुकेमिलिवेको
जतनकरें तो प्रभु दुःखको नासहीकरें हरिर्दुःख
केहर्ता॥ ऐसें शीघ्र सगरो मनोरथ निश्चय पूर्णकर
गो॥ ६॥ अब और एक कहतहैं॥ श्लोक॥ भगवद्भिर्नैवदृ
व्य तो भो मनसि सर्वथा॥ अस्मिन्मार्गे तथावार्ति न्यू
वफलसंनिधिः॥ ७॥ याको अर्थ॥ अपनेको न्यूनतुछमा
नें और लोभसहित मनमें भाव सो सर्वथा करें॥ सो श्री
गुसांईजी विज्ञप्तिमें कहेहैं॥ त्वत्स्रोतविहीनस्य त्वदीय
स्य तु जीवनं॥ अधमे न यथा नाथ दुर्भाग्या न वंचयः
श्रीगुसांईजी कहतहैं जो हेनाथ तुमारे दर्शन बिना
जो कोई तुमारे सृष्टीमें होय जीवतहै॥ सो अधमपुरु

मारगीय वैस्नव तुमारे वहां ये ओर तुमारे दरसन बिना
जो जीवत हैं सो वृथा जीवत हैं वे बड़े अभागे हैं या भां
ति अपने को महा अभागी समझे साधन करी हीन महा दु
स्ट जानि मन में लोभ करें हा नाथ अब मेरी कौन दसा
होइगी महाप्रभुजी द्वारा तुमारे सरन आयो हूं मो मेरे
को धर्म नाही या भांति निन्य करें सर्वथा वारंवार वि
रह करें ता उर्द्ध ३ सास लेइ [illegible] कहे ते यह श्री आचार्यजी म
हाप्रभुन के पुष्टि मार्ग में जा के हृदय में जितनी आर्ति ति
तनो ही फल सिद्ध जा को अत्यंत विरह ता को तत्का
ल सिद्धि जा को विरह नाही ता के फल सिद्धि की ढील
जा को थोरो विरह ता को थोरो फल या भांति विप्रयो
ग की जा को जैसी आर्ति तिन को तैसी फल सिद्धि जै
से रास लीला में जैसो जाको भाव तैसो ता को रस दा
न आदि पसु पक्षी व्रज भक्त अपने भाव अनुसार अनु
भव तैसें ही पुष्टि मारगीय वैस्नव को जैसी आर्ति तैसी
ही फल श्री ठाकुर सर्वों वे धकरावे ९ अब आगे ह
रि हर कहें सो [illegible] यथा कार्य चिन्तनेत्यो विवहारो हि
लौकिके आपकीर्तिमयानेन बुद्धि सेविन्य सर्वात्
१० या [illegible] अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो वि
प्रयोग आर्ति को स्मरण तब होय जब लौकिक वै
दिक कार्य छूटे सो संसार में रहिके सकल छूट्यो चाहिये
जो लौकिक वैदिक कार्य छूटे तो लोक में लोक में अ
पकीर्ति होय लोग बुरो कहे तब अपने मन में हीं मही
य क्रोध नाम संदेह तो बुद्धि अपने मार्ग में सिथि
ल होय जाय ताते लोक न को आपकीर्ति को भयु ते
बहु थोरो सो लौकिक वैदिक कार्य करे जा में आपनो ध
र्म हानि न रहे मन आहारादिकुन में न लगावै होय
वार घरी वरैय यह [illegible] न भया १०३ [illegible] श्री [illegible] ३

लल सिक्षापत्र ताकी टीका श्रीगोपेश्वरजी कृत
रागे।५। अब कूपरूपक करे ताप भाव मनमें राखे तिस
याही तुल्य हैया तातें जैसी होय तैसें दीपरूपककों अ
नुभव होय। तामें लौकिक जैसे सब बाधक है लौकिक
वमें या भांति ज्ञान राखे तो दुःख न होय भगवद्धर्म
है सो अब कहत है। श्लोक। सदाय क्लेशाद्गतानुजो हि
भुजः सुद्धिवर्धय। सतो जातास्ववंशान्तस्थाये नाम
एवं सज ॥२॥ याकूं अर्थ। अब श्रीहरिराइजी कहत है
जो मनसा कूं दुरलभ सक्रम नमें रूप पावे तो प्रभु वा
लक है श्रीयसोदाजी के पुत्र है द्विभुज और रंग
छोटे छोटे है मुखारविंद में नेत्र अंजन है ऐसे श्रीलल
को स्मरण करनवा है और श्रीलल वडे है जिनको चौ
एवंसजो सबनेऊचो यदुवंसजो चंद्रवंस सबने श्रेष्ट
तथा वल्लभकुल सबने श्रेष्ट पृथ्वी परतीन कुल श्रेष्ट प्र
सिद्ध है और अवतार अनेक हैं तिनमें तीन श्रेष्ट त्रेता
में दसरथजी के घर श्रीरामचंद्रजी तिनको रघुकुल
द्वापरमें श्रीकृष्ण सो यदुकुल कलियुगमें श्रीआचा
र्यजी ते वल्लभकुल [illegible] अर्थ है
है। तातें हमारो कुंवंसमें श्रीहरिही बालभाव सों सेव
नीय है तातें हमारो मनमें कछु होय तो श्री
ठाकुरजी अप्रसन्न होय जाय तो आपनो धर्म जात रहे
तातें श्रीहरिप्रसन्न रहे सोई कर्तव्य है।१। श्लोक। अ
हं भासमाचारा। श्रुनाशु विधायिना। तस्थे लिखने
किंचित्समाधानाय चेतस। रा याको अर्थ। अब श्री
हरिराइजीके छोटे भाई श्रीगोपेश्वरजी तिनकी बहुत दी
गोपेश्वरजीके अनुकूल हती। सोऊ परवर्णन करे है
हीअर्थ श्रीहरिराइजी सिक्षापत्र लिखे है। सो अब श्री
हरिराइजी भाई श्रीगोपेश्वरजीको समाधान होय

भांतिलिखतहैं तो तुमारेग्रहभंगको समा

ने सो सुनतहीं अै सो दुःख भयो मानो हमारे
पषोरिकैपरयो अै सो बुरो लागयो सो दुःख
खे तुमारे मनमें दुःखहै तदर्थ हमकछु सास्त्र
न पत्र लिखत हैं तिनको बांचिकें हृदयमें
धै चितको समाधांन करियो काहेतें यासमा
तुमारे पास होते तो आछो सो भगवद्इच्छा तो
मन में दुःख जितनो भयो सो पत्र में कहांतांई
मानो विछही घोरि दीयो यामें जो लिखी जो
सेदुःख में जब आपने पुष्टिमारगीय धर्मको स
हेय तब जानिये जो श्री आचार्यजी की पुष्टि
हम समाधांन लिखत हैं जो भगवद्इच्छाको
रनो आपने मुख्य धर्म हृदयमें प्रभुको स्मरणप्रभु
वे ऐसा प्रकार मनते बाहर न जाय सो करनो है
न बांचिकें चितको समाधांन करीयो यापत्रमें
कछु लिखतहैं तामें भगवद्धर्मस्वरूपनहैं जा
सो पुष्टिमारगीयरहे भगवद्इच्छा विचारे सो सर्वे
नौहै तातें आपनो चित्त न लगाय पत्र बांचि चितको स
धांन करियो २ श्लो सर्वेश्वरश्च सर्वज्ञः कृष्णः स
र्वात्मा सर्व समर्थो ज्ञानमूर्तो जीवइत्येवनिश्च
यात्मा तत्र भगवत्स्वरूप कहत हैं और जीवको
स्वरूप कहत हैं सो यातें जो प्रभुकी इच्छाको जीव के मे
जानें श्री कृष्ण हैं सो सर्वोपरि ईश्वर के ईश्वर हैं ईश्वरया
कहै जो मन आवे सो करें कोई ब्रह्मादिक शिवादिक
इन्द्रादिक कोई श्रीकृष्णकी आज्ञाको टारवेको सामर्थ
नाहीं है यजमानके साखिको एक पुत्र के भावनार
यन नाम तें निर्भय करि दीरे सो ऐसे सर्व करण सामर्थ हैं
तातें सर्वेश्वर श्री कृष्ण हैं और ते सैवक में सर्वके हृदय

जानतहैं।तथा कोटानकोटि ब्रह्मांडमें सर्वको एक श्रीठा
कुरही सर्वके नाहैं सबे जानत हैं इनतें कछु छिप्यो ना
हीहै।और करुणावंतहो।ऐसे ईश्वरहो।सो काहूके दुखसु
खके सजानतहोइगे।सो नाहीं परम करुणाके निधि हैं
अपने भक्तको एक वेर हू दुःख देनो नाही सहि सकत।ऐसे धर्म
हमारे हैं।अब जीवको स्वरूप कहत हैं।जीवके सो अस
मर्थहै यहजीवको कीयो कछुनाहीं होत है।यह अपनो
ऐसो मानत है।सो सगरो अज्ञानही जानने।अपने प्रभु
को भूल्यो है।माया करिके मोहित है।हृदयमें ज्ञानशून्य
है।ताते अपनो सामर्थ्य जानत है।जानत नाही है।अज्ञा
नीहै।सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु बालबोधमें कहत हैं।जो
जीवस्वभावकरि दुष्ट है।यह निश्चय है।प्रभु गुननिधि है
जीव दोषनिधि है।यह निश्चय मनमें जाननों।अब
और हू कहत है।सो कालतरेष्ठा त्रिविधा जो दिसलये
दृस्वनेस्ता।फलेच्छयाग्रहीनानानाथा दूरनेफ
ल।अथ याको अर्थ।और श्रीठाकुरजीकी इच्छा तीन प्रका
रकी है।एक प्रवाही सृष्टिको लौकिकतायें पुष्टि सृष्टि
को भगवत्सेवा मर्यादा सृष्टिको दृढ मार्गमें प्रवर्त
याभांति प्रभुकी इच्छा तीन प्रकारकी है।१।मूल।२।वि
र।३।ताते यह श्रीआचार्यजी महाप्रभुके सर्वधी दृ
ष्टि है।सो पुष्टिमार्गीय है।तिनको तो निश्चय भगवा
नको मन इच्छा है।सो इह शास्त्र उक्त है जो कार्य होय
सो एक प्रभुही कीयो।वही जानदृष्टसनमें राख्यो चाहि
ये।और कर्ममार्गीय है सो याभांति कहत हैं जैसो क
र्म करेगो तैसो फल पावेगो।वे एककर्मही को फल क
हत हैं।प्रवाही माया करि जानतहैं।जो माया ही सगरो
कार्यकरत है।।

वेक तो प्रभु हैं या भांति जान्यो चहियै अन्यथा और फ
ल को न जाननो तो कर्म करि फल होइगो कोउ साधन
करि फल की सिद्ध होइगी ऐसें वेद्या और भांति फल के
चिंतन न करनो अब तीन प्रकार की सृष्टि तीन प्रका
र की भगवद् इच्छा मानत हैं सो आगें श्लोक में कहत हैं ॥
श्री प्रवाह [illegible] निरूपणं [illegible] शुद्ध [illegible] विचारितः मर्या
दया विहीनास्तु प्रवर्तयति कर्म [illegible] पापानि [illegible] प्रवा
ही सृष्टि लोक में ही विचार राख्यो है काहे तें प्रवाही सृष्टि
के जीव न्यारे हैं देह न्यारी तैसें ही क्रिया हू न्यारी है सो प्र
वाह मर्यादा ग्रंथ में श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे
हैं जीव देह कृतीनां च भिन्नत्वं नित्यता श्रुते इति
वाक्यात् तातें प्रवाही सृष्टि भ्रम ही में हैं भक्ति मार्ग में क
बहूं आवें नाहीं और मर्यादा को ग्रहण करत हैं सो
लौकिक में प्रवर्तत हैं काहे तें वरनै करि आगे हैं न च
सा विरमार्ग ही इति वाक्यात् या भांति वेद में कहे हैं ऐसा
दूसरो मर्यादा [illegible] पदार्थ अनेक साधन सो फल
मुख्य वतावे हैं मह ज्ञान मर्यादी को नाहीं है जो आछे
कर्म करें तो स्वर्ग लोक में जात हैं तहां सुख भोग के जब
पुण्य क्षीन होत हैं तब फेर यह संसार में गिरत हैं प्रभु
की प्राप्ति नाहीं है सो कर्म मार्गीय स्वर्गादि ही को फल जान
त हैं या भांति मर्यादा सृष्टि वेद इच्छा मानत हैं या भांति
प्रवाही और मर्यादी सृष्टि को प्रकार कहे हैं अब पुष्टि सृ
ष्टि को [illegible] करने को है सो आगें श्लोक में कहत हैं ॥ श्री
कृष्ण स्वरूप [illegible] ना नो तु स्वस्य सर्वं करोति हि न [illegible]
हि या पक्ष पोषु: [illegible] वे नो [illegible] सु [illegible] जो पुष्टि
सृष्टि के वल्लभ आनंद स्वरूप को [illegible] करे [illegible] है
भगवत् स्वरूप की सेवार्थ पुष्टि सृष्टि करी है भगवान
भगवत् स्वरूप सेवार्थं तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत् इति वच

नाम। तातें पुष्टिसृष्टि यह मनमें विचारें जो प्रभु अपने
स्वरूपबलतें स्वतः आपुही करेंगे। यह चिंता नाही क
रनी है। काहेतें प्रभु तो सर्वव्यापक हैं। सर्वठौर प्रभु ही हैं
तहां चिंता काहूकों करनी। श्रीकृष्णही को कीयो सर्वठौ
र होत है। और श्रीकृष्ण कैसे हैं। कृपाल हैं। अपने भक्तनपर
सदा कृपा ही करत आये हैं। सो कृपा करेंगे। या भांति
प्रभुकों चिंतन करनो। और श्रीकृष्ण कैसे हैं विभु हैं सर्व
सामर्थ्ययुक्त हैं काहूको दीयो ऐश्वर्य नाही है। ब्रह्मादि
कशिवादिक इंद्रादि देवता हैं तिनकों भगवान ऐश्वर्य
दीयो है तातें देवता फल दीयो चाहें तो प्रभुकी आज्ञा
लेत हैं। स्वतः सामर्थ्य देवतामें नाही है तैसें श्रीकृष्ण ना
ही हैं। आपुही सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं। सो श्रीगुसांईजी विश
दमें कहे हैं। कर्तुं पुनरन्यथाकर्तुमनुष्या कर्तुमीश्वरे सा
मर्थ्ये यस्या हर्षेत्पुपेवातो न संशयः इति वचनात्
याभांति कर्तुं अकर्तुं अन्यथाकर्तुं प्रभु सर्वसमर्थ हैं ता
तें तो किंचित् वस्तु अपनेकों चिंता नाही करनी है
प्रभु आपुही तें सर्व करेंगे प्रभु सर्वसामर्थ्ययुक्त हैं ६ अ
व आगें कहत हैं। श्लोक ॥ निवनेयत्पनिःस्पृहः स्वको
याचरूणानिधिः ॥ यदिजीवस्वभावेन निवनेरन्लते
स्वतः ॥ सावेरपि ॥ और श्रीकृष्ण निःस्पृह हैं तातें निव
नेवन तो है। अपने स्वकीयको अनिष्ट निश्चय ही करें।
काहेतें करुणानिधि हैं। तहां कोई पूर्वपक्ष करें जो भाग्यो
न तो समस्तरीति सर्वप्राणीमात्र परवाद सी दृष्टि है। भ
गवान विश्वंभर सर्वके भरन पोषण करत हैं। सो तुम
कहो अपने स्वकीयपर करुणा करेंगे। सो और पर न क
रेंगे या भांति कोई संदेह करें तहां कहत हैं। जो सगरे ज
गतको प्रभु आनंद दान तो है। तासें भक्तनकों अधिक आ
नंद दान करत हैं। सो निरोधलक्षणमें श्रीआचार्यजी

सिद्धप्र०
पृ.२—

सह प्रभु कहे हैं सर्वानें समयस्था पृष्टपानें
सर्वे को आनंद होतो है छपानें स्तुलमें है सू
जान ही मैं है सो श्री भागवत में न स्वे
दूध सो प्राप्ति कहे हैं श्लोक ॥ अहं भक्तपरा
धीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विज। साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तै भक्त
प्रि इति वचनात् भगवान भक्तन के वश हैं भगा
नाहीं भक्तन के अर्थ अवतार प्रभु लेत हैं त
स्वकीय को अनिष्ट वे नहीं होइ के से करुणा
यह जीव को स्वभाव है जो रे दुःख क्लेश में
ही रहता चिंता तु रहात है तो यह स्वभाव निव
वे में एक प्रभु ही समर्थ है और दूसरो कोइ न
७ अब और एक कहत है सो अनिष्ट मे व सब
ला हरि करा नीहि इष्ट अनिष्ट विवेको है जीव बु
जीयतो दु या ... भागवत में नष्ट को प्रभु ज
हें का हते प्रभु सवेज है हरिक हिं मेंव न वत है
आपही हरि करेंगे जैसे प्रह्लादजीको हरण्यकुस
गडु रवइ हीये होली ... पिचजी प्रथम नाहीं जान
तो परंतु सब ... परीक्षा लेनाथ प्रभु प्रथम नाहीं
हे जब प्रह्लादजी को दुःख हें ते ही हिरण्यकस्य
हीये और प्रह्लाद को भगवद् आश्रय छूटो नाहीं
तब प्रभु प्रगट होय के अनिष्ट दूर कीये हिरण्यकस्यप
को मारे नाते हम ... सब भगवद् आश्रय भक्तन को
नष्ट जो नाहीं है और प्रभु तो छपाकर ही से सगरे दुः
ख दूरि करेंगे परंतु जीव बुद्धि तें इष्ट नष्ट को विवेक जा
न्यो नाहीं जात है सो भगवद्भक्त होइ के अन्याश्रय
करत हैं लोकिक वैदिक चिंता करत हैं भगवान तो जो
करत है सो भली ही करत है मेरे भाग्य तो बहुत है सो
प्रभु थोरे ही में निवेर करेंगे सो पर प्रभु अनुग्रह करी

ायहहै डभयो।याभांतिधीरजजीवबुद्धितेनाहीरहतहैं तातें
दुखपावतहैं। अबश्लोकहहैं श्लोक। ॥ आदिष्ट्याग्र
हीतानांमनूनांभ्रमसंभवात् अतएवाहिसंसारमन्यंते
दुखरूपीणां ॥ टीका॥ अबजीवप्रभुकेस्वरूपकोजा
निबेमेंसामर्थनाहीहैं ताहितें अविद्यारूपभ्रममें आरमे
रीहतनाहीहैं ताभ्रमकोजीवपरिनाहीसकत तद्यपि
बेजाननहैं जोक्षणमात्रकप्रभुसोहैं इसंबंधीपदार्थसबमो
तेन्यारोहैं। सोभगवाररहैं कालकाहूकोछुड़ानाहीयह
जानहूमनमेंआवतहैं परंतुनउअहंताममताजीवकी
नाहीछूटतहैं कामक्रोधमदमत्सरअहंतालौकिकदुखसुख
यसीचिंताग्रसितरहतहैं तातेंसंसारकोसुखरूपस्व
धीजोसुखकहैं नाहीकेसुखरूपमानिरह्यो हैं तरू
संसारतेंछुड़ावहीगो ॥ सोकोनप्रकारसों आगेंजो
मेकहतहैं। टीका॥ वालाउकरआमसमा को
चितपितभसम्मनिश्यतनिवर्तयतवला
कोग्रथे॥ जद्यपिजीवसंसारकोसुखरूपमानिरह्यो
नहा प्रभुअपनेभक्तनकोयाभांतिछुड़ावत
द्रव्यमेंमनहोयतोद्रव्यकोनासप्रभुकरें जो
नहोयतोस्त्रीकोनासकरें। जोपुत्रमेंमनहोय तो
कोनासकरें॥ याभांतिभक्तकोमनजहांलौकिक
गो। सोप्रभुईस्किरातहैं। जबयहजीवस्वभावते
भांतिकेदुखपावतहैं। परंतुप्रभुईतनाहीहैं
किकहतहैं तनकहतहैं। जे सब्धतानेवालकहैं
रवकेकीसमपेंकोपकविकोहोरतहैंयह
जानतजोयहकालहैकाढेगो।

परंतुप्रभुकोस्नेहभक्तपरहै कृपाकरिसंसारतेछोडावतो
है तातेसंसारसुखमेंलागननाहिदेत १ अवऔरहू
कहतहै सो यथाकहूँ तिनवाला आतासंसारि
णतथाअत्रनाथवहि सवेश रस्नदत्त रमोवका शेया
ऽथ्य पितास्नेहकरिसपेतेनिवर्तककरतहैं तवबहुवा
लकत्यजाँ नकरिरुदनकरतहैं जोमेरोखिलोनालेन
नाहीदेत तेसेंहीयहसंसारीजीवपरप्रभुअपनीपरस
कृपाकरी संसारसेमनहैं तादीवस्तुकोदूरिलेतहैं तव
यहमनमेंप्रेंग्रमपाकरिदुखपावतहैं प्रभुकोगु
णअरथानकरिकैनाहीमानत जोप्रभुकृपाकरी संसा
तेछुडायो औरभक्तसवेतहैं श्रीहरअपनेभक्त
उअवगुजानिसंसारसोचनकरतहै जेसेंपुराणनसें
कथाहै जोनारदजीकोमनव्यारकरिवेकोभयो सोए
राजाकीवेटीकोस्वयंवरह्नो तहांसगरेदेसदेसके
ाजाआएसो नारदकेमनमेंभयो जोमेंवरु तवनार
दविचारी जोराजाकीवेटीजापरप्रसन्नहोयमाल
नहरावेतासोंव्याहहोइगो सोपारसमयतोसुंदररूप
वाहिये जोराजाकीवेटीरीझे तातेसवनसुंदरभग
ानहे उनकोरूपलाऊ तवनारदजीभगवानपासऔ
ो प्रभुवहुतसमाधानकीरो पुछे जोनारदजीकहो
ोसेंतुमारहू मेरोभलोहोयसोकरियो अपनो
रदहुतराजाकी वेटीव्याहिलाऊं तवप्रभुसिकाय
ोवकह्यो जोतुमारोभलोहोइगो सोमेंकरूगो तुम
ाऊमेदीयो तवनारदतेमायाकेभ्रमतेप्रभुके वि
ावचनसमुझेनाहीं तहांस्वयंवरसेनातहांधा
के सोश्रीठाकुरजीनेमर्कटकोवहुतवुराटेढोमुख
कीयो औरनारदजीजानेजोमेंभगवानकोरूपपायो
ोवारंवारनिहारतहकन्याजायतासन्मुखआयवे

ह सगरे लोग हसे जो कहां ऐटो मुख करि आयो सो नाए
रको ज्ञान नारीका मुख देखते पाछे प्रभु राजा को रूप क
रि धारि कन्या ने माला पहराई तब प्रभु ले गए तब ना
रद निरास भए तब काहु ने कही नारदजी अपनो मुख
तो देखो सो नारदजी दर्पन में मुख देख्यो तो बानर को
देखो तब बहुत क्रोध भगवान पर कीयो जो मेरी हां
सी जगत में कराई पाछे प्रभु समझायो तब ज्ञान नार
जी को भयो प्रथम नारदजी तपस्या करत हते सो काम
देव तपस्या में भंग करिवे को सहाय सहित गयो सो
नारदजी को मोहन भयो कामदेव हार मानि के फिर ग
यो सो अभिमान प्रभु नारद को या भांति दूरि कीयो
या भांति प्रभु अपने भक्तन को संसार ते बचाकार
छोड़ावत हे ऐसे श्री ठाकुर है ११ अब और एक रत
हे श्लोक॥ इत्येवं दूष्यते नाम न तथा विध मितः अभ
संसार वेरी धरनी पति रीयो न्वरूपयतः १२ याको
अर्थ अब कहत हे जो प्रभु को रूप है सो सब छोडाव
त हे ब्रजभक्त श्रीठाकुरचंद्र को ललित त्रिभंग स्व
रूप है रसिक तिन को पति पुत्र घर सब में ते मन छोडि
के प्रभु को भजे ऐसो रूप है और नाम करि के अनाम
तथा हि अनेक भक्तनको संसार छुट्यो और विधि जो
प्रभु की सेवा करत हे तिन हु के सब संसार दूरि होत
हे तथा प्रभु लीलान के अनेक विधि की करत हे ताकी
जो कोऊ स्मरण करे तिन हु को सब कष्ट संसार दुख
दूरि जाय और संत श्रीठाकुरजी को मन हि में यह रह
त है जो भक्तन को संसार जाय मेरे पास आवे भक्त को
भलो होय यही प्रभु विचारत हैं ताते धरनी सो यस बा
र संभरनी जो पृथ्वी पति रीझे भगवान को नाम द
है है

य॰ रीहैं तहां संसारभक्तनको होय तहां आपस्वरूपको
श्रीकृष्णको रूपनाम लीला आपु मनकरि भक्तको
संसारदूरिकरिभलो होय सो ईकरतहैं १२ अब श्री
रहकहतहैं श्लो॰ ॥ मन्यसेहृदयभ्रांतःश्चलवि
सातिकारणं संसारसुत संकूलस्तेकथस्थापयश्री
॥ १३ ॥ या॰ अ॰ ॥ यहजीवके हृदयमें अनेकजन्मको
भ्रमहै सोगयस्तोकमे समर्पणमें कहहै जोअन
स्वकालको भ्रमयहजीवके हृद [illegible] रैतो
न अविद्या सूरिके श्रीकृष्णको भूलिगयो है ताते
यहसंसारकोजनमजानियामेमनकोलगायोहै
संसारमें देह संबंधीसुखदुःखको उत्तममानतहै सो
श्रीकृष्ण संसारको विसरावत काहेते हरि है तहांस
येहाय तहां अंधियारोको नभांतिहै तैसे संसि
सार अविद्यारूपतमके सूर्यरूपप्रभुसंसारभक्त
नको कैसे राखें काहेते जीवतो संसारसंबंधीसुखविचा
रतहैं तो अब यहकार्यकरे तामें देहसंबंधीकुटुंब
दुःखपावे तोमें हूसुखपाऊं और प्रभुयहविचारत
हैं जो अब यामें याको मनहै सो हरिलेहु तौ यामेंतेमन
छूटिके मेरो आश्रयकरे याभांति श्रीकृष्ण भक्तनकोसं
सारहरतहैं १३ अब औरहू कहतहैं श्लो॰ ॥ एवंतदीय
मनसि निधेयः स्वप्रभोर्गुणान् स्वस्मिन्नपि विनिश्चया
प्रभोरंगीकृतनिधूवा १४ या॰ अ॰ ॥ याभांति तदीय
नो पुष्टिमार्गीय भगवदीय है सो अपने मनमें प्रभु
के गुण धरे सो ऊपरते दिखाइवेके लीये जो प्रभुके गु
ण धरे सो ऊपरते दिखाइवेके लीऐ जो प्रभु करतहै
सोभलीकरतहै और भीतरते मन करि दुःखपावै श्री
सैनव करै अपने मनमें निश्चय यह धारणा करै जो अ
पने अंगीकृत भक्तनके प्रभु रक्षक ही हैं वहांभयो

दुखआयैं तो अपने सेवकीयको दंड प्रभु देतहैं जैसें स्त्रीक
छु मन्यो होतें और भांति वरै तौ पति दंड देहै रीति लोच
लावै तैसेंही प्रभु अपने भक्तनके दोष देतिनके दूरि
करिवेंकें अर्थ दंड देतहैं॥ सो श्रीगुसांईजी विज्ञप्तमें कहें
हैं श्लोक॥ दंडस्वकीयतामत्वेत्यंवेवोहि मेवना। अस्मा
सुखीयतामस्याय कुत्र यदा करा॥ इतिवचनात् अ
पने सुखीयको प्रभु दंड दीयो॥ सो अनुग्रह हम जानिम
नमें सुखी हैं॥ तातें जहां जहां हमतें अपराध परे तहां तहां
सुखन हमकों दंड देनो उचित हैं॥ या बातमें हम मनमें सु
खी हैं॥ या भांति भावदीय अपने प्रभुको अनुग्रह जाने
दुखदुःख अनुग्रहरूप जानि प्रभुके गुण अपने हृदय
में धरे वाहैतें प्रभु पर दोष धरत नहैं॥ सो वह सुख हैं पन
कों पुष्टिमार्गमें अंगीकार नाही हैं॥ तातें निश्चय मन
वचन काय करि यह जानैं तो श्रीठाकुरजी अंगीकृत
निजभक्तनको रक्षक हैं॥ १४॥ अव और हू वह नहीं स्लो
कें अनन्याश्रय हैं वादीपै स्लोक वर्णन करतहैं कर्मा
स्थितं थावेदेह हरिस्तु न करिष्यति॥ १५॥ याके अर्थ अ
व ऊपर कहे जो भक्तके रक्षक प्रभु हैं॥ सो दूसरो देतहैं
ता भांति भक्त सुख ही यह लोक परलोकमें पावै सो
कोना ही करत॥ या भांतिको इव हेत सो कहत हैं
जो यह जीव स्वभाव करि दुष्ट हैं जो लौकिक कार्यमें
सुख पावे तो तहां इमनकी आसक्ति लगि जाय जो
वैदिक कार्यमें सुख पावै तो तहां आसक्त होय जाय॥ ता
तें यतें प्रभुको आश्रय जात रहैं तो भक्तिको नास
होय॥ तातें श्रीठाकुरजी लौकिक वैदिक कार्यकी सि
द्धि करैं नाही॥ तव दुःख पायकें उह कार्यमें मन न लगाई
करै केवल प्रभुहीको आश्रय करैं॥ सो श्रीआचार्य
महाप्रभु चारो वरनके लक्षण श्रीसुबोधनीजी

निबंधमेंकहेहैंजोकोईजीवहोउब्राह्मण
शूद्रस्त्रीआदिप्रभुकीसरनआवेंताकोप्रभु
हैंतेछोड़ायअंगीकारकरतहैं औरश्रीनवरत्न
हमारेआचार्यनेश्रीवल्लभाचार्यजीवर्णनकि
जोलोकवेदमेंस्थितिप्रभुभक्तनकोनकरेंसर्व
रनेछोड़ायकेआपनेकीयेयहविचारिकेहरिको
आश्रयकरनो यहसिद्धांतसर्वोपरि १५ इति श्री सि
द्धांतसिद्धांतपत्रकीटीका श्रीपे...
चार्यकृतसिद्धांतपत्रमेंकहेहैंजोलौकिकवैदिकप
नासिद्धकरेंतोप्रभुकोगुणहीमनमेंधरेंजोप्रभु
करतहैंसोयहधीरजकबहोयतबभगवदीयकोसं
गकरिभगवत्स्मरणभजनकरेंसोप्रकारआगेसि
द्धांतपत्रमेंकहतहैं श्लोक॥ सदाश्रीगोकुलाधीशःस्म
र्तव्यःसर्वथाजनैः तदीयैर्मिलितैः सर्वदोषचिंतावि
वर्जितैः॥ या व्याख्या पुष्टिमार्गीयभक्तजोजनहैंति
नकोसर्वथायहीधर्महैजोसदाश्रीगोकुलाधीशको
स्मरणकरें अबश्रीठाकुरजीकेअनेकनामहैंतामें
श्रीगोकुलाधीशकोस्मरणक्योंकहेसोयातेंजोगो
पगायतिनकेपुत्रकेरसबको यहचाहियहजतायोजो
निःसाधनपुत्रलोकगायजोनिःसाधनहैंतिनके
प्रभुरक्षकहैं तैसेंहीजीवजबनिःसाधनहोयगोकु
लाधीशकोस्मरणभजनकरेंतबप्रभुदयालहैं
सोअनुग्रहकरेंहीगे सोनिःसाधनभावसोंभजन
स्मरणकरवेनें अवतदीयभगवदीयमिलेंसबदुष्ट
मेंअनेकप्रकारकेहोतहैं काम क्रोध मद मत्सर तालौ
किकवैदिकचिंताइत्यादिहोय विनाभगवदीयके
संगाकेननाहिंभगवद्धर्मबरप्रभुमनतेदोषचिंता
दूरिनजाय जैसेरासपंचाध्यायीमेंसबभक्तनकोमद

भयो।तहां एक मुख्य भक्त कों मद न भयो।तब श्री ठाकुर
जी एक भक्त कों ले पधारे।तब सगरे भक्तन कों अपने मद
की खबरि नाही।प्रभु पर दोषबुद्धि भई।जो हम सबकों छोड
गये।या भांति सगरे भक्त प्रभु कों खोजिवे कों चले पा
छें एक भक्त कों हू मद भयो।तब प्रभु न हां ते अंतरध्यान
भये।पाछें ढूंढत ढूंढत सब भक्तन हां आय पहुंचे।जो तु
म हू कों श्री ठाकुरजी छोडि गये।तब उन कों अपने दोष
को ज्ञान हतो सो कहो।जो मैं मद कीयो।ता करि प्रभु अं
तरध्यान भये।यह सुनत ही उनके संग ते सगरे भक्तन कों
ज्ञान भयो।अपनो दोष पुछ्यो।जो हम हू कों मद भयो ताते
प्रभु छोडि गये।या भांति श्री आचार्यजी श्री सुबोधिनीजी
में निरूपण कीये हैं।ताते भगवदीय के संग बिना दोष चि
त्त कों नाश न होय।ताते भगवदीय सों मिलिबे कों स्मरण
प्रभु कों करें।सो श्री आचार्यजी महाप्रभुन बल्लभ ग्रंथ में के
हे हैं।निरुद्ध तनु स्मर्तव्य सर्वथा ताद्रूशौ जनैः।इति वचनात
भगवदीय के संग ते सर्व दोष चित्त कों नाश होय प्रभु
प्रेम दृढी कृपा कर्यो यह सिद्ध तम मन में जानें।१ अब केन्यो रह
वह तहां।लौकिकान्न लौकिके मतिः कार्यो भगवद्भाव
बाधिका।लौकिक वैदिक व्यापि स्वयं साधन ये ते प्रभु
रूपा कृत्य।लौकिक बुद्धि अलौकिक पदार्थ न क
रनो भगवद्भाव में बाधक है प्रभु की लीला में श्री वल्ल
भ कुल में भगवदीय में सेवा में मर्यादा जन्म श्री यमुनाजी
श्री गिरिराज आदि दिव्य लक्षण ता भाव दवाता ग्रंथ की गी
ता श्री भागवत इत्यादिक में लौकिक मति न करनो।।
सगरी प्रभु संबंधी जो निभय संयुक्त सेवा स्मरण करें
लौकिक बुद्धि आवें तो अलौकिक भाव के में बाधक
है या।और लौकिक वैदिक कार्य की चिंता मन में न
रखें।

सि.प. वैदिकप्रभुत्र्प्रापुहीसबैकों लिवेहो ॥ त्र्प्रौर वह्म
५६ लौकिकवैदिकवा.. के र त्र्प्रपनेभगवदीयसे
नतावत हैं जो तुमलोकवेदकी चिंता मतिकरो
तुमारे त्र्प्रर्थ करत हैं तुम सुखेन प्रभुकी सेवास्म
रो ॥ तातें प्रभुते ॥ विकथ्यापुरीनेसिद्धकरो ॥ श
त्र्प्रौर सुकरत नहीं ॥ श्लो ॥ ३ ॥ उक्तानीमीहया: काल
निवृत्तसमागतानि ॥ यथावदर्थ विसंधमनस्थापन
योपद्राजयो ॥ ३ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्रीहरिरायजीक
तहैं या कालमें जो मिलत हैं सो प्रतिकूल मिलत हैं को
हैनें भगवदीयके संगतें दुष्ट भये हैं सो तो वे बिना ही मि
लत हैं ॥ त्र्प्रौर जो मिलत हैं सो लौकिककी कामना त्र्प्रा
दि स्वारथली ये मिलत नहीं त्र्प्रपने भलेको संगम ल
क्रिया ही सत हैं ॥ भीनर्त्ये नवक प्रकार ली हैं तो दिकवा
नौ सम्न भरी हैं ॥ तिनके संग तें फल सिद्धि न होय त्र्प्रैसो
संग यह कालिमें मिलत हैं ॥ तातें यथा कथंचि जितनो
वनै तितनो त्र्प्रपने मनको श्री ठाकुरजीके चरणारवि
दमें लगावनो प्रभुमें प्रीति बढी वे के लोग बहुत लोगन
सो मिले तो तामें त्र्प्रौर भगवद्धर्म घटै सो न करे जितनो
है तितनो ही वीरता करि प्रभुके चरणारविंदमें मनको
स्थापे ॥ याके त्र्प्रर्थ कहत हैं ॥ श्लो ॥ ४ ॥ सेव्यया चम
न स्थापन साधक ने येव हि गार्हस्थ्य स्याविवाहेपि
प्रयत्नः त्रियतां द्रुतं ॥ ४ ॥ याको त्र्प्रर्थ ॥ श्री ठाकुरजी
की सेवा त्र्प्रादि भगवद्धर्ममें मनको स्थापन करे
त्र्प्रौर भगवद्धर्ममें त्र्प्रपने मनको स्थापन करे त्र्प्रौ
भगवत्सेवामें सगरी वस्तुको संग्रह जाने जो वस्तु
भगवत्सेवामें साधक होय ताको राखे जो सेवा
कूं मन त्र्प्रावे त्र्प्रथवा बाधक होय ताको त्याग
करे यह गृहस्थाश्रमहूं भगवत्सेवार्थे ही जाने त्र्प्रौर

विवाहादिककौप्रयत्नभावद्सेवार्थहीकरेंसोकाहेते
जोग्रहस्थाधर्मविनाभावद्सेवाभलीभांतिसोनहोय
सोतातेंसेवार्थहीकरेंसोनदमस्कंधश्रीभागवतभगवांमें
नरूक्तौयाप्रतिकहेहें।स्लोक।।सत्कृत्यप्रतीतंचसालो
क्यादिचतुष्टयं।नेछंतिसेवयापूर्णाःकुतोन्यत्कालविप्लुतं
इतिवचनात्।।भक्तजीभगवत्सेवासेंप्रतीतहें।।तो
चतुष्टमुक्तिहेंजेतिनकोनाहीचाहतहें ऐसेसेवाक
रिकेंपूर्णहें तिनकोंकालकहाबाधककरेगो।।याभां
तिभावद्सेवार्थग्रहस्थाश्रमविवाहादिककार्यस
बकरे।।आगेंश्रवणकोरकहतहें।।स्लोक।।समर्पेत्वाय
सोभोगोत्वदीयानांक्वचिन्मनः।तथापिचेद्वैसौगोनि
वार्यःसर्वथैवहि।।।याकोअर्थ।।तदीयत्वनसोअ
पनेभोगदेतिरस्त्रीकोनजानेंभगवद्सेवार्थजानें
तयाभोगाकरेंसोकामकीनिवर्तार्थतयाधुत्रभगवद्
भक्तहोययहकामनाकरिविवाहकरियाभांतिसगरीइं
द्रीयघरभावद्सेवामेंलगावें।।।आगेंश्रवणकोरकह
तहें।स्लोक भावोत्रसाधनंमार्गेप्रमेयंभगवान्हि
सः।प्रमाणंच स्वसेवाहिसएवचफलंपुनः।।याको
अर्थ यहपुष्टिमार्गमेंसगरीसेवाकीरीतिहें।।सोसाधन
रूपदीसतहें परंतुसगरीभावरूपहें.ताहेतें याकोकारन
कहाजोफलरूपहेंसाधनरूपादिसोतहांकहतहें जो
फलतोप्रभुआपनेप्रमेयबलहूथराखेजेवचावेंगत
वहरहियोयहनिश्चयनाहीजोइतनेदिनमेंफलहोय
औरजीवस्वभावकरिफलकीमनमेंचाहरहतहें तातें
सेवासाधनरूपदीसतहें।।तोसेवाहीकोफलरूपजानन
हें ताकोफलरूपहें।।तातेंश्रीकृष्णकीसेवाहें सोप्रमान
रूपजानेंफलरूपजानें।।प्रमाणंजेकेईजानिहूमसे
वाकरतहें।।तिनकोसाधनरूपभगवद्से

को यह रूप यह जानत हैं जो इहमें तो प्रभु सेवा ही रहे सो प्रभु
त्र में यथ वरतते ही रहे सो मैंने सायो गपता है याभांति श्रमे
यफलरूप जानि के भगवत्सेवा करत हैं तिनको फलरू
पहै जा भगवत के हृदय में जैसो भाव है तिनको तैसी प्राप्ति
है ई याको श्री आचार्यजी कहत हैं श्लो ॥ तस्मात्सर्व
मं रक्षेन्निधिरूपस्तु सेव्यो रामछिरइतः सर्वज्ञात्वा शालो
निवेदयेत ७ या॰ श्लो याभांति अपने भावकी रक्षा
सर्वथा रत्नेवकरें प्रभुके स्वरूपकी रक्षा सर्वथा रत्नेवको
हैते ऊपर वड़ी आरोहै जो काल कठिन है रं बहुःसा
होइ तो अपने प्रभु में तें वाछुलता छूटि जाय तथा भग
वत्सेवा तें दूसरे साधन में मन लागे तो सेवा में शिथि
लता होय जाय तातें अपने भावको निधिरूप जानि लौ
किक वैदिक कार्य अनेक दुःसंगतें रक्षा करि लेहि सो
रक्षा कौन प्रकार करें सो तहां कहत हैं जो भगवत्सेवा
में स्त्री प्रतिबंध करे तो वाहू को त्याग करिये स्त्री को भा
वन गिनिये त्याग ही करिये और जो भगवत्सेवा में
माता पिता प्रतिबंध करें या भांति देह संबंधी तथा देस
में राजादिकको प्रतिबंध होय सो ज्ञान करि विचारि वि
चारि छोड़ि एक वार न छूटे तो क्रम क्रम सों सब छोड़ि अ
पने भावकी रक्षा करि लेहि और पुष्टिमार्गकी सेवा स
र्वोपरि जो निःसाधनको भाव निधिरूप जानि गोप्य राखे
याभांति रहे ताको श्री महाप्रभुजी की कृपा तें वेगि अ
नुभव होय ७ इति श्री हरि इ कृ स म ला
नो को काश्री पे र क्ष स णी ७ अब
ऊपर कहे ता प्रकार करि भगवत्सेवा को करि भाव सहि
त करें परंतु मन में दृढ विश्वास राखे सो तो सर्व सि
होय सो अब आगे कहत हैं श्लो ॥ ऐहिके पारलो
के च सर्वसामर्थ्यसंयुक्त सरवगो कुलाधीश चिंत

य:सदाहृदिस्थाप्यो के अर्थ॥ अब श्रीहरिराईजी कहत हैं जो
गोकुलाधीसकों अपने हृदय में सदा चिंतन करो श्री स्वा
मीरें ता में यह चिंता बाधक है एक तो यह जो किंकार्य
मेरो कैसें सिद्धि होइगो॥ और मेरो लौकिक कौन भांति सों
सिद्ध होइगो॥ में तो भगवत्सेवा करत हों तो चित्त में निर्वा
ह कैसें होइगो॥ औ मेरो अलौकिक परलोक कैसें सुधरे
गो॥ यह दोय चिंता है ताको त्याग करो यह ज्ञान मन में रा
खो॥ जो प्रभु सर्व सिद्धि करिवे में सामर्थ्ययुक्त हैं प्रभु लौ
किक कूं सिद्ध करेंगे॥ काहे तें श्रीगोकुलाधीस हैं सो सर्व सा
मर्थ्यवान हैं यह विश्वास दृढ मन में करि सुमरन करो॥
सदा नेमपूर्वक करो॥ १३॥ आगें अब और कहत हैं सो
का॥ विश्वासस्तत्र कर्त्तव्यो भक्तसेव विधायिनि खरोय
देव तत्रापि दोषस्फूर्त्तीयन्नो भवेत्॥ १४॥ याको अर्थ॥ अब क
हत हैं जो दृढ विश्वास मन में राखे॥ यह मुख्य विश्वास
विभाव है काहे तें विश्वास दृढ होय तो भगवद्धर्म था
रह वनि आवे तो वाको कल्याण होय और लोगन
को देषा देषी को भगवद्धर्म वहुत करे मन में विश्वा
न होय तो सो धर्म सें फल सिद्धि नाहीं है सो श्री आच
र्यजी महाप्रभु विवेकधैर्याश्रय ग्रंथ में कहे हैं ब्रह्मा
स्त्रको भाव्यो प्रानसेवेति निसेमा॥ जब हनुमानजी
सीताजी की सुधि लेन कों लंका में गये हैं तब राक्षसन के
बाग उजारे अनेक राक्षसन को मारे तब इंद्रजीत कों
रावन ने पठायो सो इंद्रजीत ने ब्रह्मास्त्र चलायो प
ले तो इंद्रजीत ने बहोत उपाय कीयो॥ परंतु हनुमा
नजी पकरे न जाय॥ तब पाछें इंद्रजीत ने ब्रह्मास्त्र चे
यकें पकरि लीनें तिनकों नीनी॥ तब हनुमानजी सोता के वचन
न्य करना थे उद्धव ब्रह्मास्त्र में वं

एसो अलखें तबानर कि तिनने कराहू सनको मारे सोय
ब्रह्मास्त्र के ताग में के से बाध्यो या भांति रावन को अवि
श्वास भयो तब ब्रह्मास्त्र के ऊपर लोह की सांकर सों
बांध्यो तब ब्रह्मास्त्र आपुही छूटि गयो तब हनुमान
जी मोटे भये सो तब सगरी सांकर टूटि गई सो टूटि के न्या
री जाय परी पाछें लंका सगरी जरायो अविश्वास तें ब्रह्मा
स्त्र नष्ट भयो और चातक है सो एक स्वाति बूंद को वि
श्वास राखत है और जल नहीं पृथ्वी ऊपर नाहीं जानत
ता विश्वास तें घन जड है तो ऊ वाको मनोरथ पूरन
करत है ता तें वैष्णव को मुख्य विश्वास चाहिये को
है ते अविश्वास है सो आसुर धर्म है विश्वास है सो भगव
द्धर्म है ता तें दृढ विश्वास है सो जाके हृदय में होय ताको
सर्वोपरि फल प्राप्ति होय कल्यान होय और अपने दोष को
बार बार विचारे अपनपे को दोषरूप जाने दोष की स्फु
र्ति करि मन में दोष की भावना करें काहेतें अपनो स्व
भाव है ताको विचारें तो मन में दीनता आवे जो मैं महा
दोषवंत हों सो प्रभु कैसे दया करेंगे या भांति दोष
की स्फुर्ति होय तो प्रभु की परम कृपा अपने मन में जानि
ये सो भगवदीय गाये हैं माधो हों पतितन को राजा हों
पतितन को नायक हों पतितन को ईस या भांति अप
ने को सबन में दोष जाने तब जानिये जो दोष की स्फु
र्ति भई तब दैन्यता होय सो तब प्रभु कृपा करें और आ
गे आव और हू कहत है श्लो० [illegible] आर्तिपूर्वे साधनं च दु
[illegible] अतः सदा [illegible] तैव स्थीयतां ततः कृपायु
ते [illegible] आर्ति प्रभु के मिलिबे की है सो साध
न हू आर्ति समान कोई नाहीं और फल हू आर्ति है हृदय
में आर्ति होय तो भगवत्सेवा सुमरन सब होय और
प्रभु कृपा करें अनुभव करावें ता पाछें और दूसरो आर

ती होय ऐसो ज्यों आर्ति बढे त्यों त्यों अधिक अनुभव अधि
क प्रभु कृपा करें ताते आर्ति है सोई व्रजाधिपति के संगमक
राइवे में कारण है। सदा विप्रयोग आरति करनके रनश्री
ति रूप होइ जाइ तब प्रभु कृपा करें जैसें अग्नि तें सवं धने
नवनीत द्रवीभूत होय। सो निरोध लक्षण में श्री आ
चार्यजी महाप्रभु कहे हैं। जैसें रामानानूजनानं दृष्टांतु
पायुक यदा भवेत्। तदा सर्व सदानंदं हृदिस्थं निर्गतं ब
हि स्थितिके ग्रासंयुक्त प्रभुजी वक्को है रखो तब कृपायु
त होय। सो हृदय में तें बाहिर पधारि रससनन्द है। ताते
आर्ति ही पुष्टिमार्ग में साधन है। आर्ति ही फल है भगव
विप्रयोग में तद्रूप होइ जाय। तब प्रभु कृपा करें। आश्री
तें अब औरहू कहत हैं। श्लोक ॥ न्याश्रयो महानंद
बाधको भीयतां ततः। रहे तें नेव सच्चेतो विमुख बि
धास्यति ॥ ४ ॥ याको अर्थ। अब ऊपर कहे जो विप्रयो
गम्भ्राधं तें करी। आर्ति ही साधन फल रोक है तिनका
न्याश्रय बाधक है। सगरी आर्ति को दूरि करे। सगरा
धर्म अन्याश्रय नों स्वरूप कहे हैं। ताते अन्याश्रय तें
स दाउ रापतर है नों। सो उरीति स्मृति में कहे हैं। श्लोक
ना नादै नमस्कार्यो नान्यदेव निरीक्षयेत्। नान्य प्रसा
दमाहे नान्यं दायतनं व्रजेत् ॥ ५ ॥ इत्यादि स्मृति वच
न विचारि अन्य देवकों देखने हू ना ही। नमस्कारादि
प्रसाद कछुन लेइ। और अन्य देव को आश्रय करें ता
व हमुख जानिये। अपने मन में वाको वे मार्ही न्याश
ही करें अपने भावकों रखाय कहेते। विमुख कोए
दारा इ सर्व धनते दुख ह्वैजय जो। सोई गुसाईंजी वि
मर्यक हैं। श्लोक ॥ अहं करंगी द्रगंमगीसगीनाम
वृतो स्मये अन्य सर्व धर्माधापी कंधरामे बाधते
अन्य सर्व धया भांति वा
...कौ अन्य सर्व...

पु.प. ६ हमें सब जीवको संग छोड़ि अपने भावकी रक्षा करे यह
निश्चय सिद्धांत है। भा॰ योगेश्वर श्री रहूकह तदोस्तो
तदीयेषु सदा स्थेयं सद्भावेन सर्वथा। तत एव भक्तिमार्ग
स्य सुसहायत्वे निरूपिता। भाषा॰ याको अर्थ भगवदीयके सं
ग रहे तो वह मुख्यता न होय। अन्याश्रय हू न होय सुद
ढ भाव ह्वे प्रभु मिले। तदीयके संग सर्वथा सुद्ध भाव सो कर
यह प्रभु मिलनके अर्थक। याको रव छु सो विकवहि
कचाहनानरा सें काहेते जो यह भक्तिमार्गमें सहायते
भक्ति बढ़े प्रभु कृपा करें। ताते तदीयको संग करें। सो श्री
भागवत प्रथम स्कंधमें सोनकवाक्य तुलयाम लवेना
पि न स्वर्गं न पुनर्भवं भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुता
शिषः भगवदीयको संग एक क्षण होइ तासु सुखसमा
न स्वर्ग अपवर्ग मोक्ष नाही है ऐसो सत्संग है। और ए
कादस स्कंधमें श्रीभगवान उद्धवजी प्रति कहे हैं श्लोक
न रोधयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धवः न स्वाध्यायस्त
पस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा। व्रतानि यज्ञश्छन्दांसि ती
र्थानि नियमा यमाः। यथावरुन्धे सत्संगः सर्वसंगापहो हि
माम्। सत्संगेन हि दैतेया यातुधाना खगा मृगाः। गं
धर्वाप्सरसो नागाः सिद्धाश्चारणगुह्यकाः। याको अर्थ
श्रीभगवान उद्धवजी प्रति कहे हैं जो मोको सत्संग वस
करे त्यो नाही योग न याग सांख्य न या धर्म न तप त्याग
व्रत नियम यज्ञ तीर्थ इत्यादि मोको वस नाही करत
हैं और सत्संगके प्रभावतें दैत्य राक्षस खगा मृगा गंध
र्व अपसरा नाग सिद्ध चारण मनुष्यको यह होय तरत्यो
नाते सुद्ध भाव सो भगवदीयको संग करे तो पुष्टिमार्ग
में भगवदीयको संग करनो। पुष्टिमार्गमें भगवदीय
के सहायते भक्ति बढ़े। सो चौरासी वार्तामें प्रसिद्ध व
र्णन हैं। गदाधरदासके आसीनो दने संगते माधोदा

कोंभक्तिभई॥आगेंअवश्रीरहूंकहतहैं॥श्लोक॥अ
भावेंतुतदीयानांप्रसंगोपिसुदुर्लभः॥ तेतापिसाधना
नावाद्धिसुखेतिष्ठतिखलःइ॥याकोअर्थ॥अवश्रीहरिरा
इजीकहतहैं॥जोहमकोंतोतदीयभगवदीयकोसंगतो
महाइदुर्लभहैं॥एकलगाइंभगवदीयनाहींमिलतएक
तोयहदुखहैं॥औरदूसरेचित्तकरिसाधनसुमरणभा
वनाकछुभागवदधर्मनाहींवननहैं॥तातेंभगवदीयके
संगकोंअभावहैं॥औरएकतेचित्तभगवद्धर्ममेंनाहीं
लागततनाकरिकेंयहमुखहृदयमेंहोतहैं॥यहदोयज
पायहैंप्रसन्नकरिकें॥एकतोभगवदीयकेसंगतेप्र
भुमेंमनलगें॥तथासंगनहोइतोचित्तअपुनहूभग
वदनीत्रामेंलागोरहैंतोप्रभुकृपाकेंभगवदीयको
अभावहोय॥औरमनकरिसाधनकोअभावहोय
तहांवहसुखताहोइसोहमकोंवनीहैं॥अवकहांल
रैं॥याभांतिश्रीहरिराइजीदैन्यताकरतहैं॥जीवनकेअ
र्थ॥आगेंअवश्रीरहूंकहतहैं॥श्लोक॥ तेनोहिभग
वद्दासस्यकायोयविदेसकेव्रजपालोपिचलितरते
नमेदुःखितेमन॥७॥याकोअर्थ॥ एकभगवदीयहमारे
पासहतो॥भगवांनदाससोऊअपनेकार्यार्थविदेसको
गयो॥औरश्रीव्रजपालजीश्रीगुसांईजीसोंहूपरदेसको
गये सोताकरिकेंमनमेंदुःखभयो मेतनकेसाइनमार
औरतेउनकोंअपनेपासराखिसक्यो॥तातेंसमाविना
मनकरिवहुतदुःखपावतहैं॥७॥आगेंअवश्रीरहूं
कहतहैं॥श्लोक॥मयियद्यपिनास्त्येवकिंचित्तूपयाप
यदिस्तितदपिस्वीयसाधनाभावतोगतो॥याकोअ
भगवदीयमेरेपासतेंपधारे॥सोमेंजानतहों॥जोमेरे
हिहहोतोतोतुमारोसंगऔरभगवद्से घरहीमें
हैं सोकाहेकोछुटतो॥काहेतेंमेरेहृदयमें

परंतु तऊ एक तुम्हारी कृपा सों बनत है जो सो परब्रह्म तुम हो सो मैं
जद्यपि समर्थ नाहीं हों सो तो लौकिक वैदिक कार्य नाहीं
बनत ता तें गृहस्थ धर्म के साधन को अभाव है सो ना
हीं बनत सो सब में सब ओर तें निःसाधन हों या तें आ
व और एक कहत हैं सो या ए ता स्ये रथैस प्राप्त सह हरिसरण
मम: ऐहिक पारलौकिक च न चिंता तनन एव न यीया को
च्यु यो रासो निःसाधन जो मैं सो मेरे हरि सरण एक राहि म
न में विचार के हरि सरण ही गति मेरे है सो श्री आचा
र्यजी महाप्रभु विवेक धैर्याश्रय में कहे हैं जो मन में ए
हिक आश्रय करे ऐहिक लौकिक परलोक च सर्वथा शरणं
हरि: यह लौकिक वैदिक न सिद्धि होइ ऐसो तो हरिसर
ण सदैव या को ता करि सर्व सिद्धि होइगी ता तें मैं हरिसरण
करि सर्व ओर तें निश्चिंत हों अब प्रभु करेंगे सो
श्री आचार्यजी महाप्रभु सर्व ओर तें श्री वल्लभाश्रय ग्रंथ
में कहे हैं शरणस्थ समुद्धारं स्वयं चिंताप्यया मह तो स
रणस्थ भक्त हैं तिनको उद्धार प्रभु निश्चय करेंगे साधन
वने अथवा न बने सो भगवद्गीता में कहे हैं भगवा
नने सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं सरणं व्रज जो न अहं त्वा
सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच इति वचनात् इत्या
दि वचनन को अभाव जानि हरि सरण ही कीए है ता
तें या लोक संबंधी कार्य तथा परलोक के हेतु और तें नि
श्चिंत हों टीका गोस्वामी करत हैं लो ... कृपा चि
क्लिष्ट नैवेत्या तु प्राप्नो न च भवाड्ढ्यो नदा को बद
चिन्तस्यापराधेति पुनर्भवेत् १ या को ... श्री
हरिराय जी कहत हैं जो हम तो भगवदीय के संग विना
एक ... है और जीवन को तो कदाचित कबहू
भगवदीय मिलत हैं तऊ उनके भाग्य में भगवद्ली
ला भाव स्वरूप पुष्टिमार्ग के रस को अनुभव

भापमैनाहीलिष्योहैंतातेंसत्संगमेंकुनजीवनकोमन
हीनाहीलागतहैंकोहैतोअबहीपुनरागमनबहु
तजन्मसंसारमेंलेनोहैंबहुतअंतरायहैंयहकहिकै
श्रीहरिराइजीयहजतायोजोपहलेतोसत्संगभगवदी
यकोदुर्लभहैंतउजबईंभाग्ययोगतेंसत्संगकाहूमिल
तहैंतबजीवकोमननाहीलागततातेंजाकेमनसतसं
गमेंनलग्योताकोयहजानियेंअबहीयाजीवकेआप
मेंअनुभवनाहीलिष्योहैंअबहीयहजीवसंसारमें
बहुतभ्रमैगोअनेकजन्मकोअंतरायजाननो॥१०
आगेअबऔरहूकहतहैंश्लोक॥विप्रयाख्यमहा
चिंतासमुद्राहृदिवर्ततेनोस्थितेपिश्रीरस्मिप्राणना
थेचित्तेविभेर्त्वतः॥११॥याकोअर्थ॥अबश्रीहरिराइजीक
हतहैंजोजीवकोस्वभावनथाजीवकीक्रियादेषिकेमे
रेमनमेंचिंताबहुतहोतहैंसोमैंअपनेमनकीचिंता
कहांताईलिषोंचिंताकोसमुद्रमेरेहृदयमेंभर्योहै
यहकहियहजतावेजोअपारचिंताहृदयमेंसमुद्रव
तभरीहैंवाकोमैंकहांताईलिषोंसोचिंतादूरिक
रिवेकौंतोयेमेरोसामर्थ्यनाहीहैपरमनकीहोतीतो
करतोतातेंएकमात्रभरोसाहैजोमेरेमाथेप्रभु
प्राननाथविराजतहैंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुन
कीस्वरूपतैसोनाथमेरेचित्तकोसांतिकरेगेयहबल
मोकोहैतथादूसराअर्थयहकहतहैंचिंताकरिकेमेरे
माथेमेंप्राननाथआयरहेहैंऐसीचिंताहृदयमेंसमुद्रवतहैंत
हांश्रीठाकुरजीमेरेप्राणकेनाथहैंसोप्राणकीरक्षाप्रभुक
रिवेकेतोऊमैंयेदुखचिंताकोसमुद्रहृदयमेंभर्योहैं
सोप्रभुहीसांतिकरेंगेयाभांतिश्रीहरिराइजीविप्रयो
गकोअनुभवकरतकरतअपनेहृदयमेंनमायताही
यगाये

प. अनुभव होइ सो अनुभव कौन प्रकार को है सो आगे
१ श्लोकन में वर्णन करत हैं वेणुनाद सों प्रत्यक्ष स्वरूप को अ
नुभव ॥११॥ [illegible]
[illegible] ८ अब
और हू कहत हैं जो ऊपर के पत्र में हैं न पत्र करि निसाध
न होइ जो अनुभव कौन प्रकार होइ सो आगे कहत हैं
श्लो॰ [illegible] वस्या निजप्रति [illegible] स्वरूपं [illegible] भिष्यति: [illegible]
[illegible] लावण्यानने [illegible] अब क
हत हैं जो श्री हरिरायजी को विप्रयोगानुभव होत है सो श्री
कृष्णजी के स्वरूप को अनुभव करि विरह करत हैं जो
श्री कृष्ण हमारे [illegible] को कब हू दरसन देंगे जा में
रमति याको कहे जो व्रजभक्तन के भाव भावित होइ अ
पनपो देहानुसंधान भूलि गयो है अपनो स्वरूप अ
लौकिक व्रजभक्त स्वामिनी रूप सो भाव हृदय में है अ
त्यंत विरह ते हमारी तरफ को भाव बाहर व्यक्त भयो है निके
स्यो ताते अपने पति कहे त्या ब्रह्मसंबंध को सुमर
न करि जो श्री आचार्यजी द्वारा ब्रह्मसंबंध भयो है तुल
सी चरणारविंद रूप समर्पी है यह भाव ते श्री ठाकुरजी
हमारे पति हैं सो श्री कृष्ण कैसे हैं सो सिखावत न स्वपे
त व्रजभक्त अनुभव करत हैं तैसे ही श्री हरिरायजी अ
नुभव करि श्री वृंदावन में स्थित स्वरूपन को वर्ण
न करत हैं सो क्यों है ते जो व्रजभक्तन की भावना किसो
र स्वरूपासक्त हैं ताते श्री हरिरायजी हू स्वामिनी भाव भा
वित हैं ताते किसोर स्वरूप को वर्णन करत हैं श्री कृष्ण
कैसे हैं मोर के पक्ष को गुच्छा करि के नाम मुकुट सवारि
माथे पर धरे हैं ताको अभिप्राय यह है जो मुकुट को
श्रृंगार है सो स्वामिनीजी के रस दान [illegible] है ताते मुकु
ट धरे सो अवतंस न कवक सो सो वेणि ही रस न रह

रसदानकरो और नीलकुंतल स्यामरासी अलकावली
मुखारविंदके ऊपर आयरही हैं ऐसे श्रीकृष्ण कबदरसन
देहुगे॥ आगें अब और हू कहत हैं श्लो०॥ भ्रूधनुःसं
धितकस्तूरीचित्रकांचित इंदीवरदलादैर्घ्यविशाल
नयनद्वयं॥ ट्या०॥ अर्थ॥ भृकुटी धनुषकी नाईं तारस
रूपकस्तूरीको तिलक तथा कपोलनमें कमलपत्र
और धनुषबान लेदरसनहमारेमनको कैसे मारेगी और
कमलके पत्रवत कडे नेत्र सो अति विशाल ताकरि
दरसन देहु मारे तापकं वहरेगो॥ आगें अब और हूं कह
तहैं श्लोक॥ मौक्तिकाभरणालंबि सुनसंसरसाधरं
त्रिरेखाकंठविलसत्कंठाभरणभूषितं॥ ट्या०॥ स्य
जी वेसरिके मुक्ता लेवी परम सोभायमान उज्वल सो सो
सूक्ष्म अधररस ऊपर आयरह्यो है सो मानो स्वामि
नीजीको भाव निर्विकार अधरामृतरसकों पान करत है
कंठमो तीन रेखा हैं ताकरि सात्विक राजसी तामसी तीन
प्रकारके भक्तनकी स्थिति हैं अथवा त्रिलोकी मो स्थित है
तहैं और श्री कंठमें कंठाभरण कंठसरी आदि सोहत है
ऐसे श्रीकृष्णजी कब हमको दरसन देहुगे॥ आगें अब
और हूं कहत हैं श्लो०॥ प्रफुल्लमल्लयुगलचिबुका
भरणायुतं सो वर्णसत्म मणिकुंवकं भालाविराजि
तं॥ ट्या०॥ अर्थ॥ सो उगल्लस्थल प्रफुल्लित हैं सो युग
लगीतमें वर्णन हैं वररूपा सुवदनो मदृगांज जैसे पक्ष
वे तैसे सुकचो चभारे तैसे उहां प्रफुल्ल कपोलरसमें स्वा
मिनीके स्नात स्पर्श चुंबनादि ऐसे कपोल और चिबु
कभूषण सो श्री चंद्रावलीजीको भाव स्वामिनी
अधरामृतको अनुभव करत हैं रसके आधिक्य तें
अधरतें अवे सो श्री चंद्रावलीजी अनुभव करे सो मं
धुराष्टककी टीकामें वर्णन हैं ऐसो चिबुक विराजत हैं

सोने के छोटे मनिका की माला सो कंठ में विराजत हैं ऐसे
श्रीकृष्णजी कब दरसन देहुगे ॥४॥ आगें अवशेष कहत हैं
श्लो॰ … रस्थललसत्स्वच्छवक्षवैयाघ्रवाडुं रत्नयुत
हितस्थूलमुक्तामालाचितो हरि ॥५॥ टीका ॥ अर्थ ॥ उरस्थल
… उज्ज्वलवघन खावक्षस्थल है सो प्रसिद्ध है तो पहरा
ये हैं जो श्रीयसोदाजी बालक की रक्षार्थ धराए हैं तथा
श्रीस्वामिनीजी के नखक्षत ऊपर भावसहित धरे हैं र
त्नकरि युक्त नवरत्नयुक्त वडी माला वैजयंती मा
ला ताको कहत हैं सो सब भक्तन के भावसों विराज
त हैं और वडे वडे मोतिन की माला उरपर विराज
त हैं ऐसे श्रीकृष्ण कब दरसन देहुगे ॥५॥ आगें अवशे
ष कहत हैं श्लो॰ … सुवर्णाद्य श्रीमत … स्थूलमाला
तिसुंदर गुंजाफलनमद्भमाला लसत्कुरुसुगातेरं ॥६॥ या
टीका ॥ अर्थ ॥ सोने की कृतिम मनिका सी काटी ऐसे दानस्रो
रमणि की खडी माला गुंथी परम सुंदर पहरे हैं गुंजाला
लखेत सुंदर ग्रथ नामें चतुर्थ स्वामिनी यूथपति के भा
वसों पहरे हैं मोहनमाला सो ऊपर जो घोटताई पहरे हैं
ऐसे श्रीकृष्ण कब दरसन देहुगे ॥६॥ आगें अवशेष कह
त हैं श्लो॰ … रत्नजटित करकंकन भूषित बाहुम
… लसत्स्वर्णमितप्रथितांगद ॥७॥ या ॥ अर्थ ॥ अने
क रत्नकरि जटित ऐसो कंकन दोऊ हस्त में पहरे हैं श्री
रद्योक भुजान में अंगद जो … सोने के विरचित
हैं ऐसे श्रीकृष्ण कब दरसन देहुगे ॥७॥ आगें अवशेष
कहत हैं श्लो॰ … अनेक पुष्प तुलसीदल मालाति
लसितैः विचित्र वर्ण विलसत्कटिवासो विराज
ते ॥८॥ या ॥ अर्थ ॥ अनेक प्रकार के पुष्प तुलसीदल मा
लतिन की लालिकी विचित्रै सहित ग्रथित ऐसी लालि
त वनमाला विराजत हैं यामें सगरे व्रजभक्तन को

भावसों धरे हैं कटिवास काछनी पचरंगी की अतिवि
चित्र कटि पर विराजत है प्रभु सहित चतुर्थ यूथपति
के भावसों ॥ ऐसे श्री कृष्ण वस्त्रों नदेहु गो ॥ या आगे अ
व और हू कहत हैं श्लो० ॥ कटिभाव ज्ञापका किंकि
णीरवि सोभितं पदद्वय गत स्वर्ण मणि नूपुर मंडितं
॥ याको अर्थ ॥ कटि मैं किंकिनी के रव सोहत हैं तार
व करिके जब भक्तन को अनेक रसरासि की लीला में भ
क्तों सब चन अकरावत हैं होय चरणा के मल की चाल
परम सुन्दर है तामें मणि जडि सुवर्ण के नूपुर सोहत
हैं ऐसे श्री कृष्ण कवच रास नदेहु गो ॥ ९ ॥ आगे अब औ
र हू कहत हैं श्लो० ॥ नखचंद्र प्रकासैक प्रकासित ज
गत्रयं पीतांबरान्वितं चरणस्थल सुन्दरं ॥ १० ॥ या
को अर्थ ॥ नखचन्द्र प्रकासकरि तीनों भक्तको प्र
कासकरत हैं तीनों भक्त सो आकास पाताल भूलो
क एती नो लोक में भक्त जे हैं तिनके हृदय में प्रका
स करत है और के हृदय में नखचंद्र प्रकास नाहीं करत है सो
भक्त कैसे हैं एक श्री ठाकुर जी के चरणारविंद ही को आश्र
य कीये हैं तिनके हृदय में नखचंद्र प्रकास करत हैं त
था यह ललित त्रिभंगी स्वरूप श्री वृंदावन में स्थित हैं
तिनके अनुभवे व्रजभक्त हैं सो राजसी तामसी सा
त्वकी त्रिगुण भक्त के हृद में एन नख चंद्र प्रकास करत हैं
और पीतांबर ओढे हैं सो व्रजभक्त स्वामिनी की उत्तरी
भावसों धारन कीये हैं सो उत्तरीय के दो उ अंचल मंद सु
गंधवयारि चलाय मान हैं ॥ १० ॥ आगे अब और हू क
हत हैं श्लो० ॥ प्रदर्शित सिरो भेद चलन्मकर कुंडलं
नत्यंत नयनानंद निता नरति सप्रदा ॥ ११ ॥ याको अर्थ
मस्तक के दोउ ओर सुन्दर श्रवण में मकराकृत कुंडल
हैं सो सांख्य योग को स्वरूप हैं ऐसे श्री कृष्ण तिन्हें करत

श्री.पु. हैं ताकरिकैंब्रजभक्तनके नैननकोपरमआनंददेतहैं
१३ रतिरसकोअनुभवभक्तनकोंकरावतहैं ॥ १२ ॥ याकोअ
वआगेअर्थकहतहैं ॥ श्लो ॥ कां ॥ नितेविनिवृंदावनीसानु
भवतोसुपो ॥ विहारंगविशेषेणारासलीलापरायणां
॥ १२ ॥ याकोअर्थ ॥ नितविनिजोवृजभक्तनकेवृंदमेंप्र
भुविराजमानहैं सोभक्तनकोरसानुभवकराइवेमें
परमचंचलहैं सोयातेजोगाल्लकातावश्छन्नसमस्त
वृजभक्तनकेसंगविहारकरतहैं ॥ रासादिकलीलाकर
नेमेंभक्तप्रभुपरमचतुरहैं ॥ १ ॥ याआगेअववआरकहत
हैं ॥ श्लो ॥ कां ॥ त्रिभंगललितंवेणुकलितेभुजयोरपिवृं
दावनेकपत्लिनेवल्लितंस्वजनैःसह ॥ १३ ॥ याकोअर्थ
याभांतित्रिभंगस्वरूपकास्थोअभुजानसोवेनुना
दकरतहैं ॥ सोयहश्रीवृंदावनकेफलान्मकस्वरूपस
हांश्रीवृंदावनमेंविराजमानहैं ॥ अपनेस्वजनवृजभक्त
नकेसंगवेष्टितहैंयाभांतिस्वरूपकोलीलासहितहैंप्र
भुमोकोपवदरसनदेहुगो ॥ १४ ॥ याआगेअववआरकह
तहैं ॥ श्लो ॥ कां ॥ वादयंतुमुरलिकामोहयंतंमनःसतांज
गदंडप्रकुर्वंतंरोधयंतंचभूरुहाः ॥ १४ ॥ याकोअर्थ ॥ सुं
दररससुरनकोंमुरलिकावजायकेसमस्तभक्तनकेम
नकोंमोहतहैं ॥ पशुपक्षीचैतन्यहैं ॥ सोजडवतएकदू
करससनकरिवेनुनादअमृतरसकोपानकरतहैं
औरपर्वतादिपर्वतनदीजडहैं ॥ सोचैतन्यहोयमधुधा
रावहतहैं ॥ गायआदिपशुजोअन्नभक्षनकरतहैंनाहीं
१४ याआगेअववआरकहतहैं ॥ श्लो ॥ कां ॥ पशूणांपक्षिणां
चैवमौनसंपादनंतदा ॥ तरूणांमंतरानंदमधुधाराभि
वर्षकं ॥ १५ ॥ याकोअर्थ ॥ पशुपक्षीवेनुनादसुनिकेचंच
लताछांडिमौनह्वेकेरसपानकरतहैं ये आधिदैविक
श्रीवृंदावनकेमुनीहैं ॥ पुष्टिलीलासंबंधीहैंताते

मधुकी धारा वरषत हैं। सो अंतःकरणमें भगवदीयके अ
व भगवत्स्वरूपको अनुभव थायतें वयालेंहूं संपुल
कावली देहमें होय। सो श्रीवृंदावनके वृक्ष हैं सो प
रम भगवदीय हैं। सो वे अनुनादरस अमृतको हृदयमें
अनुभव करिकें अंतःकरणतें आनंद पाय मधुधारा
श्रवत हैं।५। आगें अव और हू कहत हैं। श्लोक॥ हर
तं व्रजभूतापदस्यावनत्तस्था। यमुनानीरपात्रै
कजलक्रीडाकृतिप्रियं॥६॥ टीका॥ याभांतिरास
दिक लीला व्रजभूमिके तापको हरत हैं। जथा व्रजके
भूतजो प्राणीसवे तापहरत हैं। अथवा व्रजमें अपने
चरणारविंद स्थापन करि सगरी गुल्मलता औषधी
आदि इनके तापको हरत हैं। अथवा व्रजमें सर्वत्र
चरणचिन्ह स्थापन करि यह जतावत हैं जो कोई व्र
जको आश्रय करेंगो। तिनहूको तापदूरि होइगो। ऐसे
श्रीवल्लभमोकों वचदरसन देंगो। याभांतिरासलीला
अनेक विधिसों भक्तनसहित श्रमजल भयो। तवश्री
ठाकुरजी जानें जो यह भक्तनसहित श्रमजलस्य रसकसादी।
यो। ताहूं विचारें जो यह रसके पात्र श्रीयमुनाजी हैं। यह जा
नि भक्तन सहित श्रीयमुनाजीमें पधारे सो अपनी प्रि
या स्वामिनीजी संयुक्त जलक्रीडा करन लगे। या भांति
श्रीयमुनाजीकों पात्र जानि सगरे रसस्थानकीयों ज
लक्रीडा करि श्रमको निवारन भयो। ऐसे श्रीवल्लभ
कों कवदरसन देइगो। ईहां आगें अब औरहू कहत हैं
श्लोक॥ रसात्मकं रसात्मस्व भक्तरसमत्वितं। निज
नुभवसंवेद्य प्रगटंत रूपणं ताणं॥७॥ या॥ अ
रसात्मक स्वात्म ऐसे रसात्मक व्रजभक्त तिनकों करा
वत हैं। रूपताणमें अधिक अधिक रसदान प्रभु कर
त हैं। ताकरि भगतको भाव वहू लगा

अ

प॰ धिक प्रगट होत हैं ॥ ऐसे प्रभु रसदान कर्ता श्रीकृष्ण का व
रसनहेतु ॥ १७ ॥ आगे अब श्लोक कहत हैं ॥ श्लोक ॥
विरहानुभावार्थ स्वै निजलीलानुभावकः ॥ साकारानंद
रूपेण व्रजभक्तहृदिस्थितः ॥ १८ ॥ या को अर्थ ॥ ऐसे भावा
त्मक रसात्मक श्रीकृष्ण सो केवल शुद्ध विरह करी के नव
अपनी निजलीला को अनुभव करावे सो जो व्रजा
रहे दिन रात्रि केवल विप्रयोग आर्ति कर शुद्ध हृदय हो
य ॥ नव ही निज लीला को अनुभव होय ॥ सो निजभक्त
स्वामिनी जी हैं तिन को विप्रयोग है ॥ तिन ही को य
ह निजलीला को अनुभव है ऐसे भावात्मक श्री
कृष्ण सो व्रजभक्तन के हृदय में साकार आनंद रूप स
वे लीला संयुक्त विराजत है ॥ काहे ते रस को अनुभाव
है जो पात्र बिना रहे नाही ॥ सो रसात्मक साकार आ
नंद रूप श्रीकृष्ण ता रस के पात्र व्रजभक्त हैं ॥ ताते व्रज
भक्तन के हृदय में रात्रि दिवस स्थिर रहत हैं ॥ १८ ॥ आगे
अब श्लोक कहत हैं ॥ श्लोक ॥ एवं दिदृक्षा सततं स्था
पनीया निजे हृदि ॥ सेवायां च प्रेमभावेन परागवि
निवृत्तये ॥ १९ ॥ या को अर्थ ॥ ऐसे श्रीकृष्णचंद्र के दरस
न की इच्छा मन में जा के होउ ॥ सो निरंतर अपने हृदय में
यह स्वरूप को ध्यान करि स्थिति करें ॥ तहां कोइक कहे जो
तुम्हारे हृदय में तो ऐसे प्रभु स्थित हैं ध्यान करि तुम सह
ज ही स्थिति की इच्छा ॥ या भांति कोइक कहे सो तहां श्रीह
रिराय जी कहत हैं ॥ जो मेरे हृदय में प्रेम को अभाव है
मेरे में प्रेम नाही है ॥ और यह स्वरूप तो प्रेम करि धार
न करिवे होय ॥ और मो को तो ऐसे श्रीकृष्ण के चरन क
मल को जो पराग सो अत्यंत दुर्लभ है ॥ ता में में तो
चरण कमल की पराग करिके रहत हैं ॥ तहां कोइक क
हे जो तुम्हारे में प्रेम तो ही सत्त है ॥ स्वरूप को वर्णन

कीरहे प्रभुमें आसक्ति हूहे। भाव हूहे। प्रभुमें आसक्ति हे पुष्टि
की सगरी रीति हे। ताप्रमाण करने नहीं। तुमको कहावा
धक हे याभांति कोई कहे तहां कहत हें श्लोक॥ नतःसे
वानिरोधक्कागेह हैहिकवाधिका। आसक्तिःसेवमार्ग
स्मिन गृहस्थस्य साधिकारिता॥२०॥ या दोश्रि अकरीह
रिराज्ञी कहत हें जो हमको लौकिक आसक्ति गृहदेहसंबंधी
सो यह भाव हे भावसे बाधक हे काहे ते देहसंबंधी रता
में लौकिक वैदिक अनेक कार्य ते आसक्ति मनमें रहत हे
सो बाधक हे श्रोग्रह अपने पुष्टिमार्गमें आसक्त हे सोप
रमधर्म हे। सो जाकी आसक्ति प्रभुमें हे। सो गृहस्थ गृहमें के
से स्वस्थ रहेगो। गृहमें स्वास्थ्य जाको मन हे। सो यह पुष्टि
मार्गमें कोन भांति स्वास्थ्य रहेगो। यह कहिवे पहेल
ता ऐसो जाकी आसक्ति प्रभुमें हे तासो देहसंबंधी लौ
किक वैदिक क्रिया भली भांति सो न बनेगी॥२०॥ आ
गे श्रीआचार्यजी कहत हें श्लोक॥ परितापोस्य तस्मात्त
त्त्वे विस्मृतिर्वो रकं॥ सेवाव्यसनं तत्र प्रपंचस्फूर्तिना
शनं॥२१॥ याको अर्थ॥ ऊपर कहे ताभांति प्रभुमें आस
क्ति होय तब प्रभु स्याकरि आसक्तिहीन करे सो न तब विप्र
योग होय सो विप्रयोग भयो कब जानिये प्रभुसंबंध
बिना देहसंबंधी सब कार्य की विस्मृति होय तब विप्र
योग भयो ता पाछे प्रभुमें व्यसन होइ सो प्रभु बिनु रहा
ने जाय एक पल कल पसमान जाय गृह व्यसनको
स्वरूप ताव्यसन करिके प्रपंचकी स्फूर्ति नाश होइ
के केवल प्रभुपरतन्मयता होहे॥२१॥ आगे श्रीवक्यौरह
कहत हें। श्लो॰॥ एवंविधस्तु त्रिविधो भावो निःसाध
नो मतः॥ अनेनैव सुदृढे भो लोके न तत्प्राप्ति भजनान्त
णां॥२२॥ याको अर्थ॥ याभांति भाव जब मन वचन कर्म
न
करि तीनो प्रकार भाव सिद्ध होइ

जाय सो या भांति निसाधन है तो या लोक में बहुत दु
ख भए हैं निरंतर सर्वदा भजन जो श्रीकृष्ण की सेवा कीये क
रें तब निसाधन होइ २२ आगे श्लोक को स्वरूप कहत हैं श्री
आचार्यजी करुणा करि भावात्मा संग तथा विधं मति
मद्भाव संबंधात् संपन्नीरति विस्थत २३ आगे श्लोक को अ
र्थ कहत हैं विधिपूर्वक सर्व सिद्धि होइ तब श्रीकृष्ण भावात्म
क प्रभु की कृपा होइ तथा श्रीकृष्ण भावात्मक प्रभु की
कृपा होइ तथा श्रीकृष्ण भावात्मा के आस्य मुखारविं
द स्वरूप श्री आचार्यजी महाप्रभु की कृपा होय तब भाव
सिद्ध होइ भाव सिद्ध भये तें कछु जानि के श्रीकृष्ण स्वरू
प मानि के तन में यह भाव सिद्धि रहै जो ये ई सा हों तब श्री
कृष्ण भावात्मक रूप ति है यह मन [illegible] क्रम को भाव है
[illegible] सिद्ध होइ यह वेद के वचन हैं तहां कोऊ कहें श्री
कृष्ण के स्वरूप में प्रतिभाव कैसे होइ सो उपाय आगे लि
खो क में कहत हैं श्लो [illegible] प्रमेय बल तो नान्य साधन
स्य भाव [illegible] तः सर्व प्रवर्तकं निजाचार्य पदाश्र
यः २४ आगे श्लोक को अर्थ यह भाव श्रीकृष्ण स्वरूप में प्रतिभा
व यह जीव के साधन ते न होइ यह श्रीकृष्ण प्रमेय बल
ते भाव को दान करें तब ही भाव होइ श्रीकृष्ण प्रमेय
बल बल प्रगट करें सो उपाय कहत हैं जो पुष्टिमार्ग
की रीति सों तन मन धन सों प्रीति सहित सेवा करें श्री
पन्न श्रीवल्लभाचार्यजी के चरणकमल को आश्रय
करें तब श्री आचार्यजी महाप्रभु भावदान प्रमेय ब
ल ते करें तातें मार्ग रीति सों सेवा श्रीवल्लभाचार्यजी
के चरणकमल को आश्रय यह मन निश्चय लगाइ
के [illegible] यह सिद्धांत सर्वोपरि है २४ आगे श्लोक
को स्वरूप कहत हैं श्लोक ॥ तदा भावेन वे भावि पल
[illegible] मे न्याय [illegible] स्मर्दीशो तु [illegible] श्रीवल्ल

भावकी ॥ २५ ॥ याको अर्थ ऊपर कहे सो ति श्री आचार्यजी
महाप्रभु भावदान करें तब भावात्मक रसमें तद्रूप होय
जाय सो तब यह पुष्टिमार्गीय फलकी प्राप्ति होय निश्च
य संशय नाहीं सो हमारे श्री गुसांईजी वल्लभ आरव्य सेव
ते हैं ॥ २५ ॥ अब आगे कहत हैं ॥ श्लोक ॥ स्वामिन्श्रीवल्ल
भेत्येतन्नाम्ना दिव्यमुखी रितं रसात्मवपोनवजनैर्विपुलक्लमा
नो निरूप्यते ॥ २६ ॥ याको अर्थ ॥ श्रीवल्लभाख्यको समझ्यो
का स्वामिन्श्रीवल्लभाप्रेत्याणमपिभवतः सन्निधानेह
पात: प्राणप्रेष्ठ व्रजाधिश्वर वल्लनदिहलालिता पोलनेषु
यत्महद्भावामामभ्युचितं नरसिक्त्यनुस्वाद्यान्य अरह
यस्मिन्मुखे रोम बुरतरसुरेन्यत च्छित्समेतता स्या हि
वचनन्कारियत वचनको अनुसार आश्रय यह पुष्टिमा
र्गमें निष्ठा होय तब सगरी लीलाको अनुभव होय सो
आश्रय और मार्गमें निष्ठा कौन प्रकार होय ॥ २६ ॥ आगे
अब कोश्र कहत हैं श्लोक ॥ मार्गनिष्ठानवबोधैर्विनुता
द्गुरुरित्यै गुरूक्लिप्तानिवाक्यानि न्यस्तो ह्यनुवादत:
२७ ॥ याको अर्थ ॥ अबकहत हैं जो पुष्टिमार्गमें निष्ठ वि
ना गुरुके बोधकीएं विना न होय जब गुरु प्रसन्न होइके
पाव रिके बोध करें तब यह जीवको दृढ विश्वास गुरुके व
चनमें होय विश्वास करि बारंबार गुरु वचनको अर्थ
सहित भावना करें अपने मनसों अथ भावना न होय
तो ताद्रसी विकल्पवनसों मिलिके गुरुके वचनको अनु
वाद करें बारंबार अनुवाद भावना करे ता वचनके अनु
सार रहैं तो कृपा करें आगें अब और कहत हैं श्लो
अनुवादोऽनल्पबोधात्किं तु मूलक्रमागतः अथापि
२ पूर्णाकोय ... गुरु
धनेकल्प

नाकारनदरे जैसें मूलक्रम

प. प्रभुसुबोधनीजीनिबंधादिभावदिखावेंतहांश्रीमहाप्र
भुजीकीकृपातेंश्रीसुबोधनीजीमेंजान्योजाय।सोश्री
आचार्यजीमहाप्रभुकृपाबलकरजबहृदचरणारवि
दकोआश्रयहोय।तातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुके
चरणकमलकोदृढआश्रयकरिश्रीसुबोधनीजीनि
बंधमेंजाक्रमसोंभावदिखावेंताभांतिअपनेहृदयमेंभाव
नाकरेंसेवाकरें।रवाद्याभोग्यवंको।कृकरनहारासोअ
रणाहरेंनगुरुगावगत्यादिखिलजनने।आचार्यत्पच
निजाचार्यानेस्पष्टनेदसदाभजेत।रखीयाकोअर्थ
याभांतिगुरुकोआगप्रमानअनुगान्यवनतानिरिव
लकोश्रेयस्करहै।श्रीआचार्यजीमहाप्रभुअपनो
आश्रयनिश्चयकरिरहि।यामेंसंदेहनाहीं।कातेंश्री
आचार्यजीमहाप्रभुकोमनमेंआश्रयकरिगुरुआ
ज्ञाप्रमानवर्ततेंतवश्रीआचार्यजीमहाप्रभुआप
ग्रहकरिआश्रयअपनोदेहि।सदाआनंदरूपश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभुहैं।यहभावसोंभजनकरें।औरलौकि
कवैदिकमेंआनंदतुच्छहै।सदानाहीं।लौकिकमेंवि
षयादिकसुखरत्नकारिकअमलगोरिद्वपुरसोप
णप्तीनभयेसंसारमेंपरेदुखीहोय।औरश्रीआचार्य
जीमहाप्रभुसदाएकरसआनंदरूपहैं।सोश्रीगुसांई
जीसर्वोत्तममेंकहेहैं।श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनकोना
मआनंदायनमः।परमानंदायनमः।इत्यादिवचन
केभावसोंजाननों।औरश्रीआचार्यजीकोनामाव
लीमेंनामहैं।आनंदायनमः।मूर्तायनमः।यहश्रीआ
चार्यजीकोस्वरूपहै।सोमूर्तिवंतआनंदमयहै।सदा
एकरसयाभांतिभावसंप्रेमसहितभजनकरें।तहांको
ईकहेंजोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकेयहपुष्टि
मार्गमेंहैं।सोसगरेजीवश्रीआचार्यजीमहाप्रभु

कोॱ आश्रय करि भजन सेवा करत हैं और अनुभव है भाव
सों भजन करो सो कहा याभांति कोई कहे सो न होय
कन हैं श्लोक ॥ भजनं भावरूपस्य भावेनैवोपपद्यते
चेतस्तत्प्रवणं सेवा भावेनैवोपपद्यते यत एव निरू
पिता ॥ ३ ॥ याको अर्थ ॥ अक्षर हैं जो भजन सो से
वा भावसों करे काहेते भाव बिना आगें मानसी फल
रूप न होय ॥ तातें तनुजा वित्तजा भावसों करे तब मान
सी फलरूप सिद्धि होय ॥ सो श्री आचार्यजी महाप्रभु सि
द्धान्तमुक्तावली ग्रंथ में कहे हैं ॥ कृष्णसेवा सदा कार्या मा
नसी सा परा मता ॥ श्रीकृष्ण की सेवा करो ॥ तिनकी
मानसी सेवा सिद्ध होय ॥ कोन भांति ॥ चेतस्तत्प्रवणं से
वा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा ॥ जैसें नदी को प्रवाह रात्रि दि
वस एकरस चलै ताभांति अष्टप्रहर चित्त सें मानसी
तिनकी साधन करो तनुजा वित्तजा करे भाव क
रि तबही सिद्ध होय ॥ तनुजा वित्तजा हू भाव सहित म
न लगाय के करे तब ही बनै तब भाव सिद्ध होय ॥ या
भांति श्री आचार्यजी महाप्रभु निरूपण कीये हैं ॥ ३ ॥
मानसी सेवा सिद्ध भई होय तिनके लक्षण कहा कैसें जा
नियें सो आगिले श्लोक में कहत हैं श्लोक ॥ तस्यात्
विस्मृतिर्भव्याज्जगतः सर्वथा ध्रुवा ॥ तद्भावे मानसी
तु सेवनान्नैव सिद्धा इति ॥ ४ ॥ याको अर्थ ॥ तनुजा वित्तजा
सेवा मन लगाय के करे सदा तब संसार जो जगत देह संबं
धी पदार्थ की विस्मृति मन में सब भूलि जाय ॥ मानसी
सेवा को यही भाव हैं जो संसार जगत को भुलावे सर्वथा
यह निश्चय जाननो ॥ अपनी देहानुसंधान कों भूलि
जाय खान पान निद्रादिक या भांति भाव सिद्ध होय म
न में सेवा करि स्वरूपानंद को अनुभव करे तब जा
नियें जो भावरूप मानसी सेवा सिद्ध भई ॥

प. तनुजा वित्तजा सेवा होने दुःखी भई हैं तो मानसी कहते सि
द्ध होइ तनुजा वित्तजा सेवा में बाधक बहुत हैं सो कह
त हैं ॥ श्लो० ॥ तद्बाधकानीन्द्रियाणि विषया लौकिका
मती प्रतिबंधस्तथोद्वेगो भोगोप्यत्र च लौकिक ३ व्या
ख्या ॥ तनुजा वित्तजा सेवा मन लगाय के करे तामें
सो इंद्री बाधक हैं काहे ते इंद्री के देवता हैं तिनको वि
षय प्रिय है सो भगवत्सेवा में इंद्री बाधक करत हैं या
ते तन्मात्र सेवा करत में विषयादिक की बुद्धि होइ लौ
किक बुद्धि तो यह जो सेवा तो नित्य ही करत हैं घर को लौ
किक कार्यहू करनो है भूषहू बहुत है या भांति बुद्धि लौ
किक मति होइ तब सेवा में तामन को उद्वेग होइ सो जो
सेवन तो से वेगि करिके घर को नोकर करावे तब श्रीठाकु
रजी तो मन की लौकिक बुद्धि जाने सो सेवा में प्रति
बंधक है एसो लौकिक वैदिक कार्य तथा विषयादि
क के कार्य मन में प्रेरे जो सेवा में प्रतिबंध होइ मन उ
द्वेग ते प्रतिबंध होइ तब भगवत्सेवा है हम ते तनुजा वि
त्तजा न बने पाछे षानपानादि विषय भोगा में मन चे
ले पाछे विषयादिक रे पीछे केवल लौकिक होइ जा
इ सो सेवाफल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं उ
द्वेगः प्रतिबंधो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकं इत्यादि वि
वरण जानने जो इंद्री को विषय में मन होइ ताकरि
प्रथम उद्वेग पाछे प्रतिबंध पीछे भोग पीछे केवल लौ
किक नहीं कोउ कहे जो इंद्रिय को विषय बुद्धि सेवा में क्यों
होत है तहां बाधक कहत हैं ॥ श्लो० ॥ दुष्टान्न भक्षणं वा
[illegible] भक्षणं असत्संगात्सर्वथा हीभाव बाध
क इत्यतो ॥ व्याख्या ॥ अब कहत हैं जो इंद्रियादि मे
न में दुर्बुद्धि विषयादि आय तें होत है एक तो दुष्ट प्रानी की
सनातकी अन्न ताको भक्षन करे अथवा दुष्ट स्त्रिया के

रिअन्नखावेंभक्तभावेंसेंतथाअसमर्पितखाइतथाअ
सतवहमुखकोसंगकरेंयेतीनोसर्वथाहीबाधकहें
निश्चय॥सोन्याराख्यांहें॥दुष्टअन्नबहुतबाधक
हें॥सोपद्मपुराणमेंकह्योहें॥अवैष्णवानामन्नंचपति
तान्नंतथैवच॥अनर्पितंतथावैष्णोस्वमांससदृशंभ
वेत॥१॥अनिवेद्यपयोमुक्तेहस्यपरमात्मने॥भुंजंतिपुन
रत्तस्मान्रवेंसात्वतीयमा॥२॥इतिवचनात्॥अवैष्णवको
अन्नहोइतथापतितचांडालादिकनकोयो॥धोबीनीच
कोअन्नतथाअसमर्पितअन्नयहमांससदृशजानिहें
ऐसोअन्नखातेंबुद्धिसबनष्टहोयजाय॥असुर
वतहोइ॥तथाअसमर्पितअन्नकोखायतो॥पितर
सहितनर्कमेंजायतातेंश्राद्धप्रसादीअन्नसोक
रें॥औरकूर्मपुराणमेंकह्योहें॥अनर्पयित्वागोविंदेयो
भुंक्तेधर्मवर्जितः॥श्वानविष्ठासमंचान्नंनीरंचसुर
यासमं॥१॥इतिवचनात्॥गोविंदजोश्रीकृष्णकोअर्प
विनाअसमर्पितजेअन्नपानहेंसोतिनसकलधर्मक
रिरहितहें॥उनअन्नपानकेविष्ठासमानहें॥उहपान
हेंसोअसुरहेंनिश्चय॥सोदुष्टसंगतेंअसमर्पितअन्न
खाइतातेंयहतीनबाधकहें॥सोदुष्टकोअन्नतथा
असमर्पिततथाअसत्संगतो॥दुष्टसंगयाकोस्व
रूपसंबंधहें॥इतरदेवकीसबवहमुखहोइजायवि
षयकेध्यानमेंमनलगरहें॥तातेंवेस्वहेंहें॥मनमेंवि
चारराखेंजोदुष्टकोअन्नअसमर्पितअन्नसंबंध
बहुतकरें॥३॥यातेअबऔरहुंकहतहें॥श्लो
तस्मात्यक्त्वादुष्टसंगंत्याज्यत्याज्यसंश्रयंतदीयज
नसंसर्गेस्थित्वामार्गेतथागुरौ॥३४॥याकोअर्थ॥अब
कहतहेंजोदुष्टकेसंगकोत्यागकरो॥काहेतेंदुष्टके
संगतेंबुद्धिबिगरेंअसमर्पितदुष्टकेसंगतेंखाइ

त्रि.पु. ३नोआश्रयहे दुष्टके संगतें होइ ताते दोषकोमू
५८ गके त्यागकरे औरश्री आचार्यजीमहाप्रभुके
विदकोआश्रयकरे औरपुष्टिमारगीयकीरीतिप्र
गमें स्थितिहोइ गुरुकहेंता प्रमानक्रियासर्वकरे
पावेषआपनेहयुतवरे प्रथमतोदुष्टकेसंगके
गा१ औरश्री आचार्यजीमहाप्रभुके चरणकमल
आश्रयहोइगो तीसरे भगवदीयकोसंग सोश्री
चार्यजीमहाप्रभुकीकृपातेंमिलें पुष्टिमार्गमेंस्थित
३ भगवदीयकेसंगतेगुरुकहेंता प्रकारसेवा प्रपत्ते
तेवृत्तिनताही यहपावप्रकारभगवदीयवैष्णवके
भनेंयहें ३४ आगे यवचारहूंकहतहें श्लो
विषयवैराग्यपरितोषं विभाय वा सदानंद सदानंद
भृत्यातेसदाभजेत् ३५ आ विषयमेंवैराग्य
होइ तवहीसवधर्ममेंवनिआवे सोश्री आचार्यजीम
हाप्रभुसंन्यासनिर्णयमेंकहेहें विषयाक्रांतदेहानां
नावेशसर्वथाहरे इतिवचनात् जाजीवकेहृदयमें
विषयकोज्ञान होइ हेतामेंविषयकीकामनाहोइ
ताकेहृदयमेंहरिजोभगवानकोआवेससर्वथानहोइ
तातेंविषयादिदेहसंबंधीकार्यवैराग्यहोइ औरमनमें
संतोषहोइ यथालाभसंतुष्टजो भगवदिच्छातें आइ
प्राप्तहोइ ताहीमेंसंतोषहोइ जवविषयादिकमें
वैराग्यहोइ तवहीसंतोषहोइ औरलौकिकवैदि
कदेहसंबंधीकी चिंता छोडि सदाआनंदमेंरहे
जोजवहृदयमेंसंतोषहोइ तव हृदयमेंआनंदपा
वे चिंतानहोइ तवभगवद्धर्ममें मनलागे याही
तेश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनवरत्नग्रंथमेंकहेहें चिं
ताकापिनकार्या निवेदितात्मभिःकदापि निवे
दितभक्तहें सोचिंतानकरे सदाआनंदमेंरहें

तवसदाआनंदरूपजोश्रीकृष्णरूपफलहै।श्रीवृंदावनमेंदे
नभक्तसेयुतवेष्टितफलरूपतिनकीसेवाकरें।सदासर्वो
पाफलप्राप्तिहोय।१५॥इतिश्रीहरिरायजीकृतसिक्षा
पत्रताकीटीकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्णं॥६ अपो
अवश्लोकरूपरत्नहैजोविषयमेंवैराग्यकरियथालाभ
संतोषकरिप्रसन्नतासोंसुदृढस्थानेंभगवत्सेवाकरे
तोंफलप्राप्तिहोय।सोश्रीकृष्णफलदानदेवेकोजब
विचारकरेंतबहीवनेकृष्णकेमनकीअभिप्रायताकें
जानिवेकोंजीवसामर्थनाहींहैं।कोंनभांतिकहाफ
लदेइगो।सोआगेंसिक्षापत्रमेंकहतहैं।श्लोक।कोवे
त्तिकीदृशंकृष्णाभिप्रायःस्वजनेमतः।स्वानंदसिद्धये
रीतिंनिजांतेषुनादिशु॥१॥याकोअर्थ।अवश्रीकृष्ण
केअभिप्रायजानिवेमेंवेदहूसामर्थनाहींहैं।नेतिने
तपुकारतहैंजद्यपिभगवानकीस्वासतेंप्रगटहैंभग
वत्स्वरूपवेदहूहैं।सोश्रीकृष्णकेअभिप्रायजानिवे
मेंनाहींसामर्थहैं।तोश्रीआपनीमेंसुखदेनेकहाजा
नेंगे।तऊश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकीकृपातेंकछु
मेंआपनीमतिअनुसारकहतहों।काहेतेंवेदहैंसो
प्रभुकेवंदीजनहैं।सदागुनगावतहैं।वाहीरेखरता
कोमाहात्म्यकहतहैं।औरमेंतोश्रीकृष्णकोजनदास
हों।तातेंप्रभुकीकृपासोंपरहैं।तातेंकछुआपनीम
तिअनुसारकहतहों।तोकृष्णआनंदरूपहैं।सोआप
नेंआनंदजनवेकेअर्थजोपुष्टिमार्गीयनिजसेवकहैंतिन
कोंअनुभवकरायवेकीइच्छाकरतहैं।तोफलानेभक्त
कोंप्रभुआनंदसिद्धिकोविचारतहैं।तबउनभक्तकों
श्रीकृष्णकेदरसनकीआर्तिहोतहै।तबउहभक्तकी
रतिजोप्रीतिसर्वओरतेंछुटिकेंश्रीकृष्णकेदरसन
मेंहोतहैं।तातेंयहजाननोजोश्रीकृष्णआनंददान

प.
६

को विचारे सेवक कौं। तिनसों अपने दरसन की आर्ति सिद्ध क
रावें। ऐसे सेवक के हृदय में ताप होय। जो मेरे कृष्ण श्रीकृष्ण को
दरसन करुंगो। वाही में पूमरन कीर्तन सेवा सर्व जानने
ताकों भगवद्धर्म कहिवे में प्रीति होइ। प्रभु के दरसन वि
ना रह्यो न जाइ॥ ३॥ आगे अब और हू कहत हैं। श्लो॥ ४॥ सं
सार भाव राग अलौकिकार्ति तथा पुनः॥ सदा भावाय
स्यार्तिकारीसार्त्तित्रयच्छति॥ ४॥ टी॥ अर्थ॥ अब कहत
हैं जो यह संसार देह संबंधी जितनो पदार्थ है तिन में
अनुराग को अभाव होइ॥ तिन में ते राग को अभाव
होइ सो श्रीकृष्ण की कृपा ते लौकिक संसार ते जब
छूटे जब श्रीकृष्ण करुणा करें। और लौकिक कार्य की
आर्ति छूटे सो श्रीकृष्ण की कृपा ते। और मद को अभाव
होइ अभिमान न होइ जो मैं ही सब के कर्ता। पे श्रीकृष्ण
की कृपा ते होइ॥ और अपने सरीर की आर्ति दुखसुख
खानपान की आर्ति न होइ यह श्रीकृष्ण की कृपा ते जा
निये॥ २॥ आगे अब और हू कहत हैं। श्लो॥ ४॥ संगाभा
वाय बंध्वार्ति देहार्ति दैन्यसिद्धये॥ सोहाभावाय भग
वान् साधनार्ति सदार्तिहि॥ ५॥ टी॥ अर्थ॥ संग को अ
भाव होइ भगवदीय को संग न होइ। तऊ बंधु जो देह
संबंधी कुटुंब की आर्ति न होइ सुत ही अपने हृदय ते
ज्ञान उपजे जो ये देह संबंधी न कहा संबंध है मेरे
संबंधी भगवान हैं॥ काम ते उनसों है॥ याभांति स
संग विना ही सुत बंधु आर्ति न होइ॥ यह श्रीकृष्ण
की कृपा सत्संग विना सब ठौर जीव आर्ति करत हैं वे
सन्त सगाता ते छूटे॥ वे भगवत्कृपा ते छूटे। और देहार्ति
जो अनेक रोग समै कुटुंब तथा द्रव्य घर मित्र तथा आप
महाराज न होइ सो देह हू को दुःखसुख न होइ मन में आ
र्ति न होइ सो श्रीकृष्ण की कृपा ते और दैन्यता ते सिद्ध हो

इसोऊ श्रीकृष्णकी परमकृपातें ज्ञाननो॥ काहेतें प्रभुप्रसन्नक
रिवेको दैन्यनाही साधन है सो श्री आचार्यजी महाप्रभु
श्रीसुबोधनीजी मैं लिखे हैं आचार्य चरणैः जे दैन्यं लतो
साधनं दैन्यतारूपसाधनतें प्रभुप्रसन्न होइ सो दैन्य
ता श्रीकृष्णकी कृपातें सिद्ध होत है औरसों हठसों दैन्यभाव
होइ परि श्रीकृष्णविना और कैं न माइ होइ स्त्रीपुत्रप
ति मित्र धन द्रव्य देहपरलोक यहलोक में कहूं मोह न
होइ यह श्रीकृष्णकी कृपातें होइ और भगवानके मि
लिवेके साधन भगवद्सेवा स्मरण कीर्तन जप पाठ भ
गवद्वार्ता पुष्टिमार्गकी रीतिसों साधन सो ऊ आपुश्री
भगवान कृपा करिके दैन्य करावें नव ही बनि आवें
२ आगें और रूप कहत हैं श्लोक॥ प्रारब्धभोजना
र्थं वा परीक्षार्थं क्वचिद्वना नु निर्वाहार्थं तथा वेदसाध्या
र्थौ निश्चयकृतिः प्रयत्नमातिप्रूराने पिपरानंददायनःस
माश्रयेन मोनृत्योहृदस्वाचार्यसंश्रयौ॥ पर्याकृष्णार्थेऽ
परवहै ताप्रकार लौकिक आत्मिकराय भगवद्संबंधकी
आर्ति श्रीकृष्णजू कृपा करिके नवरें ता पाछें श्रीकृष्णचं
द्र परमानंद रसात्मक स्वरूपको दान करें जहांताईं इतनी
आर्ति सिद्धि न भई होइ न हां ताईं परमानंदको दान निश्च
य न होइ सो सगरे साधन में जीवके हाथ एकहूं नाही है
श्रीकृष्ण ही सर्व सिद्धि करि पाछे पुष्टिमार्गको परम प
रमानंद रास प्रभु दान करत है तहां कोइ कहे जो यह आश्र
य तुम काहे तें कहो जो सर्व श्रीकृष्ण ही करत है सो तहां
श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह आश्रय में अपनी युक्ति
तें नाही कह्यो है। मैं श्री आचार्यजी महाप्रभुके चरणक
मलको दृढ आश्रय कीयो है ताकरिके महाप्रभुकी कृ
पा करि अपनो अभिप्राय जतायो। ऐसो अभिप्राय सहित
मैं श्री आचार्यजी महाप्रभुके चरणकमलको दृढ आश्र

५· य अपने मन में करि यह आश्रय निरूपण कीये हैं यह क
हि अपने भक्तन को यह जतायो जो श्री आचार्य जी महाप्र
भू के चरण कमल को दृढ़ आश्रय करेगो तिनको श्री ठाकुर
जी अपनो आश्रय देके अपनो परमानंद को दान करेगे
ताते मुख्य श्री आचार्य जी महाप्रभू के चरण कमल को आ
श्रय करनो यह है ।। प ।। आगे अब चौथो कहत हैं ।। श्लो ।। स्व
तः कृष्ण सदानन्दो निजानन्देन प्रकाशयति ।। भक्ताश्रये वस्था
नयं सर्वैश्चातकः पक्षिवत् ।। टीका ।। अ ।। श्री कृष्ण जे
हैं स्वतः आपुही सदा आनंदरूप हैं परम दयाल हैं
सर्व प्राणी मात्र को आनंद ही देत हैं ।। तासें श्री कृष्ण सो
अपने दासन को आनंद दान करें सो उचित ही है दास
पर तो और अधिक दान कृपा करिके देहिंगे ।। यह निश्चय
श्री कृष्ण को भरोसो है श्री कृष्ण के नाम तें सगरो कार्य सि
द्ध होइ यह श्री भागवत द्वादश स्कंध में श्री शुकदेव जी
कहे हैं ।। श्लो ।। कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महा
न्गुणः ।। कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तबंधः परं व्रजेत् ।। इति
वचनात् ।। जद्यपि कलियुग दोष स्वरूप है तऊ श्री कृष्ण
नाम तें संसार दुख तें छूटि जाय भक्ति प्राप्ति होइ सो भ
गवदीय गावे हैं ।। राग ।। विहागरो ।। करिहैं कृष्ण नाम प
हाइ ।। अधम नाम रस्या निरूपनी मरत वि नउ कला
य ।। अधम अजामिल उधारेसो कहा नेरो भार को नउ
ठि मन आपने निज करि सब को निस्तार ।। नेक हू धो कु
भरोसो बसत जाके गांव सो क्यो ममता छाँडि दे
जीवन नाव को नाम ।। विरध विविधि बुलाइ खोकरि
हरि निधरिहे लाज तोपे गदाधर निगम आगम व
कन कित वेकाग ।। धरासे प्रभु को नाम स्याल है तहां प
मु दया करि अपने भक्तन को आनंद देहि ।। सो कहा
कहनो ।। तहां दृष्टांत कहत है जो चात्रक पपीलवत् द

ग विश्वास करि रहै है क्यों जे चात्रक पक्षी जड को स्मर
ण करत है सो मेघ वा को मनोरथ पूरन करत है तो
श्रीहरि तो परम आनंदरूप है स्या करि सब करि री
द्धि आगे सब ओर स्फुरत है ॥ श्लोक ॥ लौकिकानंद
ण ॥ न परमानंद चिंतनात् यथा नमणाये द्रागी नितंभे
च न भक्त ण ॥ अथ अर्थ ॥ लौकिकानंद ए देहसंबंधी सं
सार की आर्ति करि विद्यमान होत हो प्रभु को चिंतन न होइ स
मुख अर्थ जब यह जीव आर्ति करै तब प्रभु को चिंतन होइ ता
ते लौकिक आर्ति विस्मरण को सर्वथा ही नाहीं करतव्य है प्रभु
की आर्ति विप्रयोग करें सो ऊपर कहे जैसे चात्रक पक्षी
रात्रि दिवस स्वाति के जल को लीये रटत है तैसे ही पुष्टि
मार्गीय वैष्णव रात्रि दिवस विप्रयोग रस करि प्रभु को क
रै परमानंदस्वरूप भगवान के गुण विचारि विचारि अ
पने दोष विचारि विचारि चिंतन करै तब प्रभु के हृ
दय में स्या आवे सो निरोधलक्षण ग्रंथ में श्रीआचा
र्यजी महाप्रभु कहे हैं ॥ श्लो ॥ रूपमानानुजनानंद दृष्टा हृप
यु को पक्षाभवेत् ॥ अपने जन को जब विप्रयोग होय स
प्रभु देखत है तब प्रभु कृपा करत है जब अभिमान
देखत है तब दंड देत है सो श्रीभागवत रासपंचाध्या
ई में वर्णन है जो व्रजभक्तन को मद भयो तब अंतर
ध्यान प्रभु भये पाछे भक्तन को अत्यंत ही विरह
देखो तब श्रीठाकुरजी कृपा करि प्रगट भए तैसे ही
यह पुष्टिमार्ग में व्रजभक्तन के भाव करि मन में लेरा
होइ तब प्रभु कृपा करें ताते लौकिकानंद छांडि प्र
भु को विरह करि परमानंद को चिंतन करनो प्रभु कृ
पा करें नहीं दृष्टांत देत हैं जाको रोग होय सो तिक्त औ
षधी को षात है रोग जाय वे ते अर्थ यद्यपि औष
ध बहुत तिक्त करु है सो रोगी प्रीति सों खात है ते

सो ही जा को संसार रूप काम क्रोध मद मत्सर नादि दुख
सब रोग समूह मन मे ज्ञान भयो है सो रोग निवृत्त करण अथ
प्रभु को विप्रयोग रूप औषध खवाइ तब प्रभु कृपा करें
सगरो दुख मिटि जाइ तातें विप्रयोग प्रभु मे होय तब
वही प्रभु प्रसन्न होय अब आगे कहत है श्लोक ॥
आहितं निजभक्तानां विदधाति हरिर्न हि समस्ता
नां स्वास्वीय भक्तानां न कथं भवेत् ॥ याको अर्थ
श्री हरि कैसे है अपने निजभक्तन को अहित जो बुरो
कबहू न करें सदा हित ही करेंगे सो महाभारत मे भी
अपर कृपा ही करी जैसे नंदराइजी अंबिकापूजन गए
अन्याश्रय कीयो ताकरि सुदर्शन सर्प ने ग्रस ही लि
यो पाछे प्रभु के निजभक्त है नंदरायजी तातें कृपा
करि सुदर्शन सर्प ने छुडायो तैसे ही पुष्टिमार्गीय
भगवदीयन को कष्ट दोष निवर्त करनार्थ दुख प्रभु
देहि तो मनमें चिंता नाहीं करनी पाछे प्रभु हित
ही करेंगे काहे तें समस्त जीव के पालनकर्ता सर्व भ
गवान् है सो अपने भक्त के ऊपर कृपा करें यामें कहा आ
श्चर्य है निश्चय अपने भक्त के ऊपर कृपा करत आए
है सो अब हू कृपा करेंगे या भांति पुष्टिमार्गीय वैष्ण
व प्रभु के गुण विचारि स्मरण भजन करे पद सिद्ध
भयो ॥ ८ ॥ इति श्री हरिरायजी के ग्रन्थ मे सिद्धान्त
री ... श्री ... पत्र ... ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥ १० ॥ अब ऊपर
कहि आए तो प्रभु अपने भक्तन को बुरो कबहू न
करे हित ही करेंगे परंतु भक्तिमार्ग की रीति कहे नहीं
सो आगे वर्णन करत है जो या भांति भक्त रहे लो
सर्वदा सर्वभावेन कहे तें भजे पुसवैया श्रीमदाचा
ादेवुस्याप्यतानन्यमने ॥ १ ॥ याको अर्थ अब
गवद्भक्त के लक्षण कहत है सर्वदा सर्वकाल मे

ारसर्वभावमेंव, ऐवें भूत जो प्राणी हैं तिनकों सर्वथा हि
हीकरनौं प्राणीमात्रकों सुख ही दैनौं मनकरि वचनक
रक्रियाकरि इत्यादिककरि जितनो अपने तें सामर्थ्य होय।
वनिश्चावै तहांताई जीवमात्रकों हित करनौं। स्यारखनी।
एक यह भक्तजनके लक्षण।। और श्रीमहाचार्यजी श्रीवल्ल
भाचार्यजी अपने आचार्यके चरणकमलमें अपने मन
की स्थिति करनी। एकतौ आचार्यजीके चरणकमलकों
दृढ आश्रय करनौं।। सो अपने मनसों तन्मयता होइ क
रनौं मनवचनकाय सर्वप्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभु
के चरणकमलमें ही मन राखें।। या आगें अब श्लोक कहत
हैं।। श्लोक।। तत एवं तदर्थस्य निश्चयः क्रियतां हृदि
अन्यसुखं विनिश्चयमन्य तस्मात्सर्वात्मदास्यं। भृयाकौ अ
र्थ।। कृपा सब है जो प्राणीमात्र कृपार्थ्यारखें। और श्रीआचा
र्यजी महाप्रभुके चरणकमलमें अपनौ मन राखें सोहू
तार्थ स्वपदै निश्चय। वा भगवदीय श्रीनाते हृदयमें प
हृदीन क्रिया विचार निश्चय करनौं। प्राणीमात्रपर दया
और श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके चरणकमलकों आश्र
यह निश्चय फल तार्थ होय यह सिद्धांत है सास्त्र गीता
भागवतमें प्रमान है। तामें विश्वास न होय तौ ताकों
सत्सुर ही जाननौं। श्लोक।। अनन्य कथो रहे कहन है सर्व
श्रीकृष्ण सर्वदा स्मय: सर्वतीला समन्वितः भजनै
यस्थापी सर्वतः पुरुषोत्तमम्। या कौ अर्थ।। श्री
फलात्मक तिनकौ स्मरण सदा करनौं। लीलास
भक्तन सहित सुमरन करे। काहेतें सास्त्रात्मक श्री
वृजभक्तनके संग अष्टप्रहर लीला करत श्रीह
सुमरन करि तातें ऐकै भक्तके हृदयमें स
नमस्थिति है। काहेतें यह रीति है जाकौ आ
... तौ कियक है हृदयमें संसारमयी

भुकों सुमिरन करें तो प्रभु सगरे जद्यपि हैं तहूं भक्त के हृ
यमें लीलासहित प्रभु स्थित है ॥ अब श्लोक कहत है
श्लो ॥ गुनगानं तथा दुखभावनं दैन्यमेव च ॥ तथा त्या
गः सिद्ध हरा: कृत्यमेतच्चतुष्टयं ॥ याको अर्थ ॥ श्रीप्रभु
रनकी लीला को गुनगान करें ॥ १ ॥ विप्रयोग दुःख की
भावना करें ॥ २ ॥ दैन्यता करें ॥ ३ ॥ ताकरि सब लौकिक
वैदिक त्याग करें ॥ ४ ॥ यह चार कृत्य आवश्यक ही करि
का हैं ते जो प्रथम गुनगान नहीं करें ताकरि कें तीन
दोष हैं ॥ तिनके भस्म होइ जाय शुद्ध हृदय होइ त
ब अपने दोष पुरे अपने को तुच्छ जाने प्रभु को सर्वो
परि जाने तब दुःख हृदय में होय ॥ जो मैं तो कछु साधन
नाहीं कियो मेरो अंगीकार प्रभु कैसें करेंगे याभांति वि
चारिकें निःसाधनता की भावना मन में होइ तब दैन्य
ता होइ ॥ तब कछु प्रभु बिना और सुहाइ नहीं पाछें लौ
किक वैदिक सर्व त्याग होइ यह चतुष्ट प्रकार करे ता
को पुष्टिमार्गीय फल होइ प्रथम साधन ए चार करें
पाछें ये ई चार फलरूप सिद्ध होइ ॥ सो आगे श्लोक में क
हत हैं ॥ श्लो ॥ गुनगानं भगवतानं सेवया दुखभा
वनं ॥ दैन्य भावना दैन्यं त्यागो विरह भावना ॥ या
को अर्थ ॥ रूप गुनगान सो साधनरूप ताकरि सर्वदा
बढ़ी होइ ॥ सो फलरूप गुनगान भगवान के दरसन
के जैसे व्रजभक्त वेणुगीत युगलगीत गायके निर्वाह क
रत हैं ते से ही वैष्णव सेवा के अनोसर में गुनगावत हैं
ताके समय प्रभु की सेवा को होइ यह दुःख की भाव
ना होइ यह गुनगान तें सें ताको दुःख मन में होइ ताक
रि निःसाधनता सिद्ध होइ कि नीकें सेवा करे परंतु
मन में यही दुखा है जो जन्म सगरो वृथा ही गयो क
छु भगवत्सेवा न बनी यह दैन्यता सिद्ध होइ याभांति

दैन्यताकीभावनाकरतकरतसर्वदेहसंबंधीपदारथमेंत्या
गउत्पन्नहोइ।अनवविप्रसुइविप्रयोगविरहकीभाव
नाहोइ।असर्वोपरसुखफलपाछेंसर्वलीलाकोअनुभव
होइ।यहचतुष्टप्रकारफलमार्गहै।अथमार्गअब
औरहूकहतहैं।सोकहुं।एवंचतुष्टयंसिद्धंयस्मिन्नान्यदपे च
क्षितं।संदेहमूलंसत्संगात्तदभावेनसिध्यति।१।या
कोअर्थ।अपरकहैयहचतुष्टप्रकारजाकोंसिद्धहोइ।
ताकोंऔरसाधनकीअपेक्षाकछूनाहीं।तातेंप्रथ
मगुनगानकरें।औरभगवत्सेवाकरें।दुखकीभाव
नाकरें।दैन्यताहोइ।भावनाकरैं।सर्वात्मभावकरि।विप्र
योगविरहकीभावनाकरें।यहसाधनपरमफलरूप
है।सिद्धभयेंपाछेंदूसरेसाधनकीअपेक्षानाहीं।हैसो
यहचतुष्टपदार्थफलसत्संगतेंसिद्धहोइ।सबकोमू
लसत्संगहै।सोश्रीभागवतमेंकहेहें।प्रथमस्कंध
सोनकवाक्य।तुलयामलवेनापिनस्वर्गंनपुनर्भवं
भगवत्संगीसंगस्यमर्त्यानांकिमुताशिषः।१३।एकलव
भगवदीयकोसंगहोइ।तासुखकेसमानस्वर्गलोक
तथाअपवर्गसुखमोक्षपर्यंनसबतुछहै।औरएका
दसस्कंधमेंभगवानउद्धवजीप्रतिकहेहें।निरोधयति
मांयोगोनसांख्यंधर्मउद्धव।नस्वाध्यायस्तपस्त्यागोने
ष्टापूर्तंनदक्षिणा।व्रतानियज्ञश्छंदांसितीर्थानिनिय
मायमाः।यथावरुंधेसत्संगः।सर्वसंगापहोहिमां।२।
सत्संगेनहिदैतेयायातुधानाखगामृगाः।गंधर्वाप्सर
सोनागाःसिद्धाश्चारणगुह्यकाः।३।इत्यादिवचना
तभगवानकहेहैं।उद्धवमोकोसांख्यधर्मस्वाध्याय
तपत्यागव्रतेष्टदतीर्थेनियमःइत्यादिमोकों
वसनाहींकरतहैं।औरसत्संगकरिजीवमोकोवसक

न्याराहल दोगामर्ग गंधर्वे [illegible] पुस्तुगति दृष्वा सो मनुष्यत
हु नाथै मोक्षाना तें सर्व साधन को फल सत्संग है सो सत्संग
ततद्रूप भाव हृदयारूढ होइ तो भाव की सिद्ध होइ ता तें भ
गवदीयन को सत्संग आवश्य ही करनो यह सिद्धांत भयो
ज्ञाते श्री [illegible] नाथ की सिखा [illegible] श्री [illegible] पे[illegible]
हू तत्र [illegible] सो ॥२॥ [illegible] चतुष्टय का साधन
[illegible] गान समर्पे तावरि भावद्र
कहा सो ई फल [illegible] की भावना पाछें दैन्यता की भावना
सेवा [illegible] यह चतुष्टय सिद्ध भयो पाछे को
यह चतुष्टय [illegible] जीव को होइ सो
मर्यादा भव होइ [illegible] भावनीय पदाचि
श्रीगो[illegible] पत्र में कहत हैं सो [illegible] मार्ग श्रीमद
तस्वामिनीजी जल्पे हैं मुहुः ताप क्लेश [illegible] पुष्टिमार्गीय भगवदीयथा
ता ये [illegible] श्रीकृष्ण के वियोग में श्री
भांति भावना चित्त में करें जल्पना करत हैं सो
स्वामिनीजी कोन प्रकार वारंवार जल्पना करत हैं [illegible]
भाव की भावना करे सो प्रेमामृत में कहे हैं [illegible]
कृष्ण विरहात् ध्यायंति प्रियसंगमं मनावास्य निरा
सायजल्पती है मुहुर्मुहुः श्री स्वामिनीजी श्रीकृष्ण
कोमिलन अर्थ विप्रयोग करि वारंवार जल्पना करत
है सो भाव की भावना करे सो प्रेमामृत में कहे हैं
करकृष्ण विरहात् ध्यायंति प्रियसंगमं मनावा[illegible]
निरालायजल्पती है मुहुर्मुहुः श्री स्वामिनीजी श्री[illegible]
पुष्टिको मिलन के अर्थ विप्रयोग करि वारंवार जल्प[illegible]
नाकरत हैं यह भाव सर्वोपरि है तें सूं यह पुष्टिमार्ग
पर्णे [illegible] काहे तें ताप क्लेश श्री स्वामिनीजी[illegible]
श्री आचार्यजी महाप्रभु हैं तातें इनको प्रागट्य[illegible]
पुष्टिमार्ग है ताप क्लेश रूप नाहीं तें ताप क्लेश ता[illegible]
के यह मार्ग को फल सिद्धि है ता तें विरह की श्री[illegible]

मिनीजीप्रकारभावनासहित प्रभु स्तवन करतहैं स
भावकीभावनाकरतहैं श्रीस्वामिनीजीजाभांतिव
रतहैं सोआगेकहतहैं।।श्लो।।इसमेंनेरेहेंगोपीर
गोकुलानंददायक।।गोविंदगोपवनिताप्राणाधिप
यानिधेराधापते।।अर्थ।।श्रीस्वामिनीजीकहत
हैंगोपीजनकेंसहमकोदरसनदेहु काहेतें तुम
गोपीविपत्तिहराजाहो तातें हा अपनीप्रजाको
दुःखनेरहिसुखदीजेहोय हमसबोहैतिसेहीहैंश्री
हमहमतुमारीप्रजाहोतातें हमकोदरसनदेहुंदुखह
खिरो।।औरतुम गायनकेकुलतिनकेआनंददाता
हो।।समायहैतुमारेदरसनविनावहुतव्याकुलहैं
तातेंगायनकोदरसनदेहु।।तथावनमेंगाइचरावे
गायनकोआनंददीजो।।हेश्रीगोपथा।।हमसबकोआ
नंददेहु।।काहेतेंगोविंदहो।।व्रजकेइंद्रहो।।इंद्रभाग
गकवहूनहो।।तेसेहीतुमव्रजभक्तनकोसुखदेहु
काहेतेंगोपवनिताकेप्राणकेअधिपतितुमारेद
रसनकेमिसतेंगोपवनिताजीवनहो।।एसेश्रीस्वा
कृपानिधिहमकोवेगिहीदरसनदेहु याभांतिस्वामि
नीजीलासहितप्रभुकोनामलेविलापकरतहैंना
मपांचभयो।।आगेंअबओरहूकहतहैं।।श्लो।।गो
पालपालितनिजव्रजरजरंजनमुखांबुजपरमानं
ददायिकचिरोन्मीलालालितछवि।।अर्थ।।हेगोपा
लतुमगायनकेकर्त्ताहो।।ओरयहव्रजतुमारोहेतिन
सवनकोपालनकरिसगारव्रजकेसुखदाताहो तुमसु
खकेसमुद्रहो।।यहव्रजनिजजोतुमारोनामहैव्रजमन
मुपंकज।।ताकूगोपालकचैतन्यसवनकोसुखदाता
हो।।एसेसुखकेसमुद्रहमकोदरसनदेहु।।तुमपरमा

ना.प. रक्षन पालन करत हो ॥ ता से श्रीकृष्ण हम को वक्षरक्षन देहु
७ गो ॥ नाम ॥ १ ॥ भाष्ये ॥ ३ ॥ श्लो ॥ ४ ॥ सब जन दृनिजानंद समुदा
यमदायकः दामोदर स्याद्‌ दीन नाथ स्या परा ॥
या ॥ हे श्रीकृष्ण तुम सदा ही आनंदरूप हो ॥ जन मे
समुदाय जीवमात्र के आनंद दाता हो ॥ और यसोदा ज
ने दाम उदर सो बाधे है ॥ ऐसे भक्तन के वस हो ॥ या कौ
कुमारो ॥ स्य आइ भी जिरयो है ॥ और दीनानाथ हो
जो आर्त्ति दीन होइ भक्त है जिनके कोई नाही है तिन
के तुम हो ॥ और स्याद परा है ॥ सर्व पर कुमारी स्या है तो
हे श्रीकृष्ण स्या [illegible] री हम को दरसन देहु नाम ॥ १० ॥ भा
ष्ये ॥ आगे प्रवर्त्त आरहकहत है ॥ श्लो ॥ ५ ॥ पुरुषोत्तम सर्वे
गारुचिरशरीन ॥ अने गोप परम प्रियो गोपवधू
पते पस्या [illegible] हे पुरुषोत्तम सब ते परे ॥ सर्वो
पर संग तुम्हारु चिर है सुंदर आंग को दरसन दे
न है ॥ ना स्वि न ख्या रहत है सो भगवदीय मारे श्री
कृष्ण नया [illegible] रूप दृष्टि ने लाय [illegible] की श्रीगोव
र्द्धन [illegible] पति नि रखि ने न मन रहत न हिन दिया
[illegible] ति सर्वांगारुचिर है ॥ और प्रेम करि पूरित हो ॥ सर्वांग मे
प्रेमरस भरि रह्यो है ॥ योधिदेव कथन ग रूप परम सुं
दर हो ॥ गोपीजन को तुम परम प्रिय हो ॥ तुम को गोपीज
न परम प्रिय है ॥ गोपवधू के पति तुम ही हो ॥ और गोप
वधू के गोपके से है जैसे भून्यो अन्न सो खेत मे
डारे तो उपजे नाही ॥ ताते बीज के काम भुजो अन्न
न आवे ॥ देखिवे को अन्न है तैसे ही गोप है तिन
की वधून के पति तुम ही हो ॥ ऐसे श्री हरि हम को
[illegible] दरसन देहु गो ॥ नाम ॥ २ ॥ भाष्ये ॥ ५ ॥ आगे प्रवर्त
रह कहत है ॥ श्लो ॥ ६ ॥ वृजन के प्रवल लेव तुम ही हो सग
रो वृज तुम्हारे आश्रय है ॥ एक तुम ही को जानत

हैं।औरतुमारेकेसवडेलंवेकुटिलहैंमानोमधुप
पंक्तिआइरहीहैं।औरकलानिधिहो।ह्रदयमैंषोड
सकलातिनकोइतनोप्रतापहै।औरतुमतोकल
निधिसमुद्रहौ।सोकहातोइतुमारोप्रतापपुन
वरनैकोइसामर्थनाहीं।अपनेस्वीयअखिलभक्तनको
विरहव्याधिकेहरनवारेव्रजभक्तनकेमनह्रदिवे
मैंतन्यरा।अपनोसुंदरमुखश्रीअंगदिखाइतथा
अनेकलीलाकरिसमस्तव्रजभक्तनकेमनकेहर
नमैंपरायनएसेश्रीकृष्णहमकौंअवदरसनदेहु
नामारुथभरेवाधाआगेयवओरहवहनदेहौ।सो
मनोविनोदभाजांअभावायहृदयस्थितिचंचली
कृतचितस्यभावादोलितरूपभनाइ।याकोअर्थ।व्र
जभक्तनकेमनकोविनोदजोआनंदकेदानतुमही
करिव्रजभक्तआनंदपावतहैं।औरभावकेसमुद्रहो
नाभाववसोभजेसोईसिद्धिको।भावकेसमुद्रहोतआपवे
भावकोपारनपावैं।सगरिभावनगरमेंसोतुम्हारे
कनिकातुमभावकेसमुद्रहौ।औरभावहीकरिभक्तनके
ह्रदयमेंस्थितिविराजतहैं।जोभक्तकेह्रदयमेंजोभावत
होतोईरीतिसोविराजतहो।जहांताइभावनाहींतहांत
ईभावनाहींतहांतांईकछुवस्तुकीसिद्धिनाहीं।भाव
कीभक्तकेह्रदयमेंस्थितिहो।औरअपनेभक्तनकेचि
त्तमैंचंचलताचलायमानकरतेहो।थापुहवेचलहो
भक्तकोआसनकाजप्रत्येककरतेहो।इतोनहोतेचिंतु
कोचलाइदैंअपनेमेंलगावतहो।भावकोस्थिरवीग
भरेहौ।जेसेपात्रमेंथोरोजलहो।इतोडोलायमान
व्हैलहै।औरपात्रमेंभरोसंपूर्णहोइतोडोलेनाहीं
सोतुमभावरसकरिभरेहौ।तातेंसमस्तभक्तनकेमन

सि.प. २५

पनै भरि राख्यो है। ऐसे श्रीकृष्ण मोको दरसन देहु
नाम॥३४॥ श्लो॥ ७ ॥ याही गेय वस्तोर हूं कहत हैं। श्लो
को॥ मन्दहास्यमुख सदा दुग्धपानन परमानव: नवनीत
लिप्तमुखस्योधि देहु नाथ सदा मे॥ या को अर्थ॥ अपन
पनै निज भक्तन मे मन्दहास्यमुख है आप कछु स्तनराख
न ताही॥ भक्त कहे है सो ईश्वर प्रभु को प्रथम यशोदा
जी के स्तन की ब्याति ईसु प्रथम ताको कछु मान नहीं न
हीं श्रीआरसदा ई दूधपान मे तत्पर मन करि राखत
हैं श्रीयशोदा जी के स्तन के दूधपान मे तत्पर मन करि
राखत है ऐसे श्रीयशोदा जी के दूधपान करत है मन
ताही मे है मुख मे नवनीत लिपटि रह्यो है ताकरि
परम सुन्दर सो भावत है तहां है धका मध पर लागी है
ताकरि परम सुन्दर सो भावत है ताकरि अधर सो भायमा
न है ऐसे श्रीकृष्ण हम को दरसन देहु गो॥ नाम॥३६॥ भ
रो॥ याही गेय वस्तोर हूं कहत हैं श्लो॥ यत्नकाक्षवद
नमस्ना चिव सुन्दरा॥ कपोलविलसत्सुगा कस्तुरीतिल
को चित॥ या को अर्थ॥ सुन्दर अलकन करि आवृत ऐसे
वदन कमल सो भायमान हे॥ और रसगरो श्रीअंग मद
न जो कामदेव ते हूं अधिक सुन्दर हैं॥ कोटि काम वारने यह
सुन्दरता पर करिये॥ सोऊ कपोलन पर कमलपत्र रच
ना सुमल मादि रागसो सवारे हैं॥ और कस्तुरी को तिल
क भाल मे विराजमान है॥ ऐसे श्रीकृष्ण हम को दव
रसन देहु गो॥ नाम॥३७॥ मधपर्द्धि॥ याही गेय वस्तोर हूं क
हत है॥ श्लो॥ सिंजत नूपुरसो भाढ्य नखभूषण
भूषित॥ सघोष मर्म्मु कटि विलसत्क्षुद्रघंटिका
॥१॥ या को अर्थ॥ सोऊ चरण कमल में सुन्दर नूपुर सो
सो भावत याख्य एल॥ सो भाव त्रीयलोक में नाहीं द्रसो
नख पर नख भूषण नखावली विराजत है सो को

टिचंद्रसूर्यकीकांतिलजावतहैं।औरसूक्ष्मकटिपरक्षु
द्रघंटिकाविलासकरतहैं।सोवारंवारसुवसुंदरहोतहैं
एसेश्रीसूक्ष्महमकोंकवदरसनदेहुगे।नाम।४४।भ
गो०१४।अवओरहूकहतहैं।श्लोक।राजद्ररूपवैयाघ्र
नवभूषणसोभित।कंजलोचनलोलालविसाला
ष्ठविलक्षण।११।याकोअर्थ।रूपकेउपरालाघवकोनख
षणमैजटितकरिनखभूषणश्रीयसोदाजीपहरा
तहैं।जोमेरेपुत्रकोंकाहूकीदृष्टिनलगै।सोवरूपसुंदर
मेनखभूषणसोभितहैं।नैनकमलसमानअतिलोल
चंचलहैं।जैसेंकमलसीतलहैं।तापहारकहैं।तैसेंही
श्रीठाकुरजीकेनेत्रकमलसगरेभक्तनकेहृदयकेता
पहारकहैं।औरनेत्रनकीदृष्टिभक्तनकोंरसदान
करतहैं।संकेतसूचनकरतहैं।ताकरिलोलचंचलहैं
औरनेत्रकमलवतवडेविसालहैं।पूर्णायमानअ
तिविलक्षणहैं।जाकीउपमाकाहूसोंकहीनजाय।
अनिर्वचनीयहैं।ऐसेश्रीसूक्ष्महमकोंकवदरसन
देहुगे।नाम।४५।भगो०१५।आगेंअवओरहूकहतहैं।
श्लोक।।दीनैकसरणस्वीयसर्वसामर्थ्यसंयुत।राज
राजसुतस्वीयजननीकंठभूषण।१२।याकोअर्थ।
दीनहोनिजभक्तनकेसरणीयहैं।अपनेस्वीयभक्त
दैन्यहोयसरणआयकरिरहैहैं।तिनकौसवभांतिप्रभुर
क्षाकरतहैं।काहेतेंजोश्रीसूक्ष्मवडेहैं।सोसवसाम
र्थ्ययुक्तहैं।सोनवमस्कंधमेंश्रीभगवानदुर्वासाप्र
तिकहेहैं।श्लोक।।एदारागारपुत्राप्तान्प्राणान्वि
त्तमिमंपरं।हित्वामांसरणंयाताःकथंतांस्त्यक्तुमुत्स
हे।।इतिवचनात।श्रीठाकुरजीकहेंजोऐसेभक्तस्त्री
घरपुत्रप्राणचित्तसर्वमोकोंसमर्पेन करमे
रीसरणहोयरहेहैं।तिनकोंछांडिवेकोमैंके

करें मेंउनकी अष्टप्रहरटहलहीकरतहो तातेंरी
होइ भगसरणहैं तिनकेटलाप्रभुआपुकरतहैं सर्व
सामर्थयुक्त श्रीकृष्णचैतन्य व्रजराजजो श्रीनंदरायजीकेपु
त्र स्वरूपनीलीलाजाननीयसोराजीकेसके भूषणहे ऐसे
श्रीकृष्ण हमकोकबदरसनदेहुंगे नाम ५० भरोरभ्री
नामोतिश्रीस्वामिनीजीविप्रयोगाविरहमेंलीलासादि
प्रभुकेनामवरहतकूहत देहानुसंधानभूलिगयेमहा
प्रभुके गीरी विरहमेंतन्मयहोइबोली सोआगेंकहे
हैं श्लोक हाकृष्णहाप्राणनाथहावृंदावनभूषण
हानंदरायनंदनयहायसोदानंदवर्धन १ ऐसीयाकोअर्थ
श्रीस्वामिनीजीकहतहैं हाकृष्णहाप्रीष्णनाम
कृष्णनामकेहैं सर्ववेदकेश्रुतिकोसारसोव्रजभक्तश्री
स्वामिनीकेनामकोसुमरतजपकरतहैं ताहीतेंश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभुनें आपुहीरूपचालटमेंयहीसर्वोपरी
हृदर्शिकोरसनवतारोहे विरहकेरहावलकहेहाम
हांनंदनतुमतोसदाप्राणरसहो सोहमकोआनंददेहुंस
वृंदावनके भूषणहें श्रीकृष्णतुमतो श्रीवृंदावनतें एक
पगहुंबाहिरनाहींजातभूषणरूपहो हानंदराय
नंदनयशुदाशापसोदाजीकेअंकमेंखेलकेवेतो
ऐसे श्रीकृष्णहमकोकबदरसनदेहुंगे नाम ५५ भरो
रे आगेअवश्लोककहतहै श्लोक हागोपिकेस
हानाथसागोकुलपुरंदर हाहाव्रजजनार्तिघ्न हह्
निसाधनाधिप १ ऐसीयाकोअर्थ अवकहतहैंजो
हागोपीजनकेईसराजा हानाथतुमतोहमारेनाथ
हो यहहमारीटहलाबेगिहीकरो जेसेपंचाध्यायीमेंवि
रहकारभतकहतहें हानाथरमणप्रेष्ठक्वासिक्वा
सिमहाप्रभु हा स्यो विकपनामयासखेदर्शनस
निधि ऐसेहीइहांकहे हानाथहे गोकुलकेपतिपु

इजे सेएक छिन भोगना ही छोड़न ते सें तुम गो
के उहोंया तुमको वेठि रहे हो हमको ध्यान र
के इ है या तुमको वेठि रहे हो तुम भजन भगते
जजनके ग्याति के हरन हारो तुम ... छोड़ि तितिगनवा
विना ही सहे हो। फा हेते इ ... यत्र छोड़ि ... के उप्रने
जनयन्त्र कु पि तवृ उइ सगरे व जवो लिके कोउ रहो के
घपठारो। सो गो कडु न उठाय सगरे वजनके रहो ... तुम ही कानव
ी। ... हसप्रभु मेंह मडवन ते हो। ... तुम ...
मे सामर्थ हो। ना ... विरहे आ ... सो ... विर दव
से हो। तिसाधन भक्ति ... विप तिहो। ... दोष ही है
रिके वासु ... मनसा ... ... नहि
साधन कारि हित ति साधन हो ...
याति हरी। नाम ...
ततेलोक। ...
र। हो ति ...
...
महो सब ... तुम विना ...
...
...
...
...

या भांति समस्त स्वामिनी विप्रयोग करत हैं नाम ६४
भयो । आगे अब छठो श्लोक कहि पत्र पूर्ण करत हैं
श्लो [illegible] एवं विधा निसतं जल्पिता निमुहु मुहु अव
गत्य च भावेन भावनीयाऽन्यह निशं ॥ ६ ॥ याको अर्थ या
[illegible] जो निरंतर श्री स्वामिनी जी वारंवार ज
ल्पना [illegible] तब श्री ठाकुर जी पधारि के समस्त श्री स्वा
मिनी जी के हृदय में अनेक लीला करि रसदान क
रि उनके मनोरथ पूरण ही करत हैं सो यामे ६४ नाम
कहे ताको अभिप्राय यह है जो चतुर्थ यूथपति हैं सो
एक एक यूथ की स्वामिनी षोडस नाम षोडस श्रृंगार
त्मक सर्व भाव सम्को अनुभव लीला सहित करत हैं
ताते ६४ नाम कहे हैं अब श्री हरिराय जी पुष्टिमार्गी
य भगवदीय सों कहत हैं जो तुम या भांति स्वामिनी के
विरह भाव की भावना अहर्निश करो तब श्री स्वामिनी
जी की कृपा ते हृदय में भाव स्थित होयगो तब प्रभु अप
नो अनुभव करावेगे यह सिद्धांत सर्वोपरि है ॥ ६ ॥ ३
श्री [illegible] हरिराय जी कृत [illegible] पत्र [illegible] टी
[illegible] से संपूर्ण ॥ १४ ॥ अब चौरह कहत
कहि आर [illegible] जो या प्रकार विप्रयोग करे तो
भाव सिद्ध श्री स्वामिनी जी की कृपा ते होय परंतु यह का
ल महा कठिन है सत्संग नहीं है दुःसंग बहुत है सो बु
द्धि सब की भ्रष्ट है ताते यह विप्रयोग बाधक है ताते
अपने आश्रय विचारि दैन्यता करत है प्रभु प्रसन्न होय
सो उपाय कहत हैं कालः करालः समुपागतो यं मति
मतां प्राग हरत्समस्तान् श्री वल्लभाचार्य जी समाप्ति
तानाय [illegible] कालकालः सरंस सराव ॥ १ ॥ याको अर्थ य
ह काल महाकराल कठिन है सो सत्पुरुषन की
मति हरि लेत भयो तो श्री आचार्य जी की कहा गति है

समलतस्से कौ बुद्धिकौं प्रस्खलियुग॥ आयक्षपते
तैं सर्वहरिलीलाहै तहांकौ स्फु है जो कोई कोयह
लक्षहोग्यो है परकाल॥ तहां श्रीहरिरायजी कहते
जाको जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभुको आश्रय
नमनधनकारिकर हैं॥ तिनकौ नाहीं बाधक म
तौ॥ औरउनकौ सहायकरें॥ सास्त्रे॥ बूरीही थोरे
दिनमें प्रसिद्धिहै॥ सोराकौ दस लेध धर्मकविलह
है॥ श्लोक॥ कायेन वाचा मनसेंद्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना
वानुसृतस्वभावात्॥ करोति यद्यत्सकलं परस्मै नारा
यणायेति समर्पयेत्॥ या भांति प्रभुको समर्पि श्री
आचार्यजी द्वारा पाछे निश्चिंत रहैं॥ श्रीआचार्यजी
महाप्रभुको आश्रय कीयो॥ तिनको यह काल नाहीं बा
धक है॥ या स्कंधमें श्रीशुकदेवजी कहे हैं श्लोक॥
कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान्गुणः॥ कीर्तना
देवकृष्णस्य मुक्तसंगः परं व्रजेत्॥ यद्यपि है राजा कलि
युग यह काल बाधक है परंतु एक यामें महागु
[illegible] निर्मल परंतु एक सो सब दुख
तहै श्रीकृष्णकी लालाश्री नेनकारनहै सो श्रीआचार्यजीको आश्र
पुष्टिके प्रभुको पावत हैं॥ तातें यह काल परम सुखद
जावे सर्वथा भयो॥ तिनको यह काल नाही [illegible]
१ तहांकौ पूर्वपक्ष करे जो तुमारे सेवकनको [illegible]
लबाधक होतहे कवियत है॥ या भांति कौ [illegible]
श्रीहरिरायजी कहत हैं॥ लोक॥ नसेवानकथा
भावनना पि संश्रयः॥ नित्यमुद्धि स्रमनसा कथं
प्रख्यापति॥ १ या को अर्थ॥ अथ श्रीहरिरायजी
नहीं जो एसो जीव है तिनको तो काल बाधक [illegible]
जो पृथिमार्गमें प्रथम भगवत्सेवा मुख्य पु
कौ तिसो भगवत्सेवा है नाहीं करत न [illegible]
[illegible] आचार्यजीके प्रणादिको लाभ न [illegible]

२ मैं भगवद्धर्म आवे सो कथा हूं नाहीं सुनन को इच्छा वे
८ तो हैं द्रव्यादिक सहाय नाहीं है तथा भोग भंग रोगी है
भगवत्सेवा न बनी तो कथा को जो इ भगवदीय कहै
सो हू न मिले तो मन ही कि प्रभु के नाम स्मरण मे
स्मरन की भावना है तौ तिनकी भावना मन में भाव वि
चारे प्रसन्न बने तौ लौकिक वैदिक दुख सुख सर्व छो
डि एक रस श्री आचार्य जी महाप्रभु के चरण कमल को
आश्रय राखै या भांति कहुं भगवद्धर्म में मन लगा
वे देह संबंधी संसार में दुख सुख नाहीं मिलगाइ के
तिन जे लोक कष्ट सहे दुख सुख में हाय हाय करें तो ति
न को इह लोक काल कूहा करे उनको बाध नहीं करे तहां
कोइ कहे जो सेवा पूजा तथा कथा तिक हा हो इ कलि के
दोष तो बहुत है या भांति कहे हैं महा कहत हैं जो नव
म स्कंध में श्री भगवान आपु कहे हैं जो दुर्वासा प्रति
श्लोक मत्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादि चतुष्टयं ने
च्छंति सेवया पूर्णाः कुतोन्यत्कालविप्लुतं इति वचना
त भगवान कहत हैं जो जीव को मेरी सेवा में प्रतीत
है विश्वास है तिनको मैं चार्यो मुक्ति देत हों सालोक्य
सामीप्य सायुज्य सारूप्य सो नाहीं लेत है
मेरी सेवा करि पूर्ण हैं तिनको काल कहा करि सके
मेरी नाहीं चलत है औ भगवान की कथा कैसी है
सो सप्तम स्कंध में श्री शुकदेव जी कहे हैं श्लोक तस्मा
द्विद नारायणमानंद रससुंदरं भगवन्यत्कीर्तयंति
ते सकृतार्था न संशय: ॥ इति तीय स्कंधे शुक वाक्यं ॥ प्रवि
ष्ट कर्ण रंध्रेण स्वानां भाव सरोरुहं धुनोति शमलं कृ
ष्ण सलिलस्य यथा शरत् ॥ इति वाक्यात् शुकदेव जी
कहत हैं जो श्री ठाकुर जी की कथा मन सुंदर सुनत हैं
नित्य लोक तात्पर्य रूप है तिनके कर्ण रंध्र में श्री ठाकु

ीकीकथामृतकोपांथकुहारा हृदयमेंजानहें तिनकेस
रिदोषहृदयतेजातहैं तिनके मगारदोषहृदयमेंहैं
तिनकेहृदिदोतहीं कथाकहेसुनेसुनेपाछेंग्रंस
अनुवाहवेरासोतीनोजीवकोंकृतार्थहोयजोसंगमा
जनलावेलायसगरेत्रासपासकेपवित्रहोयत्रासी
कथाकहेतातेभगवद्धर्ममेंमनहोयताकोयहका
नवाधकनाहींहैत्रोरसबकोंबाधकहैंरत्यागोंत्र
वत्रोरहूकहतहैं स्लोक॥ सत्संगाद्दुर्लभो दृष्टसंगस
चिंतनातृत्वेश्वनाथ्योयनसंसिदृकोगातिर्भविष्य
ति॥ अथार्थ॥ श्रीहरिरायजीकहतहैंजोस
श्रीतोमहाहृदयमेंहैं औरदुःसंगविनायहजीव
तोसुभावकहैंकिदुष्टीहैं तामेंसत्संगदुर्लभहै
औरदुःसंगविनाचिंतानाहीं आपतेविनजतनदुसो
रिसतेंश्रावतहैं सोजीवकोंभगवद्धर्ममेंलगननां
हींदेतहैं दुःसंगकोंगंधहूहोइसोबाधकहोतहैयह
तोरसोदिसातहैं दुःसंगहोइताकोंबाधकहोइयामें
कहाकहनो सोश्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेंहैंत्रथवक
गीरूपागंगीसंगीनाथांकृतोसत्यासत्यसंबंधगंधोपी
वचगसेसबबाधतेंयाभांतित्रसत्संबंधहोइगंधहू
गरावकेसेत्रोरमेरोतोत्पसोदिसातहैंसंगविना
ननश्रावतहैंसोमेरोश्रववकहागतिहोनहारहैय
मोकोंजानिनाहींपरततोश्रीत्राचार्यजीयाहके
नहेंस्लोक॥ संगाहोयकुमतिर्लेतेजीवदुःयतुमे
नानाकलीकदुमधुनोप्रभोवालविकोविनं
याकोंअर्थ॥ उपरकहेहेंजोदुःसंगाहहसंबधीसं
होलोगास्त्रहतामसताकोंकोभिरितिनकोंग्रहनको
पासराखिएसेअनेकभांतिविहाय खिचे
केंकीलतहें

कारे जगत में ऐसें ही मनुष्य मोकों मिलत हैं सो हे प्रभु
यह स्वाधु नीक जीवकों तुम दीन चावत हो का ऐसी
कुनीलनको रत मो रहे हो ऐसे थाऐ सगोजन रे तुम जंत्री
हो जा भांति वगा बात ने ही चाजन हें ओर तुम नीवा
[illegible] नाकी भाव रत हो ओर ख्याल करत हो सहज मे
हम नथ्या समारो नाक यह माया बलिके भ्रमत हैं या भां
ति करे स्व श्री हरिराइजी कहत हैं जो ऐवं हम पर
कृपा करो में अत्यंत दैन्य होय प्रार्थना करत हों ताते
अब मोपर क्षमा करो यह माया करि प्रेरित दुःख सु
[illegible] ने सो याभांति प्रार्थना करि ऐवं दैन्य नाम
[illegible] करत है ४ आगें अब ओर हु कहत हैं ला
[illegible] नाथ हां कृपानाथ गोपीनाथ स्यामिंधे [illegible]
[illegible] मानाथ तिनना थज गत्यत ५ या [illegible] श्रे
[illegible] श्री हरिराइजी कहत हे हानाथ हमार तुम नाथ
हो स्वामी हो ताते तुम विना ओर हम कोन सो दु
[illegible] कहें अब यह संसार दुःखना हीस घोजात
[illegible] तुम अपने जानि दया करो हा कृपानाथ तुम अ
गो ने अपने जीवन पर कृपा करत आए हो सो अब ह
म पर कृपा ही करो काहे ते तुम गोपीनाथ गोपीजनके
नाथ [illegible] गोपीजन निःसाधन तिन पर सदा कृपा करे उ
नके [illegible] सिद्ध करे तेसें हम हू निःसाधन हें हम प
र कृपा करो ओर तुम व्रजके नाथ हो कंस ने धी अने
क दैत्य पठाये सबके मारे अग्नि ते जल ते काल के वि
ष ते सब प्रकार अपने व्रजकी रक्षा ही कीनी तेसे ही
हमारी रक्षा करो रमा जो लक्ष्मी तिनके नाथ हो अब
प्रभु हम ऊपर प्रसन्न होउ ओर अपने भक्तनके निज
भक्तके नाथ हो भक्त प्रसन्न रहें सुख पावें सो इक तरो
सो नवमस्कंध श्रीभागवत में भगवान दुर्वासा प्रति क

हैहै॥ श्लोक॥ अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र ईव द्विज॥ साधु
भिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः॥१॥ मैं भक्तन के पराधी
न हौं स्वतंत्र नाही हौं॥ हे द्विज भक्तजन मोकों बहुत प्रिय
हैं मैं भक्तके सदा हृदय मैं रहत हौं॥ याते तुम अप
ने निज भक्तन के नाथ हौ॥ ताते कृपा करो॥ और जगत
ति हौ॥ सगरे जगत मैं तुमही करत हौ॥ सो इहाँ तहँ ताते
तुम कृपा करो गो॥ तब यह काल तुमको दुख निश्चय यह
नाही है हे गोप॥ आगें अबके और हू बहुत है॥ श्लोक॥ गो
कुलाधीस गोपीश व्रजाधीश व्रजप्रिय॥ व्रजानंद निज
नंद गोकुलानंद गोप्रिय॥२॥ याको अर्थ॥ हे श्रीकृष्ण तु
म गोकुलाधीस गोप वृंदके राजा हौ॥ सगरे गोकुलवासी
तुमही कर सोभित हौ॥ गायन के रक्षक तुमही हौ गो
पीजनके ईस तुमही हौ॥ और सगरे व्रजके राजा तुम
ही हौ व्रज तुमको प्रिय है तुम व्रजको प्रिय हौ परस्पर
सो हृदय मैं सदा धर्म व्रत्त अनेक यो है॥ अहो भाग्य यह भा
ग्य नंद गोप व्रजौकसां॥ यन्मित्रं परमानंद पूर्णब्रह्म
सनातनं॥ इति वचनात् व्रजके जन नंद्य सोदा गो
प गोपीके परम भाग्य हैं जो जिनके मित्र श्रीकृष्ण पर
मानंद रूप हैं सगरे व्रजको आनंद दाता हौ॥ और
अपने निज आनंद स्प्रेम सहौ॥ निज भक्तन को हृदय
नो आनंद दान करत हौ॥ गायन के कुल तिनकौ आ
नंददाता हौ॥ साहें ते गायन तुमको बहुत प्रिय हैं॥ सो
भगवदीय गायें है॥ आगे गाय पाछे गाय इत गाय उ
त गाय गोविंद को गाइन में रहिवो ई भावे॥ ऐसो
गाइ प्रिय हौ॥ ऐसे श्रीकृष्ण सम ऊपर कृपा करो ई अ
ग्य बचे और ए ॥ह्या सम्हास्यासिधो

ताको अर्थ

रत नहीं है ॥ हा कृष्ण तुमके मैं हों ॥ निःसाधन फलात्मक हों
सो कृष्ण पर कृपा करो और तुमने कृपा ही करोगे य
ह निश्चय है परंतु हमको धीरज नाहीं रहत है तातें
विज्ञप्ति करत हैं सो श्री गुसांईजी विज्ञप्ति में कहत हैं ए
वं दासस्वभावोयं समये वारि मुञ्चति तथापि चा
तकः खिन्नो रटत्येव न संशयः १ मेघ को स्वभाव है त
स काल तिन कालमें वरसिवे को समय आवे जब मेघ वरसत
न है परंतु चातक आपनी रटना वरषा दिन और दिवो
स करे तैसे श्रीकृष्ण अपने भक्तन पर निश्चय कृपा क
रेंगे भक्त को आर्ति करते यहै इत्यादि धीरज तुमवे
गि ही कृपा करो काहेते तुम कृपा करो तो सगरो दुःख
न कूल होइ माया बाधक न होइ और तुम जहां ताईं द
या में ढील करत हो तहां ताईं माया करि हम दुःख पाव
त हैं सो श्री गुसांईजी विज्ञप्ति में कहत हैं श्लोक ॥ नाथ त्व
नुकूलतायां ते सर्वो यात्यनुकूलतां तस्मिंस्त्वद्विपरीते
तु सर्वमेव भवेत्तथा १ हे नाथ तुमारे अनुकूल ते सर्वे
अनुकूल हैं तुमारे विपरीति ते सर्व जगत विपरीति
भयो है तातें तुम दया [illegible] तुम कैसे हो श्रीस्वा
मिनीजी राधिका के वरपति हो परम सुंदर हो और ह
म बहुत दीन दुःखी हैं तातें कृपा करो भली मेरे दोष
देखि कृपा में ढील करत हो तो में निरंतर अपने श्री
वल्लभाचार्यजी की आश्रित हों यह जानि के श्रीआ
चार्यजी महाप्रभुन की कानि करिके कृपा करो या भा
ति दैन्यता करत करत अपने दोष की स्मृति होइ
प्रथम विरह करिके प्रभु के नाम स्वरूप संबंधी कह
ता करि आनि दैन्य महाप्रभुजी को आश्रय पाछे अ
पने दोष स्मृति सों श्लोक कहत हैं ७ श्लो दुष्ट
सु दोष कहट इस भागप सु दुष्ट सुमत्र भो निःसाधने तु न्म

गुरुयावकुरुयाकृपानायकौ यों॥ स्वश्री हरिराइ
वहत है जो मैं बडो दुष्ट हूं। सो यों रो दुष्टकारि दुष्ट
दीहौ। अपराध नेक भांति के मानसी कवायक
कवचन करि अपराध तो दुष्टता करि जु है है
गुरु भगवद्धर्मकरि यह भाग है सो मुख्य गयो है
भायमें भगवद्धर्म नाही लियो है बुद्धि हगाई
हो। हिमरक्षक इनको भरोसो है जो तुम मरेस बुद्धो मा
नि:साधन हों मोले साधन न हीं होई वनन हैं मति
करिहिन हों अन्य मनि हो। इसो जो मैं तिनपर वेश
ही अवतु मद्यपा करौ का है मेरे प्रभु हो मेरे दायक को न
और मलि रखो। तहां वल छिन प्रभु मैं तो दायक हो।
देख गुण दोष दोउ ओ दृष्या वाहि यो यामो तिकहे
तहां श्री गुसांई जी विन्हकी सिहो। सो न हार्क हन है श्री
कृ॥ वलिया मपि महापापत्वात् पाप्यतिदुर्वलता।
माइश्वर धर्मत्व दीयाणां जीवधर्मेन॥ पापापराध पि
गानानी वे वकार्यावज्ञादिपु। हृदं भ्वर्यभावेन त्वस
लुदूतया न न:॥ यद्यपि मेरे दोष बहुत हीं वलि
हि तकउ मारी लपाके आगें दुर्वल है। तुमारी लपा ऐश्व
धर्म रूप है दोष जीवधर्म तेक हां तो रूक रंगो। तातें
करो यों तुम रवजनके अधिपति नि:साधन: फल
कहा ना तत्पुणा। मरमारे। तिन की गनना तुम
नावुचित ना है। काहे तो सरजही मेरु मारा एसो
यहै जाय है। सुमहा दुर्व लहै पुनके भावन
मलना श्यन नामलीयो। सो वमल द्वेषन तो
तुम तो श्री हरसी हो। सो दोष देखन ही नाहीं। ताते
इत्यादि गो। माया वल व श्री रहे वह न है श्री
वतो सर्व तत्वतो निरूपयायित है। या श्री है श्री हुर
...न्तने: सह। श्या श्री यो है

रमे है इसे बंधी नाम अरु है नाम मनाक एमेरे चिन्तफ
हो सो यह में सारतें मेरे चिन्तन को निवर्त करो निरोध
और तेकरि अपने में लगावो जैसे यह भक्तन के चि
कलीलाकरि अपने में लगाइ ही इह माखन
में इन भक्तन को चिन्तन हतो सो प्रभु ने विचारिके अपने
गाए जैसेही है श्री प्रभु निरोध याते करि है मा
ने अपने में लगायो अपने हृदय में विचार जो ये
र प्रभु है अपने मन में जानि आवश्य कृपा करत
अपने गुन के भक्तन हृदय में स्थिति है सो
पर कृपा करो [illegible] अब श्री [illegible] कहत है सो
इह रिति सुखानुभव सुखनर [illegible] दुखनाति
हता: श्री कृष्ण [illegible] है श्री
तुम देखे [illegible] अपने भक्त जो दुखले करि पीडित
है सो तु मनाही है [illegible] सब कत भक्त [illegible] है सो तुम व
भाव नहि भक्त दुखी होय मलीन सुख होय सो तुमन
[illegible] सब कत का है [illegible] सर्व भक्त प्राणी मात्र के सुख
[illegible] सो भक्तन को दुख के से रखो यह विचारिके
[illegible] चिन्ता होत है जो भक्तन को कैसे अब सह
[illegible] सो निमिमें श्री गुसांईजी कहत है श्लोक जो ना
[illegible] है यो [illegible] भक्तन के [illegible] सह दु
[illegible] अपने जानत हो जो मेरे अब दी
[illegible] है सो [illegible] मेरो भक्त ले सब
[illegible] मेरे [illegible] अब सहन होतो
[illegible] सर्व भूत प्राणी के तुम ही सुखदाता हो श्री
अपने निज भक्तन को [illegible] उत्पन्न करणा करि
[illegible] करत है [illegible] भक्तन के करुणा सिंधु श्री कृष्ण
[illegible] और कहा वारिस को सारा ही
करत है १० श्री गोकुलेश और है कहत है श्री

कौ॥ अनेकरूप आनंदो निजानंद आश्रयस्थित॥ स्वरूपानं
ददाता च श्रीकृष्णशरणं मम॥२॥ याकौ अर्थ हे श्रीकृस
तुम कैसे हौ॥ अपार बहुत आनंद करि पूरित हौ॥ पर
मानंदरूप ही हौ॥ तुम अपने निज भक्तन के आनंद
दाता हौ जो कोऊ तुम्हारे आश्रित हैं तिनके आश्रितनु
म ही हौ तिनको स्वरूपानंद को दान करत हौ सोइ
समर्थ धर्मी आनंदरूप श्रीकृष्ण है मन सों तन सों न सु
खपावे ता जाश्रयो॥ सात्विकी भक्तनी नामक आश्र
य करि हिये॥ मन वचन काय करि श्रीचंद्र के पदार
नके आश्रय जो हैं तिनको यो स्वरूप कहा नाहीं कहत
है सर्व सिद्धि भयो तातें जो भक्त तुम्हारे आश्रय को याहि
तिनको स्वरूपानंद के दान हौ॥ ऐसे जो श्रीकृष्ण तिन
की शरण हौं॥ सो नंदनंदन श्रीआचार्यजी महाप्र
भु कहे हैं तत्काल सर्व लक्षना नित्य श्रीकृष्ण शरणं
मम॥ नित्य श्रीकृष्ण की शरण की भावना करनी
है और भगवदी तामें श्रीकृष्ण के हैं सर्व धर्मान परि
त्यज्य मामेकं शरणं व्रज अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्ष
यिष्यामि मा शुचः॥ ऐसे श्रीमुख सों सर्वधर्म छोडि शरण
आय मेरे मेरी शरण को न सकल स्तो उत्पादि अपने
वचननसौं तातें श्रीकृष्ण मो तें कछु धर्म नाहीं बनि
आवत ता तें तुम्हारी सरन की भावना करनी फल सिद्ध
होइ॥ इति श्री हरिरायजी कृत शिक्षापत्र ता कोटी श्री
गोपेश्वरजी कृत संपूर्ण॥२॥ अब और हू कहत हैं जो
कृष्ण की शरण की भावना करे॥ सो श्रीकृष्ण के चरण
शरणागति की शरण बहुत दुर्लभ है॥ सो कौन प्र
कार सिद्ध होइ॥ सो अब आगे कहत हैं जो या भांति रहै
तो शरणागति भक्ति सिद्ध भयो॥ श्लोक॥ श्रीमत्प्रभुप
दयुगलस्याश्रित्य चित्त स्वमन्त्यारिणि रहतु

सि॰प॰ वं भवति तदीयम्प्रसवेत: सर्वलोकयाको अपे
७२ प्रत्ति गये जो प्रभु श्री आचार्यजी महाप्रभु तिन
सों कृपा करि कहे जो आपनो चित्त श्रीमहाप्रभु
सों छोड़ि अन्य स्थल पर मत करो है भक्ति
अनुभव न होनो ताते बाहर न रहो अपने
पुष्टि भक्त अनुभव होत है इस मारग के
नेम माहात्म्य मालुम होय अनुभव होत है सो श्री गुसां
ईजी कलिकाल में पुष्टि भक्ति स्थिति रूप
प्रभु प्रकट भये हैं पुष्टि भक्ति स्थिति ह्रदय
में स्थिर करि इत्यादि वचन तेऊ जानने श्री देवा
नन्द लिखे हैं सो प्रभु के न तो स्वतन्त्र हैं तहां
श्रीस्वामिनीजी श्रीगिरिराज ऊपर के भक्त मर्यादा भक्ति
रूप रस ले श्री टीका ऊपर महाप्रभुजी के
कीर्तन में प्रकट भये सेवक गायो ताके हेतु अनुग्र
ह कीयो है श्री कृष्णदेव तुम्हारे तदीय के सर्वस्व हैं
हे श्रीकृष्ण सम पाँच तनको सर्वस्व ताके सिद्ध
करनो है पुष्टि रहि जो जो श्री कृष्णदेव
शरण सर्वस्व चित्त तको लगायो है तिनको कल्याण होय
नवरत्न ग्रन्थ में लिख्यो है सो ताको चेत राखो पु
ष्टि मारग में चित्त चिन्ता मिटे पर हित मास राख्यात
कथ्यानुसार पुष्टि मारग श्री पुरुषोत्तम माहात्म्य सर्वेसम
र्पण श्रीकृष्ण हरि श्री शरणाई तिनको प्रभुकवहूं न
छोड़े तो सो श्रीकृष्ण श्री आचार्यजी महाप्रभु शरण
अथ समर्पण सर्व जीवको निश्चय उद्धार ही है
यासों भाव शरण दीये कथ्यदाश्रय विरोध
तें प्रभु सहाय न तामाला रामानुजन तो ढूंढे
तो स्नेह से हृदय पर सो श्री हरि सबके चरण में
नंदमा सर्व सिद्ध है सो न होय अन्याश्रय

महाबाधकहै।अन्याश्रयतासौंबाधकहै।जोतदीय
भगवदीयकौंहूवैराग्यमूलकेयाश्रयसेंविरोधही
करैतोवेजीवकेसाधलतुतेसोतोगिरैही।अन्यदेव
मनुष्यराजादिकनकौंआश्रयनकरैंतहांकहतहैं।भग
वत्पदपद्मपरागयुक्तोनहियुनक्तिनरंमरणेपितो
इतराश्रयणंगजराजगतोनहिरासभमप्युरीक
रुते॥भगवांनवैराग्यमूलकौंछोडिअन्यदेव
कोआश्रयनाहींहै।जैसेंहाथीकौअसवारीछोडिग
धापरचढैसोजैसेंवहै।दोहाधीनस्तो।नान्यदेव
नमस्कार्यानान्यदेवंनिरीक्षयेत्।नान्यदेवनम
स्कार्यान्नान्यदेवंनिरीक्षयेत्नान्यप्रसादमाहेन्ना
न्यदायतनंव्रजेत्।अनन्यशरणायेनुतुवेयाना
न्यसाधना।अनन्यभोगउपभोगपायेनेतुसर्वेधिकारि
णः।इतिवचनात्।औरदेवकौंनमस्कारनकरै।अ
न्यदेवकौप्रसादनलै।अथअनन्यप्रभुकीसरणाहै।सो
धनसेवास्मरणादिकभीतिन्हकीनवप्रभुप्रसन्नहो
इ।अन्याश्रयकरैतोवाकेउपरप्रभुउदासीनहोइजाइ
सोजैसेंपतिव्रतासामर्थ्यदेवैसेंनाहीहूजोअन्याश्रय
करतहैंजैसेंरामोदरदासमंभकोरकीस्त्रीनेंच
कअन्याश्रयकीयो।तातेंपुत्रमरिगयो।वहुनरक
दृपायो।तातेंवैस्नवभगवदीयकोंअन्याश्रयनि
श्चहीसीघ्रत्यागकरै।सोबाधकहै॥अथायोग्यव
श्रोरहकहतहैं।श्लोक।असमाप्येचन्याणांभाव
बाधकतायतः।यथाव्याघ्रबाधकस्याअरीराधेरा
रीरिया।३।याकोअर्थ।अन्याश्रयछोडेंकोहेतोभग
वद्भावमेंअसमर्पणबाधकहैतातेंछोडिकेहर्ष
नकहतहैं।जोजैसेंवाघजानवरकेआगेमनुष्यजा
यतोसरीरकोविघनहीहोइताकेरिसेहकोनासहो

पु.॰ तेसेंहीअसत्संगहोइछेतोभगवद्भावकोनिश्चयना
सहोइ।असत्संगतेंजडभरथकोतीनजन्मलेनोभ
यो।द्विविदवानरकोनरकासुरकेसंगतेंश्रीठाकुरजीति
नसौं।नातेंअसत्संगमहाबाधकहै।नितकोलौकि
कनो।त्यागअवश्यरहनो।सो।असत्संग
त्सर्वथा।सोतोश्रीमहाचार्यपंडितेंग्रंथमेंसर्वसरीर
संबंधीयस्वप्रकारतोषयाको।अथ।ऐसेश्रीहरि
रायजीकहतहैं।जोअसत्संगमहादुखरूपहै।जोअ
सत्संगमहादुखरूपहै।तोअसत्संगबाधकसोहमारे
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुमहापंडितेंवेदसास्त्रपुरा
णश्रीभागवतसर्वमथिकेश्रीसुबोधनीजीआ
दिग्रंथरचकेसिद्धांतह्वांअनन्यआश्रयअरुअसत्सं
गमहाबाधकठहरायोनिरूपणकीयोहै।तातेंआ
पनेसरीरकोंऐसेहीअध्यायकरत।जोभगवदीयकेसं
गहीरहै।भगवदीयकेसंगतेंहुहैंतवहीबाधकहै
यामेंभगवदीयकेसंगतेंसगरोअसत्संगछूटिजाय
निश्चय।पाछेतिनकीरीक्षीअध्यासकृष्णआश्रयते
बुद्धि।त्यागअववरोधकहतहैंसो।विधायस
दयासीतेंविधेयतयागतें:सत्संगनैस्वर्गोंकेनिवृत्ति
नवसर्वआपुनाके।अथोयामेंभातिहसत्संगलोभ
सभयस्थहूंयहनिश्चयसिद्धांतमनमेंजानियेंजी
वकोंयहीयोगहै।ऐसोकरनोहै।थोरोभगवत्स्थ
मेंबनैतो।चिंतानाहीपरंतुअसत्संगनकरेसत्संग
करेनहीं।सत्संगएसोहोइतोभगवदीयविनेष्टा
येन।लागेयहपुष्टिमार्गमेंनिष्ठाहोइ।ताहीकोसं
करेसर्वथाऔरकोसंगनकरेकाहेतें।एतन्मार्गी
यभगवदीयकेसंगतेंअपनेपुष्टिमार्गकीसगरीरी
तिजानेमार्गमेंपूर्णनिष्ठाहोइ।भाववदेसर्वथास

वसिद्ध है ।५। आगें अब और हू कहत हैं श्लोक ॥ सम
र्पेनानुसंधानं विधेयमिति नः सर्वा: इदमेवात्र मदा
चार्यमार्गसाधनमतं ॥ टीका ॥ अथ ॥ भगवदीय के
संग मिलिकें यह करनो चाहिये सो कहत हैं ॥ श्रीठाकुरजी
को सर्व समर्पन श्रीआचार्यजी महाप्रभुन नें समर्प
न कीयो है सो भगवदीयन सों मिलिकें विचार करनो स
मर्पन कीयो ॥ अपने कहा कीयो करनो है ॥ कितनी वस्तु
प्रभु में अंगीकार होत हैं कौन सी इंद्री वहमुख हैं तथा
कितने दिन तें प्रभु तें बिछुरे हते ॥ सो अब श्रीआचा
र्यजी महाप्रभु कृपा करिकें दीये हैं सो कौन प्रकार स्म
रण करें इत्यादि भाव भगवदीयन सों मिलिकें विचार
हैं भगवदीयसों रहें जो देहपात करिवें तावें यह
श्रीआचार्यजी महाप्रभु कें या पुष्टिमार्ग में उत्तम साध
न है ॥ भगवदीयसंग निवेदन कौ स्मरण ताही तें नवर
त्न ग्रंथ में श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें हैं निवेदनं तु
स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः सर्वथा सर्वदा दोऊ पाट
है भगवदीय को संग सर्वथा करनो ॥ तथा सर्वदा नि
त्य करनो उनसों नित्य निवेदन को प्रकार सुनिकें अ
पने मन में भाव राखनो ॥ यह सत्संग ही श्रीआचार्य
जी महाप्रभु के मार्ग में उत्तम में उत्तम साधन है ॥ सो
इक रौ याते विरोधी साधन न करे ॥ ६ ॥ आगें अब क
हत हैं ॥ श्लोक ॥ स्वाचार्यचरणद्वंद्वद्धाश्रयणा
माहृता ॥ विधेयं तेन सकलमन्यथा भविष्यति ७
या को अर्थ ॥ अपने श्रीवल्लभाचार्यजी के चरणार
विंद तिन को दृढ आश्रय में कीए है ॥ और जो कोइ
पुष्टिमार्गीय जीव करें आदर प्रवेश तिन के हृदय में

सत्यपुष्टिमार्ग को सकल सिद्धांत जानें.

चार्यजी महाप्रभु के चरणकमलको आश्रय दैवीजीवन
को निश्चय दीढ करत श्री ताही करिकें सकल कार्य सि
द्ध होय हैं सो। यह हमारे मार्ग को सकल सिद्धांत जाने यह
हमारे मार्ग को अनुभव होय। यह सिद्धांत सबको पर ॥७
इति श्री हरिरायजीकृत शिक्षापत्र चतुर्दशस्य टी
का श्रीगोपेश्वरजीकृत संपूर्णम् ॥ आगे अब कहत हैं जो
भगवदीयको संग करनो श्री आचार्यजी महाप्र
भुके श्री चरणकमल को आश्रय करनो यह पुष्टि
मार्ग को फल सिद्ध होय। यह श्री महाप्रभुजी को आ
श्रय को जा भांति करत हैं। आगे शिक्षापत्र में कहत
हैं जो या भांति श्री आचार्यजी महाप्रभुन के गुणकों
श्री हरिरायजी स्मरण करत श्लोक॥ यद्गीतिहृतजीवानां
दुःखं सेवाग्निना यदि। सदानंदः स्वसंतान स्मातःक्रि
यतां सदा ॥१॥ याको अर्थ। आपने अंगीकृत जीव जो यह
पुष्टिमार्ग में सप्रमार्ग हैं तिनको दुःख संव कहत हैं
दुःखको लेस हू है सो श्री आचार्यजी महाप्रभु नाही
सहि सकत आपने जीवनको सकल दुःख दूरि करिकें
सदानंदको दान करत हैं॥ श्लोक॥ ये न जानन्ति
संततं स्वहृदये विस्मरणः प्रादुर्भवति चिरंत
नान स्मातिक्रियतां सदा ॥२॥ याको अर्थ॥ यह जीवकी
कछु ही सामर्थ नाहिं जो भगवान् ते विछुरो ता दि
नातें यह चौरासी लक्ष योनि में कोटान कोटि वार भ्र
मत हैं जन्ममरणादि अनेक प्रकार दुःख पाये तिनही
में परयो पावत है संसाराग्नि में महासंतप्त है जद्यपि
दैवीजीव हैं निज अपनो दासपनो भूल्यो और स्वरूप के
स्वरूपको भूलि गये हैं ताकरिकें महादुःख है संसार
में या भांति जीव अपनी करनी करि महादुःखी होत हैं श्री
ठाकुरजी ते रहिकें विस्मृत भये मनमें खरपरा कहे है

मारदैवीजीवबहुतदुखीहैं।पुरुकरुणाकरिश्रीकृष्णसौ
पुश्रीआचार्यजीकोस्वरूपजैसैंश्रीकृष्णप्रगटेनाहीभा
तिगर्भमेंप्रादुर्भूतहोय।अपनेदैवीजीवनकेअनेककृ
रकालकेसगरदुखदूरिकीने।एसेश्रीआचार्यजी
महाप्रभुजीभक्तअद्भुतपरमदयालतिनकोस्मरण
सदाहीकरतव्यहै।२।आगेअवचेरहुकहतहैं।सो
णं।यःस्वतःसेवकानांहिपराश्रयनिवारकः।रूप
सरित्पतिहस्तनत्सृतिःस्मर्यतांसदा।३।याकोअर्थ
जैसेंश्रीकृष्णसमरोहजभक्तनकोअन्याश्रयछोडायोहै
इयज्ञछोडायगिरिराजधराआपुआरोगे।अंबिकप्र
जनमेंश्रीनंदरायजीकोदेखैकेछुडाये।तेसेंहीश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभुअपनेसेवकनकोपराश्रयअन्य
देवकोभजनछुडाये।एकश्रीकृष्णहीकोभजनवता
येसर्वअरतेनिवृत्तकरिएकश्रीकृष्णहीकीसरणकी
णे।सोश्रीकृष्णकेसेहैंरूपाकेसमुद्रहैं।ताकोअगीका
रकरतहैं।फेरिकबहूछोडतनाहीं।भक्तपरवशपाहीव
स्तहैं सोनवमस्कंधमेंभगवानकहेहैं।श्लोक।अ
हंभक्तपराधीनोह्यस्वतंत्रइवद्विज।साधुभिर्ग्रस्तह
दयोभक्तैर्भक्तजनप्रियः।१।भगवानकहेहैं।द्विजदु
र्वासामेंतोभक्तनकेवसपराधीनहूं।स्वतंत्रनाहीहूं।साधु
अपनेहृदयमेंधारिलीनोहैं।मोकोबहुतप्रेमहैभ
क्तजन।ऐसेकृपालश्रीकृष्णहैं।तिनकीप्राप्तिश्रीआ
चार्यजीअपनेभक्तनकोकरावे।जीवनकोकरावेहै
ऐसेश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकेचरणकमलकोस
मरणअरनिजसेवकनकोकर्तव्यहै।४।आगेअ
ष्टमकहतहैं।श्लोक।हृदयस्थःसमस्तानांधु
:स्थि
त्तिविषयासक्तस्यारसोदरःश्री
यतांसदा।४।याकोअर्थ।श्रीकृष्ण

श्री·प्र·॥ सीमात्रके हृदयमें स्थिति है। सो भक्तनके हृदयमें
१५॥ ऐसे हृदय[illegible] है। परंतु जीव विषयादिक खानपानादि
संसार सुखमें आदरकरि मनको लगायो ता
यसें प्रभु हीनन्को भा[illegible] गयो है। अनेक विषय
स्मत है। तासो दूर है। जैसे [illegible] जीपर आपु हृदयके
[illegible] भायमान श्रीकृष्ण श्रीआचार्यजी
[illegible] उमरनवे सबको करत [illegible]
और हृदय [illegible] श्लोक॥ यः प्राणप्रेष्ठ गोपीन
गोपयति स्वतः निलायनानि [illegible]
[illegible] सखाः॥ अथ याको अर्थ श्रीकृष्णके से
[illegible] स्वामिनीके संगानको रसानुभव गोपिका गोप
[illegible] नदा [illegible] जसो [illegible] और अनेक गो
नैना ही या मांनिकुञ्ज भक्तनकौ रस दान करत
गोपीजन श्रीठाकुरजीके प्रानप्रिय है। गोप
कैसी है सो कहत है सो भगवान कहे है [illegible]
[illegible] प्राण [illegible] त्यजति [illegible] हि का [illegible]
मदर्थे [illegible] तन मन प्रान देह प्रभु
अर्पन करी यो है। लोक वेद धर्म त्यागि श्रीकृष्णके
[illegible] प्रिय है सो तातें [illegible] धर्म कहे है। सो
[illegible]
[illegible] बाद [illegible]
ता [illegible] श्रीकृष्ण कैसे है [illegible] तनमें [illegible]
[illegible] बनना [illegible] तासी ता
[illegible] गाविंदनी जो भक्त है [illegible] दिना
[illegible] सामग्री [illegible] भावत है। ऐसे कृजभक्त ति
[illegible] या में कहा [illegible] तो [illegible] ही है
प्राणप्रेष्ठ गोपी [illegible] रसदान छिपायवे [illegible]
[illegible]

श्रीठकुरजी तिनकों सुमरन सदाही करनेयोग्य है॥ आगें अव
औरहू कहत हैं श्लोक। यत्र:माहात्म्यबोधायप्रादुर्भा
वितवान्स्वतः। स्वभक्तश्रीवल्लभाचार्यान् तत्स्मृति
क्रियतांसदा॥३॥ याकौ अर्थ॥ श्रीठकुरजी अप
नेनिजभक्तजानिकें अपने स्वरूपकों आपुनकी रि
पा जीजनपासपठायो तहां यह जनायो जो भगवानस्वरूप
वरोनाहूं तत्त्वाश्रय भगवदीयद्वारा स्वरूपको बोधहो
य सो सब वैष्णव तेसेंही दैवीजीव संसारमें प्रभुकों भक्ति
गरो तव श्रीठकुरजी अपने स्वरूपमाहात्म्यबोधा
र्थ श्री आचार्यजीमहाप्रभुजीको पठाये तव श्रीआ
चार्यजीमहाप्रभु पृथ्वीऊपर प्रादुर्भूत प्रगट भए भू
मिपरस्थित होय दैवीजीवनकोस्वरूपानंदको अनु
भवकरायो ऐसे श्रीआचार्यजीमहाप्रभु सर्वसामर्थ्ययु
त हैं तिनको चरणकमलको सुमरन सदा करनेयोग्य है
श्लोक॥ यत्र दैवेन भक्तानस्वस्वरूपम्बोधयन् गोपिको
नो हृदन्तस्वत स्मृतिः क्रियतां सदा॥७॥ याको अर्थ
श्रीठकुरजी उद्धवको निजभक्तजानो जानि विचारे जो उद्धवने
बहुत सेवा करी है। अब व्रजलीलाको अनुभव उद्धव
जीको होइ तो आछो सो व्रज लीलाको अनुभव तो श्री
स्वामिनीजी के हाथ है। भावात्मकस्वरूप तो श्रीस्वामिन
जी व्रजभक्तनके हृदयमें स्थिति है तातें योगको मिसक
रिकें उद्धवजीको भगवान व्रजमें पठाए। अपने निज
स्वरूपको बोधायो। तब गोपीजन भगवान्को सुख
जानि अपनी सगरी लीला उद्धवजीको दिखाई॥
तब उद्धवको अनुभव भयो तब जो गानो भक्ति गाए
हे नाथ रमणनाथ॥ नाथप्रियोगतनितातरंतप्रस
हृः सख्योधितानलिनगंधरुचां कृतोन्यारामो लखे
भुजदंडयुग्हीतकंठलब्ध्वाशिषांय व्रजव:

प॰ वीनां ॥ आसमसे आचारेण तु वा महस्यो वृंदाव
नेंद्रि म पियुरन्नलनी श्रीनाथ्या हृत्याजें ब्रजन
स्य स्पर्श यह श्री भनेमुकुंद्रपदवी स्तुति सिद्धि भूपा
गृहें हैसें इंद्र क्रमश्रीनां पाहरेणुनमीहृणार्थः यासो इ
रिक थो प्रीतं जनाति भुवन त्रयं ता ॥ यह स्लोक
व जी की भये सो गोपीजन के चरणकमल की रज
की आसक्ति सु जनन को अर्थात् कौ प्रीथे नाक
री सोभावा सब भगवान हृत भक्त के हृदय में स्थि
ति है तासों सर्प श्री आचार्य जी महाप्रभु जी है ता
तें श्री आचार्य जी महाप्रभु के चरणकमल को सु
मरन श्री तिलिहि न करें । श्री आगे श्लोक रह कह
त है स्लो॥ यस्य स्मरण मात्रेण खलानि विनाश
नं तल्लता दृढभक्ति सत्त्वदति: किं मनो सदा दया
[illegible] अर्थ [illegible] है जो ऐसे श्री आचार्य जी महाप्र
भु जी श्री वल्लभ जी [illegible] जिनके चरणारवि
न्द को सुमरन करत मात्र ही सकल आति संसार के दु
ख सब दोष को नास होइ जाय औ अनत काल नाहीं छि
न्दे [illegible] श्री [illegible] प्रसन्न वा
णी [illegible] तातें यह पुष्टिमार्गीय वैष्णवन को
निश्चय यही धर्म है जो ऐसे श्री महाप्रभु जी के चर
णकमल को सुमरन मन लगाइ के यह नियम करनो
[illegible] भक्त रात्रि दिवस सुमरन करत है तैसें ही करे
[illegible] यह सिद्धांत भयो ॥ श्री [illegible] इति श्री [illegible] सि
[illegible] पत्र [illegible] मोता कौ [illegible] [illegible] से
[illegible] ता भांति श्री महाप्रभु जी
को सुमरन करें तो प्रभु प्रसन्न होइ तब आपने स्वरू
प को ज्ञान होइ सो [illegible] कौन भांति सो आगे सि
[illegible] कहत है श्लोक ॥ सदा सभक्त हृदय आवास

स्वाचार्यभावित।यशोदातिप्रिय.श्रीमथुरेसप्रभु
व्रजेश्वरः॥१॥याको अर्थ॥सदांश्रीठाकुरजीआपनेभ
क्तनकेहृदयमेंवसतहें।तहांसंदेहहो।इसोकोनसे
भक्तनहोवकहतहें।जोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुको
भावकाभावित।श्रीआचार्यजीकोप्रसन्नकीएहें
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुंकोभक्तभावहे।अबपुष्टि
मार्गीयभगवदीयकेहृदयमेंश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुंसदाबिराजतहें।सोप्रभुकेसेहें।श्रीयशोदोत्संग
लालितश्रीयशोदाजीकोअतिप्राणप्रियश्रीसोभा
सहितनंदसूनुनंदरायजीकेपुत्रहें।समस्तधर्मनंद
महोत्सवमेंप्रकटेवजीवकेहें।नंदस्वात्मजउत्पन्ने
जाताल्हादोमहामना।नंदरायजीकेआत्मजउत्पन्न
भए।ऐसेश्रीठाकुरसोव्रजकेराजासोसदाव्रजहीमेंभ
क्तनकेसंगविहारकरतहें।ऐसेश्रीठाकुरपुष्टिमार्गमें
सेव्यहें।सोएतनमार्गीयभगवदीयश्रीआचार्यजी
केकृपापात्रतिनकेहृदयमेंवसतहें।तथाश्रीठा
कुरजीकेहृदयमेंभक्तवसतहें।सोश्रीभागवतमें
वमस्कंधमेंभगवान्कहेहें।श्लोक॥साधवो
हृदयंमह्यंसाधूनांहृदयंत्वहं।मदन्यंतेनजानंति
नाहंतेभ्योमनागपि॥१॥भगवान्कहेहें।भक्तकेहृद
यमेंमेंहों।मेरेहृदयमेंभक्तहें।औरकोमेंजानतना
हीं।ऐसेश्रीठाकुरहें।पश्चात्आगेंअवश्रीहरिकहतहें।स्व
रू.स्मरणीयोयथाशक्तिसेवनीयस्तथापुनः।तादृ
शोसहसेनकथनीयश्चसर्वथा॥२॥याकोअर्थ।श्री
भुव्रजमेंसदाविहारकर्तानंदयसोदाकेपुत्रतिन
हीकोस्मरणकरनो।बाहिरें।ऐसेभावात्मकप्रभु
व्रजभक्तनवेष्टितहें।तातेंव्रजभक्तनसहितस्मर
नकरनो।त्योंसेवाहूऐसीहीभक्तनकेभावसहित

१ श्रीकृष्णहीकी करनी। औरतासों भगवदीयसों मिलि
कैं रहे भक्तनके हित श्रीकृष्ण तिनकी कथा कहनी सु
ननी सकवेयाविनतें मनसों लागो अवश्रोरकेकहत
हे लीला। श्रवसिनिसवजादीसों प्रपंचविस्मृति साधन
भगवदीयप्रसादतिवनिजास्वरूप निरोधकहत हैं या
तें ... सारासकथावातो आहतें भावकवजा
धीसकोकरतों हैं ५ यहप्रपंचदरहस्बधीलोकि
कवेदिक सबकी विस्मृति हैं प्रपंचविस्मृतिको
साधनयहीं पुष्टिमार्गीयभगवद्धर्म हैं। औरतहीं
काहेतें ब्रजाधीसकेसेहीं आपनेभक्तनकेपक्षपाती
हैं प्रभुसमर्थकरिभक्तनको सब ठौरतें निरोध
सिद्धकरत हैं यो जो मर्यादामार्गके साधनहैं जप
तपयज्ञ होम तीर्थ व्रतादिक इत्यादिकमें अनेक
कालकों देषप्रतिबंध होत हैं। तहां प्रभुरक्षा हीं क न
रतहें। और भगवद्धर्ममें प्रभुरक्षा यो करत हैं जैसे
ग्रहस्थादिकों अपरस भते प्रगट भक्तकी रक्षाकीनी। ता
तें श्रीकृष्णको सुमरनसेवा इत्यादि मनलगाइकें
करतो। तहांकालादिककछुबाधकनहोइगो। आप
नेभक्तनके पक्षपाती भगवान हैं आपनी सामा
मर्थ्यभक्तनमें धरिसबठौरतें निरोधहीं करत हैं ३
आगें यह श्लोक कहत हैं। श्लोक॥ शारणीयः कृपापा
रावारो विहितरूपवान्॥ सर्वात्मनस्वकर्ता चिंत
नुरापिलक्ष्णः ... या ... ॥ ऐसें श्रीकृष्णको सुमर
णही सदाकरत्व्यहे श्रीकृष्णपरमकृपालुहें सोवे
दसास्त्र श्रीभागवतमें प्रसिद्ध है षष्ठमस्कंध में कहे
है जो केतयपारी हासपवासतोभटहलनसे दका वैकुं
ठ नामग्रहणसत्तरोगा ... अजामिल नारायन
२ ...नास्तु तामकीर्तनमहा पुंसैदे

रसौ है यथानल॥ इति वचनात्॥ श्रीस्वामीजी आचा
र्यजी महाप्रभु कहत हैं नवरत्न ग्रंथमें कहे हैं श्रे
नानार्थवा॥ मानानां च नेम मात्मनिवेदनं॥ ये: हेल
सान्कृन प्राप्ति तिथाका परिदेवनं॥ इत्यादि वचन
सो जाननो॥ सो भावस्य प्रजानि के करनो आवे
श नजानेके प्रभु कृपा ही करें सो श्रीमहाप्रभुजी
की बात मैं कहे हैं॥ जा गाथा से लाखने सावकी बात
तव माधोदास के आयो ना करि भक्ति माधोदास
को भई या भांति प्रभु सेवा मानि लेन है या भांति
प्रभु की कृपा ते या सा ... में विदित प्रसिद्ध है॥ ता ते प्र
भु ही हम को अपने जानि सर्व कार्य सिद्ध करेंगे॥ ता
ते भगवदीय को लौकिक वैदिक चिंता तथा अपुन
उद्धार की चिंता नाहीं करनी यह है॥ श्री आचार्यजी
आप कहत हैं श्लोक॥ सनासम्पर्कत्वा वापि स्वकीया
... कहत हैं श्लोक॥ ... सर्वमन चिंता ...
नो कृपानिधि॥ करिष्यति स्वतः सर्वं ... प्रति जो हैं सो
न विहित भाया को च्यौ॥ प्रभु की यह प्रति या है
भक्तन के उपर सदा कृपा ही करत है सो प्रतिज्ञा
यहै मन वचन न क्रिया तीन्यों करि अपने स्वकी
य निज भक्तन पर कृपा है॥ कृपानिधि ऐसो प्रभु को
नाम है॥ त्रिविध नामावली में श्री आचार्यजी महा
प्रभुन के नाम कहे हैं॥ भक्त जनन का नन्द दायक नमः॥ भ
क्ताधीनाय नमः॥ इत्यादि बहुत नाम हैं॥ सो प्रभु आपु
ही सब देखत हैं विद्धि करत हैं॥ ता ते अपने को कछु
चिंता नाहीं करनी है॥ ५॥ आगे श्रवण आर रूप द
है श्लोक॥ सत्संगा भावतो नित्य मसत्संगा ...
वेत॥ ... विषया वेश ... कृष्ण ... यस्मान्नित ...
याको अर्थ॥ श्री हरिराय जी कहत हैं॥ ता ...
... नाम करै सो ऊपर कहे जो

भगवदीयनकै संगको अभाव है काहेते जो सत्संग होत हो दुःसंगको अभाव होतो सो सत्संग तो यह कालमें दु र्लभ है सो सत्संग बिना जतन यह कलिके स्व भाव ते सिद्ध है सो हृदय में विषयावेस करावत है जद्यपि भगवद्धर्म आदि लौकिक वैदिक सब अंगीकार करत हैं तोऊ विषय के आवेस हृदय में रहत हैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभु ने संन्यास निर्णय में कहे हैं नहीं तोई विषय को आवेस होउ नहीं विषयाक्रांत है हृदय आवेस सर्वथा है इत्यादि वचनन ताते श्र सत्संग बिना विषय को आवेस होत है ताकरिके मेरी म ति भ्रम की नाई इत उत फिरत है प्रभु में विश्वास नाहीं सो विश्वास बिना हो उत्तम संसार को दुःख ही अ नुभव करत है ताकरि बुद्धि मलीन है ६ या सम्बन्ध श्री हरिरायजी नेतन्क्षिन समय को पिसहाय सम्बन्धी नै बिना श्री वल्लभाचार्य चरण वुरुह आश्रय ७ या को अर्थ श्री हरिरायजी कह त हैं जो दुःसंग करि विषयावेस ते मन भ्रमत है आ नेक दुःख पावत हैं भगवदीय को मिलन नाहीं ताते या दुःख में मेरी सहाय को करेगो या समय में यह कालकराल में मेरी सहाय को न करनवारो है ता ते श्री वल्लभाचार्यजी के चरणकमल को में आ श्रय कीनो है सो ई मेरो सहाय है और कोउ सहायक हैवे में नाहीं सामर्थ्य है यह कहिके श्री हरिरायजी जनावत हैं जो यह कलिकाल में श्री आचार्यजी के चरणकमल को आश्रय कीनो है तिनको तो स्वरूप सहाय की सिद्धि फल है सिद्धि है जिनके श्री आचार्यजी के चरणकमल को आश्रय साधन करो परंतु संगादोष न

तहोयतेविषयावेशाकरिचित्रकीनाईभ्रमेगे।।तन
कछुफलसिद्धिनाहीहै।तातेंश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुकेचाणाकमलकोआश्रय यहपुष्टिमारगीयवै
ष्णवकोनिश्चयहीकरतव्यहै।।आगेअववर्णारं
हतहैं श्लोक।।नतस्तुतामतिःकालव्यालात्वेवे
अलौकिके।।नित्यस्थितानततोभीतिर्भूयसीजायते
हि।सानं।।याकोअर्थ।।अबश्रीहरिरायजीकहतहैं।।जोमे
अपनेअवतासोंकालकोदुखसुनेहैं।जोजन्ममृत्यु
दुःखसमानदुःखकोईनाहीहै।यहअनेकवारव
इनसोंमुखसोंसुन्योहै।यौंमनहूमेंकालदुखश्रा
वतहैं तऊयहकालसोंकठिनहैंवेलाकास्करिस
गरोज्ञानधर्योरहतहैं वेलस्तलैविकरीवनिश्चाव
नहीं।सोयाभाँतिनित्यहीलौकिककार्यमेंथितिहैं।ता
कारिअपनेहृदयमेंवहुतभयवारंवारपावतहैं जैसेप
रीक्षतराजाकोकालकोभयभयोतवशुकदेवजीभ
गवदीयप्रभुकीकृपातेंआरोसोअहंकालभयनि
वर्तकीए।सोअवमेंसमनमेंबहुतभयभयोहै।सेश्री
आचार्यजीमहाप्रभुकेकृपापात्रभगवदीयकेसाते
याहभयदूरिहोय।सोमोकोइछाभईहै।तातेंभयकरिखा
खारहृदयमेंपायमानहोतहैं।८।आगेअववर्णारहल
हतहैंश्लोक।।विवाकोवेदभगवान्करुणान्याचि
कीचिंतितः।नजानेतिनमच्वतःखिन्नेभवतिसर्वथा
धाकोअर्थ।वेदके तथाभगवानके अभिप्राय
कोज्ञाननहोयतैसेहीकोटिनवरससोवेराधा
यपाठकरो।ग्रन्थसारस्वपढो।परंतुवेदकोअभिप्राय
कोज्ञाननहोइकाहेतें।भगवानकीकरुणाहोयतो
सवैजान्योजाय भगवदीयमनवचनक्रमकरि
भगवदसेवासरणवनिश्चावें।

सदुदनाही होत तातें मैं अपने चित्त में निश्चय ही खेद
पावत हों। तहां ताइ प्रभु की कृपा नाहीं तहां तोइ सर्वथा
सर्व कार्य में दुःख ही है। ४। यामें अब और कहत हैं श्लो
क। विशेषप्रेमज्ञापत्राद्वैध्यं सर्वलोपिहि। अनेने
वकथं किंचित्स्वास्थ्यं मनपामहे हृदि। ५। याको अर्थ। श्री
र विशेष समाचार प्रेम जो वृत्त के पात्र में लिखि पठा
ये हैं। सो यह पत्र ते बोधन होइ तो वामें द्वारकेश के मन
लगा स्वैवा चिवोधयं। तातें किंचित्करुणात्मा प्रभु
हैं। यह जानि हृदय में स्वास्थ्य धीरज है तो प्रभु कृपा क
रैहीपि कहते भगवद्धर्म जानि के करिये। अथवा
अनेन जानैक छुवनि जायनतो ऊ प्रभु जी कहे है अज्ञा
नास्थवृत्ता नाल्ह नमात्मनिवेदनं तातें सो निवे
दन तो कोइ प्रकार भयो है तातें मन में स्वास्थ्य है जो
प्रभु करुणा करें। ५। श्री ... व
मूल सिद्धांत ताकी टीका श्री गोपेश्वरजी कृत सं र
पूर्ण। अब उपर कहे हैं के भगवान के अभिप्रा
य को नाहीं जानत तातें मन में खेद है तहां प्रभु करु
णा भोहि ताकरिकछु मन में धीरज है सो प्रभु करुणा
को जब उत्तम मध्यम भगवद्धर्म बनि आवे तहां
को ... उत्तम मध्यम कहा भगवद्धर्म तो रख
सो है तहां या शिक्षापत्र में कहत है श्लोक। य
दुःख में ... आचार्य योजन मुख्य भेद न: त्यागो ग्रहध वि
नात्मनामथवा हृत्प्रयोजनं। ६। याको अर्थ। अब
श्री हरिरायजी कहत हैं अब श्री आचार्यजी महाप्र
भु भक्तिवर्द्धनी आदि ग्रंथ में उत्तम मध्यम प्रकार कहे
हैं अव्यापारे नो भजेत्कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः व्यावृत्तो
पि हरौ चित्तं श्रवणादौ यतेत्सदा। १। इति वचनात्
श्री हरि की कथा सेवा स्मरण अव्यावन होइ के वर

यह मुख्य और व्यावृत्त ह्वै करी। परंतु मन हरि मैं राखै यह
गो॥ सोई श्री हरिरायजी कहत हैं जो घर धन लौकिक
वैदिक सब सब त्याग करि प्रभु कौ भजन करैं जे सैग
राधरदास अव्यावृत्त हैं जन्नकी लोटी भरि पूछन
महासह छोन्ना धरे यह मुख प्रकास यह नवनेतीस
वैष्णवे अर्थ लगावे तउ प्रभु ह्वै पाक रे॥ आगे
अवकौ रहूव लाहै॥ स्लोक॥ वैराग्यपरितोषादे
रत्यागो पीनिरूपितः तथा विषयभोगस्य त्यागो
विविनिवेधितः॥ याकौ अर्थ॥ वैराग्य और संतोष
कौ त्याग न करै काहेतें यह लौकिक संसार मैं वैरा
ग्य होइ तो देह संबंधी दुख सुख ह्रदय मैं बाधक न
करैं। भगवद्धर्म बनी जाय और संतोष होइ सह
जमैं आय प्राप्ति होय॥ तातें करि अनेरपा कहे है
लोभ करि पाप आचरण न करै काहेतें जो श्री आचा
र्यजी महाप्रभु श्री सुबोधिनीजी निबंधादि ग्रंथ मैं
कहे हैं स्लोक॥ अचौर्यं नाम पापानां॥ चोरी करि
पाप कछु न पावै नाइब्य यन्न प्रभु के सैं आगें त्यारो
ग॥ तातें वैराग्य संतोष आदि धर्म न छोडनो। और
विषयभोग कौ त्याग करै काहेतें विषय वहुन करि
कें हृदय मैं विषय कौ ध्यान होइ जाय॥ पाछैं विषयावे
स सम पीरे देह मैं होइ तो प्रभु कौ आवेस न होय॥ सो स
न्यास निर्णय मैं श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं विषया
क्रांत देहानां नावेसः सर्वथा हरेः तातें विषयभोग हू
त्याग आवस्यक करनो॥ आगें चतुर्थ और ह्वै कहत हैं
स्लोक॥ तथा सत्संग मत्यागः सर्वत्रैव विशेषतः
अन्याश्रय परित्यागउत्तो बाधक रूपतः॥ याकौ अ
र्थ॥ भगवदीय कौ संग न त्यागे सदा सत्संग करै॥ भ
दीय कौ संग न त्यागैं सदा सत्संग करै॥ भ

५० सो भगवद्‌दुन बडो हैं सर्वोपरकर्तव्य हैं सो श्री भागवत
प्रथमस्कंध में सौनक वाक्य तुल्याम लवेनापि नस्व
र्गं नपुनर्भवं भगवत्संगी संगस्य मर्त्यानां किमुताशि
षः ॥ सो याके तुल्य समान स्वर्ग लोक अपवर्ग मोक्ष
हू नाही हैं तातें भगवदीयको संग छोडनो नाही जहां
भगवदी है मन सों आपु जाय के सर्वथा ही संग करनो
अन्याश्रयको सो छुटी त्याग करें यह मार्ग में बाधक
है नंदराय जी श्री कृष्ण को पूजन न करें तो सर्व नेग्रसे तब ते
छुडाये श्री गुसांई जी की सेवक नीडोबरी ने कहीं तु
मको जीवाई तन ताकू हम प्रभु अन्य न रख्यो न भयो सो
मोर दूसरो संबंध श्री ने कीयो सो पुत्र मर तें छ भयो नाते
अन्याश्रयको सर्वथा त्याग करनो यह बडो बाधक है
३ आगे और श्लोक कहत हैं श्लो. एवं निरूपितानाम
र्गा त्यागो सर्वत्र सर्वदा ॥ न जीवात्त्वकर्ता न किंचित्
दुर्गा तु वर्तेत्यन्तः ॥ ४ याको अर्थ याभांति निरूपण श्री
आचार्य जी महाप्रभु ने श्री सुबोधनी जी आदि ग्रं
थ में कहे हैं सो जाते विचार करि त्याग करनो है इन
को त्याग अत्याग करनो है इनाको सग्रह भगवद्
धर्म में साधक नाको संग्रह अत्याग यह विचार म
न में राखें परंतु जीव को वल नाही है न त्याग सके न
राखि सके ब्रह्मादिक सिवादि नारदादिको कछु वस
नाही चलत वे बडे त्यागी हैं तो जीव तु छ कहा करे
याको कछु नाही होत जीव तो माया के वस स्वभाव
करि दुःख होइ इच्छा है ४ आगे और श्लोक कहत हैं
श्लो. अनेन कथं भूते न मार्ग स्थिति जीवेषु सर्वथा
फल साधिक यका यो जनैस्तन्त्रा स्थितेपुनः ५ याको
अर्थ एसे दुःख जीव निग्राह है को कारण वारो सोय
ह सर्वोपर उ छिन्ना ग्रंमें स्थिति सर्वथा न होय अब

प्रहरसेसारलौकिकविषयादिमेंपरयो सो पुष्टिमार्गमें
कौनभांतिस्थितिहो आसवेयानहोइ सोजीवयह
पुष्टिमार्गीयकोफलताकी आसकेसेकरे यहशि
तिनाहीतोफलकहांतेसिद्धहोइगो जहांसोईकहेजो
जीवतोपुष्टहें इहहीहैकोईप्रकारफलसिद्धिहहे
लौकिकतोजीवतेनाहींछूटत नहींवर्तत प
श्लोक तथाहि श्रीमदाचार्यचरणाश्रयतादपि
आश्रयमपियहकोनहूवेत्सवेयेवाहि याया
अवश्रीहरिरायजीकहतहें जद्यपिजीवअनेकदोषसों
भरयोहे याजीवसोंदोषनाहीछूटत ऐसेजीवश्री
आचार्यजीमहाप्रभुनकेचरणकमलकोआश्रय
मनमेंदृढकीयाहे दोषकेछोड़िवेमेंअसमर्थ हेनऊ
वाकोंफलसिद्धहोइ यद्यपिपुष्टिमार्गकोफलसेवा
सिद्धहोइ आपुसोंईजी विलम्बकरतहें चितेनदृषोप
वसापिदृष्टआमनदुष्टत्रियपावदुःख जानेनदृष्टो
भजनेनदृष्टोममापराधविनथाविचार्य सोरस
: आश्रयात्वत्पदाम्भोज
परिमंगजीवो
श्रीआ
दृवो
स्मरणाद्यसमुद्धारं इतिवच
सर्ताहरिः याभां
न..
प्रभुनकेचर
तिनिः
कोयहपुष्टि
णकमलकोदृ
हे आगेयवचार
मार्गीयफलनिश्चय
सगादोषेपानभवेच्छिय
दृढकहतहें
गाविश्वासोपिभवेन्न
लेमनः यदिवाकाल
क्योंनि
छिः ७ याकोच्युर ऊपरकहे
तिनसों
आश्रयफलसिद्धहोय तामेंदोषमहाबाध
कहेतोफलसिद्धहोय एकतोदुःसंगहो

अतेमालघटितायमनासिअलहोइजाइनोआश्रयजा
तरहेंभरयकेभ्रगाहीदुःसंगतेतीनजन्मभरोहुविद
वानररामभक्तहतोतेनरकासुरकेसंगतेप्रभुनोअपरा
धकरयोहै तजीवदुःसंगतेगिरेतथाकालदोषतेवि
श्वासनरह्योतहांअविश्वासभयोतहांआश्रयछूटो
सोजीवनिश्चयगिर्यो ७ आगेअववैरतुकहतहे
हें श्लोक अविश्वासोनकर्तव्यइत्युक्तोसर्वबाध
कः अथअवविश्वासमार्गाश्रयमार्गआश्रयसाधक यया का
र्य अविश्वासकोनकरै सोश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुविवेकधैर्याश्रयमेंकहेहें अविश्वासोनकर्तव्यःस
र्वथाबाधकस्तु सः ब्रह्मास्त्रचातकोभाव्योप्राप्तंसेव
तनिर्ममः इतिवचनात् अविश्वाससर्वथानकरै
रामजनको अविश्वासभयो तबब्रह्मास्त्रछूटिगयो ह
नुमानजेलंकाजराई चातकको विश्वासहे सोमघ
हीमनोरथपूरनकरतहें तातें अविश्वासआसुरभा
वहे तातेंसर्वथानकरै यहश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुनेपुष्टिमार्गमेंसकलसर्वोपरिआश्रयहीसाधकहै
८ आगेअवनवैरतुकहतहैं श्लोक आश्रयेनेवसफ
लोसिद्धिमितिनिर्णयः पृथक्शरणमार्गोक्तिरत्रव
प्रभोरूपेदिया याको अर्थ जा जीवको दृढआश्रयप्र
भुमेंभयो तिनकोसकलकार्यसिद्धभयो निश्चयया
मेंसंशयनाही व[illegible] गोपुष्टिश्रीआचार्यजी
महाप्रभुसवतेन्यारोप्रगटकीनोहे श्रीहंसफला
त्मकपुष्टिमार्ग [illegible] शरणआपनेहेंवौजीवन
केआश्रयसो आगेअवनवें ९ श्लोक शरणस्थसमु
द्धारंकृष्णविज्ञापनादपि विवेकधैर्यमत्राहिसाध
नाभावबाधनात् १० याको अर्थ श्रीआचार्यजीमहाप्र
भुश्रीआश्रयग्रंथमेंकहेहें शरणस्थसमुद्धारंकृष्णवि

सापनादिकि विवेकधैर्यभक्त्यादिसाधनाभाववा
१०.याभांतिश्रीमहाप्रभुनेंश्रीकृष्णजीसोंकहीजो
पनेपुष्टिमार्गीयसेवकनकोंसरणसिद्धकीयें श्रे
रविवेकधैर्याश्रयमेंवहेंहैंनाकरिकेंजीवनमेंस
धनकोअभावहैं तिनकोंसरणकीरहैं औरविवेक
धैर्याश्रयमेंव्है हैंताकरिकेंजीवनमेंसाधनकोअभा
वहैंतिनकोंसरणकीमेहैं। विवेकधैर्यभक्त्यादिर
हितस्यदुखसुखमेंअसक्तोवासुसक्तोवासर्वथाशरणं
हरिः।याभांतिपुष्टिमार्गीयसरणहै।साश्रयमेंविना
साधनवेजीवतिनकोंसिद्धकीरहै औरभगवद्गीतामेंभ
गवद्गीतामेंभगवानशरणमार्गकीरहैं।सर्वधर्मान्प
रित्यज्य मामेकं सरणंव्रज।अहंत्वासर्वपापेभ्यो
मोक्षयिष्यामिमाशुचः।भगवानकहेंहैसर्वधर्मछोडि
कैंहेअर्जुनतूमेरीसरणआवमेंसगरेपापनकोहरि
मोक्षदेउंगो।पसमर्यादाजोपापहरिवेकोंमोक्षकें
फलऔरश्रीआचार्यजीमहाप्रभुअपनेजीवन
कोंदोषसहितहैतोऊसरणसिद्धिकीरहैं.जोवि
वेकधैर्याश्रयकोंअभावहैं.तिनकोंहूसरणसिद्धि
कीरहैं।१०।यासोंअवकऔरहूकहतहैं।श्लो.कृ.सन्या
सनिर्णयमेंहसन्तप्रभुपदाश्रयेनइत्तवाक्यभावा
विभावनपरायणौ।सन्यासोंश्रण।।अवश्रीहरिरा
यजीकहतहैंजोपुष्टिमार्गमेंजजीनकोंश्रीआचार्यजीम
हाप्रभुहरामारणाव्यारहैं।सोतिनकोंश्रीआचार्य
जीनिश्चयनिरंतरअपनोसरणप्रभुकेपदकोआश्र
यहीसिद्धकरेंसोअपनेजीवनकोंअपनोपहस
।तातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभु
ाधिपकी
निरा

भावमें अष्टप्रहर परायण रहैं इहां लिख्यो सारांसखौ श्रीकृष्ण
केसरनमुखव्हस्माश्रयगुंथकौ पाठकरें तौ सकलकार्य
सिद्धहोय ॥१॥ आगें अवकौ रहूं कहत हैं श्लोक ॥ यथास
त्रिस्वमार्गीयप्रभुसेवापरैरपि ॥ निरंतरंस्वमार्गीयस
त्संगस्सन्निधिः ॥२॥ याको अर्थ ॥ अबश्रीहरिरायजी
कहत है जो मरणाकी भावनाकरै सो यथा सक्तिपुष्टि
मार्गीय भगवत्सेवाकरै सो जितनी बनै तितनी करे
श्रमालौ थाइदुःकालौ नाचिंतालौ वायाभांतितीनौ
वचन श्रीआचार्यजीमहाप्रभु कहे हैं श्रीभागवतके
पूर्वस्कंधमें ब्रह्माकहे हैं श्लोक ॥ यथाहिस्कंधशाखा
नां तरोर्मूलनिषेचनं । एवमाराधनं विष्णोः सर्वेषामा
त्मनश्चहि ॥१॥ भगवानकी सेवाकरै सो वृक्षकें मूल
में जलसींचै तो शाखापत्र सबहरे होय ॥ औरदेवनकी से
वा शाखापत्र मानवत है तातें प्रभुकी सेवाकरनी पुष्टु
ष्टिमार्गी भगवदीयवैष्णवकौ मुख्यधर्म है ॥ और पुष्टि
मार्गीयकौ संग निरंतर करै ॥ सो भक्तिवर्द्धिनीमें श्रीआ
चार्यजीमहाप्रभु कहे हैं सेवायां वा कथायां वा यस्यास
क्तिर्दृढा भवेत् सेवा तपो हि ॥ जिन्हें भगवदीयके मुखतें
सुनके ॥ कहे हैं निरोधलक्षणमें कहे हैं ॥ महतां कृपया
यद्वत्कीर्तनं सुखदं सदा ॥ न तथा लौकिकानां तु स्निग्ध
भोजनरूक्षवत् ॥१॥ भगवदीयनकी कथा सो स्निग्ध सुंद
र हैं महाप्रसाद भोजन तातें सब देह पुष्ट होय ॥ लौकि
कजीवनके मुखतें रूखो आसुरी भोजन तातें स्वमार
गीयवैष्णवनकौ संग करनों ॥१॥ आगें अब कहे हैं
कहत हैं श्लोक ॥ स्थेयं सर्वविमुखैस्त्वगृहैः प्राणैर
पि ॥ निरुद्धसंदेह दाहनोद्योगात् तत्परैः ॥२॥ या
कौ अर्थ ॥ अहलौकिकसंसारतें विमुख रहै ॥ अपने गुरु
की सरणागति दैन्य होय ॥ प्रतिपालकेस है ॥ श्लोकात्री

यस्वभीजगनाथपुरोसंसारवन्हिनाह ग्रंमाकाल
चत्वरीयंत्राणगतः १ आभावकरिकें गुरुकीसरा
नरहैं।काहेतें।गुरुकीकृपाहोइतोप्रभुहृपाकरें गुरु
सन्नहोइतोकोसेसाककरनसामर्थनाहीं।औरप्रभु
प्रसन्नहोइतोगुरुरुलावेंरें तातेगुरुतेप्रापपन्यहैं।
पुष्टिमारगमेंजिननाहैं।तांकोअखिलजानेतेजसो
याभांतिनयमानिकेंछोड़िदेत्यागहीउहिमरावेंजोम
तन्मार्गसोंविरोधीहजसौत्यागहीकरनौ याभांतिवे
स्ववरहैं।ताकोपुष्टिमारगीयफलकोअनुभवहोइश्री
आचार्यजीमहाप्रभुकीकृपातेयहसिद्धांतभयो १३३
श्रीहरि:..[illegible]..सर्व हस सिद्धपन्न नाहीं टीकश्री
[illegible]पे[illegible]होभाषासंपूर्णो।१३।..अथउपदेशपरणकोप्र
कारकहैं औरसेवाकोप्रकारकहें।मनरूप साधनतासें
यहकालबाधकहै।सोजीवनाहींजाननसोजीवकोया
भांतिज्ञानहोइतोसाधनबनिआवैं।सोआगेसिलापत्र
सेवहतहैं।औ[illegible]..कालस्वकार्यकुरुतेनजानातिजनो
तः।प्रमाद्यतिहरकार्यैस्वात्मकार्येजनोयतः प्रमाद्य
हरकार्यैस्वात्मकार्यैविविक्तः।१। या[illegible]..अर्थवश्री
रिराइजीकहतहैंजोयहकालहै।सोअपनोकार्यकी
नातहै।ताणक्षणमेंजीवकीआयुकोहरतहैं।औरजीव
हीजानतहैंजोमेरीआयुदिनदिनघटतहैकालते
लीजातहै।यहसोनजीवकोनाहींज्ञानहै।सोकह
अनेककार्यमेंप्रमाद्ययाजीवकोहोइरह्योहै।सो
विदिवसंसारकोकामहेहइकोपोषणविषया
नेकभांतिकेकार्यकीचिंताग्रसितहैं।तातेप्रमा
अवयहमोकोकरनोहै।मैं ति
ककार्यमेंप्रमादहोइरह्योहै।ताकरिज्ञान ते
मेरीआयुकोभक्षणकरतहै मेरी

५ सोकोकहाकरनमर्हें। यहजाननाहीं होत। अनेककार्यमें
८२ प्रमाद होयवो अपने स्वामि के कार्य में विकल होहें। इहसं
बंधी सारको कार्य मेंहूं। तुमें न तत्पर है। श्री आसंबंधीभ
गवद्धर्मसेवासुमरन आदि तेन वा तो कथाआदि इन्या स्वा
ध्यायमें विकल है नाहीं सकत है। ।या। योगे अवधारकहत
है। ।श्लोक। केवलो हरिलेचनं नरीयोनानवोविनान
प्रयविमुहं सेवकानो हृपानिधिः। ।मा। याको प्रथ ऊप
र कहेगये। तो विना कार्य में प्रमाद है स्वात्म कार्य विक
ल है। ।सो केवल श्री हरि भगवान के कार्य में अवश्य श्रीमतनय
है। ।सो यह पुष्टिमार्गीय वैष्णव को उचित नाहीं है। ।कारे
ते श्रीहरि जो कृपा के निधि हैं। ।स्वकीयजन के भरण पोष
न करनो है। सो कहा अपने सेवकन को पालन नाहीं कर
गे सेवकन के ऊपर तो सदा कृपा करत ही आये है। ।याभां
ति वैष्णव श्रीठाकुर जी को विश्वास मन में राखि भगवद्
धर्म आचरन करे सगरे दिन तथा व्योहार किना न च
लै तो अनोसर में प्रहरन के तथा घडीन ।।। व्योहार हूं करे
और मन में यह जानें जो जितनो मिलनहार है उतो
सो पहर एक चारि घडी में अवश्य मिलि रहेगो यह विचा
र वैष्णव राखे भगवान को महात्म्य विचारें जो प्रभु सर्व
सामर्थ्ययुक्त हैं सर्वसिद्ध करेंगे। ।श्लो। याआगें अवधारक
हत हैं। ।श्लोक। चिंताकापिनकार्याति प्रभुवाका। विहि
पत। ।याको ज्ञानिनो ज्ञानिन अपदस्यात्समनात्तो
इ। ।यावार्थ। मनमें चिंत न करें। सो अन्वय में श्री आ
चार्यजी महाप्रभु कहे हैं। ।चिंताकापिनकार्यानिवेदिता
त्मभिः कदापि। ।भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति
लौकिकिं च गतिं। ।इत्यादि वाक्य को चिंतन भावना
अहर्निश मन में करे। ।यह न जाने जो मैं तो कछु सम
र्थ नाहीं। ।प्रभु कृपा के से करेंगे। ।यह विचार नो प्रभु को

अज्ञानीभक्त ज्ञानीभक्त बराबरि हैं सो नवरत्न में श्री
आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं अज्ञानादथवा ज्ञानात्
कृतमात्मनिवेदनं यह निवेदन श्री आचार्यजी महाप्र
भु द्वारा ज्ञान करि कीयो है अथवा अज्ञान ते काहू की देखा
देखी कीयो तऊ चिंता नाही करनी है काहे ते जो अग्नि को
यह स्वभाव है जो अनजाने हाथ धरे अथवा जानि के हा
थ धरे सो हाथ भस्म ही होय यह लौकिक अग्नि में इतनो
सामर्थ्य है तो यह तो श्री आचार्यजी महाप्रभु द्वारा निवेद
न कीयो ताको लौकिक गति कबहू न होइ श्री भागवत
के अष्टम स्कंध में कहे हैं अज्ञानादथवा ज्ञानादुत्तम
श्लोकनाम यत् संकीर्तितमघं पुंसो दहेदेधो यथानलः
१ अज्ञान ते ज्ञान ते भगवद्नाम लेइ तो सकल दोष भस्म
होइ जाइ इत्यादि वचन की भावना मन में राखि चिंता
कबहू नाही करनी एक प्रभु को आश्रय मन में राखे
३ आगे अथ वे चोरह कृतस्ते तदानुसाधनाभावान्
किं कृति ज्ञानतः फलता विरहेन हसिद्धुनो सर्वत्र के
ग भावनात् ४ याको अर्थ जो श्री जी व बुद्धि ते यह वि
ना होइ तो साधन में मन में कछु नाही है फल सिद्धि के
से होइगो सो यह चिंता नाही करनी है काहे ते का
हू जीव में साधन को अभाव है साधन नाही बनि आव
तो कहू साधन बने है ता नहि है जो ले निवेदन कीयो है सो
सो को फल श्री आचार्यजी महाप्रभुन के अंगीकार ते फ
ल सिद्धि है साधन ते फल सिद्धि नाही है फल सिद्धि व्रज
नि ये जब श्री आचार्यजी महाप्रभुजी यके विप्रयोग सान
ह दिन विरह हृदय में होय तैसेही भावना होइ इहिजो
सर्वे हृदवहरना तिनहीं को वि र होइ श्री ठाकुरजी
कृ संबंध बिना और कछु न सु लगत
तैसेही भावना होइ याको

अग्नि हृदयमें प्रगट होइ ।। तिनही को यह पुष्टिमारगी
य फलनको अनुभव होइ ।। ४ ।। यव और हू कहत हैं ।। श्लो
क लीलातिरिक्त सृष्टौ हि निरानंदत्व निश्चयात् यथा
कथंचिद्विस्मृत प्रपंच हृदये न्यसेत् ।। ५ ।। पा ।। यो अर्थ ।। अव
श्री हरिरायजी कहत हैं ।। जो लीला संबंध तें रहित प्रवाही
सृष्टि है सो निरानंद है ।। तिनको प्रभु अपनो आनंद कव
हू दान नाही करत हैं वे चर्षनी नाइ सदा संसार में भ्रम
त हैं ।। तिनको यह संसार ही प्रत है ।। भगवद्लीला संबंध
को जनको आनंद नाही है ।। आनंद का रहित हैं ।। यह नि
श्चय जानने ।। और भगवद्लीला संबंधी दैवी सृष्टि है
तिनको कहा लक्षण है ।। महाप्रभुजी द्वारा शरणागत भये
गावरि रिकरी वार यह प्रपंच जि तिनको नाही छूटतो ।। सो
थोरो थोरो क्रमक्रम तें छोड़त हैं ।। अरु नित्य अपने मन
में विचार करि कि प्रभु को स्मरण करत है यह ज्ञान हृ
दय में होत है ।। जो हम तो सदा प्रभु के दास हैं ।। अरु तोन्हारि
प्रभु को भूलि गये हैं हमारे तो प्रभु धर्म ही है ।। जो प्रभु की
सेवा सुमरन करूं या भांति दैवी जीवको ज्ञान होत है ।। आ
सुरी जीवको नाही होत है ।। पा ।। आगे अब और हू कहत हैं
श्लो ।। का ।। कृष्ण गृहस्थ सानंदे तथा लीलायुत सदा स्मर्व
[illegible] भक्त भावात्मकं पुनः ।। ६ ।। या ।। अर्थ ।। श्री कृ
ष्ण जे हैं महाप्रौढ सर्वोपर हैं ।। जिनको वेद आदि पार
नाही पावत हैं नेति नेति कहत हैं ।। बुद्धि वाली ते अगो
चर हैं ।। और सदा आनंदरूप हैं ।। एकरस जिनको आन
द है ।। सो कृष्ण आश्रय में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहत हैं ।। पा
कृत्ता सकल देवा गणितानंद कंदं हन ।। प्रमाणे गोपी
तस्मात् श्री कृष्ण स्मरणं सम ।। और देवन तो प्राकृत हैं ति
नको आनंद ह प्राकृत है ।। सो लानंद हजार आनंद की
गननामें है ।। अपार नाही है श्री कृष्ण प्रमाण नंद है

जो आनंदको रूपास्ना ही हैं जेसें रसको रूपास्ना ही है तातें
श्रीहंसस्वरूप आनंदरूप हैं जो श्रीहंसस्वरूप वेन भक्त
के हित रसरूप लीला में रसलेवें अनुभव करत हैं या प्रकार अपने
भक्तन सों मान करत हैं दैन्य है भ्यमान मनावत हैं सो गीत
गोविंद में कहे हैं स्मरगरलखंडन मम सिरसि मंडनं देहि प
दपल्लवमुदारं याभांति श्रीस्वामिनीजी सों प्रार्थना करत हैं
जो अपने श्रृंगार विं मेरे मस्तक ऊपर धरो तुमारो पदप
ल्लव के सो है मेरे मस्तकको श्रृंगार है याभांति अनेक है
न्यप्रभु करत हैं व्रजभक्तन के भावात्मक हैं श्रीहंसकु रस
सो व्रजभक्त भावपूर्वक अनुभव करत हैं ६ अब और
हैं करत हैं सो ... पसोदा सोग लालित मुग्धभावसमाह
ो प्रपंचवैरिणालाय हेतु लौकिकनाशने ७ या ... अर्थ
और श्रीहंसजी कि से हैं श्री यसोदाजी अपने उत्संगमेली
खिलावत हैं सो याभांति परम सोभा देत हैं मुग्धवा
लकी नाई श्री यसोदाजी के कंठ में वेष्टित हैं अपनुं जो यह
संबंधी स्त्री पुत्र पति घर लौकिक वैदिक कार्य ताके
... हैं श्री यसोदाजी ... भूमि में प्रभु को धरि के दूध
... नतरते सो सबारन गई सो श्री ठाकुरजी न साहिस
धिवे मोट फोरि डारे अपमारवन लगे सो बहुत सनेवट
वारलवा ... पहक रिके यट जेनारे जो मोको
दे ग्रहस्थराज करोगे ताको ग्रहस्थ पनलौकिक वैदिक
नसिद्धि होयगो ओर यह प्रपंचके वैरी हैं जो जो भक्तप
यापियकी यो तिनसवनको प्रपंचनास भयो प्रपंच
के हैं लौकिककाम्यको धमदम सरता अहंतामम
ताहून लौकिक सबके नास करत भक्तनको प्रपं
चिक सबै सुंदर करत हैं ७ आगें अ
... स्वप्रवेशायकामादिसवेरो
रिक्लं वीर्यपरमातिमहोत्सवं ८

सि.प्र. सेश्रीकृस्नजव भक्तनेंहृदय प्रवेसकरनको विचारकरतहैं ताहि
८५ समयउहभक्तके हृदयमेंकामक्रोधमत्सरताआदिसकलदो
षदूरिकरतहैं यहकहिकेंउहजनतारेजो जहां तांईभक्तकेहृद
यमेंकामादिमायाकेदोषहृदयमेंभरेहैं नहांतांईश्रीकृस्नहृ
दयमेंनाहीपधारेजानिये जवादोषदूरिहोयजनवजानिये
प्रभुहृदयमेंनिश्चयपधारे भक्तकेहृदयमेंश्रीकृस्नपधा
रिकेंकहाकरतहैं उहभक्तअपनोलौकिकदेहसंवंधीसु
षछोडिकेंश्रीकृस्नकेदासनकीज्यातिथतिविरहहोतहैं
सोउहपसआर्त्तिविरहदुखहै सोमहामहासवरूपहै
सोउहभक्तनकोसिद्धिहै श्रीकृस्न हृदयमेंभावात्मकवि
राजतहैं तातेंग्रहकाजनाहींवनिआवत सगरोदिन
वेणुगीतयुगलगीतगानकरिकेंनिरवाहकरतहैं औ
रासपंचाध्याईमेंअंतरध्यान प्रभुभयेपाछेंभक्तनकों
महाविरहभयोतोप्रभुफेरप्रगटरसदानकीये विरहन
नीअधिकहोय सोमहात्स्वरूपआनंददाताहैं तें आगेंश्र
वश्रोमहृदवहतहैं सोकौश्रीमहाचार्येहृदयश्रीयपूर्वकस्ना
थिनें अनेंतभावरूपात्मागोपारमणनस्पर्सवियाकोअ
रसेभावात्मकश्रीकृस्नश्रीआचार्येजीमहाप्रभूकेहृदयमें
भक्तनसहितकेंसेंलीलाकरतहैं सोकाहेतें जोसोक्षीर
सागरमेंशेषसाईभगवानको दृष्टांतदैकेंकहतहैं जैसे
क्षीरसागरमेंसेषसिज्याहै तेसेंहीश्रीआचार्येजीमहा
प्रभूकोहृदयसिज्यारूपतहांसेषसिज्यापरश्रीनारायन
पोढेहैं इहांश्रीकृस्नभावात्मकरसात्मकपोढेहैं उहांए
कश्रीलक्ष्मीजी संगविहारहै इहांअनेकभावात्मक
व्रजभक्तनकोटानकोटि स्वामिनीतिनसंगारमणकर
तहैं तासोंश्रीआचार्येजीमहाप्रभुकहैहैं आपनेहृद
यकोभावजनाएहैं ताकरिकेंजान्योगयोहै लोकन

मासिहृदयाश्रेये लीलाहृीराब्धि सायने लक्ष्मीसहस्रली
लाभिसेव्यमानकलानिधि ९ याभांतिश्रीआचार्यजीमहा
प्रभूअपनेहृदयमेंप्रभुलीलाकरतहै सोतिनकोनमस्का
रमंगलाचरणकरिश्रीसुबोधनीजीनिबंधप्रगटकीए
है याभांतिश्रीआचार्यजीमहाप्रभूअपनेनिजभक्तनको
अपनेहृदयकीलीलाप्रगटकरतहै सोभक्तयाभांतिली
लासहित श्रीआचार्यजीमहाप्रभुकोस्मरनकरतेंतोअनु
भवहोय ९ आगेअवओरहूकहतहैं श्लो० मधुपालि
जयाधुकरीमालिसुविराजितं प्रसन्नवदनांभोजंकरु
णारसवहृगां १० या श्लो० कोअर्थ कहाजोमोरकेपक्षकी सि
खोकेमाथेमेंमुकटधरेहैं श्रीहस्तकेसरहैं रोमावलीहै
नाभिकमलपास सोमानोमधुपजोभमरकीपंक्तिमानो
कीनाईं अत्यंतसोभायेतहै मुखारविंदअत्यंतप्रसन्नहै ना
कोभावयहजोअनंतकोटिनिजभक्तनकेसंगलीलाकरि
अधरामृतपानकरतहैं हृदयमेंमहाआनंदभयोहै
ताकरिवदनकमलअतिप्रसन्नहै करुणारससंयु
क्तहै भक्तनकेऊपरकरुणादृष्टिकरिरसपानकरावतहै
१० आगेअवओरहूकहतहैं श्लो० बर्हिपिछशिरो
भूषंशृंगाररसरूपिणं एवंविधानेतद्गुणानिधायहृदये
सदा ११ या श्लो० को अर्थ कहाजोमोरकेपक्षकीसखाकिमा
थेमेंमुकटधरेहै सोशृंगाररसरूपहै जेसेंमोरजवरस
नृत्यकरतहै तवनिर्तकरतहै सोतेसेंहीश्रीठाकुरजीमोरमु
कटकोशृंगारकरिभक्तनकोरसदानकरतहैं तातेंमोरमु
कटकोशृंगारहै सोशृंगाररसरूपहै तातेंमोरमुकटको
शृंगारहै याभांतिमासादिक लीलामेंअनेकलीलाकुंत
बालक्रीडामानादिकसवलीलासंयुक्त ऐसेश्रीहस्तको
अनंतलीलासंयुक्तअपनेहृदयमें
स्मरनकरिहृदयमेंसदाहीधारनकर नि

१०१· रिवुद्ध केवल होना ही॥ ऐसें न करें॥२॥ आगें अव श्लोक कह
हैं॥श्लोक॥ तत्सेवा मध्यवृत्त्या जीवस्य धर्मतः न फलाय
न लाभार्थं न प्रतिष्ठा न प्रसिद्धये॥ याको अर्थ॥ कृपा करिके ह
से श्रीकृष्ण भगवान स्वरूप तिनको सदा हृदय में ध्यान करे
मानसी सेवा सो कब सिद्ध होय सो कहत हैं जो प्रथम तनु
जा वित्तजा सेवन लगाइ के सेवा करे सो सिद्धान्तमुक्तावली
में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं जो कृष्णसेवा सदा कार्या
मानसी सा परा मता॥ श्रीकृष्ण की सेवा सदा करे तिनको
परम मानसी सेवा सिद्ध होय तातें यह पुष्टिमार्गी वैष्णव
को धर्म है जो श्रीकृष्ण की सेवा करे सदा जैसें ब्राह्मण गाय
त्रीन पै तो ब्राह्मणपनो जाइ शुद्धवत है तैसेंही वैष्णव होइ
के भगवत्सेवा न करे तो वैष्णवता जाइ तातें श्रीकृष्ण की
सेवा करे अपनो स्वधर्म जानि कछु फल की आस करि से
वा न करे जो मैं कृतार्थ होउंगो कछु लौकिक वैदिक मो
भक्ति कछु फल की वासना मन में न राखे कछु लाभ मन
राखे जो मैं सेवा करूं तो कछु वैष्णव जानि के मोको कछु दे
जाय कछु मन में अपने में लोभ न राखे और प्रतिष्ठा
थे न करे जो मेरी वडाई होइगी लोग भलो वैष्णव जानेगो
या भांति अपने को प्रसिद्ध न करे जो मोको कोऊ जाने
सो ऊ न करे गोप्य रीति सों करे सो श्रीभागवत नवमस्कं
ध में भगवान कहे हैं जो दुर्वासा प्रति मत्सेवया प्रतीतं च
सालोक्यादि चतुष्टयं नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतोन्यत्का
लविद्रुतं ॥१॥ इति वचनात्॥ श्रीभगवान्जी कहत हैं जो भ
क्त सेवा मेरी करि पूर्ण हैं यही प्रतीत हैं तिनको मैं चार प्र
कार की मुक्ति देत हों सालोक्य सामीप्य सायुज्य सारूप्य
सोऊ नाहीं लेत हैं ऐसे पूर्ण निष्काम हैं तिनको काल के
हा बाधक है या भांति मन पूर्वक वैष्णव को स्वधर्म जा
सेवा करे अव श्लोक कहत हैं॥श्लोक॥ श्रीमदाचार्य सा

गोणानान्येनाधिकस्य चन: नृकल्पितप्रकारेण तदुभाव
समन्वियात १३ या ग्रन्थ में वैष्णव सेवा करें सो श्रीआचा
र्यजी महाप्रभु के पुष्टिमार्ग की रीति है ताही अनुसार करें क
ल्पित मूर्तिकें अन्यमार्ग की रीति है सो न करें और अप
ने मन ते कल्पित प्रकार हू न करें जो न जाने सो पुष्टिमार्गी
य भगवदीय सों पूछि लेइ मन कल्पित सर्वथा न करे उ
भोवसोन जो केहा भयो जैसें लौकिक कार्य है तेसेय
हू करिये है या भांति अन्य हू उभाव सम्पन्न करिये प्रीति
पूर्वक सर्वोपर परम फलरूप जानिकें सेवा करिये १३ आगें
अब और हू कहत हैं श्लोक: तत्वं विदित्वा परमं यसोदोत्सं
गलालितः श्रीमदाचार्य तत्पुत्रो हितस्मत्स्वामिनीरपि
१४ या ग्रन्थ में वैष्णव भगवत्सेवा करें और यह चारों पदा
र्थ को परमतत्व जाने श्री यसोदोत्संगलालित प्रथमतत्व
श्रीगुसांईजी कहत हैं जो जानितं परमं तत्वं यसोदोत्संगा
लालितं तदन्यदिति ये प्राहुरासुरास्तेन संशयः याभां
ति प्रथम तत्व यसोदोत्संगलालित १ दूसरे श्रीआचार्य
जी महाप्रभु अपने आचार्य जी श्रीवल्लभाचार्यजी परम
तत्व २ तीसरे श्रीगुसांईजी श्रीमहाप्रभुजी के पुत्र श्रीवि
ट्ठलनाथजी परमतत्व ३ चौथे अस्मत्स्वामिनी व्रजभक्त ये
परमतत्व ४ ये चारों परमतत्व अपने मन में जाने १४ आगें
अब और हू कहत हैं श्लोक: न तुल्यं बुध्यता रास्यान्
सर्वथेति विनिश्चयः एतावती सती सिद्धा संस्थिता स्तु धी
यतां १५ या ग्रन्थ में ऊपर कहे जो श्रीकृष्ण श्रीआचार्य
स्वामिनीजी इन चारों को परमतत्व
जाने इन चा न और को एक को न जाने जो कोई
किन में काहू को जाने ताको सीघ्र हीन
जानने सो वो नामें
महोइ
दैके घर हूने

नैंकहीजोकछुश्रीठाकुरजीकेंपधरावौ।यहसुनतहीगो
म्हारानेवकहीं।तारीतेंडयहपदलेतेरेखसमयेहेआगुपाछु
तेरेसुखकेरखवाणो।पाछुसीयवाईनेंवोहोतमसुहरखकरिवे
रखे।परंतुयनेंसंगुहगामळोउदीयो।न्यारखीनस्वामी
वीरवलकेडहागारोहतें।वरसोटीलेननहागमणाठीतस्व
मीतिरधरनश्रीविठ्ठलयेइतें।नैंऐसेंकछुनसंदेहयह
सुनिकेवीरवलनेंकहीं।देसाधिपतिपृछेगोतोंवहांजुवा
वरदूगो।यहसुनतहीठीकस्वामीकहेंजो।मेरेभाणेंतोतुम
हीमरेहोहो।ताआगुपाछेंतेरोमुखनदेखवागो।पाछव
रसोटीछोडिकेवलेआगे।एसीटेकवेरवराखीचारोत
त्वकोंतोविवस्मैकोईइनसमानजानें।ताकोंनिश्चयही
नासहोइ।अवश्रीहरिरायजीअपनेंमनमेंश्रीगोपेश्वरजी
सौकहतहैं।जोयाप्रकारमेंसिद्धांतलेपमेंलिख्याहैसोतु
मनअपनेंहृदयमेंआवस्यकहीकरीयो।१५।आगेंअवकी
रहैकहतहैं।स्लोक।आचरन्नपिचोपदेष्टव्यायदिस्युरधिक
रिणः।मिलेतिस्वेष्टयश्रद्धायुतापृच्छतिचेन्नवारधाय
कोअर्थ।यहऊपरसिलोककहीहैं।सोआरवेंआगेंमति
कहियो कोईयासिलोकेंअधिकारलायकहोय।ताकें
आगेंकहियो।सोभगवदस्थानेंआपुहीआयकेंप्राथ
नावरेश्रद्धाहोइ।पृष्ठचिंतलगारकेंतासोंकहियो।
पनीइछातेंमानिकुलारकेंकहियो।यहसर्वोपरसिद्धांतहै।श्री
अधिकारीपात्रविनारसठहरेनाहीं।पहजानिकेंयो
आगेंमतिकहियो।१६।आगेंअवश्रीरहैंकहतहैं।लि
जीवनतत्परतासिद्धोरूपाकुलेषुतुष्यति।पथाविष
तोवाडतिकासुनयाहरे।१७।याकोअर्थ।ऊपरकहै
कारयहजीवभगवद्धर्ममेंजवतत्परहोइ।तववयहपु
मारगीयफलसिद्धहोइ।जैसेंप्रहलादकोंहरणाकु
नहरवदीयो।परंतुप्रहलादअपनीतत्परताभगव

मैंतवतत्परभगवानकोंत्याश्रयनछोडेंतोतृसिंहजीप्रा
टहोइप्रतिबंधहरिहीकोंफलसिद्धभयो तेसेहीपुष्टिमार
गीयभगवदीयतत्परहोइ।पुष्टिमार्गमेंतोफलसिद्धहोइ
काहेतेंप्रभुकृपालहें संतोषपावें प्रसन्नहोइ जैसेंविप्र
ईकोंडुतीमिलेंतेंसंतोषहोइ तैसेंश्रीभगवानश्रपने
भक्तकीश्रनन्यताहेखिकेंमनमेंबहुतसंतोषहोतहें प्र
सन्नहोइ नारिकाथश्रपनेदासके पूरणकरतहें सहाइ
पावकरतहें प्रतिबंधहरिकें फलदेतहें यामेंयहसि
द्धांतनिश्चयभयो।१७।इतिश्रीहरिरायजीकृतसिक्षा
पत्रमा टीका श्री पेश्वरजी स पूर्ण।१८।श्रबकहु
परकहेतेंश्रवश्रासेंपतत्परहेतोफलसिद्धहोइ सोयहक
लिकालमहाकठिनहें परबाधकहें यासोंवचेतोफलसिद्ध
होइ।सोश्रागेकहतहें।श्लोक। इदानीवर्ततेकालःकाल
कलिरिहत्या यस्मिन्विनश्यातिमतिः सतामपिकुसंगतः।१
याकोश्रर्थ। श्रबश्रीहरिरायजीकहतहें जोपहश्रबजो
कालवर्तमानप्रसिद्धहें सोमहाकरालहें प्रसिद्धहस्य
मानहें प्रसिद्धयाकोप्रवाहहें क्योंनहीं काहेतेंजोसत
पुरुषहें निश्चयतिनहूकीमतिकुसंगतितेंविनसजोभ्रष्ट
भईहें यहकहिकेंयहजतायोजोयाकलियुगमेंसतप्राणी
कीबुद्धिभ्रष्टहोतहें तोश्रपानीनकीभ्रष्टहोइ यामेंकहा
कहनो।एसोकठिनकालश्रायोहें तहांकोंकहेंजोस
तप्राणीकीबुद्धिभ्रष्टहोतहें तहांकहतहें।२।श्लोक।
सत्संगोदुर्लभोयत्र सततसन्प्रसंगतः कृष्णाकृष्णचरि
त्रैकयुतानित्यंभजंतिहि।२।याको श्रबश्री
राइजीकहतहें जोसत्संगतोबहुतदूर
हीनिरंतरदुःसंगतेसत्प्राणीकीबुद्धिनास एकल
एप्रसंगहू भगवदीयको दुर्लभभयो
कहाहोइकाहेतेंजोजवनिरं

नेंक हीजो कछु श्रीठाकुरजी के पास गावो। यह सुनत ही रा
महारानें कही। राजीउ यह पद तेरे खसम के हैं आगु पाछे
तेरे मुख ते खुयो। पाछे मीरां बाईनें वाही तम मनुहार करिवे
राखे। परंतु येन रहे। दुहागा में कोउ दिन हीयो। ओर ठौर छीतस्वामी
वीरबल के इहां गाये हते। वरसो दीलेन नहा गये। छीतस्वा
मी गिरधरन श्री विठ्ठल ये इते ने घूर्य कछु न सन्देह यह
मुनि के वीरबल नें कही रेसा धिपति पृष्ठ गावो। कहा जुवा
व देउ। यह सुनत ही छीतस्वामी कहे जो मेरे भाग्य तो तुम
हारे मुख ते पादुका नहीं देखांगी। पाछे
तेरो मुख न देखांगो। ऐसी टेक वे स्वरा खे चारोत
रसो टीछ छोडि के चले आये। ऐसी टेक न जानें। ता कोनि भयही
खको लोवि वस्केवोइ हन समान जानें। श्रीगोपालजी
नासहो। अवशी हरिरायजी अपने शिक्षापत्र में लिख्यो है सोतु
सो कहत हैं जो या प्रकार में सिद्धान्त लेप में लिख्यो।१५। आगे केंके
न अपने हृदय में आवश्यकही कीयो। १। आगे उनके
र्है कहत है श्लोक। अन्य विचारे पृथ्वी यदि सुर धिय
रिसां मिलेति स्वच्छया श्रद्धा युत्ता पूरति चेतसा धाय
कोष्ठो। यह श्लोक शीहे। सो आपके आगे मति
कहियो कोई या सिसाके अधिकारी नायक है। ताके
आगे कहियो सो भगवद्धर्म आपुही आय के प्राप
ना वरे श्रद्धा हाई पृष्ठ चित लगाइके तासो कहियो
पनी छातो माहि बुलाइके कहियो। यह सब उपर सिद्धान्त
अधिकारी पात्र बिना समर्थ हैं नाहीं। पद जानिके
आगे मति कहियो। १। आगे अब और है कहत है
जीवन त्वरता सिद्धो कृपा तुल्यति यथा विष
तो बोइ तिका सुनंथा हरे। १७। या को अर्थ ऊपर कहे
कार यह जीव भगवद्धर्म में जवन त्वर होइ तब यह
माणीय फल सिद्ध होइ जैसे प्रहलाद को हरणा
नहु खदीयो। परंतु प्रहलाद अपनी त्वरता भगव

मैंजवतत्पर भगवानकोंत्याश्रयन होहै तो न सिद्धि जीप्रा
ट होइ प्रतिबंधदूरिहीकी फलसिद्धिभयें तैसेंहीपुष्टिमार
गीयभगवदीयतत्पर होइ पुष्टिमार्गमें तो फलसिद्धि होइ
काहेतें प्रभुकृपालहें संतोषपावें प्रसन्न होइ जैसें विष
ईकोंद्रव्यमिलेंतें संतोष होइ तैसें श्रीभगवान अपने
भक्तकी अनन्यता देखिकें मनमें बहुत संतोष होत हें प्र
सन्न होइ सर्वांगीकार अपने दासके प्रगट करत हें सहाय
पावकरत हें प्रतिबंध दूरि करिकें फल देत हें यामें यह सि
द्धांतनिश्चय भयो ।१७। इति श्री हरिराय कृत शिक्षा पत्र स्मि:
पत्रं मा टीका श्री पत्र संपूर्ण १८ अथ वक्ष
परकहतो प्रथम स्वैभक्त तत्पर हें तो फलसिद्धि होइ सो यह क
लिकाल महाकठिन हे सो बाधक हे यासों वचे तो फलसिद्ध
होइ सो आगे कहत हें श्लोक इदानीं वर्तते काल कालः
कलिरीदृशः याभिश्चिन्त्यन स्यातिमति सतामपि कुसंगतः १
याको अर्थ अब श्रीहरिरायजी कहत हें जो यह अब जो
कालवर्तमान प्रसिद्ध हे सो महाकराल हे प्रसिद्ध हे स्य
मानसें प्रसिद्ध याको प्रवाह देखियतु हें काहेतें जो सत
पुरुष हें निश्चय तिनहूकी मति कुसंगतितें विन्न जो भए
भई हे यह कहिवें यहतात्पर्य जो याकलिदोषतें सत प्राणी
की बुद्धि भ्रष्ट होत हें तो अपानीनें भ्रष्ट होइ यामें कहा
कहनो ।। सो कठिनकाल आयो हें तहां कोऊ कहें जो स
त प्राणीकी बुद्धि भ्रष्ट होत हें तहां कहत हें श्लोक
सत्संगो दुर्लभो यत्र सततसन्नप्रसंगतः कथा कुसचरि
त्रैक युता नित्यं भजंति हि ।२। याको अर्थ अब श्रीहरि
रायजी कहत हें जो सत्संग तो बहुत दुर्लभ भयो मिलनो
ही निरंतर दुःसंगतें सत्प्राणीकी बुद्धि नाश भई हे सकल
प्रसंगहू भगवदीयको दुर्लभ भयो हे जो सदा निरंतर
कहा होइ काहेतें जो जब निरंतर भगवदीयको संगहो

।५५। ३ कृष्णकी कथा कृष्णकी लीला सुनै गावै तिसो ॥ नित्य श्रीकृष्ण
८ कीसेवा करै ॥ और भगवदीय हूं कथा लीला सुने भगवत्सेवा
आपु हूं करत हैं ॥ ऐसे जो भगवदीय हैं यत्नसों आपुहू करें ॥ औरन
कों न बतावें जैसें भीजे कपरा हैं ३ सो वाके कपरा कों भिजावें
तैसें ही आपु और हू कूं करत हैं ॥ जो भगवद्धर्म में तत्पर हैं ॥ तो
उ हू औरन कों तत्पर करै ॥ ४ ॥ याते आगें श्लोक वर्णन कहत हैं सो
का ॥ निजाचार्यपदांभोजसेविन सुसुदृष्टिभागिनः ॥ अन्येंभन
:कृष्णसेवाश्रयाचिंतनतत्परा ॥ ५ ॥ याको अर्थ ॥ और भगवदी
य कैसो है ॥ आपने श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीवल्लभाचा
र्यजी हैं सो तिनके चरणारविंद की सेवा में आहर्निस जा
को मन है ॥ सो अनन्य बुद्धि सों ऐसे जो भगवदीय है वह
दुर्लभ है ॥ कहूं कहूं जो देह पाय जो कबहु न होय श्रीकृष्ण जी की ली
ला विषे मन तत्पर है ॥ काहू के दिखाइवे कों न ॥ भगवद्
धर्म न करे ॥ २ ॥ शुद्ध न होय ॥ ऐसो भगवदीय होय सो तो
या कालमें यातें दुर्लभ है ॥ याते आगें श्लोक वर्णन कहत
हैं सो का ॥ अहंतु सर्वथा नित्यं तथा सत्संग वर्जितः ॥ ते
न्या मिममनसा नूनं निदानन्दैन नित्यशः ॥ ६ ॥ याको अर्थ ॥ औ
र श्लोक सो है सर्वथा नित्य सत्संग करिके वर्जित हैं मोको
तो सत्संग मिलत नाहीं ॥ तातें मनमें बहुत खेद पावत
है ॥ जो मोकूं भगवदीयन को सत्संग न भयो काहे तें भगव
दीय को संग ह्वै तो श्रीकृष्ण स्वरूपानंद स्वरूप हैं तिनको वा
नन्दको अनुभव होइ ॥ भगवदीय विना आनंद का रहि
त है ॥ नित्य पाठ याते आगें अर्थ कहत हैं सो का ॥ वाच्य
नि:शरणोपायनय मिमं दीनं ततो ॥ को वा मदीयह
दय दुःखं शोकं क्षिप्तिः ॥ ७ ॥ याको अर्थ ॥ और मुख श्री ह
रिराइजी निःसाधन हैं इहैं नित्य हृदय में भोग ता याद सों
कहत है जो मेरी यह महीतल पृथ्वी में आय के वास कीयो
सो पृथ्वी ही भयो काहे तें हरिशरण को उपाय जब

नवनिआयो ताकोजन्मयहपृथ्वीपरवृथाहै सोप्रहलादजी
श्रीभागवतमेंकहेहैं जोकौमारआचरेत्प्राज्ञोधर्मान्भा
गवतानिह दुर्लभोमानुषंजन्मतदप्यध्रुवमर्थदं १ औरए
कादसस्कंधमेंजनकजीकहेहैंजोदुर्लभोमानुषोदेहोदेहीनां
क्षणभंगुरः तत्रापिदुर्लभंमन्येवैकुंठप्रियदर्शनं २ इति
वाक्यात् यहमनुष्यदेहमहाउत्तमहै कौमारअवस्थाते
प्रभुकोसरणाकरिभावदृढमेंकरनोउचितहै काहेते
क्षणमेंभंगहोइजाइतो अनःकालसमयकछुनाहीवनि
आवेगो पेयहदेहीमिलनीदुर्लभहै तातेभगवानकोध
मेंभावनकोदरसनयहमहादुर्लभहै आवसयहदेहसो
वनेसोकनेयाहे सोमोसोकछुभयो पाछेयहदेहकोमहासो
चहै जैसेचिंतामनिपायकेकोडीकेपलटेदेइ पाछेचिंता
मनिकेगुनसुने तबअनेकदुखआवे पाछेयहदेहपा
इकैलौकिकमेंलगावे ताकोजन्मवृथाहै तातेमेंहरि
सरणकोउपायनाहीकीयो तातेहृदयमेंमहादुखीहो
यहमेरेहृदयकेदुखकोदूरिकरो ऐसोकोनहै प आप
अबओरहकहतहैं श्लो० वृजवासस्तथाश्रीमद्यमु
नारसमागतः दुर्गोप्यद्वेनदृष्टिदुरितन्नाथदर्शने त्वया
[illegible] अबश्रीहरिरायजीकहतहैं जोश्रीहरिकेचरण
कमलकोसाधनकछुनबनिआयो सोवृजवासहूनभयो
काहेते वृजदेसमहैसोमहाउत्तमहै प्रभुकेचरणकरिके
स्थलहै तहांपरिरहि एतोमनुष्यपनोजानिकेहूपाव रे
सोउमोकोनभयो औरश्रीयमुनाजीकोदरसननाहीहै
केसीहैंश्रीयमुनाजी जोदुष्टप्राणीअनजानेएकवारहू
जलपानकीयोसोइतोउद्धजीवकोयमपातनानहोइय
हप्रतापहै जोश्रीयमुनाजीकोआश्रयकरे तिनकोश्री
यमुनाजीश्रीठाकुरजीकीलीलाकोअनुभवकरावेंस
बकार्यसिद्धहोइ अलोकिकदेहसिद्धकरें ऐसीश्रीयमु

नाजी को दरसन न होत हैं। और श्रीगिरिराजजू मो तें दूरि हैं सो
श्रीगिरिराजजी हूं कैसे हैं। जिनके संग तें भीलनी जे पुलिंदी
तिनको हूं भक्ति भई। ऐसे श्रीगिरिराजजी हू मो तें दूरि हैं। और
श्रीगोवर्द्धननाथजी को दरसन हू मोको दुर्लभ भयो है।
सो मैं परदेस में या भांति हों। अब मैं कहा करूं। तातें कोई कहे
मन करि भाव करो जा वस्तु को स्मरण करे सो प्राप्त होत है। सो
तातें मन करि भाव सों व्रज श्रीयमुनाजी श्रीगिरिराजजी
श्रीजी को दरसन सब कल्पत हैं। इतनो हू मन में को
पावन हो या भांति कोऊ कहे तहां कहत हैं। धृष्टो का
विषयाक्रांत नेत्रो हृद्भावः संततिर्हि सो तत्र स्थितिः स्या
धुर् इसंगतामपि ॥ ७ ॥ याकौ अर्थ। अब श्रीहरिरायजी कहे
त हैं। जो विषयाक्रांत देह में भरि रह्यो होइ। तिनको भगवद्
ब्रह्म ता दूरि हैं मन करि कैं भावना सिद्ध होत। तिनको होइ
तिनको सुद्ध हृदय होइ। और दृष्ट प्रसंग तें कितने पुर भगव
द्स्मरण में परे है। तिनको सगरी वस्तु सिद्ध है। और सो को
विषयावेश करि भगवद्भाव दूरि रह्यो है। अनेक देसांतर में
स्थिति है। अनेक प्रकार के लौकिक सबादि सृष्टि को संग
है। भगवदीय को संग मो तें दूरि है। भगवदीय मिलें तऊ उन
सों मिलि कें भाव स्वभाव विचारियें सो ऊ मो तें दूरि है। तातें
मन में बहुत खेद होत है ॥ ७ ॥ आगे अब यों कहत हैं सो
का। तद्भावात्मकथायाः श्रुतौ विमुखता हृदा। एवं विधस्य
सततं श्रीहरेः स्मरणं मम ॥ ८ ॥ याको अर्थ। अब श्रीहरि
रायजी कहत हैं। जो भगवदीय तैसेई भावात्मक कथा श्री
सुबोधिनीजी आदिक है। ताया सुनिवें हृदय में भाव उ
त्पन्न होय सो भगवदीय मो तें दूरि हैं। ता करि भावात्म
क कथा हू मो तें दूरि है। तातें हृदय में विमुखता छाय रही
है। सो या भांति मैं सब साधन करि रहित हों। यह देसांतर
में स्थिति हों। ऐसो जो मैं निरंतर श्रीहरि की सरण हों

और मैं कहा करौं जब बहुत अपने तन सरण की भावना कर
तहौं। सो श्री आचार्यजी महाप्रभू श्रीकृष्णाश्रय में कहे हैं वि
वेक धैर्य भक्त्यादि रहितस्य विशेषतः पापासक्तस्य दीन
स्य श्रीकृष्ण शरणं मम। १ विवेक धैर्य भक्त्यादि सर्व धर्म
करि रहित होय। पापासक्त होय। अतिदीन दुखी सोऊ
श्रीकृष्णही की सरण करैं। ताते मैं सर्व साधन करि रहित
हौं। निरंतर श्रीकृष्णही की सरन कीये हों। आगे अब और
हू कहत हैं। श्लो०। को वेदस्य किंवा नो न जाने हं कृपानि
धि तथापि श्रीमदाचार्य शरणं करवै मनः। [illegible]। या [illegible]
[illegible] सो यह मैं नाहीं जानत जो श्रीकृष्ण कहा करिवे वारे हैं
मेरी कहा गति करेंगे सो जानी नाहीं जात है। काहे तें वे
द श्रीकृष्ण के अभिप्राय कों नाहीं जानत हैं तो मैं कहा
करूं परंतु इतनो श्री आचार्यजी महाप्रभु की कृपा तें जा
नत हों जो श्रीकृष्ण कृपानिधि हैं। अपने निज भक्तन पर
स्नेह करत हैं निश्चय कृपा करत हैं। ताते मैं एक श्री आ
चार्यजी महाप्रभुन के चरण कमल की सरण आपने म
न में करि रहे हों। ता करि श्रीकृष्ण कृपा करेंगे। और सग
रो कार्य सिद्ध होइगो। यह कहि कें ये है जताए जो श्री आ
चार्यजी महाप्रभु की सरण की गैये जीव। तिनको श्रीकृ
ष्ण कृपा करेंगे सगरो कार्य सिद्ध होइगो। श्रीव्रज श्रीयमु
नाजी श्रीगिरिराजजी श्रीजी सगरी लीला को अनुभव
होइगो। जो श्री आचार्यजी महाप्रभुजी की सरण ना
हीं कीयो है। तिनकों कछु फल सिद्धि नाहीं ताते मैं अ
पने श्रीवल्लभाचार्यजी के सरण मन करि लीयो है। या
आश्रय करि अपने मन को समझायवे राखे हैं। आगे
अब चौथो कहत हैं। श्लो०। विशेषप्रेमजीपित्राद्वैध
यः सर्वैर्वृत्तियुक्तः। अनेन केवलेनैव किं चित्स्वस्थम
नो मम। १०। या [illegible] अर्थ। अब श्रीहरिरायजी कहत हैं

सो श्री गोपेश्वर जी सों कहत हैं जो विशेष समाचार प्रेम जिस
पत्र में जानोगे श्री महाप्रभु जी की सरण करि किंचित मन
में स्वास्थ हैं जो प्रभु कृपा करेंगे अपनी ओर देखिकें । १०६
तो श्री हरिराइजी कृत सिक्षापत्र नवमो ताकी टीका
श्री गोपेश्वर जी कृत संपूर्णं । अब श्री गोपेश्वर जी को प
त्र आयो है सो ताको उत्तर श्री हरिराइजी लिखत हैं
तातें सगरी पुष्टिमार्ग की रीति सों रहें तो फलसिद्धि होय
सो सब लिखत हैं । श्लोक । समाचारा वगत्येव संतापो
जनितो महान सहेयो पि हरि जीवेनु ग्रहं कुरुते स्वतः
॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरिराइजी कहत हैं जो तुमारो पत्र आ
यो सो वांचिके मन में संताप भयो काहेतें जद्यपि ग्रहभा
को बड़ो दुख हतो सो दुख तुमारो निवृत्त भयो तुमारे हृद
य में संताप भयो ताकरि हम हू मन में संताप पायो आ
प हू सिक्षा कहत हो सो मन में धारन करियो हरि जो भगवा
न वे सें हैं जद्यपि जीव के दोष को जानत हैं तऊ अपनी
ओर तें जीव पर अनुग्रह ही करत हैं जीव की ओर नाहीं
देखत हैं सिसुपाल श्री हरि की निंदा ही करतो ऐसो
दुष्ट ताहू को गति दीनी इंद्र ने जल वृष्टि करि द्रोह कीयो
तऊ आप प्रसन्न भये ऐसे श्री हरि हैं तातें श्रीकृष्ण ही
को भजन स्मरण आश्रय करतव्य हैं जो सदा ही कृपा
करत हैं अनेक प्रमेय बल तें यही जीव पर अनुग्रह
करत हैं । १ । आगें अब और कहत हैं श्लो । प्रमेय ब
लमासाद्य कि मनाध्यं तदा भवेत् अतः प्रथम दोषा
णां चिंता नैव विधीयतां । याको अर्थ । अब श्री हरि
राइजी कहत हैं जो यह पुष्टिमार्ग में ताके केवल प्रमेय ब
ल ही तें सब कार्य सिद्ध हैं जीव के साधन तें सब कार्य
सिद्ध होत नाहीं और जीव कहा ताइ साधन करेंगो ता
तें जीव तो परम दोषवंत है सो अपने दोष की चिंता क

तो।याकेसाधननेसोयहूरिहैं।नाहीहोइसकत।तातेंद
।चिंताक्योंकरतहौ।श्रीमहाप्रभुजीकहेहैंजो।जीवोस्व
ावनोदुष्ट।जीवनोस्वभावतेदुष्टहै निश्चय परंतुअ
निमनमेंतेअज्ञानकरिअंतसजाननतेंऐसेहूपरमदी
ावंतहो।सोदेयकीचिंतानाहीकरनो।सोतातेंचिंताकी
यकहासिद्धहै।चिंताबाध्यकोनभांतिहै।सोअबश्री
आगेकहतहैं श्लोक।।संजातभगवद्भावेमप्पयमिव
तमुणा।लौकिकनिंदाभवदुखनधनव्याहिमानसोथ्या
।व्यथो।लौकिकचिंतातेंभगवद्भावनासहोतहैं।सोअब
।कोदृष्टांतकहतहैंजेसेंसुंदरऔषधखाया।ताकेऊपरअ
।थ्यकरेंखाटोखारोखाय।याभांतिकुपथ्यकरेतोविनाप
ठहैऔषधकोगुणजाय।औरोगबढें।सोतेसेंमनमें
।भुभगवद्भावहोइसुमरनभजनसुंदरऔषधकीना
।करि।तामेंयहलौकिकचिंतादिकुपथ्यकरेतोभगवद्
भावउलटोजाय।सोतातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनव
रत्नग्रंथमेंचिंतानिवृत्तकरीहै।चिंताकापिनकार्यानि
निवेदितात्मभिकदापि।निवेदनजोजीवनकीयेहैंतिन
निश्चयहीचिंतानाहीकरनचाहे।औरयहलौकि
जीवबुद्धिनेनिंदाकरतहैं।सोकुमहादुखरूपहै।सो
हीधरनी।काहेतेंजोलौकिकमेंजीवबुद्धि
रतहैं।सोकुमहादुखरूपहै।सोअपनेमनमें
।काहेतेंजोलौकिकमेंअनेकभांतिकीजी
नकरियेंतो।भगवद्भावजाय।ता
हैं
हीउचितहै।सोश्रीभागवतमेंकहेहैं
तेंनि
सोलोकवेद छांडिकेंप्रभुकोभजन
मातापिताकीयो।सोनधारनकी
निंदा
ध
नातें किनिंदाभावदीयको
त

प. यो सो तातें लौकिक निंदा भगवदीकों सहनो यह परम धर्म है
१ आगें और श्लोक कहत हैं श्लो॰ अग्रेतु सावधा नित्य विधे
य सर्वथा पुनः दुःसंगा महा दोषा नाम त्यंत्तं वतन तृण
त् ४ या॰ अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो श्रीगोपे
श्वरजी सों आगें और सावधान रहियो सर्वथा सो काहेते
जो दुःसंग महा बाधक महा दोष है जो जन्मनसनें भगव
द्भाव कों छिन एक ठोर नाहीं करे सो रक्षण में होत या तें ख
रा रे भाव कों नास दुःसंगतें होत सो श्री भागवत पुराण
में कहे हैं और बडे बडे भगवदीय दुःसंगतें गिरे हैं तातें
महा दुःसंगतें निश्चय त्याग करिवे में सावधान रहियो इतनी
इनारी बात सर्वथा हृदय में धारन करियो जो दुःसंगतें
बचे रहियो सर्व भाव को लरण में नास करतो है ४ आगें और
वखो श्लोक कहत हैं श्लो॰ स्वसजन हृता निंदा तुष्टैसत्व
विनिश्चयात् यत्तदेवान्तरा चैतसतएवहि सर्वथा ५
या॰ अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो अपने सजन जो ग
वैष्णव तथा अन्य मार्गीय तथा बहिर्मुख जो निंदा करे तो
उनकी निंदा सुनिकें मन में दुःख मति पाइयो मन में प्रस
न संतुष्ट पाइयो जो ये निश्चय सत्य ही कहत हैं में तो दो
षवंता निश्चय ही हों या भांति मन में ज्ञान करि विचारि
निंदा सहनी सो या तें जो संतजन जे हैं सो उनके दुष्टनकी
बानी में सर्वथा रुचि नाहीं राखत जो जैसें प्रल्हादजी
साहजीयो नाम में प्रल्हादजी को कछु बिगार्यो नाहीं
इसाते नस्य को प्रभु मार्यो सो जातें संत जो हैं सो दुष्टन
की वानी में सर्वथा मन न हीं राखत ५ आगें और श्लो
क कहत हैं श्लो॰ मार्ग विश्वास रहिता पूर्व दोष के दृष्ट
याः यतो नामैव हि हरेः सर्व दोष निवर्तकः ६ या॰ अ
अब कहत हैं जो बहुत दुष्ट वैष्णव हैं जो यह पुष्टिमार्ग में
विश्वास करि रहित हैं सो काहे तें जो पूर्व जन्म में दोष

ही देखत हैं। सो यह जाननें। तथा मार्ग में सगरे प्रकार हैं त
उ प्रथम की दुष्टता ही जातें दोष ही देखन हैं। पुष्टिमार्ग को
प्रकार सगरे जगत में प्रसिद्ध हैं। सो देखत हैं तऊ अपनी कु
टिलता नाहीं छोडत हैं सो काहे तें जो पूर्व जन्म में वैष्ण
व रहे हैं। तातें मार्ग में उनको विश्वास नाहीं है। यातें दुष्ट हैं ता
तें दुष्टता प्रगट करत हैं। या भांति जाननो। और भगवान को
नाम साधुजन में हरि सो हैं जाको नाम लेत मात्र सर्व दोष
दूरि होत हैं। सो षष्ठ स्कंध श्रीभागवत में कहे हैं। श्लोक॥ अ
ज्ञानादथवा ज्ञानादुत्तमश्लोकनाम यत्। संकीर्तितमघं पुं
सो दहेदेधो यथानलः॥१॥ सांकेत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेल
नमेव वा। वैकुंठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः॥ नामोच्चा
रणमात्रात्य हरेर्यस्याति पुत्रके॥ अजामिलोपि येनैव मृ
त्युपाशादमुच्यत॥ अत्र स्मर्थैं शृण्वा कं मे नत्र तंत्र न्
क्षिद्रं देशकालार्हवस्तुनः सर्वं करोति निःक्षिद्रं नामसं
कीर्तनं तव॥ अलिव्रभापापामनुव्यछुतनार्थो नृपनिश्चि
ते स्मरंति स्मरयति ये हरेर्नाम कलौ युगे॥ हास्तसंध
मुक्तवाक्य कलेर्दोषनिधे राजन्नस्ति ह्येको महान्गुण
न् कीर्तनादेव कृष्णस्य मुक्तबंधः परं व्रजेत्॥ अवलहा
पितृ रागोघ्नो मात्रहा याह हास्य दानात् आदेः पुष्पसंको
वापि शुद्ध्येरन् यस्य कीर्तनात्॥७॥ इत्यादि ठोर ठोर नाम को
माहात्म्य है। तातें सहज ही में भगवद्नाम मुख तें अनजा
नें निकसि जाय तो उहू नाम सर्व दोष दूरि करत हैं। तातें
हरि भगवान को नाम है ता हू तें अधिक श्रेष्ठ हरि नाम है
सो आगे कहत हैं। श्लोक॥ तथापि श्रीमदाचार्य वदनो
ब्जनिःसृता। तन्नामासिन मार्गस्य सर्वसंपादनात्मकम्॥९॥
पायोऽर्थः॥ जद्यपि श्रीभगवन्नाम सर्व दु दाता है
संसार दुखन छोडावे। ता हू सौं पहु° हरिनाम
रणे ममः॥ यह नाम श्रीआचार्य

।· दमलीला विकस्यो है सो पुष्टिमार्ग में स्थित किये हैं काहेतें य
ह पुष्टिमार्ग है श्रीआचार्यजी महाप्रभून द्वारा नाम प्रगट भयो
तिनसों सर्वसिद्धि होयगी सो श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति में कहे
हैं श्लोक॥ यदुक्तं तातचरणैः श्रीकृष्णः शरणं मम॥ ततो नाप्यस्ति
नैश्चित्यं मे हि ऐहिक पारलौकिके॥ १ इत्यादि के वचनके भाव सों पु
ष्टिमार्ग में निवेदन करे यह सर्वसिद्धि कराइवे में समर्थ है
यातें ग्रंथ आरंभ कहत हैं श्लोक॥ ततो निवेदने संबंध सर्व
दोष निवर्तक॥ निर्दोषानंदरूपे वा दोषभाव प्रसाधिकं
... उपाक है नाममें सर्वदोष नाशकै नहे तो
ब्रह्मसंबंध जा जीवको होय तिनके सर्वदोष नाश होय यष
हरचि नहीं है सर्वदोष निवर्तक समर्थ तो ब्रह्मसंबंध ही
जीवको दोष निवारण प्रभु करी नीहे सो सिद्धांतरहस्य में श्री
आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं श्लोक॥ ब्रह्मसंबंधकरणा
त् सर्वेषां देहजीवयोः सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचवि
धाः स्मृताः॥ २ इत्यादि वचन सों जाननो जो ब्रह्मसंबंध
श्रीआचार्यजी द्वारा जीवको भयो तिनके सब कलेश
दूरि भये काहेतें भगवान निर्दोष हैं सो भगवानकी
सेवा के जीव निर्दोष होइ ताकों अंगीकार होय तातें ब्र
ह्मसंबंध महाप्रभूजी कराय अपने जीवनको निर्दोष
कीये पाछे सेवा में लगाये सो भगवत्सेवा कैसी है जो जा
में दोष रहे नाहीं निर्दोष आनंदरूप है सगरे दोष प्रति
बंध तिनको नाश ही करतो है सो काहे तें जो दोषनको सब
ब्रह्मसंबंध तें नाश भये पाछे सेवा करे ते प्रभुकी लीला
प्राप्त में प्रतिबंधक रूप दोष सो सब भगवत्सेवा तें दूर हो
य स्वरूपानंद को अनुभव होइ यह भाव हिये धारिके
ब्रह्मसंबंध और भगवत्सेवा करे इत्यागे ग्रंथ आर
भ करत हैं श्लोक॥ गुनगानं तु सर्वेषां दोषाणां विनि
गुणगान ज्ञानमार्गी दुष्टबुद्धेः प्रणाशिनः॥ २

याको अर्थ॥ अब श्रीहरिराईजी कहत हैं।जो भगवद्गुन
नहैं।सो सगरे दोषको निवृत्त है।तामें दोय प्रकारको
गानहै।एक पुष्टिमारगीय जेमें गुनगान एक मर्यादामार
गीय जेमें गुनगान एक मर्यादामारगीय गुनगानसों होत है भे
द कहत हैं जो पुष्टिमारगीय जेसे बहुत भक्त गुनगान गावत
हैं श्रीठाकुरजीके संयोगमें सेवा रसानुभव करत हैं।और श्री
पश्रीठाकुरजी गोचारनको पधारत हैं।सो नवविरहकौ गु
नगान वेणुगीत युगलगीत गायगाय संध्यापर्यंत विता
वनहैं।पाछे श्रीठाकुरजी संध्यासमय पधारि व्रजभक्तन
केविरह दूरि किये सकल मनोरथ पूरन करत हैं।सो तैसें
ही श्रीआचार्यजी महाप्रभुके पुष्टिमार्गमें विरहके गुन
गान विप्रयोगकी भावना यह पुष्टिमार्गमें या भांति गुन
गान संयोग विप्रयोगकी दोऊ रसको अनुभव।और
मर्यादा ज्ञानमार्गमें केवल गुनगान ही करत हैं नहीं
सेवा नाही है।आगें अब औरहू कहत हैं सोऊ॥ ज्ञान
सकृत्तेषाणां दाहकं पापकीर्तितं तथापि नः प्रमोऽपि
नुभावेयम्प्रतिबंधकं॥२०॥ याको अर्थ॥ ज्ञानमार्गमें गु
नगानके सो है।नो सकल क्लेश पाप संहारके है।सो भस्म होय
नहै।पाछे निविड स्वरूप हर्ता मोक्षकी प्राप्ति होइ तो
नमार्गके गुनगानतें प्रभुको प्रादुर्भाव स्वरूपानंदको
अनुभव होइ प्रभु प्रगट होइके दरसन नदेहिं।तातें गुनगा
ज्ञानमार्गको है।सो भक्तिमार्गमें प्रतिबंधरूप है।सो बाढे
प्रभुको दरसन नाहीं होत।तासों अनुभव नाहीं स्वरू
पको अनुभव नाहीं है।तातें ज्ञान भक्तिको प्रतिबंधक ही
नो।सो श्रीहरिराइजी श्रीगोपेश्वरजीको वरजत हैं जो
ज्ञानमार्गकी नाई गुनगान ही मुख्य मति जानियो।सो
मार्गमें करत हो।श्लोक॥ तन्निवृत्तयेतु श्रीकृष्णमनोन्मने
यता।ततः स्वाचार्यसान्निध्यं
दायकं॥२१॥

सि.प्र.या. अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो ता ज्ञान तुम मा
६३ करियो अपने भगवत्सेवा ही मुख्य है यह ज्ञान तो काहे
यह ज्ञान भक्ति मार्ग यह पुष्टिमार्ग में संन्यास है या भांति श्री
चार्यजी महाप्रभु निरूपण कीयो है संन्यास निर्णय में कहे हैं
जो ज्ञान तें मुक्ति मार्ग में सिद्धि जन्म संतति परं सो जन्म तें र
न मार्ग को साधन सिद्धि होइ प्रतिबंधन होइ तब ब्रह्म लावे
लोक जाय पाछें जब ब्रह्म को लय होय तब याहू को मो
क्ष होय तातें ज्ञान मार्ग सों यह जीव भक्ति तें न्यारो है तातें तुम
पुष्टिमार्ग की रीति में तत्पर रहियो श्री आचार्यजी मह
प्रभु को यह पुष्टिमार्ग है सो है एक तरफ श्री आचार्यजी
महाप्रभु को सानिध्य होइ तो एक क्षण में भगवद्भाव को
ज्ञान करें स्वरूपानंद को अनुभव होइ तातें सर्वोपरि प
रम भगवत्सेवा पुष्टिमार्ग में है जामें भगवद्रस को अनु
भव होइ यह भाव विचारि कें श्री आचार्यजी महाप्रभु जा
रीति सों सेवा में प्रगट करे हैं ता भांति करियो श्री आचा
र्यजी महाप्रभु भाव करावत करेंगे यह निश्चय सर्वोपरि सि
द्धांत है ॥१॥ आगे अब और कहत हैं श्री ... तहिरह
... ता पाना क्रम सों वे हरसंभवा ते तन अंतर भाव स्वभाव
ते बलि रूप ... पुष्टिमार्ग को जो मन
लगाय कें भगवत्सेवा करेंगे तो तो श्रीहरि स्वकीय स्व
की ताप क्लेश क्रम सों बढे या भांति जब अधिक ताप हो
य ता काल में सगरो दोष भाग करि तें दूरि होय जाय
तब देह सिद्ध होय देह ... पाछें ताको अंतरभा
व सिद्ध होय भाव जब हृदय में सिद्ध होय सो तब हृदभ
न के भाव की भावना करे जा को मानसी सेवा करत हैं
सर्वोपरि सो व्रजभक्तन को भाव के सो है अग्निरूप है
भाव अग्निरूप हृदय में होय तब जानिये जो श्री आचा
जी महाप्रभु हृदय में पधारे भाव अग्निरूप श्री आचा

यैजीमहाप्रभुहैं।१आगेंअवऔरहूकहतहैं।श्लोक।रु
रोनसोयसंगास्येनास्येत्सर्वथामतं।।तवंभूतेष्विसमार्गे
मूलेयेषामभावतः।१याकोअर्थपुष्टिमार्गीयवैष्णवको
एकलाएंहूदुःसंगहोयकोसंगहोयतोताएमेंभावकोना
सहोयजाय।श्रीआचार्यजीहूस्थलेपधारेहैं।मोरस्वामीकी
स्त्रीकोसंवकेअन्याश्रयभयो।तोश्रीआचार्यजीअप्रसन्न
भए।।तातेंअन्यसंबंधगंधोपीकेधरामेंबाधते।।याभांति
दुःसंगतेभावजाय।१सोपुष्टिमार्गहैं।तथायेंहूअर्थहैंजो
रेयवकहूभावआश्रितकोहृदयमेंसंगहोइतोएकलएमेंसंग
रेदोषकोसर्वथानासकरे।याभांतिपुष्टिमार्गसर्वोपरि है
यहपुष्टिमार्गकोमतहै।।एसेव्रजभक्तनकेभावात्मकयहपुष्टि
मार्गमेंभक्तजोप्राणीस्थितिहैंतिनकोजोकोईन्यूनकहते
हैं।निंदाकरतहैं।तिनकेवडेअभाग्यहैं।।अथवापुष्टिमा
र्गमेंस्थितजीवहोइकेंऔरपुष्टिमार्गन्यूनजानतहैंतिन
कोमहाअभागपरें।इनकोपुष्टिमार्गीयफलनाहींसिद्ध
होनहारहै।१आगेंअबऔरहूकहतहैं।श्लोक।अवि
श्वासतनःस्तेषांनगतिःकापिविद्यते।अतःस्वयंश्रुति
पक्षाभावहरिसमागतं।।१४।याकोअर्थ।ताजीवकोअ
विश्वासयहपुष्टिमार्गमेंहैंताकोकल्याननाहींहैकोऊजी
वहोउअविश्वासस्वकोबाधकहै सोअविश्वासस्वको
बाधकहै।तोअविश्वासकैसेहोय।तहांकहतहैं।जोअवि
श्वासकेकारनहैं।याभांतिअविश्वासहोतहै।एकअपने
मनमेंस्वयंकल्पितविचारि।२जोयहमार्गमेंतोकछुमो
कोसिद्धिनाहींदीसत एकतोयहहै।२दूसरोकारनअन्यमार्गी
यकेसमार्गीयमर्यादामार्गीयतेंश्रुतिवेंकाहेतेंअन्यमा
र्गीयमर्यादामार्गीयतेंश्रुतिवेंकाहेतेंअन्यमार्गीयहू
यहपुष्टिमार्गकोउत्कर्षनाहींदेखिसकतहैं।तातेंउनको
हूसोमहाबाधकहै।।इनकेसुखतेंमार्गकीनिंदासुनिकें

अविस्वास जीवको होइ यह दूसरो कारन २ तथा पुष्टिमार्गको
फलस्वरूप है सो भाग्यमें न होइ जीव ही भीतर प्रवाही है
इ मर्यादामारगीय होइ पुष्टि न होइ तो वह कहा ते पावे वा
कों अविस्वास ही होय यह तीसरो कारन ३ तथा हृदयमे
नेअनेक भांतिके विषयकी तरंग लौकिक वैदिककी प्र
नो पुष्टिमार्गमते विश्वास छुटि जाय और ही क्रियाकरन
लागे यह चतुर्थ प्रकार ४ तथा काहू वहमुख्य भागमते
दुःसंगते होइ तो अविश्वास होइ ताको पुष्टिमार्गको फल
सर्वथा न होइ ५ आगे अब और हू कहत है श्लो० तद्
बहिर्मुख स्याप्य सर्वथा जीवनाबधिः ना... वचनाचा
रमा बुद्धिरापातसुंदरात् १५ या ... उपर कहे इत्यादि
दोषते अविश्वास हृदयमे दृढ होइ जाय ताकरिके सर्वथा
बुद्धि जीवको वाधक ही करे जैसे जल अग्निको नास ही करे
तैसे दुःसंगादोष भावके वाधक है अरु जीव अज्ञानी जी
वके वचन चातुरी ते बुद्धि जो पंडित भगवदीय बुद्धि सुंदर है
सो बहिर्मुखके आगे न चले सो कहत है जो पंडित भगवदी
य मर्यादा सों वेद शास्त्र न बोले सील स्वभाव संयुक्त यो
... जीव अज्ञान करि निंदा रूप वचन मन होय तैसे
ही बिना मर्यादा बोले ताको अच्छो ज्ञान करे तो ते अज्ञा
नीके संगवाद सर्वथा ही नाही करनो यह १५ आगे अब
और हू कहत है श्लो० सत्व निश्चयन संगः साधको न
हि संसयात् यत्र वे विपरीतं वहति सत्र भ्रमं व्रजेत् १६
या ... नाते यह निश्चय मनमे जाननो जो याभी वको
सत्संग ही भगवद्धर्मको साधक है यामे संसय नाही सो
श्रीभागवत प्रथमस्कंधमे सोनक वाक्य तुल्लयाम लवे
नापि न स्वर्गं न पुनर्भवं भगवत्संगी संगस्य मर्त्यानां कि
मुताशिषः श्लोक ऐसे भगवद्वाक्य न रोधयति मां योगो
न सांख्यं धर्म उद्धवः न स्वाध्याय स्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न

दक्षिणा॥व्रतानियज्ञछंदांसितीर्थानिनियमायमा
थावरुंधेसत्संगस्सर्वसंगापहोहिमां॥४॥इत्यादिवच
तैंजाननौं।जोसत्संगहीबडोजीवकोसाधकहै।तातेंय
ह्वैस्रवपुष्टिमार्गीयहैं।सोयहनिश्चयसत्संगहैकरो।
औरपुष्टिमार्गतेविपरीतिहैं।तिनजीवनकोसंगजोअन्य
मारगीयतिनकेसंगतेंवैष्णवकों।निश्चयभ्रमहोइता
तैंयहविचारकरिकैपुष्टिमार्गतेंविपरीतिहैंतिनकेना
वैष्णवहोयतोवाहूकोसंगसर्वथानकरो।औरअन्यमा
रगीयकोसत्ताहूंसंगनकरें।४।आपश्रीअवक्यौरहूंवस्तहैं
श्लोक॥नत्रभ्रातोपरमहासत्संगःखलुवाधिकः।अत
सत्संगसहितत्तिष्ठोत्सर्वत्रसर्वदा॥२७॥याकोअर्थ।जेजी
वभ्रातहैं।यापुष्टिमार्गमेंविश्वासकरिरहिनहैं।सोम
हामदथज्ञानीहैं।इनकोरवनकहियेदुष्टरीजानियें
उनकोसंगमहाबाधकहै।तातेंयहवैष्णवनहोजाइ
नहांस्वौरपुष्टिमारगीयकेसंगास्थितिमहारहेंसो
नवहींदुसंगतेंबचै।तातेंसर्वथासत्संगमेंरहें।ताहीतें
नवरत्नग्रंथमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं।निवेदनं
स्मर्तव्यंसर्वथातादृशैर्जनैः।यहनिवेदनकोस्मरण
सर्वदातादृशीसोंमिलिकैंकरें।सोतातेंसत्संगहै
भावरूहिकरतेंहैं।तातेंनित्यपुष्टिमारगीयभगवदीयसों
गवसनो।आगेंअबऔरहूंकहतहैं।श्लोक॥सेवाकृत्य
सदाचाराधर्ममार्गीस्थितेपिचाअदिरहवचोवंतपवि
वैचौवैंकोगतिप्रियाः।२८।याकोअर्थ॥अबश्रीहरि
जीकहतहैं।जोपुष्टिमार्गीयवैष्णवयाभांतिरहें।नि
नश्रीआचार्यजीमहाप्रभुद्वाराकरिपाछेंभगवद
करेंपुष्टिमार्गकीरीतिसोंआचारसहित।का ते
शास्त्रमेंकहेहैं।आचारःप्रथमोधर्मोआचार
वकोप्रथमधर्महै।तातेंआचारवि

सामर्थ्य है जैसे वाघ्री खरचु मरखंडी नृठनको सानरा खे धर्म
में लगि रहै तथा स्वधर्म राखे अपने तनने नहीं तोऊ अख
को सी लिये स्वधर्म राखिये और पापाचरण करे पुष्टिमा
र्गमें अविरुद्ध वचन है और जो कोऊ पुष्टिमार्ग सो अवि
रुद्ध सुंदर सिद्धांत है ताकों मानि लेइ अविरुद्ध यामा
र्ग रीति की सेवा है सो मन में धरि यजानें १८ आगे अ
व और कहत हैं श्लो० स्वाचार्यमार्गवाक्येषु नि
सतनः भावुकः नदीयजनसंसर्ग सर्वसंगविवर्जितः
१९ या श्लोक को अर्थ अपने श्रीवल्लभाचार्यजी के वचन प
र निरंतर नेश्च राखे श्रीआचार्यजी महाप्रभु के किये ग्रं
थ श्रीसुबोधनीजी निबंधादिक रातन्मार्गीय ग्रंथ के व
हने ताहीके नेश्च राखे जो जो क्रिया भाव कहे ताहीमें
मन लगाइ के करे ताहीमें तिरहनों और जो भगवदी
य श्रीआचार्यजी महाप्रभु के वचन अनुसार चलत हैं
श्रीआचार्यजी महाप्रभु के वचनन में जिनकी प्रीति है
ऐसे भगवदीय भाव करि भावित हैं तिनही को संग करे औ
र सबके त्याग करे जो एसे पुष्टिमार्गीय भगवदीय मिले
तो संग करे नाही तो सबसे सो छांडि के भगवत्सेवा स्मर
णमार्ग रीति प्रमान करे परंतु अन्यको संग सर्वथा नहीं न
करे या भांति वे स्मरण रहे तो पुष्टिमार्गको फल श्रीआचार्य
जी महाप्रभुकी कृपातें पावे यह सिद्धांत भयो १९
श्री ... कृ ... सि ... प ... वि ... ता ... टी ... श्री पे
... भा ... मे ... पृ ... २० अब कछू परकहत सो ताप्र
कार वे स्मरण रहै तो फल सिद्ध होइ सो यह कलिकाल दो
षतें भक्तिमार्ग को भाव और सत्संग तिरोभूत है याको दे
से फल होइ सो आगे सिलापत्र में कहत श्लो० भ
क्तिमार्गस्तिरोभूतस्तथा संगः सनातन गौ
थिल्यं नदभावे रविलवृया १ या

रिराइजीकहतहैं।जोभक्तिमार्गयहकालमहाकठिनतें
रोभूतभयोहै।औरपुष्टिमार्गीयभगवदीयदोसाहूति
भूतहैनाहीमिलततोनाकारिकैंपुष्टिमार्गकोभाव ह्रसि
थलभयोहैसोभावविनासबवृथाकाहेतें यहपुष्टिमा
र्गमेंसगरोभावहीहैंभावात्मकहीहैं सोभावजोपुष्टिमार
गीयमेंस्थितिहोय।भगवदीयकोसंगहोयतबहीजाने
अन्यथाकैसेजानैं।आहितो।भक्तिमार्गमेंवल्लभप्रभुकोसु
खअष्टप्रहरविचारैं।अपनोदेहसंबंधीसुखसोंकहन
विचारियाभांतिसेवाकरैं।सोदुःखसोंनाकरिभावसिथि
लहोगयोहै।तातेंभावविनासबवृथाहै।यामार्गअक्या
सं० कहतहैं।श्लो।वभक्तिमार्गीयनाभावक्रियामात्रेहि
कर्मवनात्।तत्रापिनमनःस्थैर्यंविक्षेपाद्यवहारतः।याको
अर्थ भक्तिमार्गकीरीतियहजोअष्टप्रहरभावमेंरहैं सोतो
कहींनामभक्तिमार्गकोलीयेंपरंतुक्रियावर्त्तकमेवत जे
सेवकमेंमारगीयकर्मकरैंतहांताइतोप्रयोजनपाछुकछु
नाहीभगवत्सेवामेंसंयोगकोसुखभयो।नअनेसमें
विप्रयोगभयो।तातेंक्रियावत्तमएयनहैं।सोक्रियावत्
हमनलगाइकेनाहीं।तहांसेवामेंहमनराकाग्रहनाहीं
यनेकभांतिकेविक्षेपमनमेंहोतहैं।नानाभांतिकेअव
एवतरागमनमेंउठतहै।नाकरिमनथिरनाहीं।विक्षेपपा
नतेंसोक्रियावत्हूभगवत्सेवानाहीवनेनसोशास्त्रा
थवओरहूकहतहैं।श्लोक हारोप्यसिद्धेंद्वि
मस्लोभकोमतः तस्माद्वेतुगा
हुयाकोअर्थ॥अवश्री प्रकारसें
सवामेंविवहारको।
है।अंतःकमनमेंओर
नातहै।तवभावग्रहस्थको
विसेवकरातातेंयहपु

प.२ जीवनुध्यहकालनहाकठिनहैं सेवाकरनमेंवह्नहायके
अशरणास्वतः अपनेकालहोयनतेहोय. सोअवहूअरवातीप
रेनसिद्धिहोइ तवधीरजकेसेरहे आतिहीदुखमनमेंपावें
तवमनमेंभगवदभावलोकिकचिंतातेकैसेरहे औरयह
स्याश्रममेंसबहीमाथेहै लोकिकवैदिकसोकरनो कुटुंब
कोभरणपोषणइत्यादिकेसेंभगवत्सेवाकरें मनमेंतोचिं
तानेंआइग्रस्योहै तहांकोउकहेजोअवहारमानिकरो प्रभु
तोसर्वसामर्थ्यमानहैं लौकिकवैदिकसर्वकार्यसिद्धकरेंगे
तुमभगवत्सेवाकरो मनलगाइके याभांतिकोउकहेत
हांकहतहैं ३ श्लो॰ [illegible] अन्यभावपदस्तुविद्धिरात्रौ सु
दुर्लभः बुद्धिरात्नातुसततंनिवेदनविचिन्तनैः ४ या
[illegible] अर्थ श्रीहरिरायजीकहतहैं जोचाहततोआश्र
मावकेसेंकरें जद्यपिअन्याश्रयहोय भगवत्सेवाकरेंसो
तोसर्वोपरहै परन्तुरासीतन्मेंनाहीहै पूर्णविश्वासप्रभु
कोसोतोदुर्लभहै याभांतियाकालमें तोहै विनापूर्ण
विश्वासअन्याश्रयहोयतो वहुतहीदुखपावें श्रीयहु
जीमेंदोषबुद्धिहोयजाय जोसाइनकेआश्रयसेवाकर
तहैं मेरोलोकिकहूनाहीसिद्धहोतहै याभांतिहोइ
तोअर्थहोय दासभावजातरहै तातें [illegible] वैसेहो
४ एसीतीव्रबुद्धिजनमनमेंहोहै विश्वासपूर्णसोदुर्लभ
है तहांकोउकहे जोबुद्धिजनमें होयपूर्णविश्वासजोभांति
होइसोइकार्यकरो तहांश्रीहरिरायजीकहतहैं जोबुद्धि
प्रबलजनमेंविश्वासपूर्णतोनहोय तवानिवेदनकूं
चिंतनअष्टप्रहरकरे अशरणमंसरणकीभावनाकरे
पाछेजोसोकामें कहा निवेदनकीयोहै अवकेसीक्रिया
करतहैं कितनेकदिनभयोसो अवश्रीआचार्यजीम
हाप्रभुद्वारासंबंधभयोहै प्रभुकेसेहैंजीवकेसोहैजी
वकोकोनप्रकारदासत्वकरनीहैं याभांतिपंचोतर

मेंएकाग्रमुद्रीगति।याभांतिनिवेदनकौंचिंतनहोइतोबुद्धि
प्रबलहोइतोतबविश्वासदृढहोइ।तबकोईकहैजोंनिवे
दनकौंचिंतनप्रथमकरो।पाछेंभगवत्सेवाकोविचारकरि
यें।याभांतिकोईकहैंतहांकहतहैंश्लोक।।तत्रापिसहभा
वस्तु सतामेवनिरूपितः।सहदुर्लभोदुरगाम्यनततोबुद्धिमत्ता
दृश्ता।।५।।याकोअर्थ।।अबश्रीहरिराइजीकहतहैं।निवेद
नकौंचिंतनअरुपुनिबुद्धिनेनाहीहोयसकतहै।सोनव
रत्नग्रंथमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभु निरूपणकीयेहैं।।
निवेदनंतुस्मर्तव्यंसर्वथाताद्रशैर्जनैः।तातेंनिवेदनको
चिंतनभावसहितताद्रसीपुष्टिमार्गीयभगवदीयसोंमि
लिकें करो।तबभावसिद्धहोइ।तहांकोईकहैजोंभगवदी
यसों मिलिकें चिंतनप्रथमकरिलेहुं।तहांश्रीहरिराइजी
कहतहैं।जोपुष्टिमार्गीयभगवदीयतोमिलनेबहुतही
दुर्लभहैं।कहूंहैसोदूरिहैं।तिनकोसंगकोनभांतिसोंहो
इ।उनभगवदीयकेसंगबिनाताद्रसीबुद्धिकैसेंहोइ।याही।।
यातेंअबश्रीहरिकहतहैं।श्लो०॥स्थितापिदृश्यतेनि
त्यपोषकाभावतोमम।खिन्नत्वंजायतेचित्तवार्ताप्यव
तांतोऽन्यथा॥६॥याकोअर्थ।।अबश्रीहरिराइजीकहतहैंजो
औरभावकहेसोतोपरमदुर्लभहैं।कछुकभावआगेंतेंहृ
दयमेंस्थितहैं।सोऊछिन्नहोतहैं।दिनदिनघटतजातहै
काहेतेंपोषणभावहैं भगवदीयकोमिलापहोइतोभा
वकोपोषणहोइ।भावबढेबिनासत्संगभावस्थिरन
होतहैं।तहांकोऊकहैजोजितनोभावहैतितनेकोचिं
तनकरो।भावतोरंचकहूहोइतोंसर्वकार्यसिद्धहोइ।तहां
श्रीहरिराइजीकहतहैं।जोमेंचिंतनकौनभांतिकरूं।लौ
किकमनुष्यनकोसंग।याहीबन्योहै।सोज्योंलौकिकवार्ताअ

प.को सहीं भांति स्मरण करि भाव को राखें ओर अहर्निशं अन्यवा
र्ता अन्य श्रवण में रे कर्ण में होत हैं ताकरिकें हृदय तें भा
व सिथल होय जात हैं सो मेंकिन सोंक हूँ मन में खेद होत हैं
है आगें अब योरहूँ कहत हैं श्लो ॥ श्रुतानमप्रकाराश्च
भगवान् मानसा आपि अस्मदीया लौकिके सुप्रतिष्ठा
मात्रसाधका ७ या को अ र्थ याभांति में अपने मन में दु
खी हों भगवद् भाव दिन दिन सिथल होत हैं ओर में अ
पने श्रवण में उत्तम प्रकार अपनी वडाई सुनत हों को इतो
भगवान कहत हैं कोई कहत है अष्टप्रहर हून को मन भग
वान में ही लगो रहत हैं इत्यादि अनेक वडाई में अपनी स
ति में सुन्यत हों ताकरिकें कहा सिद्ध है एसो जो में लौकि
क में वडी प्रतिष्ठा भई है सो प्रतिष्ठामात्र यही साधक भई
लौकिक में यह फल ओर तो मो को कछु ही सत्त नाही यह
प्रतिष्ठा तो भगवद्भाव में वाधक है ७ सो अब याकों नि
रूपण करत हैं श्लो ॥ चित्तस्थैर्यप्रवृत्ती व्यादेहवैक
ल्ये: भगवन्मार्गनिष्ठा तु लौकनेष्ठा विरोधिनी ८ या
को अ र्थ श्री हरिराइजी कहत हैं जो यह चित्त भग
वान के चरणारविंद में न लगो ओर यह मनुष्यदेह ई
ही भगवान में विनियोग भई जो तहँ देह वृथा ही जात
है सो जव वृथा जात है जो रामी देह उत्तम भगवद् का
र्य में विनियोग भई सो श्री भागवत एकादस स्कंध में राजा
जनक कहे हैं श्लो ॥ दुर्लभो मानुषो देहो देहीनां क्ष
णभंगुर तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुंठप्रियदर्शनं १
ओर प्रह्लादजी कहत हैं कोमार आचरेत् प्राज्ञो ध
र्मान् भागवतानिह दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवम
र्थदं २ इत्यादि वचन सों जान्यो जात है जो मनुष्य देह
दुर्लभ है क्षण में याको नास है ताते भगवान को
ह सेवा यह परम दुर्लभ है सो वने तो आछो य

हरीमारअवस्थाभगवद्धर्मकरणयोग्यहैंताणमेंनार
होयजाय।तातेंभगवद्विनियोगविनाहैंयोवनसर्वदे
थाहीहैं।ओरभगवन्मार्गकीनेष्ठाहैं।सोलोकनेथावि
रोधिनीहैं।काहेतेंअपनीवडाईसुनिकेआनंदभयो।वडोम
नैसोभगवानकोवुरीलागेमदहोइतोभगवानहृदयमेतेजा
तरहैं।तातेंयहलोकनकीवडाईहैंसोभगवद्धर्मकीविरो
धिनीहैं।निश्चयोस्ति।यागेअवश्योरहूकहनहैं।श्लोक।संसा
रवैरीक्लिष्टोक्षिमूढतेनातुपेक्षते कालएनामपिहरत्यसो
मंप्रतिसन्मार्गोधीयाको अर्थ।संसारवैरीयहतोश्रीकृष्ण
कोनामहैं।जहांश्रीकृष्णहृदयमेंआवें।तहांसंसारनासक
रें।निश्चय।वासोक्लिष्टकहेंइसंबंधीनवेसोयहजीवम
ध्यज्ञानीहैं।श्रीकृष्णकोचाहतहैं।ओरसंसारहूकीअपेक्षा
करतहैंसंसारहोइगोतहांतोश्रीकृष्णकहां।जवश्रीह
ष्णपावेंगे।तवसंसारकहां।सोयहकारनहोयतप्रभु
कोज्ञाननाहीहोतहैं।एसोकालकठिनआयोहैं।सोस
त्याणीकीस्मृतिजोबुद्धिताहूकोहरलीणी।सोनातेवार
वारसंसारकीअपेक्षाचाहतहैं।जद्यपिसंसारीकोतुछ
जाननतें।भगवानकेगुणहूसंसारनासकयहूजानतहैं
कुयहकालकरिवुद्धिहीनहैं।अज्ञानहैं।सत्पुरुषन
ीहि।आगेअवश्योरहूकहनहैं।श्लोक।कालसोऽथ
राकृतीनसर्गोत्तिसंतानपिचेतःस्थैर्यसावधा
समस्तेमोजवतिभिः।याकोअर्थ।अवश्रीहरि
ीसगरेपुष्टिमारगीमर्यादितिजोवैष्णवहैंतिनको
नाहतहैंजोसावधानरहियो।काहेतेंजोकालदोष
हैंसोयहमहादुष्टहैंसवधर्मनमेंप्रतिबंधकहैं।सो
यहकालकेदोषकोनासनाहींकरिसकतहैं।
काहेतें।सत्संगनाहींमिलतहैं।सोभगवदीयकूं
मिलेतोकालदोषवाधानकरें।सो

सि.प्र.भ. हैं तातें हैं वैष्णव तुम समस्त सावधान रहियो ऐसें
९८ कहियो यह पुष्टिमार्ग सर्वोपरि है तामार्गे तुम स्थिति
होसो दुःसंग तें वचे रहियो यह पुष्टिमार्ग सर्वोपरि है
तामार्ग तुम स्थिति हो सो दुःसंग तें वचे रहियो भग
वदीय को संग करियो और श्री आचार्यजी महाप्रभु
न के चरणकमल को आश्रय अपने चित्त में धरियो
यामें यह निर्णय भयो १८ इति श्री हरिरायजी कृ
त [illegible] सिद्धान्त [illegible] टीका श्री [illegible] संपूर्ण
श्री [illegible] अपरक है जो यह सत्संग विना जीव काल सौ
यह हरिनाली को रसकर्त तातें समस्त पुष्टिमारगीय भ
गवदीय सावधान रहियो काहे तें यह भावात्मक मा
रग है ताको प्रकार आगे कहत हैं श्लोक भावात्मसाध
ने मार्गे प्रमेयं भगवान हि सः प्रमानं कृष्णसेवा हि
सत्फलं च फलं पुनः १ या [illegible] अर्थ यह पुष्टिमार्ग में य
ह प्रमान नाही है जो इतनी सेवा तें फल होइ तव प्र
मेय विचार नाहीं है ताको फल [illegible] न होइ सो श्री कृष्ण की
सेवा है सोई प्रमान है सो फलरूप है ज्ञानमार्ग
में कर्ममार्ग में साधन फल न्यारो न्यारो है फल पारे पा
छे साधन करे सो यह पुष्टिमार्ग में नाही है साधन हू में
श्रीकृष्ण की सेवा फल हू में श्रीकृष्ण की सेवा तातें फल
रूप जानि सेवा करनी है श्रीकृष्ण की सेवा उपरान्त औ
र फल कहा है सो नवम स्कंध में श्री भगवान कहत है म
त्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादि चतुष्टयं नेच्छंति सेवया
पूर्णाः कुतोन्यत् कालविप्लुतं १ ऐसे भक्त मेरी सेवा में
विश्वास करि रहे हैं जो चार प्रकार की मुक्ति हू नाही जानत
सेवा ही करि पूर्ण है तिनको कछु नाहीं वाधक है तातें
प्रमान हू कृष्णसेवा फल हू कृष्णसेवा आगें और श्री
हरि कहत हैं श्लोक तस्मात्सर्वस्य रहो निधिरूपस्तु

सर्वथा पतच्छिद्रं तत्सर्वं ज्ञात्वाज्ञात्वा निवर्तते ॥३॥ याकोअर्थ
थो । तातें निश्छिद्ररूप श्रीकृष्णजो जाननौ । तेसेंही निश्छिद्ररूप
भगवद्भावको जानिजो छिद्र दुःखताते निश्चय रखाकरन
कहेंपर पुष्टिमार्गतेजो विरुद्ध होइसो विचारि विचारि
कें सर्वकोत्यागकरे जो अनुकूलहोय । ताकोसंग्रह अनुकू
लकोत्यागही श्रीआचार्यजी महाप्रभुकी आज्ञाहे । स्वा
गे अवधारहे कहतसें श्लोक ॥ हरौ रसे यथापूर्णे नेह
स्यान्यो विशेषतः । गोष्ठी च तादृशी कार्या ध्रुवमस्मत्प्र
यत्नतः ॥४॥ याकोअर्थ ॥ हरिजो श्रीकृष्ण सर्वदुखकेहर्ता
हे तिनकी सेवा फलरूप जानिकें करनी ॥ सोऊपरकहेंहेंजो
तिनही श्रीकृष्णमें सर्वओरतें मनखेंचिकें इनहीमें विशेष
करिकें लगावें ओर पुष्टिमार्गीय तादृशी वैष्णवहोय तिन
हीसों गोष्ठी अधवलकरिकें करों । इनसोंमिलिकें पुष्टिमार्ग
को भावविचारेतो हृदयमें भगवद्भाव अवचलहोइ ता
तें अवश्य भगवदीयको संगकर्तव्यहें ॥४॥ श्लोक ॥ एत
स्यान्तः स्थितिप्रायसमीचीनां विलोकृतां । नान्यच लौकि
कं चित्ते विचार्यमिदं सर्वथा ॥५॥ याकोअर्थ । भगवदीयसंगगो
ष्ठीमें नित्यकरत करत अंतःकरणमें भावकी सिद्धहोय तब
हृदयमें सदा भगवान स्थितिहें । तिनको दरसनहोय वितो लौ
तवय हृनीवको चित्त लौकिकमें सर्वथा नलगें । नानाप्रकार
के लौकिक विचार मिथ्याध्यान मिथ्याक्रिया मिथ्यावानी
सबनिश्चय छूटिजाय ॥५॥ श्लोक ॥ विशेषस्तु समग्रोपि भंडा
गारिकपत्रतः । विज्ञेयः सर्वथा श्रीग्रलीख्यतो मतदुत्वरैः ॥६॥
याकोअर्थ । विशेषसमाचार भंडारीकेपत्रतें जानोगे । पत्र
वांचि सर्वथा वेगिही प्रतिउत्तर लिखोगे ॥६॥ इतिश्रीहरिरा
इजीकृत द्वितीय शिक्षापत्र ताकी टीका श्रीगोपेश्वरजीकृ
त भाषामें संपूर्ण ॥२॥ अवऊपरकहेंजो भगवदीयसंग
हीकीयेतें हृदयमें भावसिद्धसिद्ध होय ताते

.प. कोदेखेंनवलौकिकविचारमैंचितनजाय परंतुयहचिंताजी
वकोछुटेंतोभावहृदयमेंआवें सोचिंताकोनभांतिछूटें सो
सर्वप्रकारआगेंवर्णनकरतहैं श्लो॰ भवंतःश्रुतिसिद्धां
ताःकथमुह्यंतिलौकिके अलौकिकेबुद्धिनायांविषयाभा
वतोनसा १ या॰ अबश्रीहरिरायजीकहतहैंजो
अपनेछोटेभाईश्रीगोपेश्वरजीसोंकहतहैंजोतुमकेसे
हो श्रुतिजोवेदपुराणस्मृतिसास्त्रश्रीभागवतसर्वके
सिद्धांतकोंजानतहो एसेतुमसोंयहलौकिकमेंमोहको
काहेकोंपावतहो यहतुमकोंउचितनाहीहै अबमेंक
हतहोंजो यहपुष्टिमार्गकोसिद्धांत सोतुमकोंउचितलगा
इवो सुनियो जहांताईलौकिकविषयहृदयमेंतेनाहीजा
तहें तहांताईलौकिकविषयहृदयमेतेनाहीजातहै त
हांताईअलौकिकचिंतानाहीहोत लक्षणामेंलौकि
कचिंताहोतहै जबहृदयतेविषयकोअभावहोइ
तबअलौकिकचिंतहोतहै यहसास्त्रकीरीतिहै याभां
तिकहतहैं सोआपनेपुष्टिमार्गीयकोंलौकिकअ
लौकिकदोउचिंतानाहीकर्तव्यहै सोआगेंकहतहैं श्लो॰
यतःसर्वसमर्थोस्मत्प्रभुःसर्वकरोतिहि पतिर्यन्निजदासा
नांमेहिकपारलौकिकं २ या॰ अ॰ श्रीकृष्णअपनेप्रभु
अस्मत्प्रभुकेसेहैं सर्वसामर्थयुक्तहै सोश्रीगुसांईजीवि
ज्ञप्तिमेंकहेहैं श्लोक कर्तुपुनर्यथाकर्तुमनुष्याकर्तुमी
श्वरे सामर्थ्येयन्मयास्पृष्टंत्वपवार्तानसंशयः १ श्रीकृष्ण
केसेहैं कर्तुअकर्तुअन्यथाकर्तुसर्वसामर्थ्ययुक्तहैं सोलौ
किकअलौकिकसर्वप्रभुआपुहीसिद्धकरें चिंताभगव
दीयकोंनाहीकर्तव्यहै सोदृष्टांतकहतहैं जोलौकिकमें
जैसेंपिताअपनेपुत्रकीरक्षाकरतहैं सोअपनेनिजदास
नकोलौकिकअलौकिकसर्वसिद्धकरेंगे निश्चययहजा
नो २ श्लो॰ अतएवास्मदाचार्यवचनेवेविराज

तें।भगवानपिपुष्टिस्थोनकरिष्यतिलौकिकोंचगतिं॥३॥
याकोअर्थ॥अबश्रीहरिराइजीकहतहैंजोपुष्टिमारगीय
वैष्णवकोंचिंतारंचकरनीनाहीकर्तव्यहै।काहेतेंजोश्रीमत्
आचार्यजीमहाप्रभुकेवचनामृतविराजमानहैंनवरत्नग्र
थमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं।भगवानपिपुष्टिस्थोन
करिष्यतिलौकिकींचगतिं।इतिवचनात्।यहपुष्टिमा
र्गमेंश्रीकृष्णभगवानसाक्षातविराजमानहैं।सोआप
नेनिवेदनीयजीवकोंलौकिकचिंतागतिकबहूंनकरेंगे
यहनिश्चयवैष्णवमनमेंविचाररखें।तातेंयहपुष्टिमार्ग
समानऔरदूसरोमार्गकोईनाहीहै।तामेंसरणआएपा
छेंलौकिकगतिकबहूनहोइ।तहांकोएकहेजोवैराग्य
करिकेलौकिकगतिनहोआयौरजोलौकिकमेंरहेंसगरे
लौकिककार्यकरतेतिनकोंलौकिकगतिकैसेंनहोइ
शास्त्रमेंतोंयाभांतिकहेहैं।याभांतिकहेंनहींकहतहैं॥४॥
मर्यादामार्गकीयहीरीतिहैं।जोज्ञानवैराग्यकरिकेंसेंगति
होइ।जितनोसाधनजीवकरैं।तितनीगतिउत्तमवाकोंमि
ले।सत्यलोकब्रह्माकेलोकमेंजातज्ञानमार्गकरिकेंइस
योंहामार्गमेंप्रमानमार्गकीरीतिहै।सोयहपुष्टिमार्गहै
यहमार्गमेंप्रमेयबलतेंफलहै।साधनयामार्गमेंनाहीहै
सोएकादशस्कंधमेंभगवानकहेहैं।केवलनेंवभावेनगो
प्योगावोनगामृगा।येन्येमूढधियोनागाःसिद्धामामी
युर्जसा॥ब्रजमेंश्रीकृष्णभगवाननिसाधनहैं।तोसोंप्रभु
अपनेप्रमेयबलतेंफलदाननकीएहैं।तैसेंहीयहपुष्टिमार्गमें
श्रीकृष्णविराजतहैं।सोसाधनकीअपेक्षानाहीरखतप्रमे
यबलतेंविनासाधनहीफलदाननिश्चयकरेंगे।तातेंपुष्टि
मारगीयवैष्णवकोंलौकिकअलौकिकचिंताकबहूंनाही
करनीयहै।औरश्रीगुसांईजीनवरत्नकीटीकाकरीहै।सो
तहांप्रथममंगलाचरणकीएहैं।चिंतासंतान नारोय

सि.प. न्यासो वुजरेणवः स्वीयानां तानिजाचार्योन्त्र एतामिमुहु
१०० मुहुः २ श्रीआचार्यजी महाप्रभुके चरणकी रेणुके प्रसाद
कैं ते सगरी चिंता आपुतें नास होत हैं ऐसें श्रीआचार्यजी
महाप्रभुके चरणकमलकों मैं वारंवार नमस्कार करत हों
४ आगें अब और हू कहत हैं श्लो० चेतस्तदीया किंभा
तांश्चिंता विंरधत्ते जना ज्ञानिनोपि नवै दुःखं चित्ते दध
ति लौकिकं ५ या० अ० ऐसें पुष्टिमार्गीय वैष्णव श्री
आचार्यजी महाप्रभुके सेवक तदीय भ्रांत होइ तिनन्में
कोउ परे हैं काहेतें ज्ञानमार्गमें जीव हैं औसे ज्ञानी सोउ लौ
किक दुःख मनमें नाही धरत अनु कौं लौकिक दुःख मनमें
आपि तिनकों नाही रहत हैं यह तो पुष्टिमार्ग जहां सा
त भगवान सों संबंध श्रीआचार्यजी महाप्रभु द्वारा भयो
है सो अज्ञानकरि चिंतामें रहत हैं सो न करनी चिंताप्र
भु नवे सामर्थ्ययुक्त है ५ श्लो० सेवारसादिरहिताश्चेत
भक्ताव्याख्यानथा: यै स्वस्वरूपसेवायां दरसन स्पर्शनादि
भिः ६ या० अ० ऐसें पुष्टिमार्गीय भक्तजन सो श्रीकृष्ण
की सेवारस अथवा विना सेवारसकों चित्तमें आवेस वि
नाके पारहे हैं साक्षात् श्रीकृष्णके स्वरूपकी सेवा करत हैं द
र्शन करत हैं चरणस्पर्श करत हैं तऊ चिंतामें भगवत्स्व
रूपका विकेरहित हैं सो काहे रहित हैं ताते यह जान्यो जात है
चिंता चित्तमें भरी है ताते रसकों अनुभव नाही होत है ६ श्लो०
अनुभूतं सदानंदं चित्ते रवयुतं कथं परमानंदसंबंधेन
निवृत्तिनैवाहि ७ या० अ० ऐसो पुष्टिमार्ग जामें भाव
त्मक सर्वोपरि पदार्थकों अनुभव तिनको चित्तमें दुःख क्यों
होत है सो यह लौकिक चिंता ही तें अज्ञानकरि दुःखी है भा
वात्मक रसकों अनुभव नाही होत है और श्रीकृष्ण परमा
नंदरूप परमात्मक तिनकों संबंधी श्रीआचार्यजी म
हाप्रभु द्वारा भयो है साक्षात् परमानंद सों संबंध है औसे

निवेदनीयवैस्नवकेहृदयमेंदुखकेसैंतिष्ठतहैंसोअज्ञा
नकरिलौकिकचिंतानेंदुखहोतहै।७।स्लोक।।पितास्य
स्तुसर्वेपिसंबंधावस्त्रहेतवः।बहमुखजनसेवबहमुखे
ततस्पजेताह्ना।याकोअर्थ।।लोकिकमेंपिताहैंसोऊअप
नेपुत्रकोंसर्वस्वदेतहैंकाहेतेंपुत्रआत्मजअपनीआत्मा
हैं यहसंबंधतेसर्वस्वदेतहैं।सोतोयहपुष्टिमार्गमेंश्रीकृ
स्नसोंसंबंधभयोहैंनहाकहासिद्धहो।ऽ।सर्ववस्तुसिद्धी
हैंअज्ञानकरिचिंताकरतहैं।अपनोसंबंधतौविचारै
औरबहमुखकेसंगतेबहमुखजीवहोतहैं।तातेंसीघ्र
हीबहमुखकोत्यागकरेउनकोसंगनकरें।८।स्लोक।।
बहमुखस्यबाधंतेरोगादेहिकमानसा।।स्रीकृष्णाने
रिवातैश्चरोगावातिकपैतिकादेयाको अर्थवैस्नव
कोंबहमुखकोसंगबाधकहैं।संगतेदेहिकरोगमान
ससरोगनिश्चयहीआइलागो।सोहधानकहनहैं।ओरो
गीहोइताकीछीनधातुहोइ।तिनकोवायुपितसवआइ
सेंयाभांतिबहमुखकोसंगहोइ।निवृतोसर्वरोगआ
यलगो।९।स्लोक।।तन्निवर्तिस्तुसंपाद्यस्नासंगेनसेव:
याश्रीभागवतपाठेनतत्कथाश्रवणादपि।१०।याकोअर्थ
सोरोगीदूरओषदखायतौवाकोरोगजायतैसेंहीवैस्न
वताहसीवैस्नवभगवदीयकोसंगकरेंउनकीसेवाकरे
तोबहमुखताजायभगवदीयकेसंगतेदेहिकमानसिक
रोगादिसबदूरिहोइ।तसंबोईसेंदेहकरेजोताहसीभग
वदीयमिलनेतौदुर्लभहैं।वेमिलेंतोकहाकरें।तहांक
हतहैंजोश्रीमद्भागवतकोपाठकरेंकाहेतेंजोश्रीभागव
तकोपाठअभ्यासनहोइतौपुष्टिमारगीयभगवदीयके
मुखतैश्रवणकरेंतौसगरेरोगनासजाय।११।स्लोक।।
निवेदनस्मरणतःसद्भिःसहकथादिभिः।सदानाम
ग्रहणतःसदासेवाभावनात्।१२।याकोअर्थजोश्री

प० भागवतश्रवणकरिवेकोंसंयोगनवनिआवेंतोंनिवेद
१ नकोस्मरणअहर्निसकीयोकरैंतथासदाभगवदी
यकेमुखतेपुष्टिमार्गीयश्रीआचार्यजीमहाप्रभुश्री
गुसांईजीकेग्रंथतिनकीकथाभावसोंसुनेंश्रीकृष्ण
नेतोंसदाश्रीकृष्णकेनामकोस्मरणकरैयामेंतोंक
छुश्रमनाहींहेंनामहीस्मरणकरैंपरंतुनामकेस्म
रणयहजीवकोदुर्लभहैसोश्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमें
कहेंहेंत्वन्नामोच्चारणयोग्यतिनजीवेस्वधिकारिताअ
लौकिकत्वात्त्वन्नाम्नस्तदुच्चारोलौकिकत्वत १ इतिवि
ज्ञप्तौश्रीगुसांईजीश्रीगोवर्द्धननाथजीसोंकहतहैं
जोतुम्हारेनामकेउच्चारकरिवेकीयोग्यताजीवकोंना
हींहेंकाहेतेंजोतुम्हारोनामतोमहाअलौकिकहै
सोकैसेंनमलेहिसोनामहूनवनिआवेंतोंशरण
कीभावनाकरैंसोविवेकधैर्याश्रयमेंश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुकहतहैंश्लोक॥ ऐहिकेपारलौकेचसर्व
थाशरणंहरिः दुःखहानौतथापापेभयेकामाद्यपू
रणे१ भक्तद्रोहेभक्त्यभावेभक्तेश्चातिक्रमेकृतेअ
सक्येवासुसक्येवासर्वथाशरणंहरिः इत्यादिवच
नकेअनुसारशरणकीभावनाकरैंश्लोक॥ अष्टाक्ष
रमहामंत्रकीर्त्तनेनविशेषतःपंचाक्षरेणमंत्रेणा
त्मीयत्वविभावनात्१ यथा॥ अष्टाक्षरमहा
मंत्रहैश्रीकृष्णःशरणंममःयहमंत्रकोपुकारकेअ
ष्टप्रहरकीर्तनकरेंतोसर्वसिद्धिहोयसोद्वादशस्कंध
मेंश्रीशुकदेवजीकहतहैंकलेर्दोषनिधेराजन्नस्ति
ह्येकोमहान्गुणःकीर्तनादेवकृष्णस्यमुक्तबंधःपरं
व्रजेत्१ जद्यपिकलियुगदोषनिधिहैपरंतुयामेंएक
बडोगुणहैश्रीकृष्णनामकोकीर्तनजोकरतहैंसो
यहकालबंधनतेंछुटजातहैंतातेंअष्टाक्षरमंत्रको

।तिनकरें तथा पंचाक्षर मंत्रकौ भावना करें नहीं य
श्लवके संगमिलिके करें सो श्री आचार्यजी महाप्र
।नवरत्नमें कहे हैं। निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशै
नैः कहतें पंचाक्षरमंत्र भगवदीयके संग बिना भाव
।गट होइ नहीं। निवेदनके स्मरणमें भगवदीय की
अपेक्षा है।१२। श्लोक। वैराग्यपरितोषाभ्यां हस्तसंनि
हितस्थिते। लौकिकलौकेत्राजो हास्यात् पुत्रायनन्तुरा
गतः।१३। याको अर्थ। संसार्यहदेहसंबंधीपदार्थ लौ
कनमें वैराग्य राखनो। संसारमें वैराग्य होइ तो लौ
वैतदुखसुखचित्तको बाधा न करे ताते वैराग्य राखे
औरयथा लाभसंतोष होइ जो सहजमें बने आयसो
लि होइ ताहीमें संतोष होइ तो मनमें विक्षेप न होइ
औ श्रीठाकुरजी विराजत होइ पुष्टिमार्गकी सेवा
होइ तिनके पास स्थिति होइ तो हूरस्मन सेवा बनि आ
वें सो भक्तिवर्द्धनीमें श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे
हैं यद्दूरे विप्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति निकट
रहिके सेवा करे तो चित्तके संगरे सोष नाम होइ वहुत
निकटमें चित्तको रोध होत है तो नेक दूरि रहै परन्तु नि
त्यसेवा रस भवनके सो करे लौकिकलौकिकते अपनो
मन उदास राखे अपने चित्तमें लौकिकलौकिक रानकरें
और देहसंबंधी पुत्रादिक स्त्री बंधु काहूमें अनुराग न
राखे।१३। श्लोक। ग्रहचिंतायुनारोत्यात्तदीय अनुराग
तः नवरत्नस्य पाठेन सर्वा चिंता निवर्तते।१४। याको
अर्थ। ग्रहादिधनहत्यादिकमें आसक्ति न राखे येसब
रे चित्तके दूषक है, ताते इनमें प्रीति न करें पुष्टिमार्गी
य भगवदीयमें अनुराग राखें तथा नवरत्न ग्रंथको
पाठ नित्यनेमसों बने तिननौ करनो सगरी चिंता
मनमें ते निवर्ते होइ चिंतानामके अर्थ श्री आचार्य

जीमहाप्रभुनवल्लभग्रंथप्रगटकीयेहैं।सोगोविंददुबेवै
ष्णवकेमिससवपुष्टिमारगीयसवनकेअर्थे।तातेंवल्लभग्रं
थकेपाठतेंसर्वचिंतादूरिहोय।निश्चय।२४।श्लो।ए
वंनिवर्तेमुख्येजनेदुःखेनेबाधनो।अतःतन्मात्रयत्नेतु
भवितव्यंभवाहृशे।२५।या।कौ।अर्थ।अवश्रीहरिरायजी
कहतहैं।जोऊपरसंगरेभगवद्धर्मकहेहैं।उनमेंतेएककूं
दृढकरिकैंजोवैष्णवधारनकरेंगे।सोतिनकोंसबदुख
लौकिक।निवृत्तकेअनेकभावसोंदूरिहोइगो।उहमन
मनमेंपरमसुखपावेगो।याभांतिदुखनिवृत्तकेअनेक
यत्नहैं।सोभावीकवैष्णवकोंकर्तव्यहै।येयत्नभावके
वर्द्धकहैं।ताकेभागमेंवेतिफलदानहैं।तिनकोभाविक
वनिआवेगो।२५।श्लो।या।दुखेननवृथानेयकालःप
रमदुर्लभः।कृष्णसेवानुकूलतुनिजाचार्याश्रयात्रनैः।२६।
याकौअर्थ।अवश्रीहरिरायजीसमस्तवैष्णवनसोंकहत
हैं।जोयहकालपरमदुर्लभहै।जोयहकालपरमदुर्लभहै
केरिवेसोसफलवनेगो।यहमनुष्यदेहश्रीकृष्णसेवाके
अनुकूल।सोयहलौकिकदुखचिंताकरिकेंवृथानखोवे
काहेतेयहीदेहतेंश्रीकृष्णकीसेवावनतहै।औरयुगमें
यहपुष्टिमारगीयसेवानाहीं।ब्रह्मादिकनकोंदुर्लभहै।श्री
आचार्यजीमहाप्रभुंद्वाराब्रह्मसंबंधऔरयुगमेंकहां।
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुद्वाराकोआश्रयफेरिकहां।तथा
श्रीआचार्यजीमहाप्रभूकेआश्रितजोताकुंश्रीनिजसे
कूतिनकोंआश्रयफेरिकहां।याभांतिमनमेंविचारिकें
यहकालपरमदुर्लभजानिदुःखलौकिकमेंमन
लगाइवृथानाहींखोवनो।भगवदीयकोआश्रयअपने
श्रीवल्लभाचार्यजीकोआश्रयकरिश्रीकृष्णकीसेवाअ
वश्यकहीकर्तव्यहै।यहदेहकालसवसेवाअनुकूलहै
यहआंनिकेंएकलगाइसेवाविनानराखे। हु

तदियारव्याचिंतापासापिनिजदेखतः चिंतोद्वेगंविधा
यापीत्येतद्वचनचिंतनात।७।याकोअर्थ।श्रीहरि
राइजीपत्रपूर्णकरतहैं।यामेंसर्वोपरयहीसिद्धांतहैं।जो
सूतसीघ्रहीचिंताकोत्यागकरें।एकचिंतातेंअनेक
रोगकोप्राप्तिहोय।तातेंनवरत्नकोवचननिश्चयक
रिचिंतनकरियेहीचिंताकोत्यागकरें।नवरत्नमें
कहेहैं।चिंतोद्वेगंविधायापिहरिर्यद्यत्करिष्यति।
तथैवतस्यलीलेतिमत्वाचिंतांद्रुतंत्यजेत।९।इति
वचनात्।याभांतिसीघ्रहीचिंतात्यागकरिकेपरभ
गवद्धर्मकरें।तामेंप्रवर्तहोय।भगवद्सेवासुमरन
नादिसीकोसंगकरें।यहनवरत्नग्रंथकोमनलगाइ
कें।नित्यचिंतनकरें।पाठकरें।भावविचारेंतोचिंता
दूरिहोय।१७।इतिश्रीहरिराइ जीकृतनवरत्नके
टीकासमाप्ता।कीटी। श्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्ण।२अथ
पारकहेजोचिंतातजेभगवद्सेवादिभगवद्धर्मके
रें।जोजीवकोकहासामर्थ्यहै।कालदोषतेंग्रसित
हैं।तातेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभूकोदृढआश्रय
होयतोप्रभुफलपावें।सोआश्रयकोनभांतिकरें।सो
आगेसिद्धांतमेंकहतहैं।लौकिकभांतिमार्ग [illegible]
मंत्रकारस्यपरमुख्यतेनेनैवमार्गसकलो [illegible]
नसंशयः।१।याकोअर्थ।यहश्रीआचार्यजी [illegible]
सुनदेपुष्टिमार्गयहभक्तिमार्गतें [illegible]
नकोकारणहैं।साधनतेंफलनाहीं [illegible]
लसिद्धिहैं।तातेंश्रीस्वरूपसिद्धि [illegible]
तातेंयहपुष्टिमार्गमेंजोवैसें [illegible]

ननतेकहाभयोपुष्टिमार्ग [illegible]

सि॰ प॰ सर्वसिद्धिइनकोकरेंगे सर्वथा यामेंसंसयनाही १ स्लो
१०२ का मातुस्याचार्यशरणागतेनोते नोपितः प्रभुः यदेवव्र
रूनेच्छस्मात्तद्भवति सर्वथा २ या को श्र थ पुष्टिमार्गमें
सरणआचार्य आपनेश्रीवल्लभाचार्यजीकेसरणागत
होरहेतवश्रीआचार्यजीमहाप्रभूदयाकरिकेश्री
कृष्णसोंस्थापनाकरेजोंयहजीवसरणआयोहैसो
तवश्रीकृष्णकोवहजीववहुतभावे सर्वथा ऊहजी
वपरश्रीकृष्णकृपाकरें २ स्लो० अतस्मदाश्रयोजी
वेद्रागवविधीयतां यथावतारेलीलायां नासोश्रीयमु
नामतां ३ या को श्र थी तातेयह पुष्टिमारगीयजीवश्री
वल्लभाचार्यजीकेचरणकमलकोदृढआश्रयनिश्च
यहीकरेंतवफलप्राप्तिहोइ जेसेअवतारदसामें
यमुनाजीद्वाराकुमारिकाकोप्रभुप्राप्तिभई तेसेहीअ
वश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकेआश्रयतेश्रीआचार्य
जीद्वारा

३ स्लो० यथावा
दासादिपुलिंदी यथावाग्निकुमा
राणां कृते कात्यायनीमता ४ या को श्र यासमयमें
तोएकश्रीआचार्यजीमहाप्रभूद्वाराहे औरआगेतार
लीलामेंहरिदासगिरिराजपरमभक्तहे तिनकेसंग
तेपुलिंदीकोभक्तिसिद्धिभईलीलामेंप्राप्तिभई औ
रअग्निकुमारिकानकोंकात्यायनीमिसतेश्रीयमुना
जीद्वारालीलामेंप्राप्त तेसेहीअवश्रीआचार्यजी
द्वारा उहां पुलिंदीकोसेवागिरिराजद्वाराप्रभुने
अंगीकारकरी कुमारिकाकीसेवाश्रीयमुनाद्वारा
तेसेहीयहांवेष्णवकीसेवाश्रीआचार्यजीद्वारा
अंगीकारश्रीजीकरतहे ५ स्लो० का प्रादुर्भूतस्व
येवृक्षोयथास्वसाय कं मतं यथावाहेन्यभावा

न्माप्रादुर्भावेस्वयंमतः।५।याकोअर्थ।औरनीहसके
प्रादुर्भावप्रगटदसामेंस्वयंप्रभुआपुहीद्वाराफलप्र
करणपंचाध्याईमेंअतिदैन्यकीभावनाकरिस्वयंप्र
भुआपुहीप्रगटेहैंन्यपतें।श्लोक।। इतिगोप्यःप्रगायं
त्यप्रलपंत्यश्चचित्रया।रुरुदुःसुस्वरंराजनकृष्णदर्शन
लालसाः।१।तासामाविरभूच्छौरिःस्मयमानमुखांबुजःपी
तांबरधरःस्रग्वीसाक्षान्मन्मथमन्मथः।२।याभांतिदैन्यतें
प्रगटेहैं।श्लोक।।तथापरोहिजीवानांपुष्टिसंबंधसिद्ध
ये।श्रीमदाचार्यसंबंधोनान्यदस्तिहिसाधनं।।६।।याको
अर्थ।।प्रगटदसामेंदैन्यतेंतैसेंहीअवप्रोक्तदसा
मेंजीवनकोंपुष्टिसंबंधभयेतें।ताकाहीतेंजोयहक
लिमेंऔरसाधननाहीं।जहांदैन्यकहां।तातेंश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभुअपनेतिनकेसंबंधतेंनिवेदनहोइ
नवहीतोऔरदूसरोसाधननाहीं।।एकश्रीआचार्य
जीमहाप्रभुकेसंबंधतेंशुभफलदानकरतहैं।योंतो
का।।अतएवोक्तमाचार्यैःस्तोत्रेऽस्माश्रयाभिधेस
र्वास्यसमुद्धारदक्षविज्ञापयाम्यहं।७।याकोअ
र्थ।अवश्रीहरिराइजीकहतहैंजोहमारेश्रीवल्ल
भाचार्यजीहूसप्रथमेंश्रीहसयोजीवकूंलीएवि
नामकीरेहें।तोमेरेसरणजीवहैं।सोतिनकोउ
द्धारकरो।यहलौकिकतेंनिकासिअपनीलीला
मेंअंगीकारकरो।याभांतिप्रभुसोंकहतहैं।औरप्रति
ज्ञाकरिजीवनकोविश्वासकरायधीरजदीए।
जोउद्धारहोइगो।चिंतामतिकरो।सोअवकहत
हैं।७।श्लोक।।विश्वासार्थंवरमदाद्धितिश्रीवल्लभो
ब्रवीत्।अतोनान्यप्रकारेणफलंस्याद्धिचिंत्यता
म्।याकोअर्थ।।श्रीहसाश्रयमिदंस्तोत्रंयत्पठेन्नरह
रसंनिधौ।तस्याश्रयोभवेत्कृष्ण

से.प. वीनु॥श्रीआचार्यजीमहाप्रभु प्रथमश्रीकृष्णजीसों
०४ कहीजोअबअपनेपुष्टिमारगीयवैस्नवसोंकहतहैं
जोयहश्रीकृष्णाश्रयग्रंथकोपाठश्रीकृस्नकेसनमुख
करियें॥ताकरिकेंश्रीकृस्नअपनोआश्रयनिश्चय
करेंगे॥यहमेरीप्रतिज्ञाहैं॥याप्रकारप्रतिज्ञाश्रीम
हाप्रभुजीकीरी॥नोजीवनकोविस्वासहोय॥जोहम
कोपुष्टिरसमिलेगों जैसेंचौरासीवैस्नवनजीभक्त
नसोंकहे॥जोरासरसरहसिनुमकरिनुमोरमनोरथ
पूर्णकरेंगे॥यहकहेंतबभक्तनको विश्वासभयोना
हींतोसरस्पनुपर्यंतविस्वासनरहतो॥तैसेहीश्री
आचार्यजीमहाप्रभु प्रतिज्ञाकरिअपनेनिजसेव
कनको॥विस्वासदीरो॥तातें एकश्रीआचार्यजी
महाप्रभुद्वाराफलसिद्धिहैं॥याप्रकारफलकोचिं
तननकरनो॥श्लोकः॥विश्वासेनयथाप्रोक्तिचा
तकःस्वातिजंजलं॥तथाचेत्कृष्णजलदःस्वांत
रपयेयिष्यति॥टीका॥अब॥विश्वासकरिचात्र
कजैसेस्वातिकेजलकोंअपेक्षाराखतहें॥औरपृ
थ्वीपरकूवातलावनदीसमुद्रपर्यंतभर्योहें॥नाम
आसनाहींकरतयहविस्वासदेखिघनहींमनोर
थपूरनकरतहैं॥तैसेंहीजोवैस्नवएकश्रीकृस्न
कोंआश्रयमनमेंदृढकीयोहें॥औरअवतारतथा
देवतासोंफलकीअपेक्षानाहींहें॥तिनकोंश्रीकृ
स्नजलदरूपअपनोआनंदवरषेंगे॥निश्चयआ
नंददानकरतहें॥श्लोकः॥ एवंविश्वासमदृत्वसर्वो
वभविष्यति॥यतःपरिदृढोस्माकंसर्वकर्तुत्तमोस
नः॥१०॥टीका॥अब॥याभांतिपुष्टिमारगीयवैस्नव
विश्वासशुद्धभावसोंकरें॥तिनकोंसर्वसिद्धहोय
सोश्रीहरिरायजीकहतहैं॥ऐसेहमारेप्रभुसर्वकर

॥ मैं सामर्थयुक्त हैं। ताते कृपा करे हिंगे॥२०॥ श्लोक॥ सहि
स्वतः समर्थत्वान्न साधनमपेक्षते कालकार्यविलो
कात्रतरीयाभाविशेषनः॥२१॥ याको अर्थ। अब श्रीहरि
राइजी कहत हैं जो श्रीहरि स्वयं पुनि स्वतः सामर्थयुक्त हैं
कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं आपुही हैं सो आपने सेवकन
के साधन की अपेक्षा नाहीं करत हैं। सो यह इतनो साध
न करे तो फल होय यह तो अन्य देवतान में है। जो जितनो सा
धन करे तितनो लेके फल देइ। सो श्रीहरि में नाहीं
है यह काल कर्म स्वभाव तें अति विपरीत धर्मयुक्त हैं
यह काल कर्म सूतमहा कठिन विपरीत तिधर्मयुक्त है
विकै अपने नदीयू परस्याकरी विना साधन ही वि
शेष कृपा करत हैं। श्लोक। निसाधनजनं स्वकृपाई द्रष्य
नन्यपराश्रयः॥ असर॥ भवि लासी तदा न्ससगि
नामपि॥२२॥ याको अर्थ। याभांति जब जीव साधन क
रतकरत पाछें निसाधन होइ। जैसे व्रजभक्त रासपंचा
ध्याई में अंतरध्यान समय अनेक साधन कीए लीला
कीये गुनगान करि पाछें निसाधन भई तब प्रभुही
को आश्रय रह्यो तब प्रभु प्रगटे तैसें ही जब वैष्णव मन ते
निसाधन होय तब दैन्य करि श्रीआचार्यजी महाप्रभु
के चरणकमल को आश्रय होय तब श्री प्रभु कृपा करे
और जिनके मन में अविश्वास है सो केवल असुर ही
हैं तिनको संग नाहीं करे तिनहू को आसुरावेस
होय तिनको संग जो कोई करे तिनहू को आसुरावेस
अविश्वास होइ। ताते इनको संग न करनो। श्लोक।
मतिमोहो महादोष अनिधानं सभविष्यति यथापूर्वं
कथं सुज्ञो भगवत्प्रदसेवनः॥२३॥ याको अर्थ। अब श्री
हरिराइजी कहत हैं जो याजीव को मति को मोह
बडो है। ताते निसाधन
भये आपने दोष कहे जो आपु हरदास भये है ताते निसाधन
ता नाहीं आवत है। अहंता दोष रहित हो। अपने के
यह जानत है जो में ही करत हों यह अ   २०८

ा.प. कवहूं नहरिहोइ जवपूर्वजो प्रथमस्कंध भक्त श्रीभागवतमें
०५ कहेहें प्रह्लादजी तथा ध्रुव जभक्तादिक तथा पुष्टिमारगी
य श्रीआचार्यजी महाप्रभू के चोरासी वैष्णव की वार्त्ता
यह कथा सुने तो प्रथम या भांति सेवा कही है में कहा क
हत हो या भांति रैन यह यभगवत्सेवा के रात व निसाध
न होय सर्व दोष हरि होइ ताते श्रवण मुख्य सेवा को
पोषण है ताते श्रीआचार्यजी महाप्रभु भक्तिवर्द्धनी
में कहे हैं सेवा यांवा कथा यांवा ह्रियकतेव्य सोतव भग
वत्सेवा प्रीति सों करें ॥२॥ श्लोक ॥ यस्मिन् नृपोन्यस
मुत्पनिस्तथा साधन नाज्ञान ॥ नदीया ॥ सर्वमाति
सदा नद्भाव भाविना ॥१४॥ या श्लोक को भागवतीय
की कथा सुने तेहें न होय सो देन्य उत्पति ते ग्रहंनार
प साधन जो में करत हों सो नास होइ तथा नदीय भक्त
हें सो तिनके भाव तहे ३ उन जो भाव ते करत हैं सो ता
भाव में यह लगे तब फल सिद्ध होइ ताते श्रवण ह्या
वस्य है सो गोपिका गीत में कहे हैं तव कथा मृतं तप्त
जीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहं श्रवणमंगलं
श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ॥१॥ ताते श्रवण ते
सर्व दोष दूरि होइ और भगवद्भाव वढे ॥१४॥ श्लोक ॥ ६
नरेषा कालिकानां कालेन निखलेगाने यतः कालस्त
द्विभूति: कालकलय नामहे ॥१५॥ या श्लोक को अर्थ व
श्रीहरिरायजी कहत हैं ऐसो जो यह ... कालसंधा
रकर्त्ता सो निखिल नाम समस्त गतन को खात है सो का
ल कैसो है जो यह श्रीकृष्ण भगवान की विभूति है सो य
ह कलि में महाप्रलय न सृष्टि सर्व काल में लय होत है
या भांति सगरो जगत काल में लय होत है या भांति सगा
रो जगत काल में लय होत है ॥ श्लोक ॥ मुख्याधिकार्यो
पि हरीरिच्छा शक्ति स्वरूपवान् ॥ ते हरं गदा मेवनतस्मा

ष्येमिष्यतो॥ १॥ याको अर्थ॥ कालके सो है जो सुखा
मार्वान को अधिकारी है इच्छा सति को स्वरूप है ताते
वलाहिकन को नाही छुडत है॥ सो जो काल सो गुप्ती
हलके अंतरगत सब को जह काल को सामर्थ्य नाही है
भगवदीय को बाधक नाही करि सकत है॥ एसे श्लोक॥
सहिष्यो यथान्येया मारको पिनद्धिलमः॥ पीतामृत
ननजातु अहमाघ्रातुमेवच॥ १७॥ याको अर्थ॥ यह
कालस्सर्प है॥ सो सगरे जगत को खात है॥ परंतु श्री
कृष्ण के चरणारविंद तथा अधरामृत जिन पान की
यो है॥ एसे भक्त को परस नाही करत है॥ ओर सुघतम
नाही है॥ सो श्री प्रभु सांई जी सत्यमस्ताकी सिकदेह ये
घोघतमसाधृते कलिभुजंगमसादिनं गाढि पथ
सागरपतितमखधर्मरत्नपदीहरासुधानिधिम
मुस्तोनुकंपामतादमत्युमकरोत्तहुतागाहरा
मेसुमेतत्पदं॥ १॥ याको अर्थ॥ श्री आचार्य जी महाप्रभु
कृष्णामृत जो कोई पान कीयो है तिनको कालस
र्पपरस नाही करत है॥ और घयत हलासी॥ २॥ श्लोक॥
तयाकरतो पिमनुजमहापुरुषस्यैततः॥ अतिपीयूष
पातारनविंचित्कतुमीश्वरः॥ ३॥ याको अर्थ॥ जो मनु
ष्य महापुरुष श्री आचार्य जी महाप्रभु
था भगवदीय पुष्टि मारगीय तिनके ... निरूके ...
पुष्टिभक्तिरस अमृतको पान ...
तांचक कालको सर्वथा ...
आपमारहनर्रायनि सहीमार्ग ...
थाकालवीकरारी ...
दीयको करत सावातामप्रमहि ...
वेपलटमुक्तिदी नी॥ भक्ति मा ...
कोकालकालकरि सके॥ १८॥ श्लोक॥

स.पु. येंप्रभुनको लक्ष्यितं तो हवि ॥ तथैव तस्य लीलेति वचन
२०६ तैसेब चिंतनं ॥ २ ॥ यां कोऽर्थ ॥ अब श्री हरिराइजी अप
ने छोटे भाई श्री गोपेश्वरजी सों कहत हैं जो तुम तो तदी
य हो सर्व काल भगवद्धर्म में निपुन हो ॥ तातें तुम अ
पने मन में काल की चिंता मति करियो कोई काल में
तुमको चिंता नाही करनी है श्री आचार्यजी महा
प्रभुन वरत्नमें कहे हैं जो तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिं
तां द्रुतं त्यजेत ॥ यह वचन को चिंतन हृदय में करि
के चिंता नाही करनी यह है सगरी श्री कृष्णजी की लील
ही जाननी ॥ २ ॥ श्लो ॥ सर्गो हि लीला कर्तव्या लिंचि
त्रैनाहूसे प्रभो ॥ विवेकोऽप्ययमेवात्र सद्भिर्नवैविधा
स्यति ॥ २० ॥ यां कोऽर्थ ॥ श्री भागवत में सर्ग विसर्ग
आदि लीला दस विधि लीला के कर्ता ॥ या भांति तिन
हू की प्रभु को सगरे जगत में लीला जाने ॥ ऐसो जा
के मन में होइ सोई विवेकी कहिये ॥ सो विवेक धैर्या
श्रय में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं ॥ विवेकस्तु ह
रिर्वै निजेच्छातः करिष्यति ॥ यही विवेक जो सर्वे
थैव तन्नेच्छा मानें ॥ २ ॥ श्लो ॥ स्वकीयानां निजेष्ठ
तस्मात् चिंता न कोऽभवत् भवंतः श्रुत सद्धर्मा ः
सत्संगाच्छ नयोपि हि ॥ २१ ॥ यां कोऽर्थ ॥ या भांति भगवा
न के स्वकीय निज भक्त हैं सो निज इच्छा भगवद् इच्छा
सर्वकार्य में जानत हैं ॥ और तुम तो भगवान के सर्व धी
हो भगवद्भाव सुने हो ॥ सुंदर वात सुने हो ॥ और स
त्संग बहुत कीयो है ॥ तातें तुमको चिंता कोइ प्रकार
न करनी के तव्य हैं ॥ २१ ॥ श्लो ॥ प्रभुपादैकनित्यस्ते
षांको पाटहि हनौ ॥ धर्मसंस्थापनायस्य सागरस्य सु
तेति ॥ २२ ॥ यां कोऽर्थ ॥ अब श्री हरिराइजी कहत हैं जो
तुमके से हो प्रभु जो श्री लक्ष्मणतयां श्री आचार्यजी

महाप्रभुनिनकेपदकमलमेंगतिनामप्राप्तहोय
सोतुमसें॥सोपरिवेदनोचितोसर्वथानाहीकरनेयो
ग्यहैं॥धर्मकेस्थापनकेलीएमहाप्रभुजीकोतथातु
मारोप्राकट्यसोंउचितहे॥प्रभुसदाधर्मकीरक्षा
करीहै॥सोभगवदीयगाएहैं॥वन्हुगवेदवचन
प्रतिपाल्यौ धर्मगिलानभइजवहीजवतवतुमव
पुधार्यौ॥श्रीसतयुगस्वेतवाराहरूपधरिहिरण्य
नाकुसमार्यौ॥त्रेतारामस्वरूपदसरथकेरावनकुल
नीसघार्यौ॥द्वापरव्रजवूडतेराख्यौसुरपति
पाइनपार्यौ॥कंसादिकदानवसवमारेवसुधा
भारउतार्यौ॥अवकलियुगश्रीवल्लभप्रगटे
मायावादनिवार्यौ॥मानिकचंदप्रभुश्रीविठ्ठल
पुरुषोत्तमरूपनिहार्यौ॥ऐसेभांतिश्रीवल्लभ
पुरुषोत्तमरूपहैंधर्मस्थापनार्थप्रागट्यहै॥२२
स्लोकार्थ॥तुविशेषेणधर्मसाहिधर्मनतिवरसह
ऐसहनेकेंर्थं॥अस्लन्पयेतुविप्रेगोवेदधर्मकृप
त्वकः॥२२॥याकोअर्थ॥श्रावकहतहैंजोजेकोइवेद
धर्मकोअतिक्रमकरेंआपनेमनमानीआचर
नमनसेहै॥सोप्रभुकोरनसंभवेंसोकाहेतेजो
प्रभुश्रेष्ठपयहैं॥धेनुविप्रवेदधर्मकेप्रतिपाल
कहैं॥२३॥स्लोक॥सकथंसहतेलक्षणस्तद्विरोधसं
जनैःहतौ॥परमानंदसंदोहोदयालुसुतरामपि
॥२४॥याकोअर्थ॥श्रावकहतहैं॥सोजोभगवान
सोवहमुखजीवविषेदिव्यलक्षणविकारनामनुष्य
सोश्रीलक्ष्मविरोधहतवेसेसहैं॥श्रीलक्ष्मकेसे
हैपरमानंदस्वरूपहैं॥परमदयालहैं॥काहूकोदुःख
नाहीदेखिसकतहैं॥२४॥स्लोक॥सकथंसहतेतद्

सि॰प॰ होयतोसर्वथा ॥२५॥ या को अर्थ यह कहत है जो
१०७ कृष्णप्राणीमात्रके ध्यानेदुहा तो सो अपनेस्वकीय
जभक्तनके दुखकेसे सहेंगे। सर्वथा न सहेंगे तातें
सवभगवदीयकों यह लक्षण है जो लौकिक वैदि
क दुःख मनसो सिद्ध होय काहू वस्तुकी हानि होइ
तो अपनो ही दोष विचारनो। दृढसंबंधी अनेक दु
ख में अपनो दोष विचारनो प्रभुनो भलो ही करन
मेरो दोष है तातें यह दुःख सभयो है। या भांति जानने ॥२
श्लो॰ का॰ ॥ निर्दोषपूर्णगुणना हृदि नित्यं विराजते ॥
कदापि न स्व प्रभो दोषा नाने य सर्वथा हृदि ॥२६॥ या
को अर्थ सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु वालबोध
धर्म में कहे है। निर्दोषपूर्णगुणना इत्यादिक वचन
ते यह निश्चय मन में जानिये जो श्रीकृष्ण निर्दोष
सदा है। सकल गुण करिके पूर्ण है। ऐसे श्रीहरि दुख
हरता है। सदा विराजमान है। तातें कदापि कोई प्रका
र सो प्रभुको दोष हृदय में सर्वथा नाही लावनो यह
सर्वोपरि सिद्धांत भक्तिमार्ग में है ॥२६॥ श्लो॰ का॰ ॥ केवाब
वराकाय वराकाय उद्धवाय अपि प्रभो। श्रुनवंतो वि
सहशी स्वीलाप श्वात् स्थिता अपि ॥२७॥ या को अर्थ
यह श्रीहरिरायजी कहत है जो मैं अपने को कहा
कहूं महा रंक तुच्छ हों। उद्धवादिक भगवद्भक्त कीय
दशाति है। जो अपने अपने प्रभु को अंतरध्यान सम
य सुने जिनकी लीला सुनी देखी अनुभव करि सो
उद्धव ऐसे समय स्थिति रहे। प्रभु बिना तो मैं कहा कहूं
२७॥ श्लो॰ का॰ ॥ कुंतीवदीदृशो भाग्यं वरूप भागवतो भ
वेत्। स ध्रुप्राण विमोकोन श्रीकृष्णविरहेण हि ॥२८॥
या को अर्थ ॥ कुंती बडी भक्त परम भागवत है। जो श्रीकृ
ष्णजी के अंतरध्यान सुनत ही श्रीकृष्णविरह करिकें

अपनेमनमेंतत्कालमारछोडिदीयेतातेंकुंतीमहा
भाग्यवानभक्तहें॥२८॥श्लोक॥ अस्माकंतुप्रभुर्नित्य
महतामाहनोधुनो॥विराजतेततोदुःखंनविधेयं
मनस्यपि॥२९॥याकोअर्थ॥अवश्रीहरिरायजीकहत
हेंजोहमारेप्रभुतोनित्यहीप्रतिक्षविराजमानहें॥
जैसेंलोकिकमेंआधुनीकजीवहेंसोपतिकेपास
रहेंतेसेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुद्वाराश्रीप्रभुजीसोंया
हसंबंधभयो॥सोप्रभुसदाघरमेंविराजमानहें॥ताते
मनमेंदुखधारनकर्योयाहीनकर्तव्यहें॥२९॥श्लोक॥प्र
वृद्धिर्लीलयैवेयंसिद्धा विचार्यतां॥ततःसंदेह
जातस्यदुष्यंतदपोहितां॥३०॥याकोअर्थ॥अवश्रीह
रिरायजीआपुअपनेछोटेभाईश्रीगोपेश्वरजीसोंक
हतहेंजोयहमेंसिक्षापत्रतुमकोलिखिपठाईहेसो
ताकोसगरेपुष्टिमार्गीयभगवदीयसोमिलिकेंवि
चारकरियो॥समस्तवैष्णवनसोंमिलिकेंवासिक्षाकेभा
वविचारकरेतेमनकोचिंतारूपसकलसंदेहदूरिहो
इजायगो सुखबुद्धिकीपोषककरेगी॥श्लोक॥ओरह
मारेतोसाधनहूसिद्धहूएकश्रीकृष्णःशरणंममःय
हगतिहें॥सोयहश्रीवल्लभाचार्यजीअष्टाक्षरमहामंत्र
प्रगटकरिश्रीकृष्णहीकीशरणसिद्धकीरीहें॥तातेहम
तोएकश्रीकृष्णहीकोआश्रयहृदयमेंकरिकेंश्रीकृ
ष्णहीकीशरणमनकर्मवचनकरिकेंसर्वभांतियही
साधनसाध्यजानतहें॥तातेंसपतिअनेकदुखहूमेंश्री
कृष्णकीसरणहें॥औरआपत्दुखहूमेंएकश्रीकृष्णही
कीसरणकीटेकहे॥क्यातेंहमारेआचार्यचरणनेप्र
गटहेयहमंत्रसाइश्रीगुसांईजीविस्तारकरेहें॥श्लो
क॥यदुक्तंतातचरणैश्रीकृष्णःशरणंममः॥ततएवा
स्तिनैश्चिंत्यमेहिकेपारलौकिके॥

से.प.
१०८

नी

अष्टाक्षरमंत्रही हमारो साधन साध्य है यह सिद्धांत भयो
३॥ इति श्रीहरिरायजीकृतसिक्षापत्रतृतीये सो तांकी टीका
श्रीगोपेश्वरजीकृत संपूर्ण॥ २४॥ अब क्रम कहे है जो चिंत
नादीक नेष्ट है अथवा हरी परमगति है सो कोटानको
टि साधन करो सगरे धर्म होइ औ श्रीवल्लभाचार्यजी
के चरणकमलके आश्रय होइ तिनको फल होन है
सो फल होन आगे सिक्षापत्र में निरूपण करत है
श्लो॥ श्रीवल्लभपदाम्भोजभजनोद्दरनादपि दया
परः कदाचिन्न जहाति जनं हरिः॥ १॥ या॥ अथ॥ आ
पुरव श्रीहरिरायजी श्रीमुखते कहत है जो वैस्नवको
श्रीवल्लभाचार्यजीके चरणारविंदको भजन आदर
पूर्वक करत है एक श्रीमदाचार्यजीके चरणकमलमें
अनन्यभाव है जैसे सूरदासजी कहे हैं जो भरोसो दृढ
इन चरणनको श्रीवल्लभनखचंद्रछटा बिनु सब
जगमांझ अंधेरो १ श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके च
रणकमलको ऐसो जो सदा वैस्नव आदरे हैं तिनके ऊप
र हरिजो श्रीकृष्ण सदा दया करत हैं प्रसन्न होइके कृ
पा ही करत हैं अपनो स्वरूपानंदको सदा दान करत है
१ श्लो॥ कृपाकटाक्षसंपातपल्लवान्परो हरिः तमस्मे
वहन्तोयमनुग्रहणतमस्वतः॥ २॥ या॥ अथ॥ अब
श्रीहरिरायजी आपु श्रीमुखसो कहत हैं जो जा वैस्नव
नके ऊपर आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु कृपाकटाक्ष
करत हैं सो आप कृपा करिके अपनी अमृत दृष्टिसो
अवलोकन करत हैं तिनको पल्लवान श्रीठाकुरजी क
रत हैं पद्मनाभदास साहि ठोला धरते सो श्रीठाकुर
जी आपु श्रीआचार्यजी महाप्रभुकी कानि करिके पद्
मनाभदासके ठोला भोग धरे आरोगते सो याभांति जाप
र श्रीमहाप्रभुजी कृपाकटाक्ष करिके रक्षा न करत है

सोउन्वेसवननेललावृधिकोटिको।टिअपराधपातहै
सो तोऊ श्रीछलचंद्रसर्वअपराधक्षमाकरिकैयापरक्षपा
हीकरतहैं॥२॥श्लोक॥यदीयहृदये श्रीमदाचार्यचरण
द्वयं।तत्स्वसरणं सेवसना वृतिमत्तो ममः॥३॥याको अ
र्थ॥अवकहतहैं जोपुष्टिमार्गीयभगवदीयके हृदय
मेंश्री आचार्यजी महाप्रभुके दोऊ चरणकमल विरा
जतहैं याभांति श्रीमहाप्रभुके मनवचनहू मनकरिकें
स्मरणहैं तिनके सताहि अपराधसेंाय होउ तिनहू
कोप्रभु नासकरिमतिबधइ सिकरतहैं अंगीकार
करतहैं॥३॥श्लोक॥यदंगुलीनखानेंदु चंद्रसैन्य
समाहयि।तापहरतिभक्ताना नाटहानंदप्रदाश्च ता॥४॥
याको अर्थ।अब श्रीहरिरायजी कहतहैं जोश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुके चरणकमलकी है सो अंगुली परम
सुंदर हैं तिनमें हस्तनख चंद्र १० दस रसे सो एकन
खचंद्रकी छटा आगेकोटि चंद्रमाकी कछुलाज्यापाव
तहें सोताऐ श्रीमहाप्रभुजीकेनखचंद्रजो वैसव हृदय
मैं धारनकीयो है सोतिनभक्तनके हृदयके त्रिविधिता
पदूरिहोतहैं।त्याधिदैविक अध्यात्मक आधिभौतिक।
तथाकायक वाचिक मानसिक त्रिविधजनके हृदयरूप
श्रीभक्तमिलनमें प्रतिबंधरूपतापसगरे दूरि होतहै
एसेश्री आचार्यजीमहाप्रभुके चरणकमलसो रो
नेत्रानंदरसानसेदनकोकरतहैं॥४॥श्लोक॥खल्पयन्तु
गतेलोके वेदेचपरिकीर्तितः पुस्तल्येन निजाचार्य च
रणाम्बुजं ममः॥५॥याको अर्थ।अब श्रीहरिरायजी आ
पकहतहैं।जो वेदमेंहुकीर्तिजाकी एसेजो वस्तुस्व
परार्थसतपरलोक जो वेदलोक सगरे ज्ञानमार्गी
यमर्यादामार्गीयकी सर्वोपरफलहै [illegible] सजोवकु
जोफलहमारेपुष्टिमार्गमें वस्ता

प्र.प. चतुरसमोलनोंईसवतुच्छहै।।एसोयहपुष्टिमार्गहै सोजा
१०९ मेंऔर्हूसाधनसुधापानयहीपरमफलहै सोसाधन
करिकैसिद्धिनाहीहै।।तातेमेरेतोपरमफलरूपआप
श्रीवल्लभाचार्यजीके श्रीचरणांबुजयहीफल
है।।इनहीकेश्रीसाधरामनसिद्धिहै।।पत्नो [illegible] नकर्म
वेदविहितनेपलनेजनमयातिधुवा।।यतोवहमुखचित
जायतेतारमुत्तेईरि [illegible] या [illegible] अ [illegible] वेदविहितअने
कप्रकारकेकर्महै।।वेदमेंज्ञानमार्गयोगमार्गकर्ममा
र्गउपासनामार्गअनेवातनसंयमनेमइत्यादिअ
नेकसाधनहै।।सोकाहेतेजोंताकेलीएतेंयहपुष्टि
मार्गकोफलजान्योनाहीजातहै निश्चय।।काहेतेंजो
पुष्टिमार्गतोकेवलव्रजभक्तनकेभावात्मकसर्वोपर
है।।सोश्रीमहाप्रभुजीकीपोइसाध्यरेसाधनतेसि
द्धनाहीहै।।तेसेवहमुखजीवकेचित [illegible] एसे
श्रीहरिजीभगवानकीकथारसात्मकमनजतारे श्री
भगवानकीकथावहमुखकोनसुहाइ।।औरभगवद्र
मेंसेवाहिवहमुखकेचित्तमेंनसुहाइ।।श्लो [illegible] ज्ञान
तुभक्तिहेतुत्वात्तत्सानेवफलरूपता।।यतोजीवस्यदा
सत्वहेतुभेदनिवर्तिका ७ या [illegible] अ [illegible] शास्त्रमेंअस
वादहैजोज्ञानहै सोभक्तिहेतुहै।।सोतातेभक्तिको
ज्ञानभयोहै।।ताकरिभक्तिहोइ।।सोयहपुष्टिमार्गकोसि
द्ध [illegible] फलनाहीहै।।यहमर्यादामार्गीयभक्तिहै
सोतामेंअरु धर्मकोमर्मसेफलहै।।सोतामेंप्रथमसो
नहीमुख्यहै।।तापाछेंमर्यादाभक्तिहोय।।सोपुष्टिमार्ग
केफलमेंनहे ज्ञानऔरमर्यादामार्गीयभक्तिदोऊ
विरोधीहै।।सोकाहेतेजोयहज्ञानमेंदासत्वनाही
रहतहै।।औरपुष्टिमार्गमेंतोजीवकोदासत्वमुख्य
है।।प्रभुस्वामीहै।।याभांतिश्रीभगवत्सेवाहेनाभा

वकोतिवर्नेकर्तो ज्ञानहैंतहां स्वामीसेवक यहभाव
नाहीहैं। श्लोक। मर्यादाभक्तिरप्येषा तावद्देवफला
त्मिका यावन्नयजतेपुष्टि: भक्तिसकलसद्गुणात्।
याको अर्थ। जुहमर्यादाभक्तिहै जुहअपनी आत्मा
को देव अह ब्रह्मसमानत है जोसेही ब्रह्महै। ताकरि
के प्रभुसोंसेवक भावछूटिजातहै। यहज्ञानतैं यहज
तासोंजो पुष्टिभक्ति सर्वोपरिसिरोमनि है। तातें तथा
मर्यादामार्गकी भक्तिकेमध्य माथे परविराजत हैं।
तातेपुष्टिभक्ति सर्वोपरजाननी। श्लोक। पुष्टिभक्ति
हरेरास्यांतेत्वन्यप्रभव: स्वयं न्यासंप्रतता: संत:
फलरूपा भवंतिहि॥ याको अर्थ। यह पुष्टिभक्ति है सो
श्रीठाकुरजीरासादिलीला करिभक्तनको रासलीरो
रासलीलाश्रीठाकुरजीकरिवे सोव्रजभक्तनके
लीयेकरीहैं। एसे श्रीलक्ष्मसो श्रीवल्लभाचार्यजी यह
कलियुगमें पुष्टिभक्ति सो तिनके लीये प्रगट सो
श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीहै स्वयंभगवान्श्रीरसचं
द्रजीहैं सो प्रगटहैं। सो तातें श्री आचार्यजीमहाप्रभु
के चरणकमलको दृढआश्रयहै। एसीमतितैं अंत
रंगहैं तिनहीकोभजन सर्वात्मभाव सोकीयो नव
रासलीलामेंफलप्राप्तिभयो सोतैंही यहपुष्टिमार्ग
मेंजो श्रीमहाप्रभुजीको आश्रयहै। तिनहीभावही
नकोफलसिद्धहै। श्लोक। नइंद्रांतरंतमंत्यंमनु
मतिपदंकिसु। नयानीकफलमानसनभोगाद्विक
इति। १०। याको अर्थ। तातेउत्तरजापुष्टिमार्गीयभक्ति
करत ज्ञानकर्मवदनमर्यादाभक्ति इत्यादिविरोधधर्म
कियेहुनाहीवनतहैं। येरसमनकरिके भजनप्राणीको

से.प.
११० मारगीयधर्मसेवादियहलौकिकफलात्मकनहीकरेजो
मेंसुखपाऊंकुटंबीदेहसेवेंधीसुखीहोइ।पारलौकवैदि
ककामनार्थेवाँनभोगादिविचार्यइहलौकिकवैदि
ककामनासर्वेहोउवेकैतौ।श्लोकार्थ।तस्मात्फल
विनाचार्यपदांभोजद्वयंसदाहृदिधार्यनैवकार्योसं
शयापितमानसौ।१९।याकोअर्थ।यहपुष्टिमारगीय
भगवद्धर्मसेवादिकरियहआपनेश्रीवल्लभाचा
र्यजीकेदोउचरणकमलकोअपनेहृदयमेंधारनक
रिअहर्निसचरणकमलकोध्यानमनमेंराखेया
उपरांतदूसरोकार्यपुष्टिमारगीयकोनाहीकरतव्य
हैमनमेंसंशयअविश्वासनकरैसोकाहेतेजोगी
तामेंकहेहैंनाशंसयात्मास्यविनश्यति।संशयतेफल
कोनाशहोतहैतातेंसंशयनकरै।श्लोक।अत्रसं
शयमापन्नासर्वथाघासुराःस्मृताः।दैवाश्चापिपुराणेपि
हरिणापतिताद्गुरात्।२०।याकोअर्थ।श्रीवल्लभाचार्य
जीकेस्वरूपमेंसंशयहोय।तथायहपुष्टिमार्गमेंसंश
यहोय।ताकोसर्वथाअसुरीहीजानिये।दैवीजीवहो
इअथवाआसुरकोईहोय।ताकोअविश्वासश्रीआ
चार्यजीमहाप्रभूमेंहोय।सोताकोश्रीठाकुरजीआप
नेहाथसंसारमेंडारिदेइ।सोताकोअंगीकारकवहूंन
करै।सोतयताहीतेंविवेकधैर्याश्रयग्रंथमेंश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभूकहेहैं।जोअविश्वासोनकर्तव्यःसर्वथा
बाधकस्तुसः।तातेंअविश्वासमहाबाधकहै।२१।श्लो
क।अहोभद्रंचित्रमदमवनीपोहरोभुवि।विद्यमा
नेभगवतोचिवृत्तोयपिसर्वथा।२२।याकोअर्थ।श्र
वश्रीहरिरायजीआपुश्रीमुखतेंकहतहैंजोमेरेमत
मेंवडोआश्चर्यहोतहै।योरवडोआश्चर्यहैजोभूमिवि
षेंश्रीवल्लभाचार्यजीश्रीहरिजोप्रीहसहीयव

तारलीयें सोतिनकों तुलसीवृक्षके भगवद्रूपत्वकरी वृक्ष
भयुलभूमिपरविराजमान हैं। औरश्री भागवतहू विद्यमा
न है। श्रीभागवतकी टीका निबंधश्री सुबोधनीजी हू विरा
जमान हैं सर्वथा नऊं यह जीवमार्गमें नाही प्रवर्त होतहैं
यह मोकों बडो आश्चर्य है। श्लोक॥ सत्यासु श्रीसुबो
धिन्यां सत्सु श्रीमद्विठ्ठल विन ग्रंथेषु विद्यमानेषु सर्वार्थ
ज्ञापकेष्वपि ॥४॥ याकोअर्थ॥ अवश्रीहरिरायजीकहत
हैं जो भावार्थ श्रीसुबोधनीजी निबंध भूमिपर विराज
तहैं औरएकहू सत्य है। भगवद्धर्महू सत्य हैं तथा
श्रीसुबोधनीजी निबंधके वक्ता ऐसे सत्पुरुषहू विराज
तहैं। औरछोटे बडे श्रीगुसांईजीके श्रीआचार्यजीम
हाप्रभुके पुष्टिमार्गीय ग्रंथहू विद्यमान हैं। सो ग्रंथ
कैसे हैं सर्व पुष्टिमार्गके भावतिनके ज्ञापक हैं इनग्रंथ
नद्वारा सगरी रीति पुष्टिमार्गीयकूं जानी जातहैं या
भांति सगरी रीतिवस्तु विद्यमान हैं। ४॥ श्लोक॥ तथा
पिन प्रवर्त्तन्ते यथा भक्तिपथे पुनः। प्रायस्तत्रैव हरेरा
कारणत्वेन रक्षिता ॥५॥ याकोअर्थ॥ अवश्रीहरिरायजी
आपुश्रीमुखतें कहत हैं जो ऊपर कहेहैं सो सगरेपदा
र्थ भूमिपर विराजमान हैं तऊं जीवपर पुष्टिभक्तिमार्ग
में नाही प्रवर्त होत हैं। सो कहा हेतु है जो एक श्रीहरिकीकृपा
को कारनहै। सगरेपदार्थ हैं औरश्रीहरिकीकृपातें
ऊं नवहीजान्यो जाय श्रीहरिकी कृपा होय तबही जान्यो
जाय। श्रीहरिकृपाबिना जीव भक्तिमार्गमें नाहीं प्रवर्त हो
त हैं। तातें यह पुष्टिमार्ग तो केवल प्रमेयमार्ग है। सो श्री
हरिकी कृपा प्रमेयबल बिना यह मार्गमें कैसें आवें॥५॥
श्लोक॥ मूर्छिते ह्रियव न
कृपाबिना सर्वसाधनं । या ॥
अवकहत हैं जोतातें श्री

सि॰प॰ सिद्धि होय ताको दृष्टांत कहत हैं जो जैसें प्रान विनास
१११ पारी इंद्री मूर्छित होइ तिनतें कछु न कार्य होय जब प्राण
आये तब सगरी इंद्री चैतन्य होय अपने अपने कार्य
में तत्पर होत हैं ताही श्रीकृष्णजी की कृपा प्रान स्थानीना
ही है जब परम नेह सों ताई पुष्टिमारगीय साधन इंद्री स्थान
नीन कछु न होइ जब श्रीकृष्णजी कृपा करें तब सब पुष्टि
भक्ति में आय सेवादिक करें भाव सिद्ध होइ इति निश्चय ॥ १६ ॥
इति श्री हरिरायजी कृत सिक्षापत्र पं॰ विं॰ वचनामृत टीका श्री
गोपेश्वरजी कृत में पूर्ण ॥ २५ ॥ अब कहत हैं जो पुष्टिमारगी
य सगरो पदार्थ प्रगट हैं परंतु श्रीकृष्णजी की कृपा बिना
नाही जीव सब वत्ते होत न हैं तहां कोई कहे जो श्रीकृष्ण कृपा
न करत हैं क्यों सो तहां श्रीहरिरायजी आगे सिक्षापत्र में
कहत हैं जो श्रीकृष्ण तो परम कृपाल या भांति कृपा क
रत हैं सो श्लो॰ स्वकीयानां मैहिकं यद्यथवा पारलौकिकं
स्वकरोति वस्तूनकतो प्रभुरेव न संशयः ॥ १ ॥ याको अर्थ श्री
वक्त हैं जो श्रीकृष्ण ऐसे हैं परम कृपाल हैं अपने स्वकी
य निज भक्तन को यह लोक परलोक दोऊ सिद्ध करत हैं
यह लोक में विषयादि भांति को ज्ञानो यह लोक में स्त्री पु
त्र धन सेवौ सिद्ध करत हैं जा में भगवद्धर्म सेवादि में वि
घ न करें या भांति लौकिक सिद्ध करत हैं और अलौकिक
में लीलारस स्वरूपानंद को दान सो कहा सिद्ध करत हैं सो त्रि
विधि नामावली में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं भ
क्त सर्व दुःख निवारकाय नमः भक्त के लौकिक अलौकि
क सर्व दुःख दूरि करि के सर्वथा सर्व कार्य सिद्ध करेंगे ता
तें जीव को कछु चिंता नाही करनी है ॥ १ ॥ श्लो॰ तथा
पि कृते जीव प्रयत्ने निज दोषतः अन्यथा न्यकरणं
वाहि स्म तेनात्र दुःखंचन ॥ २ ॥ याको अर्थ या भांति श्री
कृष्ण तो परम अलौकिक सर्व कार्य सिद्ध करत हैं सो तक

जीवअपनेमनमेंअनेकप्रकारकेसाधनकोउपास्क
रतहैंजीवबुद्धिअज्ञानतेअनेकप्रयत्नकरतहैंअे
सेअज्ञानीजीवनपरश्रीहरिरूपकरुनानिधिहैसोसग
रोअपराधक्षमाकरतहैंअपनीओरतेसोअनेककर
णमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैंप्रभुकेसेहैंसत्य
संकल्पतोविभुर्नान्यथातुकरिष्यति।श्रीहरिसत
त्यसंकल्पहैंश्रीआचार्यजीद्वाराअंगीकारकीये
हैंसोदृढहैंजीवअज्ञानकरिभूलतहैंप्रभुकेसेभू
लैगे॥प्र॰श्लो॥अविरुद्धमत्कृतेनिरुद्धवास्यमपि
पि।यासेपुष्टिलोवालेपुष्टिनेबहुरूतेहितं।अथा
कोअवेयहपुष्टिमार्गमेंअविरुद्धभगवत्सेवादिश्रीह
रिकोआश्रयसोतोनाहीकरतहैंऔरअनेकसाधन
प्रयत्नजोपुष्टिमार्गतेविरुद्धमेहैताहीकेकरणमेंतत्प
रहैंऐसोअज्ञानीजीवहैउलटोवर्ततहै।ऐसोहूदास
परश्रीआचार्यजीकीकानितेश्रीहरिसमकेसीह्लावकर
तहैंसोपितावालककोहितहीकरैबालकअज्ञानते
कछुदोषकरेपरंतुपितादोषकोनाहीविचारतहि
तहीकरतहैसोयहन्यासनिर्णयमेंश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुकहेहैंहरिसरणागतकोनित्यकनुबाधंकुनोपरं।अ
न्यथामोनैरोवालान्नस्त्वत्स्यैःपृथुवत्तचिंत।१जैसेमा
तापुत्रकोवारवारअपनेतनसौपोषनकरतहैतैसें
हीजोजीवश्रीआचार्यजीमहाप्रभुद्वारासरणागतआ
येहैंतिनकोप्रभुबाधानाहीकरतहैंजाप्रकारभांति
वेदासकोकल्याणहोइसोइप्रभुकरतहैं।अैसेहू
बालश्रीहूसहहैं।श्लो॥नजानातिनिजाजानात्
न्हतिसहनद्विना।[illegible]रोषराखिजीवोयं श्रीणां
परिधि।४या[illegible]अ[illegible]याभांतिप्रभुकृपाकरत
जीवअपनेअज्ञानतेनाहीजानत

प. तातें हैं उपकारको नाहीं जानत ऐसे दोषकी रासि होय
१२ भरयो जीव है और हरि जो श्रीकृष्ण हैं सो गुननिधि हैं जी
व दोषनिधि हैं भगवान गुननिधि हैं ॥ श्लोक ॥ कथम
न्योन्यसंबंधः स्यात्मतेजसोरिव ॥ तथापि दोषराशी
नां दाहहेत निवेदनात् ॥ याको अर्थ ॥ ऊपर कहे ऐसे
श्रीकृष्ण सों जीवको परस्पर संबंध कैसे होइ जैसे तेज औ
अंधियारो है ताको संबंध कैसे होइ जहां तेज है
इ तहां अंधतम कैसें आवै तैसेंही यह जीवको नप्रकृ
र श्रीकृष्ण सों मिलै सो कठिन है जो ये रन तो उपाइ कोइ
नाहीं है जीव सर्व भगवान में निवेदन करे तब ही सब दो
ष दूरि होइ ॥ सो तो रासी वाते में प्रसिद्ध है ॥ श्री आचार्यजी
को चिंता भई तब श्रीकृष्णने यही आग्या करी जो समर्पन
करावो निवेदन ते सगरे दोष जीवके दूरि होइंगे ॥ तातें जी
वको दोष निवेदन ते निश्चय दूरि भये ॥ श्लोक ॥ ह्याचा
र्येश्वरकारुण्याद् गम्यता हरियो जन ॥ अन्तः आचार्य चर
णास्थापेद् हृदि निरंतरं ॥ याको अर्थ ॥ श्रीहरायजी
कहत हैं जो ऐसो दोषरूप जीवको जब अपने श्रीवल्ल
भाचार्यजी द्वारा निवेदन होइ तब सगरे दोष नास हो
इ तब श्रीकृष्णकी सेवा योग्य होइ ॥ और उपाइ कोइ
नाहीं ॥ तासें अपने श्रीवल्लभाचार्यजी के चरणकमल
अपने हृदय में स्थापन करनो यही योग्य है ताते पुष्टि
मारगीय वैष्णवको परमधर्म यही है ॥ जो श्री आचार्यजी
के चरण हृदय में अहर्निस धारन करे याही ते सर्व फल
सिद्ध होइगो ॥ श्लोक ॥ यथा बालकरक्षायै डाकिनीतो
भयं निशि ॥ माता तथैव भेतव्यं दुःसंगाद्वा वैष्णवे ॥ ७ ॥
या ॥ को अर्थ ॥ जैसे बालककी रक्षा माता करे डाकिनी
बालकको घात करत है सो बालककी रक्षा यै डाकिनी
ते माता भयभीत होत है बालकको छिपाय राखे है

सैंहीपुष्टिमारगीयभगवदीयदुःसंगरूपडाकिनीसें
अपनेभगवद्भावरूपवालककीरक्षाथेडाकिनीरूप
संगत्यागकरैं तातेंवेस्वकोंदुःसंगवोहोनहींबाध
हैं तातेंसर्वभावजाय यहजानिकें सोंगतिअह
सडरपतहैं तोभावकीवृद्धहोय॥ ७ ॥श्लोक॥ समत्ते
नत्रियतेमनो॥ याकोअर्थ॥ सर्वश्रीहरिरायजीपु
ष्टिमारगीयवैष्णवसोंकहतहैं जोआपनेहृदयमेंआ
यश्रीआचार्यजीविराजमानहैंमस्नेहहै सोसबवै
आगेमोपरसन्नो का है के आगे कहेनो नाहीं जेसेंस
तीपतिवृतास्त्रीहोइ सो अपने हृदयको अभिप्रायअप
नेपतिकेआगेकहेयो रवा है के आगे संवथाहीनवर्ते
तैसेंहीपुष्टिमारगीयभगवदीयभक्तअपनोभावसवन
केआगेगोप्यवरे याभांतिजेमनजोरासरहैतोयाकाल
मेंधर्मरहैनाहींतोबाधकहीहोय ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ इतिवा
र्त्ताउपसंगेयथावर्द्धयतेरति स्वैरिणी भक्तसंसर्गभाव
वृत्तिस्तथान्ययेन ॥ याको अर्थ सर्वश्रीहरिरायजीव
र्णनहैं जैसेंइतीविवार्त्तालापअनेकवचनतेंस्त्रीको का
मवर्द्धितहोंसंगतेरतिवढेविभचारिस्त्रीको तैसेंही
वैष्णवकोभगवद्भक्तनाइसीमिलतेंनोभगवानमेंभाव
वढेंयहअसिद्धहीभावहैकाहैतें इनसोंअनेकवात्ताव
र्त्ताकेमनवचनविषयसंबंधीकरेजोकामवढेंजेसें
हीभगवदीयभगवान्कीकथाएसोभावान्तर...
हृदयमेंभगवद्भावप्रगटहोइआवें तातेंपुष्टिमारगी
यभगवदीयहोइतिनकोसंगआवश्यक...
श्लोक॥ असत्पेसर्वेसावितें नयद्...
भवनाहोनुचेता स्यापि ...
जैसेंविभचारिस्त्रीअसतें

प. थाकल्लो सदा गृहमें तें मन न चाटही रहै। अनेकपरपु
१२ रुषपास मन भटके। तैसेंही जा भगवदीय को चित्त श्री
ठाकुरजी के स्वरूप में लग्यो है। एक श्री हरि के चरणा
रविंदके आश्रित न तें चित्त स्थिति है। तिनको मन अ
पने गृहमें देहसंबंधी लौकिक वैदिक कार्यमें न ल
गे। तातें श्री प्रभुको आश्रय है सो मुख्य है। निश्चय
१४ इति श्री हरिराइजी कृत शिक्षापत्र ग्रंथ चिंतामणि की
टीका श्री गोपेश्वरजी कृत भाषामें संपूर्ण॥ अवरूपाक
हे जो भक्त प्रभु के आश्रय हैं तिनको चित्त लौकिकमें
नाहीं लगत है। नहां पूर्णमें अनेक बाधक हैं तिन
को तजिये। तब फल सिद्ध होइ सो कहा बाधक हैं कैसे
तजिये सो आगें निरूपण करत हैं। श्लोक। निजाचार्य
पदांभोजयुगलाश्रयणं सदा। निधेयं तेन निखिलफ
लं भाव विनाश्रयं ॥१॥ याको अर्थ। अब श्री हरिराइजी क
हत हैं जो पुष्टिमार्गीय वैष्णव या भांति सों रहे सो तिन
को फल निश्चय ही सिद्ध होइगो। अपने निजाचार्य श्री
वल्लभाचार्यजी के दोऊ चरणकमल को आश्रय सदाए
हैं। सो तावैष्णव को निखिल विनाश्रम ही सिद्ध होइ
सो बिना साधन ही श्री प्रभुजी की कृपातें सकल फल
सिद्ध होइगो ॥१॥ श्लोक। धनं गृहं गृहासक्ति प्रतिष्ठा लो
कवैरूप्यं। कामादिनिःशमनसः स्वर्गादिफलकाह
रां ॥२॥ याको अर्थ। अब श्री हरिराइजी आप श्रीमुख
तें कहत हैं जो पुष्टिमार्ग के फलमें यह चालीस दोष
हैं सो ये बाधक हैं। और दोष तो यों अनेक हैं परंतु
ये चालीस दोष मुख्य हैं सो तिनको तजिये तब फ
ल सिद्ध होइ सो कहत हैं प्रथम धन तें परम महा दो
ष है को कहते यह जीव बावरो होइ जात है काहू
गिनत नाहीं तातें धनको निवेदन प्रभुमें करि भग

भगवद्सेवामेंलगावै।प्रभुजासेंअपनेकोदासजानें
यहसंयोगहतेंजो।यहमेरोसेव्यहै।मेंवनायोहै।मेरोपि
ताकोहै।यहममतावाधकहै।सोछोडे।२।तीसरोयह
सक्तिहै।अष्टप्रहरयहआसक्ति।देहकार्यमेंआसक्तिहै।आ
नुयहधरनोहै।यहवनावनोहै।यहआसक्तिवाधकहै
स्वोयेतेथवेस्कीप्रतिष्ठातेजो।यहजोकिलमेंजोकछुघ
टतीकायेकरूंगोतोप्रतिष्ठाजाइगी।तातेंपरवानोपलगा
वेगोतोप्रतिष्ठाजाइगी।मिंस्यरलगाउगो।तामेंमेरीवड़ाई
होइगी।औरवैदिकश्राद्धआदियहहैमयज्ञइत्यादि
क।मैंसवतेंवहुतकरतहों।यहप्रतिष्ठावाधकहै।धाव
मोक्षिमेंनेष्ठासंख्यातपनरतनेमइत्यादिभगवद
मेंयामेंनाहीवाधकहै।धाफलमेंस्वर्गादिकेफलकी
कालणोजोस्वर्गलोकमेंजायनानाप्रकारकेभोग
विलासकरूं।यहभक्तिमार्गमेंवाधकहै।५।अवचौ
रहेवहतहैस्तोक।।लौकिकेपरमांप्रीतिविरुद्धविष
पेलणा।अपिरुद्धपथासक्तिविरायेभोगभोजनतेआ
पाकेस्पृश्य।लौकिकजोदेहसंवंधीस्त्रीपुत्रादिमेंपर
समीतिसोभक्तिमेंवाधकहै।७।भक्तितेविरुद्धजोलौकि
कविषयताकीईस्तनजोयाहन।।सोऊफलमेंवाधक
है।लौकिकविषयतेविरुद्धविषयासक्तिसोऊवाध
कहै।७।आछोआछोपानोविषयभोगार्थेभगवत्से
वार्थमहाप्रसादकेमिसकरलेतहैं।सोभावनादीविषया
थेआछोभोजनघृतादिसोऊवाधकहै।९।अस्तोःहंहां
दिमिमानसुतजोविधाविद्वितोपिचे।।भगव
नाभावासदिनंदेहपोषणं।श्रीपाकेश्र
मातजोमनमदनेकोहूकोनेमि
रहैवैरीनित्यसवारो।अपनीरे मनसे
लैयहवाधकहैं।।११

५. मेंहो ब्राह्मण क्षत्री सब मो तें नीचे हैं मो समान कोई ना
हीं यह भांति मैं बाधक है १२ विद्यामद जो मैं बहुत पढ्यो
हूं यह सास्त्र को ज्ञान मोको है और तो सब मूर्ख हैं यह वि
द्यामद बाधक है दैन्य सिद्धि नाहीं होन देत १३ भगवद
नाहीं करत लौकिक वैदिक अनेक कार्य में दिन विता
वत हैं भगवत्सेवा में मन नाही है यह पुष्टिभक्ति में
बाधक है जैसे ब्राह्मण गायत्री न जपें तो ब्राह्मणपनो
जाय तैसें ई वैष्णव होय के भगवत्सेवा न करे तो पुष्टि
भक्ति में बाधक है १४ देह को पोषन रंच हु सीत उष्ण स
हि सके अनेक औषध तें थान पान तें देह की रक्षा में र
हैं देह की रक्षा तो भगवत्सेवार्थ करी है सो नाहीं के
वल लौकिक कार्य देह पोषे सो बाधक है १५ अब
और हू बाधक हैं श्लो० असत्संगासमर्पितभक्षणानु
ष्ठितभक्षणां निवेदनानुसंधानत्यागः शरणविस्मृ
तिश्च ॥ अ असत्संग महादुष्ट को वह मुख ना
दुष्टता होइ सोऊ बाधक है १६ और श्रीकृष्ण महा उच्छि
ष्ट प्रसाद छोडिकें असमर्पित खाय यह महाबाधक है
सो पद्मपुराण में कहे हैं श्लो० अनिवेद्य तु यो भुंक्ते ह
स्यपरमात्मने पचंति पितरस्तस्य नरके शाश्वतीः स
माः १ अवैष्णवानां मन्नं [illegible] सैसे भवेन्न त
थैव च अनर्पितं तथा वैष्णवा मांससदृशं भवेत् २
कूर्मपुराणे अनर्पयित्वा गोविंदे यो भुंक्ते धर्मवर्जि
तः श्वानविष्ठासमं चान्नं नीरं च सुरया समं ३ इति
वचनात् असमर्पित तें बुद्धि भ्रष्ट होइ सर्व धर्म को
नास होइ यातें महाबाधक है १७ निवेदन कीयो हू
ताको अनुसंधान कबहु नाहीं करत है जो मैं समर्पन
कीयो है पंचाक्षर को कहा अभिप्राय है या भांति नि
वेदन को अनुसंधान नाहीं करत यह बाधक है श्री

कृष्णजीकीशरनस्मृति हो। अष्टाक्षरमहामंत्र श्रीकृष्णश
रणंमम: यह सरणकी विस्मृति बाधक है ४१ श्लोक।।
देवान्तराश्रयस्तेष्व प्रार्थनापि फलार्थिनः। भगवच्चिंत
रहिताव्याप्तिरपि लौकिकी॥ याकौ अर्थ और देव
कौ आश्रय यह महाबाधक है। सालानपुरुषोत्त
मश्रीकृष्णकौ आश्रय छोडि अन्यदेवकौ आश्रय क
रै ताकैं यह पुष्टिमार्गकौ फल नाही है सिद्ध। स्मृति
मैं कह्यौ है हारितस्मृतौ: नान्यं देवं नमस्युर्यो नान्यं देव
निरीक्षयेत्। नान्यं प्रसादं नाइनीयान्नान्यदायतनं व्रजेत्
१ या भांति अन्याश्रय है तो फल सिद्धि होय। श्रीगुसांई
जी कहै हैं। श्लोक। भगवत्पादपद्मपरागायुयोर
हियुक्ते नरमरणपितरौ। इतरायुश्रयतागजराज
त्तौ न हि रासभमध्युरीकुरुते १ अन्यसंबंधगंधो
पि कंधरामेवबाधते। इति वाक्यात् या भांति अन्यदे
वाश्रित अन्याश्रय बाधक है २ अन्यदेव ब्रह्मादिक
ताहि शिवादि गणेशसूर्यदेव सौं फलकी प्रार्थना
यह बाधक है श्रीकृष्ण सर्वसामर्थ्ययुक्त तिनकौ छोडि
अन्यदेव सदा पराधीन तिन सौं फलकौं ला यह पुष्टि
मति बाधक है २ २ भगवान्के चरणारविंदनि चिंतर
हित लौकिक वैदिक कार्य मनमें असंभावना विपरी
तिभावना मिथ्याज्ञान यह पुष्टिमार्गके फलमें बाध
क हैं २ ३ अथ प्रहर लौकिक व्यावृत्तिक रि लौकिक
वैरा होइ तातै अष्टप्रहर सब लौकिक कार्य बाधक
हैं २ ३ अब आरह कहत हैं। श्लोक।। गुरुद्रोहस्तदी
येष्वस्वस्याधिक विभावना। स्वपक्षेहसामर्थ्य
सिद्धियाणां चपोषणं १ याकौ अर्थ। गुरुद्रो करे
गुरु ये प्रसन्न होइ तो यह बाधक परंतु अप्रसन्न
तौ गुरु रहा करै। गुरु प्रसन्न होइ तो रहा करि

सामर्थ्य नांही ॥ ४ ॥ और पुष्टिमार्गीय भगवदीय कौं
अपने तें न्यून जानें ॥ अपने कों अधिक भगवदीय
कों जानें ॥ या भांति मन में भावना करें यह बाधक
२५ है इन में अत्यंत सामर्थ्य सो काहू को गिने नाही ॥ अ
हंकार होइ तथा बडो विषय होय यह बाधक है ॥ २६
अपने इंद्रियन पोषन में तत्पर है सो इंद्रियकों विष
य ही भोगाइ प्रिय है ॥ तातें इंद्रीयपोषणातें विषयया
वेस होवे है ॥ २७ ॥ अब और इक कहत हैं श्लोक ॥ गृहेष्वभि
रति भार्या पुत्रादिषु मनो न गतिः ॥ इति लोकानुभाव रहितेनाद
रास तन से स्थिति ॥ सो या को अर्थ ॥ गृहादिक लौकि
क कार्य की रति अरु गृह रमादिक में प्रीति ॥ २८ ॥ स्त्री
पुत्र में मन को विप्रीति है इन संबंधी स्त्री पुत्रादि में मन
इन के दुखतें दुखी होइ इन के सुखतें सुखी होइ यह
पुष्टिफल में बाधक ॥ २९ ॥ श्री कृष्ण के अनुभव विना दे
श श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा सात मंदिर तथा वल्लभकु
ल के मंदिर तथा पुष्टिमार्गीय ता इसी के इह राज सेवा ते
या व्रज इन तो ठाकुर वैष्णव कों अनुभव है अरु सब महात्म
व भाग्य जनो विना जीव कों अनुभव कछु न होइ ३०
अब और इक कहत हैं श्लोक ॥ हृद्य सो को जीव लाभो
तस्माद्वक्तव्यं तथा स्वातंत्र्य भावने स्वयनी वक्त्र
भाव इह ॥ टीका ॥ या को अर्थ ॥ यह तो लौकिक रूप सो
कहे इह संबंधी कुटुंब अरु अनेक अलौकिक आछु
होइ तो सुख पावे ह्यर्थ होइ बुरी होइ तरह हानि होइ
तो दुख पावे शोक होइ सो यह संसार रूपी फल में दो
इ फल है एक सुख वा व दुख या ही में म्यौ रहे सो
फल में बाधक है ॥ ३१ ॥ इत्यादि लाभ में लोभ होइ तो
इन ते नो द्रव्य भयो ॥ और होइगो आछो कुटुंब वढे तो
आछो इत्यादि लोभ पुष्टिमार्ग में बाधक है ॥ ३२

अपनेकौ स्वतेजकी भावनामनमें राखैहै।सपनोभलें
मे बाधक है।२३।जीवकौ स्वभावदुष्टनाहींकी भावना
भाविककै स्या विनादुष्टस्वभाव सबकौ बुरौ चाहै यह
बाधक है।२४।श्लोक॥ अधिकारः पापरतिपक्षपातो
दुरात्मनः हृदयकृत्नाहींनिजनोपदीनमापुनः।१०।
याकोअर्थ अधिकारकाहूकौ तैइ नातें अनेकजीव
कौ भलोबुरोकरनोपड़े सो बाधक है।योंश्री आचा
र्यजी महाप्रभु सुबोधनीविषै धर्ममें कहै हैं जो नाराय
नने अस्तासौ भाग्यवंत कहे।यो ऐसाकौ अनुभव
नभयोकाहेते सष्टिक लिखें अधिकारी हैं तातें अ
ग्रहमननाहीं।तातें वेदव्यासको कह्यौ।सो व्यासजी विर
पुराणके अधिकारी हैं तातें इनकौ अनुभव न भयो ना
तें व्यासजी शुकदेवजीसों कहे।सो शुकदेवजी काहूवा
तसों अधिकारी नाहीं तातें अनुभव भयो तातें अधि
कारीको फलमें बाधक है।२५।जा जीवको मन पापर
ति है।ऐसो पापीजीव परीक्षा नाहीं।और खोटे मनुष्य
चोरादिक दुष्टक्रिया करे ताको पक्षपात करें साचे
कौ झूठो करे झूठेकौ साचो करे ताकौ फलमें बाधक
है।२६।हृदयतें कुरहोइ काहूकौ भलो न विचारें महाक
ष्टहलावै सो बाधक है।२७।परीनजनजेकोई हैं।या
केसरण होइ तिनकौ अपनायकरै याकौ त्याग करे
ह पुष्टिभक्तिमें बाधक है।२८।आत्ममान होइ वि
चारन क्रोधहोइ भृकुटीचढ़ीरहै।सहनन होइ य
पुष्टिमार्गमें बाधक है।२९।श्लोक॥ एतेचान्ये स्वो
आसोयाविस्मारको है।सावधानीभूयस्तसेहस्य

कोफलनमेंबाधकहै।३६॥

जिनमैं होइ तिनकौ हरि न जाने जाय यह जीव हरि
कौ न जाने तातें श्रीहरिराइजी कहत हैं समस्त पुष्टि
मार्गीय सो घने जो सगरे वैष्णव सावधान रहियो
यह दोष ८ रूपतराहयो अब कूप दोष रूप रोग कहे
नाकौ ओषधी कहत हैं काहेतें यह चार्यौ सदोष प्र
बल हैं तातें या भांति जो जीव रहैगो तिनकौ यह दोष
सब न लगेगो श्रीकृष्णके चरणारविंदमें अत्यंत आद
रा रखै सर्वस्व जानै १ अब अग्रिम कहत हैं श्लो॰ भग
वन्मार्ग मात्रस्थैस्तन्मार्गको हि भिः। विरक्तैरन्यतः हृष्ट
गुणह तांतराब्धिभि २ या कौ अर्थ भगवन्मार्ग जो पु
ष्टिमार्ग भगवान ही स्वरूप श्रीआचार्यजी कौ धरिके
पने जीवनाथे प्रगट भये हैं ऐसे पुष्टिमार्गमें स्थिति
होइ २ और एतन्मार्गीय यह पुष्टिमार्ग के फल की
कोशा होइ ३ और मर्यादा के फलकी न होइ काहेतें
पुष्टिमार्ग कौ फल श्रीकृष्णकी सेवा स्वरूपानंद कौ
अनुभव यह फल है और अन्यमार्गमें स्वर्गादिक ब्र
ह्मलोक तथा मोक्षपर्यंत चतुर्थ मुक्ति सो यह फल
सब पुष्टिमार्गतें विरोध हैं तातें पुष्टिमार्ग के फलकी
चाहना करै ३ यह लौकिक अनुकार्यतें विरक्त श्री
कृष्णकी सेवा [illegible] विना सब ठौरतें मन खिंचि
रखै ४ और अन्य [illegible] सबके गुणतें आसक्त रहे सगरी
आत्मा मन करि ध्यान करि श्रीकृष्णही की सेवा श्रव
न करि गुनगान श्रीकृष्णकौ क्रिया करि श्रीकृष्ण
ही की सेवा या भांति सर्वात्मभाव श्रीकृष्णके गुनमैं
है तथा ऐसे भगवदीय होइ तिनकौ संग करै ५ अब
आगें कहत हैं श्लो॰ स्वाचार्यस्मरणाद्यातैस्तद्वि
श्वासमन्वितैः परित्यक्ताखिलैस्वयं सदानन्दाने
त्सुकैः १२ याकौ अर्थ अपने आचार्य श्री वल्लभा

चार्यजीके चरणकमलकी रहो है औ दृढ विश्वास म
नमें होय यह जाने जो श्रीवल्लभाचार्यजीके चरणकमल
की कृपाते सब कार्य सिद्ध होयगो निश्चय यह विश्वा
स राखे। आरु लौकिक वैदिक पुष्टिमार्गमें नृ विरोध
होय ताको सब त्याग करे। आरु श्रीआचार्यजीके
चरणनमें श्रीकृष्णके चरणनकी मननमें दृढता राखे। य
ही लक्षण शरणमें रहनकी अपेक्षा राखे। ऐसे यह नव भा
तिके गुण जिन्हमें होय सो सर्वरोग दूरि होय। ऐसे गुण सं
युक्त भगवदीय होय तिनहीको संग करिके नव समर्पणसे
बहुरि होय प्रभुकृपा करें तो नुकाल महाकृष्ण है भगव
दीयको संग नाही मिलत सो आगे कहत है। श्लोक॥ इ
हानीं प्रातःकालः सर्वबुद्धिविनाशकः। परं पतित दुः
संगो मिलितानां स्पवापि हि ॥४॥ याको अर्थ॥ श्री
हरिरायजी कहत हैं जो ऊपर दोय रूपराग है चालीस
४४ हे तातें इहि करणार्थ प्रभुके गुणरूप चौ पृथ है
६ कहे। परंतु यह काल जो अब आयो है सो सर्वबुद्धि
को नाशक आयो है। कालदोषतें सत्प्राणी हैं तिनहूकी
बुद्धिनाश भई है। यह ज्ञानीकी बुद्धिनाश होय। यामें कहे
है हे नो एक तो काल दोष बाधक है। दूसरे दुःसंग विना
ताहू आपुने सुन सिद्धि आय मिलत है। सो मानो कर्मने हृ
में धर्यो है। ताकरिके जो धर्मको लेसहू रहान है। सो ऊ हाथ
ते पतित न भये पर नहीं और भगवत्स्थ पदिवेकी कहा च
ली है। फलटो है। जैसो जो कछु है सो ऊ दिना रहा नात
है। तातें कालदोष और दुःसंग बहुत बाधक है
४५। श्लोक॥ किं कार्यं किमकार्यं वा पायतः स्फुरतीनैव
हि। प्रभुना स्ववतं जावनदुपसंलग्नमेवहि ॥५॥ या
को अर्थ॥ यह कालदोषतें कछु कार्य करिये भगवद्
संबंधी तो कछु और ही बलटो होय जाय

सि.प्र. २२७ न विचारियें केरि या कलि कालमें कछु मन मै पुरो सा भाति म
नेकार्यमें अनेक प्रतिबंध पडत है केवल हू प्रभुन को ए
बल प्रताप मन में आवत है जो श्रीकृष्ण सर्वोपर सर्वकार्य
सिद्धि कर्ता हैं अपने जानिकें प्रभु बल तें कृपा करेंगे
इनको प्रताप ऐसो है सो प्रगट हैं वेद पुराण श्रीभाग
वतादि तामें प्रसिद्ध है। ऐसे श्रीकृष्ण हमारे प्रसिद्धपति
हैं सो हमको काहे को डर है सर्व सिद्धि है या भांति कबहू प्र
भु को बल प्रताप हृदय में आवत है सो पे फिर वृथा संदे
ह नास होइ जात है विश्वास दृढ होइ जात है लौकिक
सुख दुख तिनको पावत हैं ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ साधनानि
न सिध्यंति कालदोषात्तथात्मनः प्रतिबंधश्च कालादि
कृत ः प्राप्य हरे धृतिः ॥ ६ ॥ या श्लोक को अर्थ तहां कोइक
है जो कछु साधन करे। ता साधन ते मन में दुर्वासना न
उठे भगवदर्थ होइ या भांति कोइ करे तहां श्रीहरि
इ जीव हत है। जो साधन करि सिद्धि नाही होत हैं तो
फल तो महा दुर्लभ है। ताते यह काल दोष ते साधन ना
ही सिद्ध होत है। ताते यह कालादिक ते प्रतिबंध होत है
त जो उत्तम करियें तो प्रत्यक्ष हू बुरी होइ जात है सो आगें
कहत हैं। ७ श्लोक ॥ उद्वेगः प्रतिबंधो वा भोगो वापि स्या
जायते प्रतिबंधसेवनं तत्प्रत्याप फलस्याति ॥ २७ ॥ या
श्लोक श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेवाफल में निरूपण की
ये हैं। तामें तीन ३ प्रतिबंध कहे हैं उद्वेगः प्रतिबंधो वा
भोगो वा स्यात्तु बाधकं या भांति कहे हैं प्रथम उद्वेग मन
को होइ तब सेवा में मन न लगे सो प्रतिबंध होइ पाछे इ
सरीरादिक के भोग को मन होइ भोग ते विषयावेस
होइ जाय तब प्रभु अप्रसन्न होइ सो या भांति प्रति
बंध तें तब भगवत्सेवा में न होइ तब पुष्टिमारगीय
फल की आसा काहे को करीये या मार्ग में तो भगव

हसेवाहीफलहैसोफलभईतौयामेंकहाफलहोइगो।१७।लो
कतदैयापिश्रीमदाचार्यचरणाश्रयणंमम।निवर्ततो
निरासेशान्नमम्नोफललब्धिना।१८।याकोअर्थ नातेयामा
र्गमेंसेवाफलहैसोयहस्थलदेयमहानिश्चय,तउश्रीह
रिरायजीकहतहैं।सोएसोमेंसेवाविनाफलकीनिरास
होतउएकमनमेंभरोसोहैं।मेरेश्रीवल्लभाचार्यजीके
मेरेचरणकमलकोआश्रयमनमेंकीयोहूं।भगवतसेवा
करिरहितहूं।तउश्रीमहाप्रभुजीकेचरणकेआश्रयतें
यहपुष्टिमार्गकोफलसबौपरलब्धिहै।निश्चयसिद्धहो
इगो।याविश्वासहै।१८।इतिश्रीहरिरायजीकृतसप्र
विंसतिकौटीकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्णम्।२७।अथ
वउपरकहैं सर्वसाधनरहितजथासेवाकरिरहितहैं
तउश्रीमहाप्रभुजीकेचरणाश्रयतेंयेफलहोइगो
सोफलकोनमातिहोइ।सोआगेंकहतहैं।जोआश्र
यतेंदैन्यतासुरेंसोफलरूपहै।सोदैन्यताआगेंवर्ण
नकरतहैं।स्लोक॥कदानंदात्मजःस्वयमुरूपापुष्टिक
रिष्यति।प्रतिक्षयेवास्मदोदिमनः।आनंदमहेद्रिये
१।याकोअर्थ।श्रवश्रीहरिरायजीविज्ञप्तकरतहैं।नंदा
त्मजश्रीकृष्णयशस्वकरिनंदरायजीकेपुत्रसोवसुदेव
नंदनाही।पदपुष्टिमार्गमैंनंदकुमारस्वयमहैं।श्रीशुक
देवजीनंदमहोत्सवकेअध्यायमेंकहेहैं।नंदस्यात्मज
उत्पन्नेजातोल्हादोमहामनाः।नंदरायकीआत्माते
प्रगटे।एसेश्रीकृष्णभावात्मकरसरूपपुष्टिपुरुषो
त्तमसोवोआपनेस्वकीयनिजभक्तजानिआपनीकृ
पादृष्टिकवकरोगे।तुमारीप्रतिक्षाकरतकरतअस्मद्
इंद्रिकेमनइंद्रीसहितदेहसबैशिथिल हगो।श्री
गुसांईजीविज्ञप्तमेंकहेहैं।यो त्वत्पा
दाब्जैककिंकरा।तद्धौकेयसमप्यात्स्वकृ२८

से.फ. नविचारिये पैरिरावल तामें कछु मन मैं पुरैसा भांतिम
१७ लेकार्यमैं अनेक प्रतिबंध पडत हैं केवल प्रभुनको पु
ष्ट बल प्रताप मन में आवत हैं जो श्रीकृष्ण सर्वोपर सबके कार्यकै
सिद्धिकर्ता हैं अपने जानिकें प्रेमल बलनै कृपा करेंगे
इनको प्रताप है सो हिमा प्रगट हैं वेद पुराण श्रीभाग
वत गीतामें प्रसिद्ध है ऐसे श्रीकृष्ण हमारे प्रसिद्धपति
हैं सो हमको कहा डर है सर्व सिद्ध है या भांति कबहू प्र
भुको बल प्रताप हृदयमें आवत है सो पेरिग पसंह
र नास होइ जात है विश्वास छूटि जात है लौकिक
सुखदुख तिनको पावत है ।५। श्लो० ॥ साधनानि
न सिध्यंति कालदोषान्तरात्मनः प्रतिबंधश्च काला
दिकृतः प्रत्यूहमेव धत्ति ।६। या श्लोक ॥ तहां कोइ क
है तो कछु साधन करो ता साधन ते मन में दुर्वासना न
उठै भगवद्स्वरूप होइ या भांति कोइ कहै तहां श्रीहरि
रा जीव कहत हैं जो साधन करि सिद्धि नाही होत हैं तो
फलतो महादुर्लभ है तातें यह कालदोष ते साधनना
ही सिद्ध होत है तातें यह कालादिकें प्रतिबंध होत है ह
त जो उत्तम करियें तो प्रत्यूह बुरी होइ जात है सो आगें
कहत हैं ।६। श्लो० ॥ उद्वेगः प्रतिबंधो वा भोगो वापि
जायते प्रतिबंधस्य वनंते प्रत्यूहा फलस्य तु १७ या श्लो
क श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेवाफल में निरूपण करी
रे हैं तामें तीन ३ प्रतिबंध कहे हैं उद्वेग प्रतिबंधो वा
भोगो वस्पातु बाधकं या भांति कहे हैं प्रथम उद्वेग मन
को है जब सेवा में मन न लगे प्रतिबंध होइ पाछें दू
सरी रातिकवै भोगको मन न होइ भोग ते विषयावेस
होइ जाय तब प्रभु अप्रसन्न होइ सो या भांति प्रति
बंध तें तब भगवद्सेवा में न होइ तब पुष्टिमार्गीय
फलकी आसा काहे को करीयें या मार्ग में तो भगव

हसेवाहीफलहैं सोइनभईतौयामेंकहाफलहोइगो।१७। सो
कहतहैं यापिश्रीमदाचार्यचरणाश्रयणं मम। निवर्तेतो
निरासेज्ञानमनो फलतछिंता:।१८। याकोअर्थ तातैंयामा
र्गमेंसेवाफलहैं सोयहस्कालदोषमहानिश्चय तब श्रीह
रिराइजीकहतहैं सोऐसोमैंसेवाविनाफलकीनिरास
हैनऊएकमनमेंभरोसोहैं मेरेश्रीवल्लभाचार्यजीके
मेरेचरणकमलकोआश्रयमनमेंकीयोहूंभगवत्सेवा
करिरहितहूंतऊश्रीमहाप्रभुजीकेचरणकेआश्रयतें
यहपुष्टिमार्गकेफलसर्वोपरतछिंहैं निश्चयसिद्धहै
इगो याविश्वासहे।१८। इतिश्रीहरिराइजीकृतस
र्वविसनाकीटीकाश्रीगोपेश्वरजीकृतसंपूर्ण।१७।अथ
वऊपरकहै सर्वसाधनरहित तथासेवाकरिरहितहैं
तऊश्रीमहाप्रभुजीकेचरणआश्रयतेयेफलहोइगो
सोफलकोनभांतिहोइ।सोआगेंकहतहैं जोआश्र
यतेंदैन्यताप्राप्तहैं सोफलरूपहैं।सोदैन्यताआगेंवर्णा
नकरतहैं श्लोक।।कदानंदात्मजःस्वेषुकृपादृष्टिंक
रिष्यति।प्रतिक्षणं वा मत्सेवि मनःशांतं मदेंद्रियं
१याकोअर्थ अवश्रीहरिराइजीविज्ञप्तकरतहैं।नंदा
त्मजश्रीकृष्णयहकहिंवेराइजीनेपुत्रकहे।वसुदेव
नंदनाहीं।यहपुष्टिमार्गमेंनंदकुमारस्वरूपहैं।श्रीशुक
देवजीनंदमहोत्सवकेअध्यायमेंकहेहैं।नंदस्त्वात्मज
उत्पन्नेजाताल्हादोमहामनाः।नंदरायकीआत्माने
प्रगटेऐसेश्रीकृष्णभावात्मकरासपुष्टिपूर्णपुरुषो
त्तमसोको अपनेस्वकीयनिजभक्तजानिआपनीकृ
पादृष्टिकवकरोगे तुमारीप्रतिक्षणकरनकरत अस्मदा
दिकेमनइंद्रीसहितदेहसर्वशिथिलहोइगो।श्री
गुसांईजीविज्ञप्तमेंकहेहैं।पादसीनाद्भुतैनाथत्वत्पा
दाब्जैकचिंकरा।तदुच्चाथसमप्पात्तुकदाचरंमम:

सि.प. तातेमेरे नेत्रके गोचर मोकों वदन चंद्रके बदरस नदेहुगे
२८ १ श्लो० करुणावारिधिः स्वीयनिधिसर्वाधिकः प्रभुः उ
पेक्षते तु नः स्वीयानिति चिंतातुरं मन । २ । या० । टी० । हे श्री
हल तुम कैसे हो करुणा के निधि हो । और सर्वके प्राणीमा
त्रके स्वारव अगरे जानके प्रभु हो ताहू में स्वीय जो तुम्हा
रे भक्त हैं तिनके तो सर्वस्व निधि हो । ऐसे प्रभु स्वीय अप
ने भक्तकी उपेक्षा कैसे करत हो । यह चिंता नित्य करिके म
नते आतुर ताभयो है । श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति में कहे हैं हा
नाथजी चिंताधिसू राजीवदल लोचन: यथोचितं वि
धेहीति प्रार्थनं तव कस्यचित् हे नाथ कमललोचन मैं
तुमसों प्रार्थना कहा करूं तुमारी कृपा ते जीवत हों सो
यह विप्रयोग उचित है ताते प्रार्थना में कहा करूं तुम
सर्वज्ञ हो सब जानत हो । ३ श्लो० । निजानंद निमग्न स
भवेद्यपि विस्मृतिः भक्तार्थ भवनी गीस्य कृपालो रू
चिंतां न मा । ३ । या० । टी० । हे श्री हल तुम कैसे हो अ
पने आनंद में रात्रिदिन मगन रहत हो । पर कहिके यह ज
नारे । सो एसे मग्न रहत हो जो यह भाव संसारादिक को
विस्मृति है । यद्यपि तऊ अपने भक्तन के अर्थ तुम्ह
लीए हो । प्राणाय्य ताते और तुम परम कृपालु हो
तुमारे भक्त जो संसार में हैं तिनको आरु चिंता
करो ॥ ४ ॥ रु चिही कृपा करि अंगीकार ही करोगे । सो श्री
गुसांईजी विज्ञप्ति में कहे हैं । त्वदंगीकृतयो जीवे स्वाधि
कारायतः प्रभो । आनंतस्व न विचार्यो हो कृपा कुरु कृपानि
धे । ४ । हे नाथ तुमारो अंगीकृत जो जीव है सो तुमारे अ
धिकार योग्य है सो इहांलो विकर संबंध ते तुम भूले हो
अधिकारयोग्य नाही है तऊ तुम इन दोषन को वि
चार मति करो कृपाई करो काहे तें तुम कृपानिधि हो
हम पर कृपा ही करो ५ श्लो० के प्रार्थये पुत्ते दीनो

विहायतिनिनायसं [illegible]
साधनो॥ यम [illegible]
वरैं हमदीनहैं तुम्हरो [illegible]
है तुमबिनाश्रिर कोई [illegible]
सोहै सर्वसाधनकरि [illegible]
हैं यहीभरो सो हैं मा [illegible]
मैं तुमारो प्रायश्चित [illegible]
जीविवेकधयस्थितगय [illegible]
वासवेथासरणहरि [illegible]
तपाय इमलोना हीस [illegible]
॥ मन्नायनायमन्ते स्व [illegible]
शोनं वापिदेहिं विभुस्वस्तुति [illegible]
स्तुममे नायसो॥ [illegible]
सर्वसाधनकरिरहित ॥ [illegible]
विरहाकुलहां कोहित [illegible]
हों स्रोरतुमारी विवादि [illegible]
रतुमारीसेवादिभा [illegible]
हमसा ग्रि पीडित [illegible]
राप्रिमेवदेहैं॥ त्वदशानविर्द्ध [illegible]
वित यथेमेवत्तथा नायदुमा [illegible]
रदर्शन विनातुमारत दीय [illegible]
नाथवेदुभेगा उनवमामपन्न [illegible]
करतहैं जोहम्को स्वमन्ने [illegible]
कोवरावी नामेयजनाने नाय [illegible]
तुनास्वकरिणावकरिहमा [illegible]
पावनवरो॥ तवस्मेवमुक्त [illegible]
ससारप्रिव रिस्रावलह्मो॥ ताम [illegible]
सुलहौरिहाग्ना॥ दर्सनपरम [illegible]

वा.प. तातेमेरेनेत्रके गोचरमोकों वदनचंद्रक करसनदेहुगे
६ १ श्लो० करुणानारिधिः स्वीयनिःप्रसवोधिकः प्रभुः उ
पेक्षतेथुनः स्वीयानितिचिंतातुरंमन २ या० अ० हेश्री
हरूलतुमकेसेहो करुणाकेनिधिहो औरसबकेग्रागीमा
त्रवेस्मारक अगरेजगतके प्रभुहो तउमेस्वीयजोतुमा
रेभक्त हैं तिनके तो सबके स्वनिधिहो ऐसेप्रभुस्वीयअप
नेभक्तकी उपेक्षा कोंकरतहो यहचिंतानित्यकरिकें म
नतेआतुरताभयोहुं श्रीगुसांईजी विज्ञप्तिमेकहेंहें हा
नाथजी चिंताधिमराजीवदललोचनः यथोचितंवि
धेहीति प्रार्थनं तवक्षमं हेनाथकमललोचनमें
तुमसों प्रार्थनाकरतहूं तुमारीकृपातें जीवनहों सो
यहविप्रयोगतचिंतहें तातें प्रार्थनामें कहाकहूं तुम
सर्वज्ञहो सबजानतहो ३ श्लो० निजानंदनिमग्नस
मवेद्यद्यपि विस्मृतिः भक्तार्थभवनीगोस्य कृपालोरु
चिंतानमा ३ या० अ० श्रौ० हेश्रीहरूलतुमकैसेंहो अ
पनेआनंदमेंरात्रिदिनमग्नरहतहो पहकहिकेंयदृग
तारे सोऐसेमग्नरहतसें जोयहभावसंसारादिकको
विस्मृतिहै तथापितउ अपनेभक्तनके अर्थतुमश्रु
वनाररलीरोहें प्राकट्य तातें औरतुमपरमकृपालहो
तातेंतुमारेभक्त जोसंसारमेंहैं तिनकोअवचिंताहि
करोगे ४ रु चिंतहीकृपाकरिअंगीकारहीकरोगे सोश्री
गुसांईजी विज्ञप्तिमेंकहेहें त्वदंगीकृतयोजीवेस्वाधि
कारायनः प्रभो अनंतानविचाराहां कृपाकुरुकृपानि
धे ४ हेनाथतुमारो अंगीकृतजोजीवहै सोतुमारे अ
धिकारयोग्यहै सोइहालोकिकसंबंधतेंतुमभूलेहो
अधिकारयोगपनाहीहै तउतुमसबदोषनकोवि
चारमतिकरो कृपाईकरो काहेतें तुमकृपानिधिहो
हमपरकृपाहीकरो ३ श्लो० वैप्राथयेपुत्रदीना

यनिजनाथवों। तदेकशरणाः॥ नित्यं विप्रयुक्तासर्व
ग्नो॥ याको अर्थ॥ हे नाथ हम तुमतें कहा प्रार्थना
हम दीन हैं तुमको हम अपने नाथ करि जानत
तुम विना और कोई हम नाहीं जो नत हैं। और हमके
हैं सर्वसाधनकरि मुक्त रहित हैं। तातें नित्य तुमारे सरण
यही मेरो सो हैं। साधन हूं तें नो कछु प्रार्थना करतें ना
तें तुमारो आश्रय करि तुमारे शरन हैं॥ सो श्री आचार्य
जी विवेकधैर्याश्रयग्रंथमें कहे हैं॥ अस सर्वविषयेषु सर्वथा
वा सर्वथा सरणं हरिः॥ इत्यादि वचनको विचारि। और
उपाय हमको नाहीं सूझत हैं। तातें तुमारी सरणा हैं॥ ४॥ नि
मन्नाथ नाथेन्तं भवामि विरहाकुलः॥ इहसन्नस्य
ग्नें वापि रहितं वै गार्थस्तुति पर्यायः॥ ग्रंथ॥ इत्यर्थः॥
सत तुमको नाथ सों। और में कैसा हों॥ महा नंन तुछ हों
सर्वसाधनकरि रहित हों॥ अब जो यह संसारादिक में महा
विरहाकुल हों काहेतें। यह संसारादिक कार्यमें तो तत्पर
हों। और तुमारी सेवादि भगवद्धर्मकरिकें रहित हों। तो
तुमारी सेवादि भावद्धर्मरूपवे रहित हों। ताको विय
रहसागराग्नि पीडित व्याकुल हैं॥ सो श्री गुसांई जी वि
त्रिभिकरें हैं॥ त्वदर्शन विहीनस्य त्वदीयस्य तु जी
वित व्यर्थमेव तथा नायडु भोगायान्नं वक्य ॥ तुमा
रदर्शन विना तुमारे तदीय जीवे हैं। सो व्यर्थ काहेतें। है
नाथके दुर्भाग्य। उनके भाग्य परवे हैं। तातें श्री हरिराइ
करत हैं जो हमको स्मरस करें हैं॥ और यसह श्री श्रं
को करावो तामें यह जगत जो सेवा करावो। और
तुनारकरि रावकरि हमारे हृदयमें धरामत व
पावन करो॥ तब हमको सुख वहा प्रकाहेते॥ विरहा
संसाराग्नि विकरि व्याकुल हों॥ तातें केवल दर्शन नहीं
मनदहियो॥ दर्शन परसवे गुन जर्वे सुर

स.प.
१९

यमेंयाभांतिसुखदेहुं॥५॥ श्लोक॥ निजाचार्यजनानस्मान्
यदिहलः प्रहास्यति॥ गमिष्यतिहेनाथप्रतिज्ञेवत
ज्ञानवा॥ टीका॥ श्री॥ अब श्रीहरिरायजीकहतहैंजो
अपनेश्रीवल्लभाचार्यजीकेआश्रयपुष्टिमार्गीय
जदीयहैं तिनकोहेनाथतुमछोडतहीनाही निश्चय
प्रसन्नहीरहतहो॥ तिनकीप्रसंसाहीकरिनिश्चेअप
नेजानतहो॥ जद्यपिवहजीवभगवद्नामहूनाहीले
तकछुधर्मनाहीहैं तउतुमअपनी: ... कीऐवा
कोंअंगीकारहीकरतहो॥ तातेंहेनाथहमहूअपनेश्री
वल्लभाचार्यजीकेआश्रितहैं एसेंकेऊपरप्रसन्नहो
उगे॥ नाथहमकोखोटेजानिदोषदेखिकेंछोडोगेतोतुम
रीप्रतिज्ञाभंगहोउगी॥ निश्चय॥ तातेंकृपाकरो॥ काहेतें
तुमश्रीआचार्यजीतेप्रतिज्ञाकरीहैं॥ जिनकोब्रह्मसंबं
धकरावोगे तिनकेसकलदोषदूरिहोइगे॥ तिनकोमें
अंगीकारकरतहों॥ सोसिद्धांतरहस्यमेंकहेहैं॥ ब्रह्मसंबं
धकरणात्सर्वेषांदेहजीवयोः॥ सर्वदोषनिवृत्तिर्हिदो
षाःपंचविधाःस्मृताः॥ इत्यादिवचनतें तुमहमारेदोष
देखोगेतो तुमारीप्रतिज्ञाजायगी तातेंआपनीप्रति
ज्ञाकेलीएश्रीआचार्यजीमहाप्रभूजीकेआश्रितजो
निहमपरकृपाकरो॥ ६॥ श्लोक॥ वयंतुसर्वथादुष्टाःस्व
धर्मविमुखाअपि॥ त्वमस्मदीयान्माधर्मान् ग्रहा
णगुणपूरितः॥ ७॥ टीका॥ श्री॥ अबश्रीहरिरायजीक
हतहैं हमजेसेहैं वयजोबालापनतेदुष्टहीआच
रणकीरिहैं॥ अपनेपुष्टिमार्गीयधर्मतेंरहितहैं कब
हूंपुष्टिमार्गकीरीतितेंभावसहितसेवानाहीकरीहैं
तातेंअपनेस्वधर्मतेंहमविमुखहैं॥ औरहेनाथतुमके
सेहो॥ अस्मदीयअपनेजनदासकेधर्मकीवासनाभी
हीकरोगे॥ काहेतें तुमसर्वगुणकरिकेंपूर्णहो॥ तातेंगु

ताकी चाहना न करो ॥ कृपा करि श्रीगुन हम सारिखे पर
निश्चय कृपा प्रमेय चलन ने करोगे ॥ सो विज्ञप्ति में श्रीगु
साईजी कहे हैं ॥ श्लोक ॥ वलिष्टा अपि मद्दोषा त्वत्कृपा
येतु दुर्वलाः ॥ तस्याईश्वर धर्मत्वात् दोषा नो जीव धर्म
तः ॥ ४ ॥ यद्यपि हमारे दोष बहुत वलिष्ट हैं तऊ तुमारी
कृपा के आगे दुर्वल हैं ॥ काहेतें तुमारी कृपा हैं सो ईश्व
रता धर्म लीये है दोष है सो जीव धर्म ने हैं ॥ सो ईश्वर धर्म के
आगे जीव तुच्छ है ॥ तातें कृपा करो ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ कृपालो पा
लनीयानां गुणदोष विचारणा ॥ न कार्या स्वीयकरणं
विहितं वरणार्थादि ॥ याको अर्थ ॥ हे नाथ तुम कैसे हो
परम कृपाल हो पालन करो हमारे गुण दोष कों विचा
र तुम मति करो ॥ काहेतें हम तुमारी श्री आचार्यजी
द्वारा हमारो धर्म तुमने भयो ॥ तातें हम वरण अपने
कार्य के लीये कीये जो सेवा टहल स्त्री को धर्म है ॥ सो का
ये मो सों न बनि आयो उलटो अपराध अनेक करे पुनि मों
तुम हित के लीये हमारो वरण कीयो ॥ सो वे हित कार्य मो
सों बनत नहीं ॥ सो तुम मेरी ओर मति देखो ॥ या पुनवरन
ता निकृपा करो ॥ सो विज्ञप्ति में श्रीगुसाईजी कहे हैं ॥ त्व
दंगीकृत योजीवे स्वाधिकारायतः प्रभो ॥ यन्न तेन वि
चार्य हो कृपालु कृपानिधे ॥ ६ ॥ तुमारे अंगीकृत जो जी
व हैं सो तुमारे अधिकार योग पद हैं अथवा दोषकूं रिच
योग पहें तऊ तुम अपने दोष मति विचारो ॥ काहेतें तुम
कृपा के निधि समुद्र हो ॥ सो कृपा ही करो ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ अ
ज्ञानादि हरे दोषं गणनाया मम प्रभो ॥ श्रममेष्यति
गोपीश ततो विस्मर सर्वथा ॥ ८ ॥ याको अर्थ ॥ हे नाथ तु
म कैसे हो ॥ तुम काहू वात में हारो नाहीं ॥ तुम को कवहू
करो

५० ननाकरोगेतो श्रम हीतुमको हो कृपा। अपार दोषहैं मेरे ना
२० नहे गोपीजनप्यह संबोधनकौ ष्यह जताये जो तुम गोपीके
ईश हो। विना साधन गोपीजन पर कृपा करी तैसें हमारे ऊ
पर कृपा करो सर्वथा हमारे दोषको विसरिजाउ। श्रीगुसां
ईजी विज्ञप्ति मैं कहेहैं अपराधे पि गणना ने वकार्येह
नाधिका। सहज स्वयं भावेन स्वस्य कृतया च नाराइह
व्रज के अधिपति राजा निःसाधन के फलात्मक हमा
रे हूं अपराधकी गणना करनौं तुमें उचित नाहीं हैं क्यों
हते तुमारी सहज में ईश्वरता आगे दोष यह मारे छूहें
सो तुम कहा दोष विचारोगे। तातें कृपा करो। ९। श्लो।
दीनेषु गुणातीनेषु तावकीनेषु मत्प्रभो। पराधीनेषु
करुणा करणीय त्वयैव या १०। या श्लोकको अर्थ। हे नाथ मे
अत्यंत दीन हों दुखी हों। काहेते यह मायाके गुणसे
सांसारिक कार्य में लीन हों। ऐसो दोष करि दीन हों
तऊ मे तुमारी हों तुम मेरे प्रभु हो मैं तो अपराधीनी
हों माया के एसो हूं तातें ऊपर सर्वथाही करुणा क
रिये सो विज्ञप्ति में श्रीगुसांईजी कहेहैं। वात्सल्य मो
धीनताय न करापि मपि सुंदर। नत्यनु चिंतयस्व
तवाहीया स्पूरीहृत। ११। हेसुंदर श्रीकृष्ण मेनो का
लक सें इत्यादि माया के आधीन हों तऊ तुमारी हों
आपनो त्वदीयता निरूपा करो। १०। श्लो। निःसाध
नाम नो दीनां गतधना सुदुःखिनां निजाचार्यो प्रि
ताशोकः शोक क्षोभ मोह भयाकुला ११ या श्लोको अ
श्रीहरिराइजीकृत हैं। जो मे एसो दीन हों निःसा
धन हों मेरे में कोउ साधन नाहीं है और भावरूपी धन
गयो है ताकरि अति दीन हों जाको धन जाय सो दी
न होइ यह लोकमें प्रसिद्ध है और बहुत दुखी
हों और आपने श्रीआचार्यजी के आश्रित हों श्री

रसोक लोभमोह भयमाया के गु॥ ना करिवें व्याकु
लहों ल कछु अपने धर्म की सुधिनाही है॥ ओर ऐसे इ
निसाधनजीव पररूपा करत हैं॥ सो आगें कहत हैं
११॥ श्लोक॥ भवंतितेषुपापात्रं महोदारस्य ानिधे॥ प्रय
छकरुणानेभ्योदत्तपात्रेलयं भवेत्॥ ११॥ याको अर्थ ऊपर
कहे एसो होइनो प्रभुके कृपापात्र योग्य होइ॥ निःसाध
नहोइ मनते धनकरि रहित होइ धनगयेते दीन नादुख
होइ अपने श्रीवल्लभाचार्यजी के आश्रत होइ॥ सोक
लोभमोह संग को ओर काल भयतें व्याकुल भयो॥ तव
प्रभु कृपा करि ताते श्रीहरिराइजी कहत हैं॥ जो मेंऊ ए
सो हूं तुमारे कृपापात्र हो॥ तुम महोदार हो॥ दया के निधि
हो॥ तातें दया करो॥ कहें तो॥ अपनी इच्छा तें करुणा क
रि लन दीयो हो॥ सो दीनता रूपी पात्र तुमारे दीये ते भ
यो है॥ सो दिन दिन दृढ होत है॥ दिन दिन दीनता बढत
है॥ तातें वेगि ही कृपा करो॥ १२॥ श्लोक॥ संसारदावद
ग्धानां जीमूतजलकांक्षिणां॥ त्वन्नीरजजलदानं त
जलदानेन विना सुखं॥ १२॥ याको अर्थ॥ अब जो वित
दृष्टांत कहत हैं॥ वनमें दावानल अग्नि तें वन सगरे
जीव आदि दग्ध जात हैं॥ तिनकें सीतल करिवेकों
एक मेघजल वरखे यही उपाय है॥ ओर उपाइ वा सम
य कोई नाहीं है॥ जद्यपि जल तें समुद्र नदी अनेक भरी
हैं परंतु वन के दावानल को मेघ ही जल दान करि नि
वर्तकरि॥ नव होइ॥ तैसें ही यह माया संबंधी देह संबं
धी है॥ अहंता ममता रूप यह दावानल में जो दग्ध है
जात हैं॥ तिनकों नीरज मेघ रूप श्रीगोवर्द्धननाथजी
अपने आनंदरूप अनंत जल को दान करें तवही कृपा
रूप के सुख॥ ओर उ
पाइ कोई ना

१.५० ननाकरोगेतोश्रमहीतुमकोहो कुगो अपारदोषहैमेरेना
२० तहेगोपीजनयहसंबोधनकरियहजनायो जोतुमगोपीके
ईशहो बिनासाधनगोपीजनपरकृपाकरीतेसेहमारेऊ
परकृपाकरो सर्वथाहमारेदोषको विसरिजाऊ श्रीगुसा
ईजीविज्ञप्तमेंकहेहे अपराधेपिगणनानेवकार्येह
नाथिकः सहजस्वयंभावेनस्वस्यकुहूनयाचनारंइ
वृजकेअधिपतिराजानिःसाधनकेफलानम्रकहमा
रेहू अपराधकीगणनाकरनोतुमेउचितनाहीहैका
हेतेतुमारीसहजमेंईश्वरताआगेदोषहमारेकहाहे
सोतुमकहादोषविचारोगेनातेंकृपाकरो॥९॥ श्लो
हीनेषुगुणानीनेषुतावकीनेषुमत्सभोपराधीनेषु
वरुणकरणायितुमपवेया॥१०॥या श्लो हेनाथमे
रे ... [illegible] होंदुखीहों काहेतेयहमायाके गुणसें
साराहिककार्यमेंलीनहों एसोदोषकरिहीनहों
तऊमेंतुमारीहों तुममेरेप्रभुहो मेंतोअपराधिनी
हों मायाके एसोहू तातेऊपरसर्वथाहीकरुणाकु
रियें सोविज्ञप्तमेंश्रीगुसांईजीकहेहें वात्सल्यमो
धीनतायनकरोपिमपिसुदरं तरप्यनुविनेयस्य
तवादीयेस्पुरीहृन ॥११॥ हेसुंदरश्रीकृष्णमेंतोका
लकसेहृत्यादिमायाकेआधीनहों तऊतुमारीहों
आपनोत्वदीयजानिकृपाकरो॥१०॥ श्लो निसाध
नामनोदीनांगतधनाघुदुःखिना निजाचार्योक्ति
नाशोकःशोकक्षोभमोहभयाकुला॥११॥या श्लो
श्रीहरिरायजीकहतहें जोमेंएसोदीनहों निसा
धनहों मेरेमेंकोईसाधननाहीहें औरभावरूपीधन
हुगयोहे ताकरिअतिदीनहों जाकोधनजायसोदी
नहोय यहलोकमेंप्रसिद्धिहें औरबहुतदुखी
हों औरआपनेश्रीआचार्यजीकेआश्रितहों श्री

रसोकलोभमोहभयमायाकेगुण।ताकरिकेंव्याकु
लहें।कछुअपनेधर्मकीसुधिनाहीहें।औरऐसेइं
निसाधनजीवपरकृपाकरतहें।सोआगेंकहतहें
११॥श्लोक॥भवंतितेकृपापात्रेमहोदारदयानिधे।प्रय
छकरुणानेभ्योदत्तंपात्रेलयंभवेतु॥१५॥याकोअर्थऊपर
कहेंएसोहोइनोंप्रभुकेकृपापात्रयोग्यहोइ।निःसाध
नहोइमनतेधनकरिरहितहोइधनगएतेंदीनतादुख
होइअपनेश्रीवल्लभाचार्यजीकेआश्रितहोइ।सोक
लोभमोहसंगकोऔरकालभयतेंव्याकुलभयो।तब
प्रभुकृपाकरि।तातेंश्रीहरिरायजीकहतहें।तोमेंऊ
सोंहूतुमारेकृपापात्रहो।तुममहोदारहो।दयाकेनिधि
हो।तातेंदयाकरो।कहेतें।अपनीइछातेंकरुणाक
रिहमदीयोहे।सोदीनतारूपीपात्रतुमारेदीएतेंभ
योहें।सोदिनदिनदृघहोतहें।दिनदिनदीनताखटत
हें।तातेंवेगिहीकृपाकरो॥१५॥श्लोक॥संसारदावद
ग्धानांजीमूतंजलकांक्षिणं।ननीलजलदानेन
जलदानेविनासुखं॥१६॥याकोअर्थ॥अबजोकिं
दृष्टांतकहतहें।वनमेंदावानलअग्नितेंवनसगरे
जीवआदिदग्धजरतहोइ।तिनकेसीतलकरिवेको
एकमेघजलवरखेयहीउपायहे।औरउपाइवासम
यकोईनाहीहें।जद्यपिजलतेंसमुद्रनदीअनेकभरी
हैं परंतुवनकेदावानलकोंमेघहीजलसोंनिवारति
मतिकरे।तबहोइ।तैसेंहीयहमायासंबंधीदेहसंब
धीहें।अहंताममतारूपयहदावानलमेंजोदग्धहो
जरतहें।तिनकोंतोएकमेघरूपश्रीगोवर्द्धननाथजी
अपनेआनंदरूपअनंतजलकोंदानकरें।वडीकृपा
करें।तबहीयहपुष्टिमारगीयवैष्णवकोसुख।औरस
पाइकोईनाहीहें॥१६॥अबऔरहूकहतहें।श्लोक।ये

प· माथें पीकृता सर्वोत्वत्सेवा पे ग्रहस्थितां ॥ तरोव भावना
१ माय भवती करवे कि सु ॥ १४ ॥ या को अर्थ ॥ श्री हरिराइ
जी याप सेवक कीरे है ॥ तिनकी प्रार्थना प्रभुनसों करिवे
जीकार करावत हैं ॥ हे नाथ में अपने अंगीकृत सेवक बहु
तहीकीरे है ॥ सो ग्रहस्त सेवक बहुत ही कीरे है ॥ काहेते
ग्रहस्ताश्रम में सेवा बनि नाहीं आवत भली ॥ या ग्रमते
मैं यह जानी जो भलो मो सों सेवा नाही बनत तो ग्रहस्त
को सेवक करि सेवा रीति बताई रो ॥ ये मेरे सेवक भली
तुमारी सेवा करेंगे तो हमको सुख होइगो ॥ यह अ
पनी सहाय के लिये ग्रहस्त ॥ अपने अंगीकृत कीये है
सो वे ग्रहस्थ भगवान की सेवा तें नास भये ॥ ए से उलटी
कृत करत है ॥ सो मैं कहा करों ॥ तथा तुम मोको अंगीकृत
करि अपनी सेवा के अर्थ ग्रहस्थाश्रम में हमको स्थिति
कीरे हैं ॥ सो हम तो सेवा तुमारी छांडि लौकिक कर्य उल
टे चलत है ॥ ता बात को तुम कहा करो ॥ १४ ॥ लो ॥ वह
मुखाः प्रभुवें ति ख सर्व धर्म वह सुखा ॥ सहायनाश्रमा देव
न्हातुम वह मुक्त है ॥ १५ ॥ या को अर्थ ॥ एक जो जीव सुभा
वतें दुष्ट वह मुख है ॥ दूसरे वह सुख दुष्ट के संगते वगरे जी
व वह सुख भरे ॥ सो मैं भ्रम करि अपनी सहाय ग्रहस्त से
वकों जान्यो ॥ जो मैं अंगीकृत कीरे है ॥ सो ए मोकों स
हाइ होइगो ॥ तासें भ्रम सो सेवक कीरे है ॥ सो केवल स्वच्छ
लत है ॥ भगवद सेवा नाहीं करत ॥ तकउन के छोडिवे
को उत्साह में वस भ्रम लैके वैसें छूटोगो जाय ॥ १५ ॥ लो
क सहायत्वम प्रपाद्य वचयंति यथा जनं ॥ मार्गे स्थिति
तथा नाथ वंचितोहं गृहस्थितौ ॥ १६ ॥ या को अर्थ ॥ मैं सेव
क अपनी सहाय अर्थ कीयो ॥ भ्रम करिके जो मैं तुल दो
चयंति जो मैं ठगो ठग्यो हूं ॥ हे नाथ यह तुमारो मार्ग पुष्टि
नमें स्थिति होउ के रासो में स्थिति होइवे ॥ ए सो मैं तिनके

ग्रहस्तवैस्रवनैमोकोठग्यो।एकतोमैंअपनेकीफिकरक
रतहों।लोऊसगरेइनहूकेऊपरकीफिकरमोहूकोंकरनी
पडी।याभांतिग्रहस्थजननेतथाग्रहस्ताश्रमनेठगा
योहूं।१९श्लोक॥ यथांधिकूपपतितंमंडूकादुखरै
जनैः।भयमेतितथामुखादुर्वचोपिग्रहस्थिता।१९
याकोअर्थ॥ लौकिकदृष्टांतनैकहतहैं।श्रीहरिराइ
जीजोयाभांतिमोकोंदुखभयोहैं।जैसेंअंधकूपमेंमंडूक
पर्योहोय।सोदुःखतेंबोलैं।सोसबकोंभयउपजावै
तैसेंग्रहस्थमेंअनेकअनेकलोगतिनकेदुर्वचनसु
निकैं।वाकोंमहाभयहोतहै।ग्रहस्थाश्रममेंस्थितिएसै
देहसंबंधीतिनकेअनेकभांतिकेवचननताकोंसुनि
केंमेरेमनमेंव्याथाहोतहैं।यहकहियहजनारे
जोमैंएग्रहस्थवैष्णवमेरीबडाईकरतहैं।सोदुःखमे
रेमनमेंहोतहैं मोघरकेदेहसंबंधीअनेकभांतिनिंदा
करतहैं.सोदुखमेरेमनमेंहोतहैं।२०।श्लोक॥ क्रिय
त्पर्यंतमेवंहिमदुपेक्षांकरिष्यति।त्यक्तोवादोषसाहि
त्यादिसुखोहंदयालुनो।२१।याकोअर्थ॥ तातेंहेनाथर
सोदुखीमेंहूं।सोमेरीउपेक्षाकहांपर्यंतकरोगे।तथामो
कोदोषसहितजानिकैंत्यागकरोगे।परंतुमेंयहमन
मेंजानतहों।जोतुमदयालहो।तातेंत्यागतोकबहूंन
करोगे।श्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेहैं।चित्तेनदुष्टोवं
चसापिदुष्टःकायेनदुष्टक्रियावदुष्टः।ज्ञानेनदुष्टोवै
चैसोपिभजनेनदुष्टोममापराधस्खलितिधांविचार्ये चि
त्तहूदुष्टहैं।तुमारेमैंनाहीलागत।वानीहूंमिथ्याभा
षननेदुष्टहैं।कायाहूंतुमारीसेवानाहींकरततातेंदु
ष्टहैं।क्रियाहूमिथ्यालौकिककरियनहैं।ज्ञानहूंदुष्ट

रोदोषअपराधक

१८ श्लोक ॥ त्वत्तः कुत्र गमिष्यामि नमेस्ति शरणं मम ॥ नाव
मारोप्य दीनं खं मध्ये धारन्न मज्जयेन्नरः १८ ॥ याको अर्थ ॥ अवश्री
हरिरायजी कहत हैं हे नाथ कसा चित्त तुम ईश्वर हो कर्तुम
कर्तुं अन्यथा कर्तुं सर्व सामर्थ्य हो सो यह जानो जो मेरे स्व
नाथ कयह नाही है यह विचारि के त्याग करो तो हम क
हा जाय हमारे और कहूं तुम बिना ठिकानो नाही है तु
मारी सरण बिना रंचक काहू को नाही जानत अब मेरी
कहा दिसा होइगी जैसे नाव में बैठाय और मध्य धारा में
नाव कूं छोडि देय तो उह कहा करे तहां खेवट ही सहाय
होय तो पार लागे और उपाइ नाही तैसेई हम तुमारे पुष्टि
मार्ग रूपी नाव में बैठे हैं अब तुमारे मन में आवे तैसी करो
१९ श्लोक ॥ निजाचार्यकुले जन्म विसर्ज्य विहितं मम ॥
विहितं चेन्नापि सद्दोषं पिन्ने रूप तु सारं ॥ याको अर्थ
न लेतु मम मेरो त्याग करोगे तो तुमसों हमारी कहा कछु च
लत है परंतु यह में कहत हैं जो निज हमारे श्री वल्ल
भाचार्यजी के कुल में हमारो जन्म भयो सो कहा अर्थ हो
तुमने हमारो जन्म श्री आचार्यजी के वंस में दीयो है सो
कहा प्रथम नाही जानत हते अब छोडत हो तातें यह
तामो को बडी है जो तुम कहा जो तुम कहा करोगे सो
जानी नाही जात सो तासों में तो सदा दोष करि के पीडत
भयो हों तातें कृपा ही करो यह निश्चय निर्धार हैं तुमारी कृ
पाही तें हमारे सर्व कार्य सिद्ध होइगो २० श्लोक ॥ असंगः स
र्वथा दूष्ये सत्संग सहितोप्यहं यथा रोपपतितकः कादि
शाको मृगादने ॥ २१ ॥ याको अर्थ ॥ हे नाथ असत्संग मो के
ऐसो दिसा तें घेरे हैं यह बडो दुःख है मो को रंचक हू कुसंग
तें बुद्धि बिगडै तो सर्व और ते मो को दुःसंग वेष्टत है तातें
सुं हुं सर बुद्धि नास भई है और सत्संग तें सर्व धर्म को ताय
होइ सो सत्संग मो ते बहुत दूर है तातें मेरी कली हू दु

संगादि मध्यमें वेठ्यो हूं ।सो मेरी कहा दिसा है जेसें अरन्यव
नमें अकेलो छोडि दे ॥ तहां मृगादि पसु पंछी कोइ नाही
तो उन वो न दिसा को जाय ।तथा एक ले मृगा कों महागंभीर
वन में छोडे सो व्याकुल होय ।अनेक सिंघ की हुसो दिसा
गरज सुनि उह कों न दिसा को जाउ ॥ तेसें इ मो कों भगव
दीय सत्संग ते छोडे हें दुःसंग दसो दिसा हे ।सो में कोन
दिसा कों जाउं सो उपाइ ही सूझनाही ॥ २१ ॥ अब ओर हूं
कहत हें लौकिक दृष्टांत ॥ श्लोक ॥ जातपक्षाः खगा
स्तीयजननी च त्यजंति हि । यथा तथा करालेस्मिन्
काले हं भगवज्जनैः ॥ २२ ॥ याको अर्थ मेरी कहा अवस्था है
जेसें खग जो पक्षी है ताके बचा कों जब पंख होइ ॥ तब वह पु
त्र अपनी जननी जो मा ता कों तजि कें अनेक बन में उडि जा
त हें तेसें इह मो र पास भगवदीय कृथा वार्ता करतो सो यह का
ल महा कराल रूप प्रतिबंधक सो इ पंख भयो ॥ ताकरि भगव
दीय जन मो कों छोडि गये ॥ सो मैं कहा करूं ॥ श्लोक ॥ चिंता
पारावारपतितस्यात्रैव च मग्नस्य ॥ एत्तु जन वडवाग्नि
शरणं वल्लभाचार्य ॥ २३ ॥ याको अर्थ भगवदीय संग
विना मेरे हृदय में एसी चिंता है ।जाको पारावार नाही
चिंता रूप समुद्र में मग्न हों ॥ ताकों दृष्टांत कहत हें ।ते
सें कोइ महागंभीर पानी के समुद्र में मग्न भयो परयो
होय ।ताकों एक वडवाग्नि ही सहाय भूत हें ।ओर को
इ नाही ।एक घरी क्षण में सगरो पानी सोख लेय ।तेसें ही
यह संसार रूप भव सागर में परयो हों ।यामें एक श्रीव
ल्लभाचार्य जी वि सरण हों ।एउ उपाइ है ।महाप्रभुन्य
लौकिक अग्नि रूप हें ।सो एक क्षण में सगरी चिंता
संसार दुःख सब सोख लेयगो ॥ यह उपाइ हें ।सो एक
क्षण में सगरी उपाय हे ॥ श्लोक ॥
हा यसोदा प्रियाभक्त ॥ हा गोपि

सि.प. यसवकेरागमो ॥४॥ या श्लोक ऊपर कहे या भांति श्रीहरि
३ राइजी दैन्यता करत विप्रयोगात्मक ग्रिह्रयमें प्रगटभई
सो अत्यंत विरहसों देहानुसंधान भूलिके बोले हा हसतु
मही गति हैं फलात्मक नामक है १ हा नंदसूनु नंदरायके
पुत्र जैसें नंदराय हमें पाले तैसें तुम हूं पालो यह दूसरो ना
म कुमारिका के भावते ऊपर हा हृष्म कहे सो श्रुतिरूपा
के भावते २ पीछे कहे हाय सोराजी के प्राणप्रिय पुत्र
यह श्रीयमुनाजी के भावते ३ पाछें कहे हा गोपीजनके
प्राणप्रिय आधार यह मुख्य श्रीस्वामिनीजी के भावते ४
चारो नाम लेके कहे ऐसे प्रभु आपने करत विप्रयोगरस
मुद्रमें हैं मग्न रहे सो काढि लेहु या भांति कहे ॥४॥ इ
ति श्रीहरिराइजी कृत सिक्षापत्र व्यख्या विवरन तांकी टी
श्री [illegible] पत्र [illegible] संपूर्ण ॥२८॥ अब ऊपर दैन्यता
करि दैन्य तें विप्रयोग प्रगट होइ रसको अनुभव
रें सो यह सर्व भगवद् धर्म सवा सिद्ध होइ सो बुद्धि तें न
प्रकार होइ सो आगे सिक्षापत्र में कहत हैं श्लो० ॥ बुद्धि
नासक कालोयं सर्वेषां समुपागतः ॥ अतो हि सर्वथा
गोप्यं बुद्धिरत्नं सुबुद्धिभिः ॥१॥ या श्लोक को अर्थ श्रीहरि
राइजी कहत हैं जो यह कलिकाल में वर्तमान हैं सो
सबकी बुद्धि को नास भयो है काहेतें कलियुग में वि
चार जो आर धर्म को लेहुगे ताजी विभ्रष्ट न होइगो अ
नेक धर्म में एक धर्म न भरे तो कहा बिगडत है ताते बु
द्धि हरि लीयों बुद्धि नास भएतें सर्वसु धर्म बुद्धि तें करि
ये सो नो कात तें हरि लीयो तब सुंदर सगरे धर्म नास
भये कुबुद्धि तें विपरीत आचरण करे तातें श्रीहरि
राइजी पुष्टिमार्गीय वैस्नवसों कहत हैं जो तुम साव
धान होइ रहियो यह काल सर्वबुद्धि हरन को आयो है
तातें सुबुद्धि तो वैस्नव हैं सो अपनी बुद्धिरत्न को वैदी

मेंधरिइतननेराखियें॥कोइसोतनजनताईयेतोरखरहे
नाहीतोचोरलेजाय॥तैसेईजोआपनीवेसरवसुंदर
बुद्धिरूपाइकैरलेकरिराखोगे॥तिनहीकीरहेगी॥१॥सो
कसत्संगलक्षणस्मरणांशरणागतिसाधनं॥तेदृढभावे
कृतिसर्वोपतीवेपथमेतिहिस॥याकोअर्थ॥अबश्रीह
रिराइजीबुद्धिरक्षणकोविशेषनकरतहें॥सदापुष्टिमा
रणीयवेसबकेसत्संगमेंरहें॥औरअपनेमनमेंध्यान
काश्रीहुलकेस्वरूपकोस्मरणकरें॥औरश्रीहुलके
सरणकीभावनासदामनमेंराखें॥अथशाहश्रीहुल
अयमेंसरणकहें॥सोसरणकीभावनाकरें॥काहेतें
भावविनाजोक्रियाकरें॥सबव्यर्थहें॥जैसेंराखमेंहोमें
ताकोंकहाफल॥तैसेंईभावविनाजोकरें॥सोसबव्यर्थहीं
हेंश्लोक॥अनन्यकोकमाचार्यैस्वकीयकरुणात्सुभिः
बुद्धिप्रेरककृष्णस्यपादपद्मप्रसीदतु॥३॥याकोअर्थन
हींकेऊंवरहेंजोयहबुद्धिप्रेरककोप्रकारतुमहींकहतहें
वृंदेंसुनेहो॥तहांश्रीहरिरायजीकहतहें॥जोश्रीआचा
ऐजीमहाप्रभुश्रीमुखतेंकहेहें॥जोबुद्धिप्रेरककृष्णस्य
पादपद्मप्रसीदतु॥जोबुद्धिप्रेरककृष्णस्यपादपद्मप्रसी
दतुजोबुद्धिप्रेरकश्रीकृष्णहें॥तिनकेचरणारविंद
प्रसन्नकी॥तातेंसुंदरबुद्धिहोतहें॥तातेंमनवचनक
येकरिश्रीहुलकीसरणजोकोउदेगो॥तिनकेचरण
रविंदकीप्रसन्नकी॥तातेंसुंदरबुद्धिहोतहें॥तातेंम
वचनकायकरिश्रीहुलकीसरणजोकोउदेहो॥तिन
चरणारविंदकीप्रसन्नकी॥तातेंसुंदरबुद्धिहोतहें
तेंमनवचनकायकरिश्रीहुलकीजो ॥ताको
जोतिनकीसुंदरबुद्धिहोइगी॥ ॥३॥हि
उपकारोपिणायत्याध्यानहेतुरयंमन॥
णायकसज्जोनंप्रतिमोदत॥४॥याको

हरिरायजी कहत हैं जो गायत्री ब्राह्मण के बालक को देत
हैं सो कहा उपकार प्रभु को है काहे ते गायत्री उपदेश ते वे सब के
कर्म में योग्य ना होय तिसमें वे सबकी बुद्धि निर्मल होय सो
प्रभु को उपकार है काहे ते बुद्धि निर्मल होइ तो श्री ठा
कुरजी को ध्यान होय सो ई गीता में श्री भगवान अर्जुन प्र
ति कहत हैं बुद्धियोग के अध्याय में सो आगे कहत हैं श्लो
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते बुद्धि स्थैर्य
हृदैसोपै हरिगति न संशयः ॥२॥ याको अर्थ भगवान अ
र्जुन प्रति कहत हैं जो श्री गीता में दूसरे अध्याय में ताक
रिके बुद्धि स्थिर होय ताकरिके हरि जो भगवान हैं ति
नमें रति होय और बुद्धि नाश तें हरि हृदय तें जात रहे नि
श्चय संशय आत्मा विनश्यति संशयात्मा अविश्वास
ताकरिके आत्मा को नाश होय ताही तें गीता जी में ए
कसगरो अध्याय बुद्धियोग को भगवान कहे हैं काहे
तें सुन्दर बुद्धि होय तब ई सगरे धर्म बने जप करें तो बुद्धि सों
होय यज्ञ तप हू बुद्धि ते होय स्नान तीर्थ दान स्नान इत्यादि म
र्यादा मार्ग के साधन हू कर्म मार्ग के साधन हू पुष्टि मार्ग
में हू लौकिक कार्य सब हू सुंदर बुद्धि ते सगरे कार्य लौकिक
कार्य वैदिक कार्य सिद्ध होय बुद्धि विना कोई कार्य सिद्ध न
होय सो भगवद्गीता में कहे हैं सो आगे विस्तार सों बु
द्धि लक्षण कहत हैं ॥ श्लो ॥ नस्माक्ये व गीता
यां सर्वनाश निरूपित अतो बुद्धि सुंदर लाभाव भावन
कारणं ईया ॥ का अर्थ बुद्धि नाश ते नाश होय बुद्धि
नाश ते आत्मा को नाश होइ सो भगवान गीता में द्वि
तीय अध्याय में योग बुद्धि कहे हैं ध्यायतो विषयान्पुंस
संगस्तेषूपजायते संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधो
भिजायते १ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृति वि
भ्रमः स्मृतिभ्रंशात् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्य

।५८। इति वचनात्। भगवान कहत हैं। हे अर्जुन जीव विष
यमें प्रवर्त होत हैं। सो इह संगतें तब इह संगमें सारी कूं
लगा होय। मन वश्य नेक भांति के विषय कामादि प्रगट हो
य। कामप्यादि भयतें क्रोध होइ क्रोधादिकतें मोह प्रगट
होइ। मोहकरि स्मृति भ्रम होइ। स्मृति हानतें लौकिक संसा
रीकों अपनो जानें तिनको पालनार्थ अपनी पोष
णार्थ खोटी क्रिया करें। या भांति स्मृति के भ्रमतें बुद्धि
कौ नास होइ बुद्धि नासतें आत्मा को नास होय यह क्रोधतें
हो तामें यह सिद्धांत भयो जो इह संगतें काम होइ
मोह होइ मोहतें विस्मृति तिनतें भ्रम न होताई नासन
हीं नव बुद्धि जाय। तब नास होइ। तातें बुद्धि की रक्षा
करें बुद्धि है सो भगवद्भाव के भावनमें कारन है सो
बुद्धि को न प्रकार सुं रक्षा होय। सो आगें वर्नन करत हैं
महाप्रसादादितें। श्लोक। प्रसाद भक्षण पेंसे
वनी करतो रूपि तत्संग न सदा हरलकथा श्रवण कीर्तने
आयाको ग्रंथ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं। जो ऊपर कहे
जो ऊपर कहे तो बुद्धि की रक्षा या भांति करें। सर्व समर्पित व
स्तु में रंचक हू अपनो मन चलायमान न करें। सदा महा
प्रसाद भक्षन करें। और श्री कृष्ण की सेवा नित्य करें। औ
र भगवदीयन को संग करें दुःसंग को त्याग करें। श्री कृष्ण
की लीला तथा नाम को कीर्तन करें तो बुद्धि निर्मल हो
इ प्रभु हृदय में पधारें। यह सिद्धांत भयो।।७।। इति श्री ह
रिरायजी कृत श्लोक न विरो। सिक्षा पत्र ताकी टीका
श्री गिरधरजी कृत संपूर्ण।।२५।। आगें बुद्धि रक्षा
र प्रकार कहे हैं। परंतु काल दोष बहु बडो है। यह हनें
भगवान कृपा करें। तातें आगें काल दोष हू न लागें
तें आगें बुद्धि हू सुंदर रहें। सो प्रकार कहत हैं। श्लोक। प्र
पंचस्य विस्मर्तव्यं जगत्गुरुः। प्रपंच स
नैव्यः सर्वदा कृष्णो विस्मर्तव्यो जगत्गुरुः।

परकालदेसकैहै अवऊँ द्रव्यादिकमेंसगरोपरार्थेघरश्रा
यौ एसेद्रव्यकौसर्वस्वजाननों औरमेंहीसर्ववस्तुकोक
रीहूं यह अभिमानसोहममता करिरहितहोइ द्रव्यकों
सर्वस्वजीवनप्रानजानें यहममत्व औरमेंहीगृहस्ताश्र
ममें ज्ञातमें औरअनेककार्यमेंअपनेकोकर्ताजानें य
हूसोऊबाधकहै तातेंममत्व अहंकारछोडे ३ औरसग
रेमंत्रमेंश्रीकृष्णकोएकनामहै सोईसर्वोपरमहामंत्र
जानें श्रीकृष्णशरणंमम औरअनेकगुणहैं सोऊश्री
कृष्णकीअनेकलीलाहैं तिनहीकोगुनगानभावना
मुख्यहै सोअष्टमस्कंधमेंश्रीशुकदेवजीकहेहैं मंत्रतंत्र
स्यतच्छिद्रंदेसकालार्हवस्तुतः सर्वकरोतिनाश्छिद्रंदेस
कालार्हवस्तुतः सर्वंकरोतिनिश्छिद्रमनुसंकीर्तनंतव १ याभांति
श्रीकृष्णनामलीयौ कीर्तनसर्वदेसमेंअधिकार सर्वोप
रसाधनकहिबेकों श्रीगुसांईजीविज्ञप्तिमेंकहेहैं हरेस्त्वन्ना
मनिर्वृतिर्येहस्तुतिहंसदा ग्रापसिपद्यदानार्थेनतथे
वास्तुनान्यथा १ श्रीकृष्णकेसेहै वेस्तुतिकोसारहै सो
श्रीकृष्णकीक्रियायाहीतेंलीयोजायअन्यथानाहींता
तेंमंत्रहीश्रीकृष्णकोनामसर्वोपरहै गुणहूश्रीकृष्णकी
लीलाकोसर्वोपरहै अबऔरहूकहतहैं लोकाकर्मा
ण्यतंत्रमस्मत्को
हिसतूसंगसाधनेमन हैं यावेत्म्य श्रीकृष्णकीसे
वाहै सोईसर्वोपरउत्तमसोउत्तमकर्महै जहांश्रीकृष्ण
कीसेवाकरी तहांसर्वसाधनसिद्धिकरिचुक्यौ सोअ
ष्टमस्कंधमेंब्रह्मानेंकहीहै यथाहिस्कंधसाखानां
तरोर्मूलावसेचनं एवमाराधनंविष्णोः सर्वेषामा
त्मनिश्चहरी इत्यादिवचनसोजाननों जैसेवृक्षकी
जडमेंजलसींचेतोसबडारपातहरीहोइ तैसेंही
श्रीकृष्णकीसेवाहीतेंसर्वसाधनसबलोकसंतु

रहोइ॥ तातें सगरे कर्मनमें मुख्य श्रीकृष्णकी सेवाही है॥३॥ सर्वसा
धनके संग्रहरूप। रो षटपदार्थ हृदयमें धरें तो सबसे धर्मी
श्रीकृष्ण सदा हृदयमें तें कबहू वाहिर न जाय॥ श्रीकृष्ण श्री
जी साक्षात्स्वरूप वल्लभकुलमें हां विराजे सर्वोपर न मनमें स
हां जानें॥१॥ सुंदर काल नहीं जानें॥२॥ जा घरी सत्संग हो
य॥ इत्यादिक कर्मन में ही कीनों॥ यह अभिमान त्याग
करें॥३॥ श्रीकृष्णको नाम सर्वोपर मंत्र॥४॥ श्रीकृष्णकी
लीला सोई सर्वोपर गुण॥५॥ समस्त कर्ममें श्रीकृष्णकी
लीला सोई सर्वोपर है॥६॥ षटपदार्थ सर्वोपर हैं॥ सो
जब मिलें तब मनमें समझनें कि पुष्टिमार्गीय वैष्णव
को संग होय यही साधन है॥ और दूसरो साधन नाही
तातें सत्संग यों सर्व साधनको फल है॥ वे नहां को
है सत्संग दुर्लभ है॥ सो कबहू मिलें नहीं कहत हैं। श्लोक॥
कृष्णसानिध्यदं तु यन्नास्ति इति साधन॥ कालः प्रसंग
स्तु मिलिते सोहहै इति॥७॥ याको अर्थ॥ श्री हरिरायजी
कहत हैं जो पुष्टिमार्गीय भगवदीय जहां श्रीकृष्णसा
निध्य है समें तिष्ठति रहत हैं। जहां श्रीकृष्ण विराजत हैं त
हां भगवदीय हैं कृष्णसेवार्थ जहां रहत हैं तहां काल
को प्रसंग नाही हैं॥ उन भक्तनके मिलनेंको लरहतनके
रत हैं जो हैरवो विपरीति कालको भलो काल भयो॥ इ
हां मेरो सामर्थ्य नाही चलत हैं तातें जहां श्रीगोवर्द्धनना
थजी साक्षात्स्वरूप हैं श्री वल्लभकुल तें को मंदिर होइ त
हां भगवदीय मिलें॥ तब सर्वकार्य सिद्ध होइ यह सर्वो
पर सिद्धांत है॥ श्लोक॥ सर्वस्यापयोगोपि सिद्धत
सद्बुद्धिदान्तभि॥
मिहि॥८॥ याको अर्थ एसे प्रभु और भगवदीय जहां

सुंदरबुद्धि सर्वथा इनकी के संगते होय अभिमान अहं
कार अज्ञान करि निवर्त होइ प्रभु को आश्रय सिद्ध हो
इ तथा भगवदीय को आश्रय करै तो सर्वो सिद्धि होइ अ
ने श्रीरहूंव हत हैं श्लो० कृष्णनामस्वरूपादिज्ञानं तु
तत्त्वतो हि भगवत्सेवनं वापि पुरुषार्थस्तदेव ही टी
या को अ० श्रीकृष्ण के नाम को श्रीकृष्ण के स्वरूप को ज्ञा
न तत्त्व होय तब श्रीकृष्ण की सेवा को परमपुरुषार्थरूप फल
रूप सर्वोपर जानै तब प्रभु कृपा करें तब ही जान्यो जा
य ताही ते सिद्धांतमुक्तावली में कहे हैं कृष्णसेवा सदा का
र्या मानसी सा परा मता श्रीकृष्ण की सेवा सदा करे फलरू
प जानि मन लगाय के करे तब श्रीकृष्ण प्रसन्न होय अपने
स्वरूपानंद को अनुभव करावे तब मानसी सिद्ध होइ
ताते परमपुरुषार्थरूप जानि भगवत्सेवा करनी टी
श्लो० यदा तथाविधायैतो इस्यते सेव्यते यतः । अतः
सत्संग एवास्मिन्मार्गे सर्वसाधनम् ॥१०॥ या को अ० यों क
परक है जो श्रीकृष्ण की सेवा तें नामस्वरूप को ज्ञान हो
इ ताही भांति सेवन जन की सेवा तें भगवदीय के स्वरू
प को ज्ञान होइ मन लगाइ सर्वोपर जानि ता इन की
सेवा करें तब ता इन के स्वरूप को ज्ञान होय प्रभु कृपा
हो करे अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो हमारे यह पुष्टिमा
र्ग में तो सर्व स्व एक सत्संग ही सर्वोपर साधन है निश्च
य है ताही ते नवरत्न में श्रीआचार्यजी महाप्रभु क
हे हैं निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः ताते भ
गवदीय को संग करनो १० श्लो० तद्भावे सर्वथै
व नाकिंचित् इह सिध्यति तस्मात्प्रयत्नतः कर्तव्यः सत्सं
गाय सुबुद्धिभिः ११ या को अ० यों कहत हैं या भांति
भगवदीयन में भाव सिद्धि भए तें सर्व सिद्ध होइ एसें न दी
य के संग बिना किंचित्मात्र कछु हू सिद्धि नाहीं होइ

तातें सर्वथा प्रयत्न करिकें भगवदीयके सत्संग करत हैं सत्संग
करत हैं। सत्संग करे सो ऐसें सब सुबुद्धि हैं। तथा सत्संगतें
सुंदर बुद्धि आवे तथा जो भगवदीयकी सुंदर बुद्धि होइ
तिनको संग करें एकादश स्कंधमें भगवान कहे हैं। निरो
धयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव। न स्वा
ध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा॥१॥ व्रतानि यज्ञ
छंदांसि तीर्थानि नियमा यमाः॥ यथावरुंधे सत्संगः स
र्वसंगापहो हि मां॥२॥ या भांति अनेक साधन करिकें भग
वान नांहीं वस होत हैं जैसें सत्संग करि वस होत। तातें स
त्संगको यत्न सर्वथा बुद्धिमान जीवको कर्तव्य है। श्लो
क॥ कृतं एवोक्तमाचार्यैः हरिस्थाने तदीयकैः। अदूरे वि
प्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति॥१॥ याको अर्थ॥ श्रीह
रिरायजी कहत हैं। जो हमारे श्रीवल्लभाचार्यजी महाप्रभु
भक्तिवर्द्धनीमें कहे हैं। अतस्थेयं हरिस्थाने तदीयैः सह तत्
परैः। अदूरे विप्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति॥ इति व
चनात्॥ तातें हरिस्थान श्रीगोवर्द्धननाथजी विराज
त हैं तहां स्थिति होइ रहे हैं तदीय भगवदीयसों मिलिकें
रहे हैं। पास रहिकें सेवा करें। तामें चित्तमें कोई दोष न होइ
या भांति रहें। जो रहत निकटमें चित्तको दोष होइ तो नेक
दूरि रहें जामें दरसन नित्य बने चित्तमें दोष न होइ या
भांति भगवदीयसों मिलिकें रहें हरिस्थानमें॥ श्लोक॥ चि
त्तदोषे कथं सेवा चेतस्तत्सर्वतो भवेत्॥ अतो विचार
कर्तव्यः सर्वथैव कृत वा सहन॥२॥ याको अर्थ॥ जब चित्त
में अनेक भांतिके दोष उत्पन्न होइ तब सेवा काहेकी
सो श्रीआचार्यजी सिद्धांतमुक्तावलीमें कहे हैं। चित्तत्प्र
वणं सेवा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा॥ तनुजा वित्तजा मन लगा
इकें करें। तब मानसी सिद्ध होइ॥ जैसें नदीको प्रवाह रा

सुद्धबुद्धिसर्वताइसीकेसंगतेहोयअभिमानआदि
कार्यअज्ञानकरिनिवर्तहोइ प्रभुकोआश्रयसिद्धहो
इ तथाभगवदीयकोआश्रयकरैतोसर्वोसिद्धिहोइ अ
वश्यारहैव हतहै श्लो० ॥ कृष्णनामस्वरूपादिज्ञानेतु
ततएवहि ॥ भगवत्सेवनेवापिपुरुषार्थस्ततएवहि ॥ टी
या० ॥ अ० ॥ श्रीकृष्णकेनामकोश्रीकृष्णकेस्वरूपकोज्ञा
नतबहोय तबश्रीकृष्णकीसेवाकोपरमपुरुषार्थरूपफल
रूपसर्वोपरजानें ॥ तबप्रभुकृपाकरें ॥ तबहीजान्योजा
य ताहीतेसिद्धांतमुक्तावलीमेंकहेहै ॥ कृष्णसेवासदाका
र्योमानसीसापरामता ॥ श्रीकृष्णकीसेवासदाकरैफलरू
पजानिमनलगाइकेकरै ॥ तबश्रीकृष्णप्रसन्नहोइ अपने
स्वरूपानंदकोअनुभवकरावे तबमानसीसिद्धहोइ
तातेंपरमपुरुषार्थरूपजानेभगवत्सेवाकरनी ॥ टी
श्लो० ॥ यदातथाविधायैतोइस्यतेसेव्यतोयता ॥ अतः
सत्संगएवास्मिन्मार्गेसर्वसाधनं ॥ १० ॥ या० ॥ अ० ॥ ऊ
परकहेजोश्रीकृष्णकीसेवातेनामस्वरूपकोज्ञानहो
इ ताहीभांतिसंतजनकीसेवातेभगवदीयकेस्व
रूपकोज्ञानहोइ मनलगाइसर्वोपरजानिताइसीकी
सेवाकरें तबताइसीकेस्वरूपकोज्ञानहोइ ॥ प्रभुरूप
हीकहे अबश्रीहरिरायजीकहतहैजोहमारेयहपुष्टिमा
र्गमेंतोसर्वस्वएकसत्संगहीसर्वोपरसाधनहै ॥ निश्च
यहै ताहीतेंनवरत्नमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुक
हेहै निवेदनंतुस्मर्तव्यंसर्वथाताइसैजनैः ॥ तातें
गवदीयकोसंगकरनो ॥ १० ॥ श्लो० ॥ तदभावेसर्व
थनाकिंचिदिहसिध्यति ॥ तस्मात्प्रयत्नकर्तव्यःस
गायसुबुद्धिभिः ॥ ११ ॥ या० ॥ अ० ॥ ऊपरकहेभा
भगवदीयमेंभावसिद्धिभएतेंसर्वसिद्धहोइ एसेत
यकेसंगबिनाकिंचितमात्रकछुहूसिद्धिनाहीहोय

तातें सर्वथा प्रयत्न करिकें भगवदीयके सत्संग करत हैं। सत्संग
करत हैं। सत्संग करे सो ऐसे सब सुबुद्धि हैं। तथा सत्संगतें
सुंदर बुद्धि आवें। तथा जो भगवदीयकी सुंदर बुद्धि होइ
तिनको संग करे। एकादस स्कंधमें भगवान कहे हैं। निरो
धयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव। न स्वा
ध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा॥ व्रतानि यज्ञ
छंदांसि तीर्थानि नियमा यमाः॥ यथावरुंधे सत्संगः स
र्वसंगापहो हि मां॥ १॥ या भांति अनेक साधन करिकें भग
वान नांहीं वस होत हैं जैसें सत्संग करि वस होत। तातें स
त्संगको यत्न सर्वथा बुद्धिमान यायको करनो है। २। स्तो
कार्थ श्रीवल्लभाचार्य हरिस्थाने तदीयको अइरे वि
प्रवसे वा यथा चित्तं न दुष्यति। २। अथ याको अर्थ। आचार्य श्री ह
रिरायजी करत हैं। तो हमारे श्रीवल्लभाचार्यजी महाप्रभु
भक्तिवर्द्धनीमें कहे हैं। अतस्थेयं हरिस्थाने तदीयैः सह त
न्गृहे। अशक्ते विप्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति। ४। इति व
चनात्। तातें हरिस्थान श्रीगोवर्द्धननाथजी विराज
त हैं तहां स्थिति होइ रहे हैं। तदीय भगवदीयसों मिलिकें
रहें। पास रहिवें सेवा करें। जामें चित्तमें कोई दोष न होइ
या भांति रहिवो होत न तौ कटमें चित्तको दोष होइ तो नेक
दूरि रहैं। जामें रससन नित्य बने चित्तमें दोष न होइ या
भांति भगवदीयसों मिलिकें रहें हरिस्थानमें। श्लोक॥ चि
तदीपेक अयसेवा चेत सत्सवरां भवेत्। अतो विचार
कर्तव्यः सर्वथैव त्वया सदा। ३। अथ याको अर्थ। जब चित
में अनेक भांतिके दोष उत्पन्न होइ तब सेवाका है कौ
सो श्रीआचार्यजी सिद्धांतमुक्तावलीमें कहे हैं चित्तत्प्र
वणां सेवा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा। तनुवित्तजो मन लगा
इकें करे तब मानसी सिद्ध होइ। जैसें नदीको प्रवाह रा
त्रिदिन धारा एकरस चलत है।

१· एकरस भगवद्सेवा में लग्यो रहै सो सेवा में नो होइ तनु
जा वित्त जा करत में जब चित्त कों दोष होइ तब आगें मा
नसी फलरूप कहा तें सिद्ध होइगी तातें श्री आचार्यजी
के वचनामृत को विचार एकांत में अकेले बैठि के करें
जो में कितनी सेवा करी मेरे चित्त में तो कछु दोष नाहीं उ
त्पन्न भयो याभांति एकांत में बैठि के अपने चित्त को
विचार करनो है सो ॥ बुध्या विचार्य मनसो नित्था
यहृद्विलेथा ॥ स्वार्थे लेस्य कार्यो विसरण कवतन्मरे
१४ या ॥ आ ॥ एकांत में बैठि कें अपनी बुद्धि को विचा
र करै सो श्री आचार्यजी महाप्रभु भांति बुद्धि नी में कहे
हैं वाथ संग्रह बनाया तु नेकां तें वासई यनो हरितु प
वें तो रक्षां करिष्यति तन्मंत्राय २ इति वचनात् यह
श्री महाप्रभुजी और मन वचनामृत को विचार अप
ने हृदय में सर्वथा ही करनो है तहां कोई कहे एकांत
में अनेक दुख दुख आवै सो तहां रक्षा कौन प्रकार क
रे तहां श्री महाप्रभुजी कहे हैं जो हरि भगवान सर्व
था अपने भक्त की रक्षा करेगो यह चिंता न करें सर्व
था एकांत में बैठि कें अपनी सुंदर बुद्धि तें अपने चित्त
कों विचार नित्य करै तहां कोई इच्छा है अयम कहे नि
त्य हि सेवा करै भगवदीय को संग करै पाछें कहा ए
कांत में बैठि कें चित्त कों विचार करे सो दोऊ एक सं
के से होइ तहां कहत हैं जो सेवा दर्शन के समय तो
सेवा दर्शन करै पाछें अनोसर में एकांत में बैठि कें
चित्त को विचार करै याभांति भगवदीय सों मिलि
के रहे तो सगरे कार्य सिद्ध होइ १४ इति श्री हरिराइ
जी कृत शिक्षापत्र [illegible] टीका [illegible] श्री [illegible] पे [illegible] जी
द्ध तसे [illegible] लो ३० अब ऊपर कहे हैं जो हरि स्थान में भग
वदीयन को संग सों स्थिति होइ सेवा करै और एकांत

सेवाठिकैचित्तकोविचारकरैहैं।धनको तहांश्रफले
मनमेंसाधनकीभावनानकरें।यहमार्गनिसाधन
फलात्मकहै।सोकोनभांतिसों।श्रवश्रागेंवहतहैं
श्लोक॥निसाधनफलेमार्गेवल्लेनैवोपयुज्यते॥सा
धनानांमतोमायमात्मन्येवोदितास्थिति॥१॥याको
श्रर्थ॥श्रवश्रीहरिरायजीकहतहैं।साधनसाध्यन
हीहै।कृपासाध्यहै श्रपनोवल्लभकेरिकोटानको
टिसाधनकरैंतोकछिसिद्धिनाहीहै साधनतो
कनात्मकहैंश्रात्मासंतोषहोइयहश्रुतिमेंकहैहैं सो
मर्यादाभक्तिमेंकहेहैं।पुष्टिमेंएककृपाहैप्रभुकोमूल
तोश्रासुरावेसहोइ।श्रौरमर्यादामेंएवलामनेहूनाथे
होइयहभेदहैं।पुष्टिमार्गमेंभगवानवरणकरैं नवफ
लसिद्धिहोइ।मर्यादामेंजिननेंसाधनतिननेंफल
पुष्टिमेंप्रभुकीजिननेंकृपातिननेंफल।एहतास्न
मर्हें।सोश्रागेंस्वनिरूपणकरतहैं॥२॥श्लोक॥ वि
नुसर्वस्यमूलंहिहरिर्वरणमुच्यते॥यथैवहगुनैव
स्मस्तथातिष्ठतिवैजनः॥२॥याको श्रर्थ॥श्रवश्रीह
रिरायजीकहतहैं।जोपुष्टिमार्गमेंयहसिद्धांतहैं
सर्वस्वमूलपुष्टिमार्गकोफल।सोहीकेवलिनेह
नहैं।तातेंजीवकेसाधनसाध्यनाहीहैं जैसोज
जीवकोभगवानवरणकरैं।तैसोहोतसोवहत
नष्टहोतहैं।तातेंजीवकेसाधनसाध्यनाहीहै
जीवकेपुष्टिमार्गसेंवनेप्रभुकीगेहें।सोईयहपु
मार्गकीकृतमेंनिश्चतिहै।श्रन्यथाश्रौरनाहीं।त
भगवानवरनदोयप्रकारसोंकरतहैं।याहूसे
कारकोहैं।सोश्रागेंकहतहैं॥२॥श्लोक॥ वरा
धासालात्पर्यैरपर्यविशेषतः॥लीलास्थिते
नाटन्थेवस्तिसरंपरा॥२॥याको श्रर्थ

ह्रीकहतहैं जोवरनदोयप्रकारकोहै॥एकसाक्षात॥ए
कपरंपरा सोयहदोयभांतिकेभेदहैं॥श्रीकृष्णकीली
लास्थितिसृष्टिमेंहूंदोयप्रकारहैं॥साक्षातहूवरनहैंप
रंपराऊहैं सोऊआगेकहतहैं॥श्लोक॥आचार्यद्वा
रकेतवेत्रवर्णानहरेस्तथा॥लीलास्थेऽपिभवेत्सृष्टि
॥तिद्विविधमीरितं॥१॥याकोअर्थ॥ अवश्रीहरिरायजी
कहतहैं॥जोश्रीवल्लभाचार्यजीद्वाराजीवकोवरणभ
योहै॥एसोवरणहरिजोश्रीकृष्णहूसोपुनहनहोइ॥ता
तेहरिकेवरणकीरीतहूश्रीआचार्यजीद्वाराजीवकोवर
नकीरीतहै सोउनमें॥सोश्रीकृष्णकीलीलासृष्टिमें
ऊअपनेभक्तकोवरनदोयप्रकारसोंकीयोहै साक्षा
तहूपरापरातेहू सोआगेदोऊभांतिकोवरणकहिय
तहै॥श्लोक॥साक्षात्स्तुतिपुहरिणवरणंवरिसुनःप
रंपराप्रकारेण॥मर्यादापुरुषोत्तमा॥२॥याकोअर्थ॥
श्रीवल्लभावतारमेंसाक्षातवरणतोश्रुतिरूपाकोभ
गवानआपुवर्णकीरीहै॥औरअग्निसनहूहगो सोर
हजारअग्निकुमारकोपरंपरा॥मर्यादापुरुषोत्तमश्रीरा
मचंद्रजीद्वारायाभांतिलीलासृष्टिमेंहूसाक्षातपरंप
राकोवरणहै॥३॥श्लोक॥अन्यथाप्यत्रभेदोस्तिदास
नात्मीयतादिभिः॥आत्मीयत्वनावनादासेषुसत
या चेति॥४॥याकोअर्थ॥ यहदोयभेदविनासाक्षातप
रोक्षयहदोयभेदविनावरनेहोइ॥दासभावऔआत्मी
यदोय॥औरप्रकारआत्मीयभगवानकेसंबंधीनव
होइ॥अनन्यअवतारदसामेंदासभावविनाभगवानको
आत्मीयसंबंधनहोइ सोदासत्वमेंदोयभेदहैं सोआ
गेकहतहैं॥श्लोक॥दासत्वेप्यस्तिभेदोहिमर्यादापु
ष्टिभेदतः॥अनेनजीवस्यानंत्यंदासत्वावधिनिसर्गतः
७ याकोअर्थ॥ दासत्वभावमेंदोयरीतिहै॥एकमर्या

दाभक्ति एक पुष्टिभक्ति यह द्वेय भेद हैं। और अन्य जीव हैं
दासत्वधर्मविना के स्वतंत्र ने प्रवाही हैं। तिनसों दासत्व
धर्म सवतें अधिक हैं। दासत्वतें आत्मीय प्रभुको संबंधी
होत है। श्लोक॥ यथा दृतिस्तया स्वेछस्तस्य करोति
हि॥ मर्यादायां वृतो न स्वभक्त्या साधनतिष्ठता॥ सो याको
अर्थ॥ जैसी जाकी वृत्ति है जहां को जीव है। जैसी क्रियामें
स्थिति है। ताभांति श्रीठाकुर फल देत हैं। सो पुष्टिप्रवा
ह मर्यादा में श्रीआचार्यजी महाप्रभु करे हैं। रछ्यासात्र
न मनसा प्रवाहं सृष्टवान् हरिः। वचसा वेदमार्गं हि
पुष्टिं कायेन निश्चयः इति वचनात्। मनते प्रगटी सो
सृष्टि प्रवाही। तिनको फल यह संसार ही। वचनते प्रग
टी सो मर्यादा। वेदकार्यमें कर्ममार्गीय भई तिनको
फल सत्यलोक पीछे मोक्ष। और भगवानके सरीरते
प्रगटी सो पुष्टिसृष्टि तिनको मन भगवत्सेवामें ल
ग्यो। तिनको फल स्वरूपानंदको अनुभव। याभांति
जैसे जीव जैसी क्रिया। तिनको ताई भांति श्रीठाकु
पा करत हैं। जिन जीवको वरन भगवान मर्यादामें की
यो है। ताते जीवकी निष्ठा साधनमें होइ। जह यह वि
चारे जो फल तो साधन करे तो कछु फल मिले। यह
मर्यादाभक्ति। अब पुष्टिकी रीति कहत हैं। श्लोक। पु
... वयं तु अनुग्रहाचार्ये
वनुगृह्य दृष्टस्त्वेव सकलं पुनः ... सो याको अर्थ। पुष्टिमें जीवको वरन
... प्रभुको अनुग्रह देखत है
... सो जीव प्रभुको अनुग्रह ... परंतु साधनको फल
विकर्म करै भगवद्धर्म है करै। परंतु ...
में कछू न लावे। निःसाधन होय यह जाने जो प्रभु
करेंगे सोई मेरो कार्य होइगो। याभांति सर्वदा रस
धर्ममें प्रभुको अनुग्रह ही देखे। सो श्रीआचार्यजी

पुष्टिमर्यादा सहित नहें भीतर पुष्टिरसमें मग्न हें ऊपरते
मर्यादी वेद मर्यादा वेरलक हें सो आगें कहत हें दे श्लो
वेगीकृत्तिः समर्यादैः सर्वेष्वंगीकृता खलु अ
नतद्गुरु मर्यादा स्थितिर्हि हितकारिणी १ या श्लोक अ
सो श्री गुसांईजी सर्वोत्तममें श्री आचार्यजीको ना
म कहे हें अंगीकृतास मर्यादैः इत्यादि वाक्यतें सर्व
था जो पुष्टिमार्गीय समस्त जीवनको अंगीकार स्व
तः आपुहीकीयो हें नहां यह श्री आचार्यजी महाप्र
भुनकी उक्ति आपु श्रीमुखसो कहे हें नो पुष्टिमार
गीय हैं मर्यादारीतिमें स्थिति होइ करें ऊपरतें वेदमा
र्ग न छूटें लोक वेद विरुद्ध कार्य करें तो श्री आचार्यजी
हित करें पुष्टिरसदान करें तातें यह पुष्टिमार्ग लोक
विरुद्ध नाहीं हे यह जाननो १ ॥ श्लो॥ पुष्टिप्रभुत्वा
दस्माकं लौकिक पारलौकिकी सर्वाचिंता हरत्येव नि
श्चिंतां विभाव्यतां २ या श्लोक अ यांभांति श्री हरिरा
इजी कहत हें जो आपुके हमारे प्रभु रसपुष्टि हें यह
लौकिक वैदिक सर्व वेद मर्यादा अयुक्त भीतर के व
पुष्टिरसको अनुभवमें मग्न हें ताहीतें सर्वोत्तममें क
हें जो श्री आचार्यजी वचन कहत हें तो क्रियाकर
तहें जो मनमें विचार करत हें तो सब रासलीलामें
आपुको तात्पर्य हे तासें श्री महाप्रभुजी पुष्टिमार्गी
य वैष्णवकी लौकिक वैदिक चिंता हरेंगे यह मनमें
निश्चय जानि निश्चिंतताकी भावना मनमें राखे तब
प्रभुमें मन लगें चिंता भगवद्भावमें बाधक हे तातें नि
श्चिंत होइकें करो अवश्य रहें कहत हें श्लो॥ अता
वोकमाचार्यैः निजस्थानतः कथयिष्यति नापत्ते निजा
वानवेषु श्रीगोकुलेश्वरः ३ या श्लोक अ ऊपर कहे ता
भांति निश्चिंत होय प्रभुकी इच्छा जाने सो न करनें

यसों श्री आचार्यजी महाप्रभु कहै है। सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा
निजेच्छातः करिष्यति॥ प्रभु श्री हरि सो कैसे है। और सर्व के
आत्मा है। सर्व के ईश्वर सर्वोपरि है सर्व के अंतःकरण की
जानत है। ताते आपनी निज इच्छा ते विना मागे सर्व सिद्धि
करेंगे। ताते अपेक्षा विना अपने जन की आर्त्ति करी दूरि
हैं तौ। आर्त्ति विवे वंधु दीनवंधु। ऐसे गोकुलेश्वर श्री हरि है
तहां कोई संदेह करे जो प्रभु की इच्छा विपरीत है। तब दुःख
नं सर्वे कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं ऐसे है। सो विपरीत इच्छा
होय तब प्रार्थना करवे न करे। यह कोई संदेह करे तहां
कहत हैं। १२ श्लोक॥ हरीच्छा विपरीता पीदासदुःखाव
लोकनात। अनुरूपा विधातव्या कृपा विपरीतिवर्तने
१३ याको अर्थ॥ अब श्री हरिरायजी कहत है जो हरीच्छा
विपरीत है। काहे ते जीव अपराध न करे मन में कछु तो
कि कचा है। सो प्रभु न सहें जैसे नारदजी को व्याह को वि
की इच्छा भई। तब भगवान न वरन दीयो। तब नारदजी
बहुत दुःख पायो। तब कृपा करिके दुःख दूरि कीयो। तथा
प्रह्लादको हिरण्यकश्यप बहुत दुःख दीयो। सो प्रह्ला
द प्रभु इच्छा मानी सहे पाछे प्रभु दुःख दूरि कीयो। दैत्य
को मार्यो। तैसेई जो कछु विपरीत इच्छा प्रभु परीक्षार्थ
करे। प्रभु तो सर्व के आत्मा है। सर्व आपुही ते विना क
हे जानत है। सो दास को दुःख देखिके आपु ही स्वयमे
व पायमान होत है। जा भांति दास को मनोरथ है ता
ही भांति आपु प्रभु पूर्ण करे होयगो जा भांति दास को सुख
होयगो सोई आपु करेंगे। ताते सुखहू में प्रार्थना ना
हीं करने योग्य है। १३ श्लोक॥ आर्त्तिमाने मनुष्याय
प्रार्थना न विधीयतां॥ कृपालुरेव भवतां निजानां
जनतां स्वतः स्यात्॥ १४ याको अर्थ॥ अब श्री हरि
रायजी कहत है। जो यह पुष्टिमार्ग में आर्त्ति मात्र

पुष्टिमर्यादा सहित हैं। भीतर पुष्टिरसमें मग्न हैं। ऊपर ते
मर्यादि वेद मर्यादा के रक्षक हैं। सो आगे कहत हैं। श्लो
क। अंगीकृतिः समर्यादैः सर्वैरप्यंगीकृता ः स्वतः। अ
नन्तक मर्यादास्थिति हेतु कारिणी ॥ १२ ॥ याको अ
र्थ। सो श्री गुसांईजी सर्वोत्तममें श्री आचार्यजी को ना
म कहे हैं। अंगीकृतो समर्यादो। इत्यादि का ते सर्व
था जो पुष्टिमार्गीय समस्त जीवन को अंगीकार स्व
तः आपुही कीये हैं। तहां यह श्री आचार्यजी महाप्र
भुन की उक्ति आपु ही श्रीमुखसों कहे हैं। जो पुष्टिमार
गीय हूं मर्यादारीति में स्थिति होइ के रे ऊपर ते वेद मा
र्ग न छोडें। लोक वेद विरुद्ध कार्य करें तो श्री आचार्यजी
हित करें पुष्टिरस दान करें। ताते यह पुष्टिमार्ग लोक
विरुद्ध नाही हैं। यह जानने। ११। श्लोक। पुष्टिप्रभुत्व
हरि स्वार्थं लौकिक पारलौकिकी सर्वा चिंता हरे व नि
श्चिंतत्व विभाव्यतां ॥ १२ ॥ याको अर्थ। या भांति श्री हरि र
इ जीव करत हैं। जो स्वार्थ के हमारे प्रभु रस पुष्टि हैं। यह
लौकिक वैदिक सब वेद मर्यादा संयुक्त भीतर वेव ले
पुष्टिरसको अनुभव में मग्न हैं। ताही ते सर्वोत्तम में क
हे जो श्री आचार्यजी वचन कहत हैं। जो क्रिया कर
त हैं। जो मनमें विचार करत हैं। सो सब रासलीला में
आपुको तात्पर्य हैं। तासे श्री महाप्रभुजी पुष्टिमार्गी
यन के भव की लौकिक वैदिक चिंता हरेंगे यह मन में
निश्चय जानि निश्चिंतता की भावना मन में राखें तब
प्रभु में मन लगे। चिंता भगवद्भाव में बाधक है ताते नि
श्चिंत होइके करो अवधार इ कहत हैं। श्लो क। अता
वोत्तमाचार्यो निजयातः कस्य ति। नोपलंते निजा
वार्ता वेधुमी गोकुलेश्वरः ॥ १३ ॥ याको अर्थ। अपरके रेता
मोति निश्चिंत हो। प्रभु की इच्छा जाने सो न करले ग

यामें श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहैहैं। सर्वैश्वर्य प्रभु सबो आ
निजेच्छातः करिष्यति। प्रभु श्रीकृष्ण हैं सो हैं। और सर्वके
आत्मा हैं सर्वके ईश्वर सर्वोपर हैं सर्वके अंतःकरणकी
जानत हैं तातें आपनी निज इच्छातें बिना मांगें सर्व सि
करेंगे तातें आपसों बिना अपने जनकी पालि करेंगे द
हैं तो आर्ति दै बंधु दीनबंधु। ऐसे गोकुलेश्वर श्रीकृष्ण हैं
नहांको संदेह करें जो प्रभुकी इच्छा विपरीत है प्रभु
करेंगे कर्तुं अकर्तुं अन्यथाकर्तुं ऐसे हैं। तो विपरीत इच्छा
होय तब प्रार्थना करवे न करों यह दोइ संदेह करें नहीं
कहत हैं या श्लोकमें॥ हरीच्छा विपरीतापीत्यादि व्या
ख्या करन आत अनुकंपानिधानें त्वा पुनर्विपरीत वर्तते
१३ याको अर्थ। अब श्रीहरिरायजी कहत हैं। जो हरिइच्छा
विपरीत है कारिकें जीव अग्यान करि मनमें कछु तो
कि कचाहे॥ सो प्रभु न पूरे जैसें नारदजी ब्याह करिवे
की इच्छा भई तब भगवान न करन दीयें तब नारदजी
बहुत दुख पायो तब कृपा करिकें दुख दूरि कीयो तथा
प्रह्लादकौ हिरण्यकश्यप बहुत दुख दीयो सो प्रह्ला
द प्रभु इच्छा मानी सहे पाछे प्रभु दुख दूरि कीयो हैत्य
को मार्यो तैसें ई जो कछु विपरीत इच्छा प्रभु परीताये
करें प्रभु तो सर्वके आत्मा हैं सर्व आपुही तें विवा
हैं जानत हैं सो सबको दुख देखिकें आपु
कृपायमान होत हैं। जा भांति दासकी मनोरथ
ही भांति आपु प्रभु प्रवर्त होइगो जा भांति
होइगो सोई आपु करेंगे तातें सुख
ही करत हैं॥१३॥ श्लोक॥ आर्तिमार्गे
प्रार्थना न विधीयतां॥ कृपालुत्वे [illegible]
जनन संदेहः स्यात्॥१४॥ याको [illegible]
राइजी कहत हैं। जो यह पुष्टिमार्ग [illegible]

कोंकर्त्तव्य हैं जो मेरो प्रभुकी सेवा स्फुरन नाहीं अनंतः म
नुष्यजन्म सगरो यही वीति गयो या भांति आर्ति करें श्री
लौकिक अलौकिक फलकी प्रार्थना कछु न करें काहे
तें श्री कृष्ण तो परम कृपाल हैं तातें अपने जन दासकी
आर्ति देखिकें प्रभु आपन [illegible] होत हैं सो निरोध ल
क्षण में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं ॥ लोके
[illegible] नानुभवानंदरूपस्तु तो यदा भवेत् तदा स
र्वे सदानंदा हृदिस्था निर्गता बहिः ॥ इति वचनात् अ
पने जनको विरह आर्ति रूप क्लेस संयुक्त प्रभु देखिवें कृपा
युक्त होत हैं सर्व प्राणीमात्र के हृदय में सदा आनंद रूप
भगवान हैं सो विरह प्रगट होय अपने दासको सुख देत
हैं तातें आर्ति पुष्टिमार्ग में सुखद है सो आर्ति कोन
प्रकार करें सो आगे कहत हैं ॥ श्लोक ॥ आर्त्यैव क्रि
यते यत्नु सेवा गुण कथादिकैः तदेवास्य प्रभु [illegible]
र्गप्रविशति ध्रुवं ॥ ५ ॥ या श्लोक में तातें श्री हरिरायजी
आर्तिको सी निरूपक कृपा करें भगवत्सेवा सेवा करवो गा
वरे वा नाम गुन गान करें संयोग में संयोग के पद
नो सरस विप्रयोग के पद गान करें श्रवण करें श्री सुबो
धिनी आदि कथा सुने मनन करिकें श्री हरि लीला
को स्मरण करें सो श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं जो
या भांति पुष्टिमार्ग में सव स्थिति है ताको हमार
सदृश पुष्टिमार्ग को पूर्ण निश्चय होय तातें कछु कहे
सर्वे या होइ तहां कोई कहे हैं जो वेद सास्त्र में अनेक
साधन कहे हैं ताको फल कहे हैं तुम साधन ने फल
नाहीं कहे प्रभु की कृपा तें कहे हो सो कहो या भांति संदे
ह होइ तहां कहत हैं ॥ श्लोक ॥ अन्यथा लक्ष यागानु
ष्ठानसाधुज्य साधकैः न मुख्य फल संबंधस्ततो भवति
निश्चितः ॥ ६ ॥ या श्लोक में श्री हरिरायजी कहे

जोयहपुष्टिमार्गकीक्रिया बिनाजानेसाधनके
फलसिद्धिहै।सोश्रीकृष्णकीसायुज्यमुक्तिकोलाभ
होइ साधनकीरीतिअनेकफलमुक्तिहीहोययहपु
ष्टिमार्गकोमुख्यफलतातेंसेवाफलबहुतसोंआयहनि
श्चयसिद्धांतजाननों।अबपुष्टिमार्गीयफलजाभांति
होउ।सोकहतहैं श्लोक।।नहिलिप्ताप्तिरेवानंदपाव
सेवनात् तत्स्वरूपानन्दसुहितवचोरहविचारोगत
१७।याकोअर्थ।। अबश्रीहरिरायजीकहतहैं जोयहपु
ष्टिमार्गीयआर्तिविप्रयोगात्मक एसीआर्तिकीप्रा
प्तिश्रीकृष्णविप्रयोगाग्निआर्तिरूपजोश्रीवल्लभा
चार्यजीकेचरणकमलकीसेवाकरीयें अत्यंतप्रीति
सोंसोजवश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकेवचनामृतसु
बोधनीजीनिबंधादिसगरेछोटेबडेग्रंथकेविचार
अहर्निशकरियेंतबश्रीआचार्यजीकीकृपातेंआर्तिहै
सुपासोंतिक्रियासाध्यआर्तिफलयहमार्गमेंकहत
होउ।अबआगेंकहतहैं।श्लोक।। निवेदनानुस्म
ध्यानात्तत्संगसंभवात्।।अन्यथानभवेद्दुःख
हतानंतसाधनो।।१८।।याकोअर्थ।।अबश्रीहरिराय
जीकहतहैंजोनिवेदनकोसंधानअष्टप्रहररावे
नमग्यातिनसोंकरैयासंगपुष्टिमार्गीयभगवदी
यकेसंगानिवेदनकोस्मरणकरेंमनमेंताकरिआर्ति
फलरूपहोइ।औरप्रकारअनंतकोटानकोटिसाध
नकरेंआर्तिसिद्धकरेंपरंतुआर्तिसिद्धिनहोइ।तबआ
तिनभईसेवाफलकीआसाकाहेकोकरोंश्लोक
याभवबढ्यतबवृद्धवचनकर्थमें।।संगोपितिया
कर्तव्योनान्यथामितिनिश्चयः।।१९।।याकोअर्थ।।अ
बश्रीहरिरायजीकहतहैंजोकपरकेंहेताप्र
मार्गमेंरहिनोभावकीवृद्धिनिश्चयहोइ

करिकें श्रीआचार्यजी के वचनामृत ग्रंथ हैं श्रीसुबोधनी
निबंधादिक छोटे बडे ग्रंथ तिनही को मनन लगाइकें पाठ क
रैं वचनकी विषयों करि धाराप्रवाह सगरे छिन तब श्रीआ
चार्यजी कृपा करें परंतु गोप्य श्री जिसो पाठ करें औरकोइ
जो तिनताही और आयुष्काहू सो जनावे नाही बडाई प्रति
ष्ठार्थ न करे गोप्य करें और लौकिक चेष्टाकमें मन न ल
गावें या भांति पाठ करें तो ताको निश्चय आर्ति सिद्ध होइ
श्लोको॥ न हृष्येत्प्रियं प्राप्य मूकं च बधिरं मन्ते वाच:
प्रवृणाव हृदले हृज्जनानन भवेत्तिन:॥ ऐसा या को अर्थ
अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो ऊपर पुष्टिमार्गके आर
तिकी रीति कही सो ऐसो होनो तो बोहोत दुर्लभ है
या कालमें तातें और साधन न बने तो मनमें धैर्य करि
श्रवणादिक होइ रहें तथा बाहिर होइ रहे लौकिकमें न काहू
की सुने न काहूको कछु कहे यह या कालमें औसमत
है बानी जो वचनामृत आवे सो आपने मुखसों कहे
और स्वरूप लौकिक सो प्रयोजन न राखे काहेते दुष्ट
जो हैं तिनके मुखकी बानीको फल नाही दुखदाई होइ
तातें दुर्जन दुष्टको संग छांडि करें तब श्री बानी हू न सुने
या भांति पुष्टिमारगीय भगवदीय रहे जो दुर्जन दुष्ट
प्राणी भगवद्वार्ता छूवें नाऊ भगवदीय अन्यमा
रगीयके मुखसों सर्वथा न सुने यह बाधक होत है यातें भी
तिहूतें हरत है॥ श्लोको॥ दुष्टनामपि वाचाय
नीतन: श्रवणात: किंचित् तत्सर्व मोजन्त्रणादनु
भावितरो हितो॥ ऐसा या को अर्थ॥ अब श्रीहरि
रायजी कहत हैं जो दुष्टके मुखतें गायत्री सुने तो कछु
फल नाही होत है उलटो बाधक है काहेते जैसे
रको हृदयमें है वा दुष्टके संगतें गायत्रीको वरन जो
अक्षर सो दुःखरूप होइ काहेते यह गायत्री मंते

ाधिदैविकस्वआत्मस्वरूपहेकेदेवनासर्वोत्तरीतिथा
होइजायकेवेवस्तभौतिकहोइतेसेंईऐसेंसव
उजेनकेमुखतेसुनिकेतेकथायाताफलरूपनहीं
ाबाधकहोइजेसेंगंगाजलसुंदरहेंपरंतुनीचस्त्री
नीचमारवाडालाहिकेपात्रमेंहोइतोउहजलतन
आश्रितकरनोपडेगोक्षुवेतोन्हानोपडेयामें
तिपात्रमेंरहेहे॥२१॥श्लोकः॥अतःपूतनमश्रवणा
होयाअप्रतपूतजायतोसावधानसमर्मश्रोत्रमहिंद
श्रवणकीर्तनानित॥२॥याकोअर्थ॥ऐसेपुष्टिव ६
हर्मुखअन्यमार्गीयहो॥ताकेमुखतेभगवद्
धर्मसुनेतेकछुफलनहोइ॥होयप्रतिबंधहोय
उलटोउलटोप्रायश्चितकरनोपडे॥जेसेंगंगाजी
कोपानीधाराछूटिकेंरहिजायनामेंभक्तकेगंगा
जलजोनिकेन्हायोहोइतोमहादोषहोइ॥ताकोप्रा
श्चितकरनोपडे॥तातेंपुष्टिमार्गीयवैष्णवसवतु
मसावधानरहियो॥जोवैष्णवपुष्टिमार्गमेंस्थिति
होइमार्गअनुसारक्रियाकरेयाभांतिसुंदरपात्र
वृत्तिश्रवनकीर्तननिवृत्तिकेवरेतोभक्तिमार्गमेंप्र
वेसहोइयहपुष्टिमार्गमेंहोइ सर्वोपरउत्तमोत
महेंअवओएइपुष्टिमार्गीयभगवदीयकेलक्षण
कहतहैं॥२॥श्लोकः॥निरपेक्षहृदजनानिजाचार्य
पदाश्रिताः॥श्रीभागवततत्वज्ञादुर्लभायवसून
श्लो॥२॥याकोअर्थ॥पुष्टिमार्गीयभगवदीयवैसे
होइ॥निरपेक्षाजाकोकछुअपेक्षानाहीहोयपूर्ण
कामहृदयतेहोइलोकिकवैदिककछुइच्छाहना
नहोय॥ऐसोनिरपेक्षहोय॥चतुरश्रुतिपयेनया
मनानहोइ॥धीरहृदजना॥एकश्रीकृष्णजनको

नसवनमेते राच श्रीकृष्णहीमें अनन्यभाव होइ और श्री
आपने श्री आचार्यजी महाप्रभुके चरणकमलु
को आश्रय मनमें दृढ होइ और श्री भागवततको
तत्वज्ञ श्री सुबोधिनीजी निबंधमें ज्ञान होइ जो
रास भगवदीय मिले तिनहीको संग कर्तव्य है तहा
श्रव श्री हरिरायजी कहत हैं जो या कालमें एसे भग
वदीय मिलिवेको परम दुर्लभ है ताते एसे भगवदी
य न मिले तो और अन्यको संग मति करियो सो आ
गे कहत हैं ॥ श्लोक ॥ अतः सरणमंत्र हि कर्तव्य
मखिलं नत ॥ यदुक्तं तातचरणै रितिवाक्याद्विष
ति रूपया ॥ श्लोक ॥ यो ऊपर कहे सो भगवदीय न होइ सी
जो न मिले तो सरणमंत्र अष्टाक्षर महामंत्र श्रीकृ
ष्णः सरणं मम ॥ यो मंत्रको साधन करें एसी भावना क
रे ताहीकरि याविलकार्य सकलसिद्ध होइगो ॥ सो स
रणमंत्र है जब श्री आचार्यजी द्वारा सरण आयो तब
सिद्ध होइ ॥ सो श्रीगुसांईजी विवरणमें कहे हैं ॥ श्लो ॥
यदुक्तं तात चरणैः श्रीकृष्णः सरणं मम ॥ तनाम्बासि
नो [illegible] मोहिके पाललो कि कै ॥ श्रीगुसांईजी कहत
हैं जो हमारे तातचरण श्री आचार्यजी महाप्रभुजी
की अनुग्रहकी यो ॥ अष्टाक्षर महामंत्र ताकरि यह
लोकके सब कार्य सिद्ध होइ ताते हम निश्चिंत हैं
इत्यादि वचनको विचारि श्री महाप्रभुजीको सरण
होइ अष्टाक्षरकी भावना करे तो सगरे कार्य होय
निश्चय ॥ श्लोक ॥ तथा विधेय कृपया यथा गोव
र्द्धनेश्वरः स्वीयत्वे स्थिरा देव निजरूपं न दास्यति ॥२५
या [illegible] ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो अहस
रो भगवद्धर्म कृपा करके है सो यह कब होय ॥ तब श्री गो
वर्द्धननाथजी कृपा करें तब होइ ॥ अपने आश्रितजा

निश्चपनेनिजस्वरूपकोंग्यानकरोंप्रसन्नहोइकें तबही
सर्वकार्यसिद्धहोइ॥सोयहपुष्टिमार्गसाधनसाध्यना
हीहैं॥कृपासाध्यहे॥गिरिराजकेसंबंधपुलिंदीपस
कृपाकरी॥तेसैंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकेसंबंधतें
श्रीजीकृपाकरें॥तबसर्वसिद्धहोइ॥२५॥इतिश्रीह
रिराइजीकृतशिक्षापत्रग्रन्थ त्रिस नाकी टीका श्री
गोपेश्वरजीकृतसंपूर्ण॥३१॥अबकृपरकहेजोश्रीजी
कीकृपाहोइ॥तबसर्वकार्यसिद्धहोइ॥सोपंचपर्वा
अविद्यानासहोय॥विद्यासिद्धहोइ॥तबभगवान
श्रीकृष्णहृदयमेंविराजें॥सोअविद्याइंपंचश्लोकी
करिकहतहें॥तातेंयहसिक्षापत्रश्लोकहसकहिकें
वर्नेनकरतहैं॥अबप्रथमअविद्याकोप्रकारकहत
हैं॥काहेतें॥अविद्याजायतबविद्याहृदयमेंआवें जैसें
हंसावतारमेंश्रीकृष्णनेंभक्तनकीअविद्यादूरिक
री॥तबहृदयमेंपंचअविद्यास्थितिभई॥सोश्रीसुबो
धिनीजीमेंवर्णनकहेंनारदीअनुसारश्रीहरिराइजीव
र्णनकरतहें॥श्लोक॥कामाविष्टःक्रोधयुक्तःसंसारास
क्तिसंयुतः॥लोभाभिभूतसततंधनार्जनपरायणः॥१
याकोअर्थ॥अबश्रीहरिराइजीकहतहेंजोअविद्याके
इतनेरोगहोइ॥ताकेहृदयमेंभगवानकबहूनहीं
स्थितिहोइ॥कामाविष्टः॥कामादिकविषयमेंनिम
आवेशहोइ॥सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुसंन्यासनि
र्णयमेंकहेहें॥विषयाक्रांतदेहानांनावेशःसर्वथा
हरेः॥इत्यादिवचनतेंजानोजोकामविशनकरतो
१॥औरहृदयमेंक्रोधभर्योरहेंसोचांडालकोस्वरू
पहें॥तहांचांडालरूपक्रोध मेंहोइत
गवानहृदयमेंकेसेंआवें॥ता
२॥यहलौकिकसंसारमेंआसक्त

प॰ हेवघरस्त्रीके भरणपोषणमें अष्टप्रहर आसक्त हैं
तिनके हृदयमें भगवान नांही आवैं ३ और लोभक
रि भरे हैं इत्यादिके लीये अपघात चोरी करत हैं स्व
हीको सर्वस्व परद्रव्य जानतो हैं अष्टप्रहर कोडीजोडि
वेमें मन है ऐसे संग्रहमें लोभ है ऐसे के हृदयमें भग
वान नहीं है ४ और धर्मात्मा धनके उपायमें परायण
हैं अपनो धर्म वेचिके धनके लीये जतावें अने
क वार्त्ता सिद्धांत धनके लीये करें अष्टप्रहर धन
हीमें मन राखें तिनके हृदयमें भगवान न रहें ५ अ
व और हू कहत हैं लोक परलोक विरहने हैं नित्यप
तायवाजिनें गोवकुलभया कोनें विषयध्यान
नतपरोमभयाकेथ्ये रयाकरिके रहित हैं अनेक
जीवनको हिंसा हैं काहूको दुख देखि प्रसन्न रह
त हैं या भांति हृदय रंचकू मनमें नाही हैं तिनके हृद
यमें भगवान न रहें ६ स्नेह करिके जे रहित हैं भगव
री वैष्णव मांजिनको रंचकहू स्नेह नाही है किन्तु
भगवद्वार्त्ता सुनें परन्तु रंचकहू भगवद्रसको छूवी
मन हृदयमें नहीं ऐसे स्वके हृदयमें भगवान
नहीं है ७ नित्य संतोष करिके रहित हैं वैष्णवको य
हा संतोष करें ऐसो एकहू संतोष नाहीं ऐसे
जीव अष्टप्रहर संतोष विना हाय हाय यह कार्य न
भयो आजु नोकं कुनककमायो अब कैसे काम चले
गो या भांति सदा संतोष करि रहित हैं तिनके हृदय
में भगवान न रहें ८ सदा सर्वदा संतोष करि संतोष
करि आकुल रहैं स्त्रीपुत्रादिकनके प्रीतिके सोक
ग्रहादिकमें सुख अथवा सोक जो कैसे निर्वाह हो
य गो या भांति बालपनेते वृद्धपर्यंत सोक हि करि व्या
कुल रहैं हैं और सदा भय करि हृदयमें कंपायमान

...इस्त्रिन्नादिककोकालडर वैराहिकको
उरस्नानसंबंधीहैसंबंधीवोडर इत्यादिलोकिक
मैंहैकदिहृदयमैंतत्परहैंयावेसरहैंनावे हृदयमें
त्परहैंहैसोविषयनसिद्धिहोइनवध्यानहीमन
मैंयनेकुविचारकरेंयाभांतिकउपायेवांकोइवें
वजानेतोयाछोयाछोखानपानहोयायाछोकपड
पहैंपरस्त्रीकिमिलिवेकोविचारकरैयाभांतिक
कुकायेकरैं।यहनगामिलोइतवदुखपावेंमनही
मेंध्यानवरैंरासेविषयध्यानमेंतत्परहैंनावेहृद
यमेंभगवाननरहैं॥१॥अवत्र्योरहूकहतहैंस्तोत्र
वहेवाद्भुतहरहैंश्रूपहैकपापहैं।।स्तोनेमातेषि
तःसर्वसाम्यवितनभाव्यनोआयोभा थयो।।यहैक
रघुकरहै।जोमोसमानऔरहूसरोकोईनाहीहैमेंव
हुतसमाजहैं।मेरेमेंबडीवैभवताहैं।मेसेवासभ
गाबहुतनकरतहैं।मैंयनेकमनोरथकरतहौं सो
सगारकुटंबकोपालनकरतहूं मेरेसगरेंयापाको
रीहैं।इत्यादिमनमेंयहंकाररारवेंनाकेमनमेंहृद
यमेंभगवाननरहैं॥२॥क्रूरहृदयहोय परायोवुरो
हृदयमेंविचारैंमनमेंकपटहोय जोमेरोलावपर
तोतवदुखहैहैगो।।याभांतिक्रूरहष्ठिहैं टेटोरहें
ताकोवोल्यो।।ऐसेक्रूरकेपटीकेहृदयमेंभगवा
नरहैं॥३॥ऐसेमनवूकायेकोइकरैचारीअन्याईको
कोवुराकरैंनाकोपक्षपातकरैंवाकोसाचकरिवे
स्त्रीरासवनतेआपुवेरवाधेंयाभांतिदुष्टमानीके
संगकरैंताकेहृदयमेंभगवाननरहैं ...सोनमा
नस्थितितथापुष्टिमार्गविनाकोऊमा ...कमें
उपासना इत्यादिमेंवाहैनो

सेवक भावना नाही है । सर्वे गुण भगवान के स्वरूप ईको
ज्ञान नाही है । निराकार ज्ञान है ताके हृदय में भ
गवान न रहै । १५ । सामग्री चिंतन न करे त्रासा महादे
व इत्यादिको चिंतन करे इनसो फल चा
हे या भांति अन्याश्रय करे ताके हृदय में भगवान
न रहे । अब ओर हू कहत है । अरु लौकिक विमु
ख के संग जन वैमुख्य समत्व हरिलीला दोष पर्छ्यो (?) तथा
कर्म जड इंद्रिय । १६ । [illegible] लौकिक कावेश तथी कृ
ष्ण विमुख आग्रह मिथ्या ध्यान मिथ्या क्रिया मि
थ्या भाषण । लौकिक में मग्न श्रीकृष्ण ते विमुख ऐसे
के हृदय में भगवान न रहे । १७ । तथा सब के अन्न
न्य भगवदीय ते विमुख भगवदीय की निंदा करे भग
वदीय को दुख दे । ऐसे के हृदय में भगवान न रहे । १८
श्रीकृष्ण की आज्ञा न रहे मर्याद विरोध तैसे भगवान श्रीकृ
ष्ण ताप तैसे ई सेवा निरोध तामें दोष दृष्टि जो प्रभु
कामादिके वस है परस्त्री या भांति चोरी में दोषदृष्टि
के हृदय में भगवान न रहे । १९ । और कर्म जड कर्म
मार्ग में तत्पर यज्ञादि में आसेवा प्रभु की छोडि देइ
कर्म ही को मुख्य जाने भगवद्धर्म में प्रीति नाही ऐसे
। २० । अब ओर हू कहत है ।

मूर्ति नि ।

ता । भया व्याख्ये (?)

श्री वल्लभाचार्य

जी तिनके चरणारविंद मकरंद विमुख ऐसे के हृदय में श्री
कृष्ण न रहे । सुंदर भगवद्वार्ता चौरासी इत्यादि वार्ता इ
त्यादि को दूषक निंदिक जो यह भाषा है अनेक मुक्
त (?) कर कहत है इत्यादि भगवद्वार्ता में जाको विश्वास
नाही है निंदक है लौकिक कार्य में प्रसन्न होइ

दयमेंभगवाननरहैं।यहउपर।रभद्वाविद्याहै
षअविद्याकेवरतेहैं।सोजाकेहृदयमेंरहैं।ताकेहृ
दयमेंश्रीहृस्वकबहूंनआवैं।भगवदावेशबबहूंनहीं
अनातेवेस्वकोयहदुविशदोषतेरहितरहैनो
यहदेयतेडरपतहै।औरजैसेस्ववकेवलेनकेहृ
तहैं।जोइतनोगुनहोइतोवेस्वकेहृदयमेंश्रीहृ
स्वविराजें।सोतरहतहैं।पालोहृ॥तीनेप्रभुदेनिःप्रप
चेलीनाचिंतनमनपरोस्वाचार्यसरणानिःप्रपन्नेका
भविवजितेहैं।याकोअर्थ॥तीनहोस्वेकोइकछुव
हैनिराकरतेतोसहितेंहैं।सोश्रीगुसांईजीविशतमें
कहेहैं।लोक॥आचार्यचरणैसनकेदैन्यत्वतेयसा
धन।श्रीआचार्यजीमहाप्रभुश्रीसुबोधनीजीमेंकहे
हैं।जोमनुष्यमनकरिवेकोसाधनदैन्यताहीहै
नानेंहीनदीनतातेहृदयमेंभगवानविराजें।औरप्रभु
हृदयहोइमनमेंकपटछलछिद्रनहोइ।शुद्धभाव
तेंप्रभुकोभजनस्मरणकरे।ताकेहृदयमेंभगवान
विराजें।सोलौकिकप्रपंचासक्तिरहितहोइ।काहूसें
संबंधीमेंमननलगावै।एकप्रभुमेंमनलगावै।कछुद
रव्यसुखप्रपंचकोवाधकननकरे।ताकेहृदयमेंप्रभुविर
औ।श्रीहरिकीलीलारसस्वरूपवाक्त्नीलारांनवी
लीरासलीलाहित्यनेवहैं।तिनकेचिंतनमेंतत्पर
हैं।सोनिरोधलक्षणमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं
गानाविष्टचितानांसर्वासुरवैरिणःभगवानकेगुणा
नमेंप्रविष्टहोइअनवअनेकदोषहृदयमेंतेदूरहैन्यर
गुणनिनवेरीकोनासहोइअनातेलीलामेंजिनकोचि
तरहैं।तिनकेहृदयमेंप्रभुविराजतहैं।श्रीआपनेपुष्टि
मार्गीयवकेआचार्यश्रीवल्लभाचार्यजीकेचरणके
आहर्निसचिंतमेंहैं।सोश्रीसर्वोत्तम

है ॥ ऐसे भक्तनसें प्रार्थ्य चरणाम्बुज जो धनायनमः यामें
ति श्रीमहाप्रभुजीके चरणकमलकी रज ॥ अपने स
र्वस्व धन जान्यो है ॥ तिनको स्वअधरामृत सिद्ध है ॥ ति
नके हृदयमें श्रीवल्लभ विराजे ॥ पा ॥ और लौकिक वैदिक
देहसंबंधी सर्व कामना करि मनमें वर्जित हैं ॥ कहूं मनकी
आसक्ति प्रभुविना नाहीं ॥ ऐसे भक्तन पैवे सबके हृ
दयमें प्रभु विराजे ॥ ध्रु ॥ अब श्रीरहूं कहत हैं ॥ स्लोक ॥ व्रजस्त्री
चरणांभोजरेणुप्राप्यभिलाषुके ॥ गुणगाने परेःस
नामार्थे परिभाव्यते ॥ ७ ॥ याको अर्थ ॥ व्रजभक्त स्वामि
नीजीके चरणकमलकी रेणुके प्राप्त्य अभिलाष ॥
निसदिन मेरे है ॥ जो मोको व्रजभक्तनके चरणकमल
की रज कब प्राप्ति होइगी ॥ यही मनोरथ मनमें रहत है ॥
जैसें उद्धवजी भ्रमरगीतके अध्यायमें कहे हैं ॥ स्लो ॥ आ
सामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां वृंदावने किम
पि गुल्मलतौषधीनां ॥ या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं
च हित्वा भेजुर्मुकुंदपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्यां ॥ १ ॥
वंदे नंदव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णसः ॥ यासां ह
रिकथोद्गीतं पुनाति भुवनत्रयं ॥ २ ॥ इत्यादि वचनके भा
व विचारे ॥ ताके हृदयमें श्रीवल्लभ विराजे ॥ ७ ॥ श्रीव
ल्लभकी लीलासंबंधी गुनगान करे ॥ सो द्वादस स्कंध
में श्रीशुकदेवजी कहे हैं ॥ स्लोक ॥ कलेर्दोषनिधे
राजन्नस्ति ह्येको महान्गुणः ॥ कीर्तनादेव कृष्णस्य
मुक्तबंधः परं व्रजेत् ॥ इत्यादि वचनके गुनगान करे
ताके हृदयमें प्रभु विराजे ॥ ८ ॥ कीर्तन न आवे तो श्रीवल्लभ
यह नामको अर्थ विचारिके अनुभव करे ॥ अष्टाक्षर म
हामंत्रको अष्टप्रहर करे ॥ सप्तम स्कंध श्रीभागवतमें
कहे हैं स्लोक ॥ अज्ञानादथवा ज्ञानादुत्तमस्लोक
नामयत संकीर्तितमघं पुंसो दहेदेधो यथानलः

णनामोचारणमाहात्म्यंहरेः॥ सद्यःपतत्पुत्रकाः॥ अजामि
लोपियेनैव मृत्युपाशादमुच्यत॥ ग्योरअष्टमस्कंध
मेकहेहैं॥ तेयभागणमनुष्येषुकृतार्थान्नूनंनिश्चितं
स्मरंतीस्मारयंतीहरेर्नामकलौयुगे॥ अन्यापिवचन
नेश्रीहरिरायजीनामहीकेअनुभवतेभगवानहृदयमें
विराजतहैं अवश्रोरहूकहतहैं॥ श्लोक॥ अनन्ये
नन्यसेवैकनिष्ठातत्परतोगतो॥ भगवद्धर्मनिरतोविर
क्तोगुनसंगिनि॥ याकोअर्थ॥ एकश्रीहरिमेंअन
न्यभावहैं। श्रीहरिकीसेवाकरनी। श्रीहरिकोस्म
रण। श्रीहरिकीकथाकोश्रवण। गुनगानमनवच
नकर्मकरिपुष्टिमार्गकेधर्ममेंअनन्यहैं समाप्तिमेंक
हेहैं इतिश्रुतो अनन्यसाधारणयत्नुतथैवानन्यसाध
ना अनन्यभोगभोगायतेतुसर्वाधिकारिणः॥ १॥ या
भांतिअनन्यहोइ नान्यंदेवंनमस्कुर्यात नान्यंदेवंप्रति
रीक्षयेत॥ नान्यप्रसादमानहैनान्यदायतनंव्रजे
त॥ २॥ ऐसेअनन्यहोइताकेहृदयमेंश्रीहरिवि
राजे॥ ३॥ तथाअनन्यहोइपुष्टिमारगीयजेसेवैष्ण
वहैं। तिनमेंपूर्णनिष्ठाकरिउनभगवदीयनकोसंग
करिउनकीसेवाकरै सोभगवदीयगाढेहैं। एकभग
सोवृजभक्तन्यों दूजेनंदकिसोरको। औरभातिवर्द्धनी
मेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं। अतःस्थैर्यहरि
स्थानेतत्तदीयैसहतत्परे प्रभुकेस्थानमेंतदीयकेसं
गतत्पररहेताकेहृदयमेंप्रभुविराजे॥ ४॥ सोऊभग
वद्धर्ममेंरतिहोइ यहपुष्टिमार्गकेधर्ममेंप्रीतिहो
इ औरसाधनादिमेंमननलगावै औरनवरत्नग्र
थमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं। पुष्टिमार्गस्थि
तोयस्मात्साक्षाणोभक्तारविलाः सेवाहतिर्गु
रोराज्ञाबाधनंवाहरिच्छया॥ ५॥ याभांतिगुरुकीआ

प॰ ७ गपीसमानपुष्टिमार्गमेंस्थितिहोइसंसारादिमेंस्यालीवा
रहैजैसेंजलमेंकमलहै।याभांतिभगवद्रूपमेंरतिहोय
तावेहृदयमेंप्रभुविराजें।१४।औरविरक्तहोइलौकिक
तेसर्वप्रभुमेंसमर्पनकरिदे।१५।सोश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुसिद्धांतरहस्यमेंकहेहैं।तस्मादादौसर्वकार्येस
र्ववस्तुसमर्पनं याभांतिजोवैष्नवभगवानकोसम
र्पनकरिसकेंऔरतेविरक्तहोयरहैं।तिनकेहृदयमें
प्रभुविराजतहैं।यवओरहूकहतहैं।श्लोक।कृष्णात्
भावसंयुक्तेसरसेन्परसात्तिग अर्थवल्लभमव्यवी
लाचंचलेस्वीनाकुल्ते।१६।याकोअर्थ।श्रीकृष्णमें
आर्तिभरीतेप्रभुकृपाकरें।सोनिरोधलक्षणमेंश्री
आचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं।श्लोक।कृष्णमाना
नुजनानन्दरूपकृपायुक्तोपदाभवेत्।तदासर्वसदा
नंदहृदिस्थंनिर्गतंबहिः।इतिवचनात्।भक्तकोआ
र्तिसेसंयुक्तभगवानदेखिकेंकृपायुक्तहोइसर्व
केआनंददाता।एसेप्रभुबाहरप्रगटहोइदरसन
देइअपनोअनुभवकरावें।तातेंआर्तितोयहपु
ष्टिमार्गकोफलहै।तहांप्रभुपधारें।पश्रीकृष्ण
मेंभावभरतैजेसेंस्त्रीकोव्याहहोइ।तवहांभा
वहोइजोयहमेरोपतिहै।तेसैंजवश्रीआचा
र्यजीद्वारानिवेदनहोइ।तवश्रीकृष्णमेंभावया
कोहोइ।सर्वस्वश्रीकृष्णहीकोजानें।यहभावहोइ
तवभगवानहृदयमेंपधारें।१६।भगवत्स्वरूप
समेसरसहोइ।औरअन्यमारगीयरसतथावि
षयादिरसकरिहीनहोय।एकपुष्टिमार्गमेंहीसा
धरामनाखादः युद्धीरसकीसिद्धिचाहैं।एसेरसि
कवैष्नवकेहृदयमेंप्रभुपधारें।१७।अवचलग
मीरबुद्धिहोइ।अन्यमारगीयकेसंगतेदुष्टके

संगतेंविषयादिकेसंगतेंविषयादिकेसंगतेंबुद्धिच
लायमाननहींहोइ॥सोदृढपुष्टिमार्गमेंहोइताकेहृ
दयमेंप्रभुपधारें॥१८॥श्रीश्रीकृष्णकीलीलानानाप्र
कारकीनामेंचातेंचंचलहोइ॥लक्षणमेंलीलारसमें
मग्नहोइ॥सोसिद्धांतमुक्तावलीमेंश्रीआचार्यजी
महाप्रभुकहेहैं॥चेतस्तत्प्रवणंसेवा॥यहमानसी
जोचित्तएकरसनदीकेप्रवाहकीनांईश्रीहरिमेंस
प्रभुकीलीलामेंरहें॥तहांसेवाकहिये॥भांतिजाकोचि
तप्रभुकीलीलामेंचंचलहोइ॥ताकेहृदयमेंप्रभुप
धारें॥१९॥श्रीश्रीकृष्णकेदरसनकौंमनवारंवारआ
कुलरहै॥सोश्रीभागवतएकादशस्कंधमेंउद्धवजी
कहेहैंश्लोक॥दुःखंभोमानुषोदेहोदेहिनांक्षणभं
गुरःतत्रापिदुर्लभंमन्येवैकुंठप्रियदर्शनं॥इत्यादि
कवचनतेंजाननी॥जोयहमनुष्यदेहपरमदुर्लभ
हैं॥क्षणभंगुरहोइगी॥तामेंभगवानकोदरसनप
रमदुर्लभहै॥सोएकदेहसोंहोतहैसोकछुमनसासजी
कोयहभावहै॥एकक्षणश्रीगोवर्द्धननाथजीकें
अंतरायमेंकितेंदिनइजुगसोविनुदेखें॥ऐसेंदर्श
नमेंआर्तिहोय॥ताकेहृदयमेंप्रभुविराजें॥२०॥स्वव
श्रोएकरतहैंश्लोक॥मनोरथसतान्तेतेलवैस
सीन्यसंयुते॥एतादृशसुहृदयेहरिविशतेलक्षणात
२१॥याकोअर्थ॥जैसेव्रजभक्तननानाप्रकारकेमनोर
थश्रीठाकुरजीकेसुखकेअर्थहोतहैं॥वागायकेच्या
मयासामग्रीतनमनधनसबउत्तमभावप्रभुमेंहैते
सेपुष्टिमार्गमेंवल्लभकुलसर्वस्वश्रीकृष्णकोविनि
योगकरावतहैंतेसेंहैतनमनधनकरिकेसबप्रभु
सीकेकार्यमेंसेवामेंअनेकमनोरथ
करनेहोइतोमनहीतेंनानाप्रकार

मानसीसेवा ताके हृदयमें प्रभु विराजे १ औरलौकि
कवैदिकमें देहसंबंधी कार्यमें सबठौर आपने मनकों
उदासराखे लौकिकमें मालीवतरहे संसारके दुख
सुखके मन उदासीन रहे तो प्रभु हृदयमें हे २ श्रा
वश्री हरिरायजी कहत हैं जो यह दोविधगुण विद्याअ
पजावेसबके हृदयमें आवे ताके हृदयमें श्रीकृष्णप
धारें सेंतें स्वरूपानंदको अनुभवकरावें जैसे व्रजभ
क्तनकों अविद्यादूरिभई विद्यासिद्धभई तथाश्रीकृ
ष्णहृदयमें विराजे तैसे ई वैष्णवदोविधसोपक्षोड़ि
दोविधगुणको धारनकरें तो श्रीकृष्ण निश्चय ताई
हृदयमें पधारें १ ॥ इति श्री हरिरायजी कृत सि
द्धांतनावलीटीका श्रीगोपेश्वरजी कृत संपूर्ण ॥ ३२ ॥
अबकरुपविद्या अविद्याके प्रकारकहे सो व्रजभक्तन
केंतो प्रभुही सिद्धकीरीतबभरे भक्तकोसामर्थनाही
हे प्रभुही अविद्यादूरिकीरे पाछे विद्यादीनकीरे
सामर्थ्य आपनी दीरे तब रासपंचाध्याईमें प्रतिबं
धसबरे तोड़िके सगरे प्रभुपास पधारे अनुभवभरे
तैसें नहीं पुष्टिमार्गमें जब प्रभु कृपाकरें तबही फल
होइ सो आगे कहत हैं लौकिक अस्मिन्मार्गे प्रभोरि
च्छामात्रं सर्वकारणं श्रीवचायरण्यावनप्रतिकू
लोपूलेनिजेच्छया कौ अयोग्य श्रीहरिरायजी कु
हत हैं जो हमारे श्रीवल्लभाचार्यजीके पुष्टिमार्गमें
हाजिश्रीकृष्णा से प्रभुकी इच्छा है सबके कार्यमें कारन
है देवीजी कुअयोग्य को होइ सो दुःसंगते सब होइत
था और को स्वरूपाहोइ ब्राह्मण हन्तो बेदपढ़ कोई
बरणाहोइ ब्राह्मण लहेवे देपढ़ कोई बरनहोइ त
था प्रतिकूलमार्गको देवीवह मुखहोइ म्लेच्छस
इचांडाल माला हे इत्यादिक होय सर्वधर्मकरिरहि

नसेंककोंप्रभुकीइछातेसरनआय।यहपुष्टिमार्गके
कोंनिश्चयपावें।तातेंइछाहीतेंमुख्यहै।सोवातो
द्धिहै।अलौवानऔंरअलौगानकीवेटीभगवदइ
नसरनश्रीगुसांईजीकीआज्ञाचाहरिवंसजीद्वारा
लेआये।तातेंप्रभुकीइछापरमकारणहै।तातेंभग
इछापरमकारनहै।तातेंभगवदइछाईपरमकारन
मुख्यहै।यहनिश्चयसिद्धांतजाननों।लोक॥नहीं
रतनाग्रसुहैत्पारवहौछतान।सदीनेषुनिजामि
ह्ममनुकूलौकरोतिहि।याकोअर्थ॥ताकेवरन
कोनासहोइ।तबहरिकैसेनसेवामेंअंगीकारहोइ
काहेतैयहवरनधर्महै।सोकसेवामेंप्रतिबंधहैप्रभु
संबंधीनारीहै।देहसंबंधीहै।जहांजीवजाकेघरप
टे।सोईश्वरनकहावै।मेरापीछेंउहघरगाधर्मजान
हे।फलजहांजहांजेन्मलेउ।तहांकोवरनधर्मउह
आत्मासंबंधीनाहीहै।देहसंबंधीहै।जहांलोंदेह
तहांलोंईवरनधर्म।तातेंभगवदसेवामेंकामनआ
वें।प्रभुकोअंगीकृतनकरवावें।तातेंश्रीआचार्य
जीमहाप्रभुप्रगटहोइकेंआत्मनिवेदनकरवाए
तावरिसमारेंदेहसंबंधीवरनकोनासभयो।जोमें
फलानीज्ञातियहअहंताममताछूटी।यहभाव
भयो।जोमेंतोप्रभुकोदासहों।यहदैन्यसिद्धिभयो
भगवानकोसंबंधीभयो।स्वभावदसतामेंअंगी
कारभयो।जैसलसंबंधतेंसुद्धभयो।सोदीनतांक
दासभावहैभयो।तबप्रभुकीइछाआपुतेंभई
जोअबतोयहमेरोभयो।अबतोछुटाओनजाय तब
तातेंप्रभुकीनिजइछाभई।प्रभुअनु हा
सिद्धिभए।सोकहतहैं।श्लोक॥
माना।किंफलंदुःखेभंमतो।कृपावजायते

.प. कछसिद्धिनस्यौनातें ॥ अथ या कौ अर्थ ॥ अब श्रीहरिरायजी कह
९६ त हैं ॥ तब प्रभु श्रीवल्लभ अनुग्रह भए ॥ तब सगरो फल सि
द्ध भयो ॥ यामें संदेह नाहीं है ॥ तातें श्रीवल्लभ की कृपा को
कारण एक दैन्य ता है ॥ सो लौकिक में कहूं प्रसिद्ध दे
यत है ॥ जो कोउ काहू के बैरी होइ के सो कछू काम बिगाडे परंतु
आय के सरणि परै तो मित्र तें अनुसरे है ॥ अब वाही सों
रों तब कृपा ही करे मारयो न जाय ॥ तैसें अनेक जन्म
ते जीव भूल्यो है ॥ सो सब श्रीआचार्यजी द्वारा समर्पन
करिकें दैन्य होय रहे ॥ तो मैं श्रीवल्लभ को दास हूं ॥ तब प्र
भु प्रसन्न होइ ॥ कृपा करें ॥ सो श्रीभागवत एकादश
स्कंध मैं पिंगला वाक्य ॥ श्लो० ॥ संसार कूपपतितं विष
यैर्मुषितेक्षणं ॥ ग्रस्तं कालाहिनात्मानं कोन्यस्त्रातुम
धीश्वरः ॥ १ ॥ और पुरुरवा ने बिनती करी है ॥ श्लोक ॥ दुष्प
न्यां दिष्टं चित्तं कोन्यो मोक्षयतुं क्षमः ॥ आत्मारामेश्व
रमृते भगवन्नं मधोक्षज ॥ २ ॥ शुकदेवजी कहै हैं ॥ श्लो
० ॥ घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्वे धर्म विवर्जिता ॥ वासुदे
व परा मर्त्या स्ते कृतार्था न संशय ॥ ३ ॥ दुष्प्रन्यां दिष्टं चित्तं
कोन्यो मोक्षयतुं क्षमः ॥ आत्मारामेश्वरमृते भगवन्नं म
धोक्षज ॥ ४ ॥ या भांति पिंगला पुरुरवा री ॥ और द्रुपदी
राजेंद्र जिन ने आर्ति करि सरन आये तिन सबन को प्र
भु उद्धार करे ॥ और कलियुग यह महा कठिन काल है
सर्व धर्म करि वर्जित है ॥ तातें एक प्रभु को आश्रय करि
दैन्य ही करि कृपा प्रभु कीनी है ॥ यह सिद्ध है ॥ ४ ॥ अब
और हूं प्रकार दैन्य को कहत हैं ॥ श्लो० ॥ अत्र नादैन्यं
हि मार्गोस्ति न परं साधनं मतं ॥ अभिमानो दत्वापि
सततं नाछुरो हिनो ॥ ५ ॥ या को अर्थ ॥ अब श्रीहरिरा
इजी कहत हैं ॥ जो हमारे श्रीवल्लभाचार्यजी के मार्ग
में परम साधन एक दैन्य है ॥ दैन्य भावना करणा र्थ

सर्वसमर्पेन् है नातें जाकों दैन्यता सिद्ध भई है तिनकोय
ह पुष्टिमार्ग को फल सिद्ध होय भयो ॥ सो विज्ञप्ति में श्री गु
सांईजी कहे हें ॥ याद्रुसी ताद्रुसी नाथ त्वत्पादाब्जैकवि
चरो ॥ न त्वन्नेत्रविषयमाप्यासु करद्गोचरनम ॥ १ ॥ इत्या
दि वचन तें लौकिक दैवे कहे हें जैसी तैसी तुमारे चरणार्व
मल की ध्वि करी दासी हों ॥ तातें आपनी जानि कृपा क
रि मेरे नेत्रन को दर्शन वेगि ही करावो ॥ और श्री आ
चार्यजी महाप्रभु श्री सुबोधनीजी में कहे हें दैन्यता तो
सब साधन ॥ या भांति दैन्यता सर्वोपरि साधन हे यह पुष्टि
मार्ग के फल में विरोधी एक मद अभिमान ही निरंतर
यही बाधक हे ॥ ताही तें श्री आचार्यजी महाप्रभु विवेक
धैर्याश्रय में कहे हें ॥ अभिमानश्च संत्याज्यः स्वाम्यधीनत्व
भावनात् ॥ विशेषतश्चेदाज्ञा स्यादन्तःकरणगोचरः
२ अभिमान तो सर्वतें नहोइ सो ईश्वरे दासको नाही
कर्तव्य हे ॥ काहे तें स्वामी के आधीन की भावना दास
को कर्तव्य हे ॥ क्या हेतें स्वामी के आधीन की भावना ह्र
म्हों कर्तव्य हे ॥ सो अभिमान तें दासपनो जातरहें ता
तें बडो बाधक हे ॥ यह पुष्टिमार्ग के फल में विरोधी हे
४ अवश्यों रहकरन हे ॥ स्लोक ॥ तो विज्ञाय प्रयत्नेन
परित्याज्यो फलार्थिभिः ॥ शेषां समस्तेंद्रियाणां सा
धनेरेवनाशायेन ॥ प्याथैन्म्र ॥ ३ ॥ और प्रभु सेवा उ
फलार्थ विज्ञाति करन हे ॥ काहेतें लौकिक की प्रार्थना
तें लौकिक सुख तो सब इंद्रियन को साधन नाहि हो
त हे ॥ संसार साधन को नास हे ॥ सो निरोध लक्षण में श्री
आचार्यजी महाप्रभु कहे हें संसारावेशदुष्टानां इं
द्रियाणां हिताय वै संसारावेशसों इंद्रियको
प्रिय हे ॥ तातें कछु फल न मागनो ॥ सो विवेक
य में श्री महाप्रभुजी कहे हें ॥ स्लोक ॥ प्रार्थने

प. किंस्मान्स्वामिभिः प्रार्थसंशयात् ॥ प्रभुतें प्रार्थना करि
१० ये का हेतें स्वामीजो श्रीकृष्ण तिनके मनमें अभिप्राय क
हा है हे प्रभु कहा जानिये कहा दान विचार्यो है देन कूं
और जीव बुद्धि तें कहा मागें ॥ तो प्रभु अप्रसन्न होइ जो
ये तो बडो पदार्थ दिना मांगें देतो ॥ यह तुच्छ मागयो तातु
च्छ है तो या भांति प्रार्थना करें तें फलसें न ताहोइ
तो लौकिक सिद्ध करें तो सगरी इन्द्री विमुख होइ जाइ
तातें प्रार्थना प्रभुसों सर्वथा हीन करनी ॥ श्लोक ॥ अ
थवाश्रयमात्रेण नाश्रयिष्यति मत्प्रभुः ॥ निजाचा
र्योक्ति नानां तु होष्यन्ति स्वरूपतः ॥ या को अर्थ जो कृप
कहें जो सें प्रार्थना तें फलको दान होइ नाही तो सहे
इ सो कहत हैं ॥ जो दामोदरदास संभरवार की वार्ता
में है श्रीजी ने रंचक अन्याश्रय कीयो सो पुत्र मर
होय गयो ऐसो बाधक है श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति में क
हे हें ॥ श्लोक ॥ अहं वृद्धरंगी दुर्गामी संगी मां गीलतो
स्मय ॥ अन्याश्रय गाधोपीकें धरा भक्त्या धतें ॥ १ ॥ अ
न्याश्रय गांध है सो यातो गरो कहे ॥ प्रभु सों अन्या
श्रय न सह्यो जाय ॥ ते दराइजी ने चंडिका पूजन गा
रे ॥ सो प्रभु को बुरी लागी ॥ तब तत्काल सुदरसन सर्पने
दराइजी को निगल गायो ॥ तब प्रभु की सरण होइ
प्रार्थना करी तब छूटे ॥ तातें अन्याश्रय महाबाधक है
और अपने श्रीवल्लभाचार्यजी के आश्रय ऐसे जो
भगवदीयजन हैं ॥ तिन में जो दोषदृष्टि जो को दुःख न
है भगवदीय को दोषदृष्टि ॥ तिन को नास होइ निश्चय
जैसें अग्नि में पतंग जर मरत हैं ॥ अग्नि को कछु नाही बि
गरत है ॥ तातें भगवदीय में दोष न विचारें जैसें अग्नि
सर्व में है परन्तु शुद्ध है जैसें भगवज्जीवरूप न
की ये तो उनको कहा बाधक है ईश्वर सर्व जड चेतन

तोकछुबाधकहै तेसेईभगवदीयमेंदोषसुहु
नकोफलनासहोइहैं स्लो॥ संबंधमात्रतो
भीभवेतिदृणमात्रतः अतः स्वाचार्यमात्रेकरा
लस्तुराश्रितेरस्याः॥ अर्थ॥ जोस्वआश्रितकेसंबंधमा
तेजोएकलगजोडारसोईभस्महोयजाय यामें
कहाकहनो सोप्रसिद्धिहैं रवियनहैं तेसेईजोस्वाचा
र्यश्रीवल्लभाचार्यजीकेसरणमात्रतेसकलदोषभ
स्मकलगमेंहोइ तोजवकोआचार्यजीकेचरनक
मलकोदृढएकआश्रयकरैतोताकेदोषभस्महोय
यामेंकहाकहनो उचितहीहै श्रीमहाप्रभुजीकेच
रणकमलकेआश्रयतेदोषदूरिहोइ औरदैन्य
ताप्रसिद्धहोइफलरूप स्लो॥ नजुअर्थावबोधा
थोविहिता निप्रयत्नतः दुःसमाः वर्जितैः संगसंपा
प्रागापुनेरपि द्र्याकौ अर्थ॥ यहपुष्टिमारगीयग्रं
थश्रीआचार्यजीमहाप्रभु श्रीगुसांईजीकेआदिलै
सुबोधनीजीनिबंधअनुभाष्यटिप्पनीविद्वन्मंड
नइत्यादिछोटेवडेग्रंथश्रीसर्वोत्तमादिइनकेभाव
केबोधभएतेंआश्रयसिद्धहोइ सोसर्वोत्तमग्रंथ
मेंश्रीआचार्यजीकेपुत्रश्रीगुसांईजीकहेहैं स्लोक
नहुक्तमपिदुर्बोधं सुबोधं स्याद्यथातथा इतिवचना
त्‌ वेदमेंपरकहेहैं जोनहोतोइवेदकेअर्थकोबोध
नहोइ नहोतोइप्रभुकीप्राप्तिनाहीं नहोतोइप्रभुह
पानकरोयोयाकलिकेजीवनकोतोवेददुर्बोधहै
जान्योनाहीजातहै ताकेलीयेश्रीगुसांईजीसर्वोत्त
मप्रगटकीने यामें १०८ श्रीआचार्यजीमहाप्रभुजी
केअलौकिकनामहैं यहसर्वोत्तमकेजपको
निश्चयवेददुर्बोधहोय। श्री
कोदानकरै निश्चय।

प० श्लोक॥ कुल धयामृतास्वाद सिद्धिरत्न न संसयः॥ या
१ भांतिनाते सर्वोतम्मकौं जपवैसनकौ आवस्यकतेय
है यह करिसवौं सुवोधहोइ॥ और अन्य होय आश्रयसिद्ध
होइ॥ ताते फलार्थ श्रीगुसांईजी प्रयत्न कीयो है तेसे
ईवैसनवको हू प्रयत्न करि समारग पुष्टिमारगीय ग्रंथन
कौं अवलोकनकरनौ॥ और दुःसंगको त्याग करै
सत्संग भासके यत्न करि अन्याश्रय होय दैन्य होइ॥ ताही
ते प्रथम स्कंधमें श्रीभागवतमें श्रीसोनकजी कहे हे
श्लोक॥ तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवं भग
वत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः॥ १॥ याभांति
सत्संगबराबरि सुख न स्वर्गमें है न मोक्षहुमें है ता
तें सत्संग करे तो दैन्य और भगवदाश्रय सिद्ध होइ
हरिलीला॥ स्थैर्यं सेवापरे न्याश्रय त्यागविवर्ज
ने कामलोभादि दोषैव परित्यागश्चनिःस्पृह॥ या
श्लोक को अर्थ श्रीहरिरायजी कहत हैं॥ जो श्रीकृष्ण
की सेवा में स्थिर होय॥ काहेते॥ यह पुष्टिमार्ग
में परमफलरूप भगवत्सेवा ही है॥ और श्रीभागव
तनवमस्कंधमें श्रीभगवान ने कहे है॥ श्लोक॥ मत्से
वया प्रतीतं च सालोक्यादि चतुष्टयं नेच्छंति सेव
या पूर्णाः कुतोन्यत्कालविप्लुतं॥ १॥ इतिवचनात॥ ए
से भगवत्की सेवामें विश्वास करि रहे जो चतुष्टय मुक्ति
पर्यंत नाही चाहत है याभांति सेवा में पूर्ण होइ तिन
को काल नाही बाधक है याभांति श्रीकृष्णकी सेवा में
स्थिति होइ॥ और अन्याश्रय न करे देवता आदिक
आदिको आश्रय करे तो होइ तो फलको नास होइ
ताते अन्याश्रय न करे॥ ऐसो विचलण अपने मार्ग
को टेक लीये रहे॥ और कामादि विषय और लोभ
त्याग करे॥ काहेते कामादि विषयते श्रीठाकुरजी

हृदयमेंतेंप्रधानहैं।औरलोभरूपिसंसारासक्तिहै
तहैं।सोलोभकरिकैंपापपुण्यविचारतनाहींहैं।अ
पनोस्वार्थहीकेवलदेषत।ताकेवसहोइऐसादृष्टिहू
तथाश्रुतसंबंधीकुटुंबतिनहीकीरक्षाकरतहैं।ऐसे
लोभीऔरकामीकेहृदयमेंप्रभुनआवैं।तातेंकाम
लोभसदात्यागकरें।तबहृदयसिद्धिहोयफलप्रा
प्तश्रीहरिरायजीकृतसिक्षापत्रताकीटीकाश्रीगो
पेश्वरजीकृतसंपूर्ण॥३३॥अबरूपकहैजोमुख्य
है।सोग्रंथकेबाधतेंसत्संगतेंसेवातेंहृदयहोयहैसो
वाहृदयप्रकारहै।एकमुखारविंदकीभक्तिसर्वोपर
ि।एकचरणकमलकीभक्ति।सोआगेदोउभक्तिकोप्र
कारकहतहैं।श्लोक।श्रीकृष्णःसर्वदासेव्यःफलप्र
मस्वतःस्तुसःमुखारविंदभक्तेर्वशात्तत्सेवैवहृद्य
याशय।कोअर्थ।अबश्रीहरिरायजीकहतहैं।जो
यहपुष्टिमार्गमेंतोसदासर्वदाश्रीकृष्णजीहीसे
व्यहैं।सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुचतुश्लोकीमेंक
हेहैं।सर्वदासर्वभावेनभजनीयोव्रजाधिपः।इतिव
चनात्।सर्वदासर्वभावकरिव्रजकेअधिपतिश्री
कृष्णतिनहीकीसेवाकर्तव्यहै।स्वस्यायमेवधर्मो
हीनान्यःक्वापिकदाचन।महाप्रभुजीकहतहैं
।अबहमारोयहधर्महैहमारोपुष्टिमार्गमेंनाकोईअस्थि
तहै।तिनकोंयहीधर्महै।निश्चयश्रीकृष्णसेवाहीक
र्तव्यहै।औरकोईएकसाधिकोईकालमेंदूसरोसाधन
नाहींकर्तव्यहै।नाईकरिकैपुष्टिमार्गकेफलकीप्राप्ति
स्वतःआपुहीतेंसिद्धहोयगा।तातेंभावेनाहूंनहींकर
वो।सेवाहीकर्तव्यहैकाहेतेंमुखारविंदकीभक्तिसों
सोलानस्वरूपसेवाजानेंसिद्धहोय
तम

प. मैंसाक्षात्कारहैं मुखारविंदरूपकी भक्तिकहतहैं
२ सर्वोपरहैं औरश्रीचरणारविंदकीभक्तिकहतहैं
सो ... चरणात्मकभक्तौतु धर्मसेवात्मरूपया धर्म
द्वारा तद्विशिष्ट प्रभुप्राप्तौ नसंशयः २ या ... श्री
चरणात्मक भक्ति है सो धर्मसेवात्मकरूप है जैसे श्रा
गे श्रेसा शिवनारदसनकादिकसबकी श्रीरा है
ताहीभांतिमर्यादासंयुक्त धर्मवत्नकरनौ यह धर्म
द्वाराभक्ति है ताकें प्रभुकी प्राप्ति है यामेंसंशयना
हीं है तहांसंदेह कोईकै जो ऊपर मुखारविंदकी भक्ति
कहे धर्मसेवात्मकही द्वारा प्रभुकी भक्तिवतारे तब
दोऊ एकही भई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रगट है
इकें कहा अधिकार कीयो याप्रकार संदेह होइ तहां
कहत हैं तो पहलेमें बहुत भेद हैं पुष्टिभक्तिमें अधरामृ
तरसको पान औरमर्यादाभक्ति धर्मरूप तासें मुक्ति
आदि फल है सो आगें निरूपण करत हैं फलको प्रकार
२ सो ... तत्रसायुज्यसंबंधोनत्वोभामृतसेवनं मु
खारविंदभक्तौतु साक्षात्सेवनंमतं ३ या ... श्री
यह श्रीचरणात्मकमर्यादाभक्ति में सायुज्यभक्तिकी
प्राप्ति है ताहूमें एकभेद है जो कोभानृत सोसेवा न क
रे कछु कामना मनमें राखे कहू न राखे जैसें प्रह्लाद
जी भक्तिकरी पाछें नृसिंहजी खंभमेतें प्रगट होय क
हत हैं प्रह्लाद कछु मांगि तब प्रह्लादनें कही
मैं व्यौहारी नाहीं हौं मेरे मैं करावित मांगिवे की
वासना होय सो प्रभु महू रिकरि देहु याप्रकार रा
खु कामकरै तब सायुज्यमुक्तिमें रूप प्रभुमें लीन
होइ ओ मुखारविंदकी भक्ति है सो तो प्रभुकी
साक्षात्सेवारूप है भक्ति यत्नमें हू प्रभुकी सेवा औ
र फलप्राप्ति भयें पाछें हू प्रभुकी सेवा यामें साधन फल

यारो नाही। सदा प्रभु को साक्षात स्वरूपानंद को अनुभव
है तातें मुखारविंद पुष्टि भक्ति सर्वोपर है। और मर्यादाभ
क्ति खंड तारतम्य है। तातें दोय न्यारी न्यारी भक्ति वर्णी
है।४श्लोक॥ एतादृक फलिता भक्ति र्भवेद् केवल पुष्टि
तः। तत्रापि मुखरूपास्मदाचार्या संश्रय। अथ सर्वथा
कार्ये स्तत्र सखिलं भवेत्॥ याको अर्थ॥ ऐसी यह मुखा
रविंद की पुष्टि भक्ति ताको साधन एक श्री आचार्यजी महा
प्रभु के आश्रय यह साधन है। तातें प्रथम सर्वथा यही कार्य क
र्तव्य है। हमारे श्री वल्लभाचार्यजी के सरन आयना मति
में स्वकरि पाछें अपने मन में दृढ श्री वल्लभाचार्यजी के
चरणकमल को आश्रय करो। एसें करवे अखिल सक
ल कार्य सिद्ध होइ यामें संशय नाही है, तातें मुखारवि
न्द की भक्ति में एक श्री आचार्यजी को आश्रय ही साध
न है और कोई नाही॥५श्लोक॥ अतः परं तु नन्दगेहव
स्या साधनादिकं निरूप्यते स्वनोयाय तत्स्वरूपा नो
हृदि स्थित॥ ६ याको अर्थ॥ और मर्यादा भक्ति है तामे
तो साधन अनेक प्रकार के है पाछें मुक्ति फल है और
पुष्टिभक्ति में केवल श्री आचार्यजी को आश्रय
तातें चरणात्मक भक्ति वार साधन कर्तव्य है आगे
निरूपण करत है, अपने मन में संतोषाय तथा अपने
नहीं प्रपुष्टिमार्गीय भगवदीय के संतोषाय जो
हमको एसो दान श्री आचार्यजी महाप्रभु दीए है
या प्रकार निरूपण करत है तहां श्री महाप्रभुजी की कृ
पा तें यह पुष्टिमार्गीय भगवदीय भक्ति हृदय में स्थि
ति होइ श्री पूर्णापूर्ण हर्षोन्मत्त लीला सहित होउ
भक्ति के साधन करत हो॥ ६श्लोक॥ यथा मर्यादाभ
क्तौ केवल भाव तु साधने। तथा सर्वोत्तम
नन्दे नन्दुभ्यतारस्या॥ अर्थ॥ जैसें

नें ब्रजस्वभावहू है सो ई साधन हैं सर्गो ब्रजसाड ब्रजमय
हे अपनपेको हू ब्रजमांननहे यह ब्रजस्थाभांतिसब
और ब्रजभाव पष्टमयोदा भक्तिको साधनहै तैसें यह
पुष्टिमार्गीय जे भक्तनके भावात्मक है तातें भावही यहा
भावनासाधन है तातें जे भक्तनको भावकी भावना
करे यहीसाधनबुद्धिमें निश्चय राखे ७ श्लोक वस्तु
तस्तु फलंचैव फलं स्यात्ः प्रवेशतः तत्स्वरूपं तु सर्वेषां
देहातः कारणात्मनो ७ या श्लोक को अर्थ कपरमर्यादाभ
क्तिकहे तामें वस्तुतः जो अक्षर ब्रह्मस्वरूप फल तामें
प्रवेस होय केरमायाके गुणमें नआवे यह मर्या
दामार्गीय फल और पुष्टिमार्गीयको प्रभुकी
लीलास्वरूपफलमें प्रवेश तहां स्वरूपात्मकरसको
अनुभव है तातें सेवाते अंतरस्तनअंतःकरणमें
प्रभुकीलीलाको अनुभव सर्वइन्द्रियनको मन और
नसवप्रभुमें तत्परता जैसें ब्रजसर्वधर्मे गद्याथमें क
हे हैं याप्रकारमुख्यफल लीलारूप ताको अनुभ
व पुष्टिमार्गीय भक्तको याप्रकार सो मर्यादापुष्टिभ
क्तिको न्यारे न्यारे फलवर्णन है तातें पुष्टिभक्ति परम
रसात्मक सर्वोपरि श्रेष्ठ है ८ श्लोक येनभावेनभ
गवत्यात्मभावो हि तायते तस्मात् ज्ञानात् स्वदेह
दिसकलेभ्यान्तरस्थेकं ८ या श्लोक को अर्थ कहे हें तो
अंपतिभाव जो भगवान में बढे अपनी आत्माको
भावबढे प्रभुमें तो भावहू बढे और जो अपनी आ
त्माको भाव बढे प्रभुमें तो भावहू बढे और जो अ
पनी आत्माको भाव भगवानमें न बढे तो भाव जा
नरहै तातें अपनी आत्माको भाव भगवानमें ब
हे जाप्रकारसों उपाय करत रहे तो जव अपनी आ
त्माको भावभयो सो कैसे जानिये जव देहादि

॰ननसबप्रभुकेअर्थलगेतनमनधनतीन्योप्रभुमें
लगें तनुजावित्तजादोउप्रकारसेंजोकरें॥श्लो॰
नदेहाद्यर्थसिद्ध्यर्थंभगवान्नप्यपेक्षते॥यतोदेहा
दिष्वपिप्रभुःलीलोपयोगतः॥१०॥याकोअर्थ
यहभगवत्सेवाहूंदेहादिसिद्ध्यर्थ॥तथादेहसं
बंधीसुखइत्यादिकमनोरथनकरें॥अपनो
भोगसुखकछूहूनविचारें॥केवलभगवानहीकी
अपेक्षारहें॥सोप्रभुकोनप्रकारसुखपावेंगेमतिक
छुअपराधतेंप्रभुउदासीनहोय याभांतिप्रभुकोसु
खविचारें तथाभगवानकेरसनकीस्वरूपानंद
केअनुभवकीअपेक्षाराखें॥देहादिकोभोगसुखन
विचारें॥तथाभगवानकेरसनकीस्वरूपानंदकेअनु
भवकीअपेक्षाराखें॥देहादिकोभोगसुखनविचारें
॥तसोकोऊकहैजोदेहकीरक्षानकरेंतोसेवाकैसेंहो
य॥औरतुमदेहअर्थनाहींकरिहें॥यहसंदेहहोइत
हांकहतहैं॥जोअपनीदेहकोभोगविचारेंइंद्रियनको
सुखविचारिवेंनकरें॥महाप्रसादलेइ॥तामेंयहभाव
राखेजोप्रभुकीसेवामेंसामर्थ्यहोइइंद्रियादिसिथल
नहोइजाइयाभावसोंलेइ॥जैसेंश्रीगुसांईजीपरदेस
पधारतहैं तबविप्रयोगकरिकृसहोतहैं॥औरजबपर
देसतेंश्रीजीद्वारपधारतहैं॥तबसुंदरबहुतघीसहि
तमहाप्रसादलेतहैं॥सोयहभावजोश्रीगोवर्द्ध
ननाथजीहमकोंकृसदेखेंगेतोउनकेमनमेंदुखहो
गो॥सोआछोनाहीं॥प्रभुहमकोंदेखिसुखपावेंतोह
मकोंयाहीभांतिरहनो॥यहभावतेंजनभगवानकोंअ
नीदेहकीरक्षाकरतहैं॥अपनोसुखनाहींविचार
हैं॥याभांतिदेहादिकीरक्षाकरतहैं॥ वा
विचारिकें॥१०॥श्लोकको॥तात्पर्य

भगवांनेवयत्नाहियेंनभावेनानेमिनाप्रीतिमेवाति
वेस्तो॥२०॥याकोअर्थ॥अवश्रीहरिरायजीकहतहैंजोस्वा
र्थबुद्धितेनकरैंजोकछुलौकिकवैदिकफलसिद्धहो
इगोतथाप्रभुकीसेवातेंहुतार्थहोइगोयहस्वार्थ
बुद्धितेभगवतसेवानकरैंकाहेतेंभगवांनतेस्वार्थ
कोविचारैंभगवांनतेस्वार्थकोविचारैंभगवान
विनाविचारेंहीआपनीइछाहीतेंसर्वकार्यसिद्धक
रेंगे॥श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनवरत्नग्रंथमेंकहेहैंस
र्वेश्वरश्चसर्वात्मानिजेछातःकरिष्यति॥प्रभुसर्वे
श्वरहैंसर्वकीआत्माहैंसर्वजानतहैं॥सोआपनी
इछाहीतेंदासकेसकलमनोरथसिद्धकरेंगे॥ता
तेंप्रभुकीसेवातेंआपनीस्वार्थबुद्धिनकरैंयोग्य
॥भागवतश्रिआवतनकरेंभावसंयुक्तप्रीतिसोंक
रैं॥काहेतेंभगवांनकोएकप्रीतिहीतेंधरेंपद्मनाभ
दासवेंछोलाप्रीतिहीतेंआरोगेतातेंप्रीतिसोंक
रें॥२१॥अथनफलाकोलूंणयत्नलौकिकानाय
याधनेनाद्भवानेयथालोकेदुःखनासंतपजेतेदी
२२॥याकोअर्थ॥सोप्रभुवौकिकहिकछुहूफलनकीको
हामनोरथनकरैंकाहेतेंफलनकीकोमनाराखेंतो
पुष्टिमार्गीयमुख्यफलनाकोनासहोइ॥ताकोका
मनाभावमेंवाधकहै॥यहजानिफलनकोहानकरैं
लौकिकमेंधनमुख्यहैसवहीकोऊचाहतहैंतेसेंय
हलौकिककीनाईधनकूनचाहैंकाहेतेंवौहोतधनतें
महादोषहोतहैं॥मस्यहकारकोकारणधनहोय
हैकलियुगमेंहैं॥तातेंलौकिकवैदिकतथाधनकी
प्रार्थनाप्रभुसोनकरैंतथाजोमर्यादामेंज्ञानव्रत
हीमनकोरमेंहीऐसेज्ञानहूकोनचाहैंभक्तिमेंवा
धकहैंस्वामीसेवककेभावकोसंबंधकोनासकहैंता

नहींनभक्तिकौनचाहैंतथास्वर्गलोकतेंश्रेष्ठलोका
येनसुखनचाहैंतहांलौकिकवैदिकदेहसंबंधीयने
दुखहैतिनकेनासहोइवेकीप्रार्थनासर्वथानचारैंसर्व
यस्तेनिष्कामहोइ(१९)लोक॥ सर्वत्यागस्तुसहजो
पत्रलौकिकवैदियोनिरपेक्षास्वभावस्तुसर्वभावोनि
गद्यते१३।मा अथ॥ श्रीभगवांनमेंसहजप्रीतिक
रिसर्वत्यागसहजनहींमेंकरिलौकिकवैदिकवस्तुन
चाहैंसोयपुलोकोमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुव
हैसोयहिश्रीगोकुलनाथजीसोंधर्मःसर्वात्मनाहरि
नतःविमर्षंचाहैलौकिकवैदिकैरपि।१९।याभांतिस
मवस्थात्माश्रीहरिसेंहैंतिनकोहृदयमेंधारनकरैंसे
नाकरें।ओरलौकिकवैदिकवस्तुनचाहैं।निरपेक्षहो
इ ओरसुहृद्भावहोइमनमेंकपटछलछिद्रवस्तुन
गरवैसर्वात्मभावेकरिएकप्रभुहीमेंमनसोंड॥१३
लागु॥ तथात्रदैन्यमेवैकंमार्गोनिश्चलणाहिवे
दैन्येनैवसंतुष्टःप्रादुर्भूतःफलेच्छया।१४।याकोअर्थ
श्रीहरिरायजीकहतहैंजोयहपुष्टिमार्गमेंएकदैन्य
हीसाधनहैसोयावसायपुष्टिमारगीयभगवदीय
सोयहमार्गकोग्रंथभेदकरेंदैन्यभावकी
मवरिपडै।नाहीतोभक्तिवर्द्धिनीग्रंथमेंश्रीआचार्यजीम
हाप्रभुकहेहैं।सेवायांवाकथायांवाभगवत्सेवाय
रयपालकनी।पाछेपुष्टिमारगीयग्रंथभगवदीयके
खसोंश्रवनोसरमेंकयाहैसुननी।काहेतेंसेवाको
तोपनसेंइस्पोनोश्रवनहोइत्पात्पासेवामेंरुचि
हैंस्वभिमानाहिरोथकीनिवृत्तहोइ।इसैन्यतासि
यनहासैन्यतासिद्धिभई।तहांश्रीठाकुरजीप्रग
टइसरमनसेंहिजेसेरासपंचाध्या
नकरिपाछेनिसाधनहोइहै

रु

प. गकी ऐसे न बनी तब प्रभु तत्काल पधारे तातें जहां तां
५ ई साधन को बल मन में होइ तहां तांई दैन्य तातें आ
वे तब प्रभु संतुष्ट होय तातें दीन होइ स्वरूपानंद कों
अनुभव करावें ।१४। श्लोक। नद्देवानुद्दिश्य वै धन दै
न्य प्रसिद्ध यह दैन्य नास कौ बड़ौ विरोधी सकल मत ।१५। या
श्लोक को कोई देवांतर ते होइ कै न सेवे काहेतें देवता
ब्रह्मा सिवादि इंद्रादिक यह फल वैसें ह्वां नाहीं है तो
देवता ओरकों कहा तें देहिंगे तातें देवांतर भजन तें
अन्याश्रय होय सगरे फल को नास होय तातें दै
न्य विना फल सिद्ध न होय अब श्री हरिराइजी सम
स्त पुष्टिमार्गीय वैष्णवन सों कहत हैं जो जा साधन
नें दैन्य ता को नास होइ सो सर्व यह पुष्टिमार्ग तें विरो
धी म[illegible]नौ वैसें साधन होय पुष्टिमार्ग तें विरो
धी दैन्य नास करें तातें साधन सर्वथा हीन करनौ
यह बात है कै यह ज तातें जो पुष्टिमार्ग विना अन्यमा
र्ग की जितनी क्रिया साधन हैं तिन्हनी सर्व पुष्टिमार्ग
के फल ते विरोधी हैं यह निश्चय मन में जानि अन्य
मार्ग की क्रिया नाहीं कर्तव्य है ।१६। श्लोक। एतन्मा
र्गीयहृतो हि हरिः दैन्यं विवर्धयेत् महादिजन वंदृष
नारायणापिलोधिनं ।१६। या श्लोक को अर्थ यो। श्रीहरि
राइजी कहत हैं जो एतन्मार्गीय पुष्टिमार्ग में जैसें
कोई श्री आचार्यजी द्वारा सरन आए हैं ऐसें ज
गीह न जीव भक्त तिनकों दैन्य बढावत हैं जो अम
न अभिमान अपने मन सों दूर होइ सो दुष्ट है फल में
प्रतिबंध है ताको नास ही करत हैं सो रासपंचाध्या
ई में प्रसिद्ध है भगवान वेणुनाद करि व्रजभक्तन को
बुलाय रास करी तब मद भक्तन को भयो तब भगवा
न अप्राट तैसेंई यह पुष्टिमार्ग में दैन्य भगवान सिद्धि

करैंनहैंमरकौनासकरतेहैं तथाजहांलोमरहै तहा
लौंअनुभवनाहीकरावतहैं याभांतिभगवानअपने
जनकौंदैन्यकरावतहैं सत्कौंदूरिकरतहैं जहांजहां
लौकिकमैंआसक्तहैं सोसबछुडावतहैं दैन्यसिद्ध
करतहैं ।२६ श्लोक॥ स्वांगीकृतानांहिनिर्वाहःप्रभुनैव
विधीयते जीवास्वभावदुष्टा हिअवतेषुफलंतथा
२७ याकोअर्थ॥ अपनेअंगीकृतजीवनकोनिर्वाह
प्रभुआपुहीकरैंगे तबदोषकाहेतें जीवतोस्वभाव
करिदुष्टहैं सोबालबोधमैंश्रीआचार्यजीमहाप्र
भुकहेहैं जैसेंअज्ञानीबालककीरक्षामातापित
करैं तबहीहोय नाहीतोअग्निजलादिमैंगिरैं तब
हीहोय नाहीतोअग्निजलादिमैंगिरैं सोमातापि
ताकरतहीहैं तैसैंश्रीठाकुरजीअपनेअंगीकृत
जीवनकोनिर्वाहआगेतैंकरतआएहैं करतहैं औ
रकरैंगे जीवकोतोएकएकक्षणमेंदुःसंगलगैतोना
सकरिदें मनएकक्षणमेंऔरकोऔरहोइजाइ सो
प्रभुहीनिवारकरैं तबहो ।२७ श्लोक॥ अतोहंप्रधा
नेनमिलवाबरिनःप्रभु रेंडोअनुहस्तेनमंतव्यमुतरा
श्रितैः२८ याकोअर्थ॥ अंगीकृतभक्तनेभलपरतोप्रभु
रैंडदेतहैं सोपेखिवृहकाअमनकरैं जैसेंनेरराइजीअवि
काइनगए तेसेंकछुअपराधजीवस्वभावतेंबने
सौंप्रभुदेनहैं सोदुःखमैंभगवदीयअपनेमनमैंअनु
ग्रहमानें प्रभुकोआश्रयनछोडें सोश्रीगुसांईजीवि
रामभेवहैं सोश्लोक॥ दंडस्वकीयतामत्वे त्वेवंचैरि रि
मेवन॥ अस्मात्सुखीयतामत्वायत्नकुत्रयदाकदा २
प्रतिवचनात॥ श्रीगुसांईजीकहतहैं जोहमकोअ
पनेजानिकैंदंडदेहु तामैंहमसुखीहैं जहांतहां

ते.प. ५६ भक्तजनकौंदंडदैइ तव दुःखकौं अनुग्रहकरिजनिश्री
श्रयमहाप्रभुजीको नहीं ॥ ८ ॥ स्लोक ॥ दंडदानस्वकी
येषुपरकीयेषुपालनं ॥ आर्तिरेवात्रसततं भाव्य
स्तः परात्मनः ॥ १२ ॥ याकोअर्थ ॥ जाकोप्रभुअपनोकर
हैं तिनकोंहीदंडदेतहैं औरजेप्रवाहीअछिसंसा
रासक्तिहैं तिनकौंउपेक्षाकरतहैं दंडनाहीदेत और
लौकिकमेंहीआसक्तलौकिकदेखेंकरतेहैं दंडनाहीं
देतहैं ॥ रासपंचाध्याईमें आतिकेलीपैप्रभुअंतर्ध्यान
भए ॥ तातें पुष्टिमार्गमेंअनोखरमैटैं ॥ सर्व आर्तिउठाइ
वेकेअर्थहैं नहींयाकरूपानंदकौअनुभवनाहीकर
वतहैं आर्तिदेखवेकौंकरावें तातें आर्तिपुष्टिमार्गीय
वैष्णवकौं सर्वथाहीकरनी ॥ १३ ॥ स्लोक ॥ अन्यभक्तास्ति
हृष्टेव मुदितोहि हरिर्भवेत संगो भागवतानामेव वृद्धि
येनीभवेत ॥ १४ ॥ याकोअर्थ ॥ ज्योज्योभक्तकेसंगकरतहैं
त्योत्योभगवानजहभक्तकोदेखिकैप्रसन्नहोतहैं
तातेंसत्संगभगवदीयकौ होयतौवेगिहीभावकीट
द्धि होय यहनिश्चयजाननो ॥ तातेंसत्संगकोयत्नक
रनो ॥ १५ ॥ स्लोक ॥ व्याघ्रस्याग्रेयथादेहीतथादुःसं
गतोभवेतु दुःसंगएवभावस्यनाशकः सर्वथामत
॥ १६ ॥ याकोअर्थ ॥ अबश्रीहरिरायजीकहतहैं जैसेवाघ
केआगेसरीरकौनासहीहोइ तैसेंईदुःसंगयहभग
वद्भावकोनासकहै ॥ तातें जैसैं वाघकौडरपिकें
अपनेसरीरकीरक्षाकीजे ॥ तैसेंई दुःसंगतें डरपिकें
अपने भगवद्भावद्रुमकीरक्षाकरीये ॥ नवभावरहैस्लो
क ॥ दुःसंगतः श्रुताः सर्वेश्रुता हि भरतादयः दुः
संगात्किंदोषाभ्यामकृष्णोवहिर्मुखः ॥ १७ ॥ याकोअ
र्थ ॥ भगवद्धर्मतें अनेकजीवदुःसंगहीकरिकेगिर
तहैं सोश्रीभागवतमें वर्णनहै ॥

थकोमृगावेदुःसंगतेतीनिजनमकोंथंतरायभयो।
।।सीध्यपितावडेभगवदीरहतो।।सोदुर्योधनदुष्टको
भ्रतथापि।तातेताशेषतेभगवानकेसंगलडनठाढे
तो।तातेयहदुःसंगदोषतेजीवनिश्चयभगवान
तवहमुखहोयजाय।तातेभगवदीयदुःसंगतेमि
नहींतोजविकोकितनीकवानहो।२३।श्लोक।।को
किका।मिनिवैरागतुमनो।निष्कासनसदा।त्यलोकि
कस्तुनद्भवतिनापिचविनिस्पति।२३।याकोअर्थ।।
तातेजहांजहांलोकिकमेंमनलागिरह्योहै सोसग
गहीजाननो।तातेंलौकिकादिकेसंगजहांजहां
होयजाकेसंगतेहोय।सोसर्वत्यागकरनो।जहांजो
सुमैंतोलौकिकानिवसहोय।तहांतेभगवदूवकीहो
करेंसगा।तागामेंकीयोकरे।तवहो।२४।श्लोक।।वेरा
ग्यपरितोषोचहरिभाव्यो।निरंतरो।।तदभ्यासतुमन
सःकदाचिन्निर्गतःसतत।२४।याकोअर्थ।।अवश्री
हरिरायजीकहतहेंजोदुःसंगदोषकेनासकाथवेरा
ग्यपरिऔरसंतोषयहहोयनिरंतरहृदयमें
तहेंअपनेमनमेंवैरागपसर्वे आयप्राप्त
वधीपदार्थमेंरागकिंसोरस भावजवरा
ग्यतादीमेंमनकोसंतोषकरिहैयस्थ।कामभावायवैराग
ग्वेतवदुःसंगतेवचे।श्लोक।कामभावायभकोन
चितेचेनस्यसर्वथापरितोषस्तुसो
वेववाधको।२५।याकोअर्थ।।अ
हतहेंजोमनमेंदृढवैरागवे
जोमेंभगवद्रावकोवा
—त्यमैंराखनो।

ख्यं लोभपाखंडसंभव ॥ क्रोधस्तु मध्यपाति
हा बाधकस्थ्यते ॥ २ ॥ [illegible] ॥ कामप्रगट
विषयादिकौ रसगायौ इंद्रिय भगवानने भ
तेवहां सुख होय जानतै इंद्रियोंको विषयाव
नहें ॥ और लोभ हृदयमें होइ ॥ ताकरि पाखंडप्रग
तहे ॥ सो संन्यासनिर्णयमें श्रीआचार्यजी महाप्र
हे ॥ स्वयं च विषयाक्रांत पाखंडं स्यात्तु काल ॥ इति व
ता ॥ जातें काम लोभके मध्य क्रोध मध्यपाती है ॥ कार
को विषयन मिलै तब क्रोध प्रगट होय ॥ तैसेंई लोग
अर्थ न सिद्ध होइ तब क्रोध उपजे ॥ तातें क्रोध प्रगट
नको ॥ कारन काम लोभ होय क्रोध करि पीछे मोह प्र
टहोइ ॥ इत्यादि दोष प्रगट होइ तब लौकिकावेसक्ते
इपहर लौकिकौ ध्यान हृदयमें रहे ॥ तब दैन्यता ना
होइ ॥ २ ॥ श्लो० ॥ अतो मार्गीयसर्वस्वं दैन्यभावं वि
नाक ॥ दैवस्यैव सुकार्येषु कुलसेवाकथादिषु ॥ ३ ॥ या
टीका ॥ अवक हत है जो यह पुष्टिमार्गको सर्वस्व दै
न्यभाव है ताके नास करन को है काम लोभ और
यतातें इन तीनोंनको निश्चय त्यागही करनो ॥ और
दैन्यस्वकार्य विचार राखनो ॥ सो दैन्य के सेवक को ये वि
चारहै ॥ ताको उपाय यह है ॥ श्रीठाकुरकी सेवा तनुजा
वित्तजा श्रीमन करिके करनी ॥ और श्रीठाकुरकी सेवा
श्रीसुबोधनीजी आदि ग्रंथ सुननो ॥ यह सेवाकथा
को नेम नित्यप्रति राखे तो दैन्य हृदयमें रहे ॥ ३ ॥
श्लो० ॥ बीजं यथा मंत्रसाधनं तद्वत् मार्गे भवे
त ॥ तथा भावेन सेवादि सकलं पुष्टिसाधनं ॥ ४ ॥ या
टीका ॥ जैसे मंत्रको बीज मंत्र है यह सास्त्रमें क
हे हैं ॥ बीजमंत्र ने अस्विकृत साधन सिद्धि होइ यह
सास्त्रोक्त हैं तैसेंई सेवामें भाव है भावसहित नकरे

नवईसिद्धहोय श्लोक ॥ तस्माद्दैन्ययुतैर्दैन्यभक्तियुतो
जन दैन्येनगोपिकाः सिद्धाः कौडिन्यो विप्रलंभन ।५। या
को अर्थ । अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो वैसब यत्न करि
के अपने दैन्यकी रक्षाकों पर पुष्टिमार्गीय भगवदीयकों
उचित है तहां कोई कहै जो च्यारि स्वांईकों दैन्य करि सिद्धि
भई है तहां कहत हैं जो दैन्य करि गोपीजनकों सिद्धि भई अ
रु भिरके च्यार दैन्य करि एक कौडिन्य ब्राह्मण शास्त्रनेन थनेन रट
न रह्यो ताकों सिद्धि भई सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु संन्या
सनिर्णयमें कह्यो है श्लोक ॥ कौडिन्यो गोपिका प्रोक्ता
गुरवः साधनं च तत् । भावो भावनया सिद्धः साधनं
नान्यदिष्यते ।१। तातें पुष्टिमार्गीयके गुरु गोपीजन औ
र ज्ञानमार्ग मर्यादामार्गके गुरु कौडिन्य ऋषि ब्राह्मण
प्रकार सौं भाव विचारि दैन्यता ही भक्तिमार्गके भावमें का
रण है । अथ श्लोक ॥ फलमत्र हरेर्भावो विरहात्मास
ह्यमतः । रसात्मकत्वात्तद्रूपं सर्वलीलासमन्विता ।६।
याको अर्थ । अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह पुष्टि
मार्गमें हरिमें भाव है । सो ई फलरूप है तातें विरहा
नुभवमें रहै कारनें संयोगके अनुभवमें अंतःकरण
जामें प्रभु नाहीं ही बाहरकी इंद्री सब हैं सो स्वविनियो
ग है और विप्रयोगमें अंतःकरण मूल सिद्धि होइ तातें वि
प्रयोग भाव हृदयमें राखो यह मार्गमें यह सिद्धि है का
हे तो संयोगमें तो जहां लों दरसन नहीं तो सुख और
विप्रयोगमें रसात्मक पुरुषोत्तम सब लीला संयुक्त
रूप सबरो अनुभव होत है तातें विप्रयोग भाव सबो
परि है जामें सबरो प्रभु साक्षात्कार है ।
है ।७। श्लोक ॥ स्वरूपनस्य सततं सा
नः युगपत्सर्वलीलानामानुभूतिः
याको अर्थ विप्रयोगमें नी

३ सोलीलासहितस्वरूपनिरंतरसाक्षात्कारसर्वोत्तो
रस्त्रोनइहोनहैं संयोगतें अधिक विप्रयोगमें विशेषसु
खहै तातें युगजो द्वयप्रकारकी लीला संयोगविप्र
योगनामें वैष्णव अपनो मनलगाइदेइ संयोगस
मैंहूयाकेनो सरमें विप्रयोगकी भावना तथा मन
हीकरि व्रजभक्तनके संयोगको विचारकरे पाछे प्रभु
गोचारनको पधारे तब विप्रयोग व्रजभक्तनको विचा
रे याभांति सोऊ लीलामें अपने मनको लगाइदे ३
३ श्लोक एवं विज्ञायमाने सा पुष्टिमार्गविभा
वेयत प्राप्तिः श्रीवल्लभाचार्यचरणप्रसादतः ३
२ या श्लोक अब श्रीहरिरायजी कहतहैं जो ऊपर
विप्रयोग आर्तिको प्रकार जाभांति अनुभव होइ सो
कहतहैं सो पुष्टिमारगीय वैष्णव अपने मनमें भा
वनाकरे मनमें विचारका दूसो कहे नाहीं याभां
तिभावना करन करन श्रीवल्लभाचार्यजीके पुरु
की प्राप्ति निश्चय होइगी सो सर्वोत्तम वेनाम श्री
गुसांईजी पीछे प्रगटी नामस्वरूप हैं ॥ असे य भांति से श्री
थ्यचरणाब्जोधनायनमः ॥ याभांति पुष्टिमारगी
य भगवदभक्त श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके चरणक
मलकी जयसेय बहुत सोइ सर्वोपर साधन जानेहैं
तिनको फलसाधनामृतफल सिद्धहै तातें श्रीआचा
र्यजीके चरणकमलके प्रसादतें यह पुष्टिमारगीय भ
गवदीयको फल सिद्ध होइगो तातें श्रीआचार्यजीके च
रणको भाव सर्वतें करनो ३ २ श्लोक यननतत्खलस
नंत सर्वभावेन सर्वथा सुद्धिसिः कृष्णरासिकेः श्री
णीक्रियता हरा ३ ३ या श्लोक अब श्रीहरि
रायजी कहतहैं जो ऊपर कहें तापकार सतंत जो नि
रंतर सर्वभाव करि सर्वथा भाव राखें श्रीआचा

वराणकमलकोंआश्रयऔरविप्रयोगकोभा
वहीनिरंतरसर्वभावकरिसर्वथाकर्तव्यहैयें
सोकसिकेफलछूटत्यागकरिश्रीकृष्णचंद्रपर
तिनकेमनमेंहृदयमेंतथासुक्ष्मगावदी
समरसिकतसेतिनकीशरणहृदयमें
तथाश्रीकृष्णश्रीआचार्यजीमहाप्रभुतिन
नकीसरणहोइहृदयभावकरिनि:
नकीसरणहोइपुष्टिमारगीयफलकी
॥तिनकोपुष्टिमारगीयसिद्धांतहै॥२२॥
इयहसर्वोपरसिद्धांतत्रिसना
कोंप्रलापनयनुष्यपरवक्रपर
हि
ति श्रीह इ संपूर्ण॥३॥अथवकपर
रीका श्रीनापेक्ष्यरजोहूतसर्वोपरकहीत
वप्रयोगाभावसुखारविंदकीभातिसर्वोपरहोइसो
कोसाधनहैस्वपाईसोकआतिनि:साधनतेहोइनतेंतें
कसौपरंतुइ:सेगाहिअनेयप्रतिवंधहैतिनमें
वचेंतवसिद्धहोइसोसगरोयजोपुष्टिमारगमें
वाधकहैसोकहेंसोवस्तुतहैलोकानरीयानाम
हदुस्सविजातीयनसजनेसभावणासजातीय
प्रथमभावणाचन॥१॥याकोअर्थ॥अवश्रीहरिरा
जीकहतहैंतोयहपुष्टिमारगीयवैष्णवकोएक
यहवडोदुखहैंतोअन्यमारगीयविजातीको
गहोइसोश्रीकीमिकहाकहो॥नाकुविजातीके
संगभयो॥तानेमरमनमेंमहादुखहैतासेजनम
जनकोश्रीकृष्णमेंप्रतिवंधकेंतोतिनकोसमाइ
व्हाईहैसगरभक्तमिलेतवसुखतेसगरमिलि
वेश्रीकृष्णकीलीलावार्ताकरिपरमआनंदपावे
तहांकहुगुरुमनआवेतनरसरूपवार्तारहिजा
इदुखहोइसोमोको सातेविजातीकोस
गभयोहैंताके इ वोल

सि.प नतोसजातीवैस्नवको चहियें सोतोमोकौप्राप्ति
५८ नाहीहैं अन्यजोअन्यमारगीयकुसंगतेअष्टप्रहर
संभाषनकरनोपरतहैं यहमोकोपरमदुखहैं सोदु
खदूरि नाहीकरिसकतनाही हो १ श्लो [illegible] तदेतदु
भयंजातंममैवाद्यसुभाग्यतहै दुखांतरंतु स्तानेन
भक्त्यापि निवर्तते २ या [illegible] अर्थ यहदोयमे
रभागमें आयकैप्राप्तभयो है जोभगवदीयको
संगचहियें सोतोमिलतनाही हैं विजातीअ
न्यमारगीयविजातीकौसंगअष्टप्रहररहतहैं यहदो
यमोकौप्राप्तिहैं सोपुष्टिमार्गमेंविरोधीहैं औरज्ञानी
कौसंगहै सोअंतमेंपुष्टिमारगीयकोदुखदाईहै काहे
तें ज्ञानीभक्तिकीनिवर्तकरतहैं सोकहतहैं जोयहभ
क्तिमार्गमेंतोस्वामीसेवकभावहीधर्महै सोमुख्यहै
सेवकधर्मपरहैं जोअष्टप्रहरस्वामीकीटहलमेंरहे
भक्तकोयहधर्म है यहभावकेज्ञानीनासकहैं काहे
तेज्ञानीतोसगरेब्रह्मकीभावनाकरतहैं औरअप
नेकौऊब्रह्मकहतहैं अहंब्रह्मजोमेंहीब्रह्महौं यहभा
वमेंवाधकहैं यहभावमेंदासभावतौछूटिजायो तब
भक्तिकौनासहोइ तातेंभक्तिमारगीयकोसंगमहा
वाधकहै दुखरूपहै तातेवैस्नवकोज्ञानीकोऊसंग
नाहीकर्तव्यहै ३ श्लो [illegible] लौकिकंविषयप्राप्त्या
नहिदुःसंगजंचिंतु दुष्टगांकुलेचोवाणीर्मि
न्तेममैतिवद्धिसुः ४ या [illegible] अर्थ श्रीहरिराइ
जीकहतहैं जोलौकिकविषयादिकोप्राप्तिहोय
लौकिकावेसदेहइंद्रियमेंहोतहै याभांतिलौकि
कविषयदुखदाई परंतुनाहीदुखतेदुःसंगदुखहै
सोवडोहै सोश्रीभागवतमेंकहेहें जोविषयतेवि
षईसंगीहै तिनकौसंगमहादुखदाईहैं उनकेसंग

तें अष्टप्रहर विषयमें ध्यान रहे हैं। विषयावेस होइ सो
श्रीहरिरायजी कहत हैं। ऐसे विषयके संगी वहिर्मु
खको संग मोकों भयो है। ताकरि मोकों महादुःख है
काहेतें दुष्टके दुर्वचनरूपी वान सो मेरी मर्म सरीरमें
वेधत हैं। ताकरिकें वडी पीडा होत है। ऐसे दुर्वचन
कहिवेवारे। औरनाही। अधिकारी भंडारी अनेक
वातन कहत हैं जो तुम अष्टप्रहर कीर्तन वार्तामें लगे
रहत हो। परदेसका है के लीऐ पधारे हो। द्रव्य तो कछु
आयो नाहीं। या भांति अधिकारी भंडारी महादुराग्र
हजो कोई लौकिक अभिनिवेस करावें। सो श्रीहरिराइ
जीकों बुरो लागत है। भगवद्वार्ता कर्यो सो परम हित ला
गत है। यह भावनेके हैं जो दुष्टनकी वानी वानरूप
मेरे मर्मस्थानमें वेध करत है। श्लोक॥ न क्वापि लं
भते स्वास्थ्यं समाहितमपि स्वतः। दुर्यानीतजना प्रायो
दुःसंगपदवीं गता॥ ३॥ या॥ ७॥ अर्थ। अब श्रीहरिरायजी
कहत हैं। जो ऐसे दुःसंग मोकों मिल्यो है। जो रंचक मेरे
मनमें स्वास्थ्य धीरज नाहीं होत है। तातें स्वतः मोकों
अपनो हित नाहीं दीसत है। हित तो भगवदीयके
संगतें होइ। तिनको तो भाकूं होत हू संग नाहीं है। अ
न्य हित शुद्धि न हू दुःसंगतें होय। सो मोकों अष्टप्रह
र दुःसंग है। तातें मोकों अपनो हित नाहीं दीसत है
सास्त्रमें श्रीभागवतमें कहे हैं। श्रीआचार्यजी श्रीगु
सांईजी कहे हैं जो दुःसंगतें वैष्णवजन दुःख पावें ति
नया। सो दुःसंगकी पदवी मोकों आयकें मिली है। सो
दुःख पाऊं। सास्त्र कहत हैं। सो मैं भोगत हों। नहीं कोई
कहे जो तुम दुःखको पावत हो। अज्ञानी होइ सो दुः
संगतें दु

कहत हैं तातें तुम दुःख कों पावत हौ याभांति कोई कहै तहां
कहत हैं ॥ श्लोक ॥ शुद्धमनः कलुषितं लक्षणं नातिविचल
णा ॥ गृहस्थितस्य व्यावृत्तियुक्तस्य न हिताह्यशा ॥ पद्यार्थ ॥ ग
[illegible] य श्रीहरिरायजी कहत हैं ॥ जो मैं यातें दुःख पावत हौ
जो शुद्धमन होइ आछी सुंदर बुद्धि होय ताहू को लोकि
क चित्त पापी दुष्ट के संग तें ताहू की बुद्धि भ्रष्ट होय जा
य एक लक्षणमें ॥ सो दुःसंग बाधक है सो श्रीगुसांईजी
विज्ञप्ति में कहे हैं ॥ श्लोक ॥ अहं कुसंगी हरिसंगि संगिनो
पीडितस्य मे ॥ अन्यसंबंधगंधोपि कंधरामेव बाध
ते ॥ १ ॥ या भांति अन्यसंबंध को गंध हू रंचक होय सो
गरो कटै सो श्री आचार्यजी महाप्रभु की चौरासी
वार्तामें प्रसिद्ध है दामोदरदास संभरवारे की स्त्री को
रंचक अन्याश्रय दोष भयो ॥ ताकरिके पुत्र म्लेच्छ
भयो ॥ श्री आचार्यजी महाप्रभु अप्रसन्न भये ॥ तातें
दुष्ट के संग तें आछी बुद्धि होत हैं सो उनष्ट होइ जात
है ॥ तातें दुःसंग तें मैं दुःखी हौं तहां कोई कहै जो एसे
दुःसंग को वेगि ही त्याग करिदेहु ॥ तब सुंदर बुद्धि हो
जी याभांति कहै ताभांति है श्री हरिरायजी कहत
हैं जो व्यावृत्ति बिना के सुवचन संग मनुष्य
इनकों त्याग करि पाछे मनुष्य वि
सो इनहूतें अधिक वह
तातें गृहस्थ है व्यावृत्ति की रीराख्यो चाहि
ये श्रीभगवदीयतो नाइ रा हैं तिनको तो व्यावृत्ति
चाहिये तब अव्यावृत होय तब दुःसंग छूटे तहां कोई
कहै तुम ईश्वर हो सर्व सामर्थ्ययुक्त हो व्यावृत्ति छोडि दे
हु तब दुःसंग छूटि जायगो ॥ याभांति कोई कहै तहां कह
त हैं ॥ श्लोक ॥ संगो वारयतु ज्ञा [illegible] व्यावृत्ति विनिरोध
ता ॥ अव्यावृत्तोन विश्वासदार्ढ्येन तथाह्यति [illegible]

६॥ अथ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह दुःसंग के
निवारन में सामर्थ्य है। खोटे मनुष्य कों त्याग करि के अप
ने घर में बैठ रहे तो हू दुःसंग न छूटे। तब मनुष्य चाहि
ये जहां पर स्वप्न में जैयो। तहां नितनौतन मनुष्य को म
नुष्य को मिलाप होय। तिनकों समाधान कर्यो चाहि
ये। तब दुःसंग के संस्कार हैं। तातें या वृत्ति विरोधी है। दुःसंग
होउन में श्रीजी आरति निवारिये। स्वभावति रहिये
सो तो स्वे पर उत्तम है। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु
नि वहुनी में कहे हैं। अयास्तौ भजेत् हल ए जयाश्र
वणादिभिः इति वचनात्। या भांति अव्यावृत्त होइ
तब दृढ विश्वास धीरज चाहिये। सो धीरज विश्वास दृ
ढि जानते हैं। जो रत्य विना गृहस्थाश्रम कों कैसे निवे
ह होय। यह दृढ विश्वास विना अव्यावृति न भयो
जाय। तातें करियें है। स्लो ६॥ भगवद्द्वीनी यो
त सन्तुलकारावहि। यथा विभाव्य वचने रितः श्रो
धमृष्ठिनः ७ याको अर्थ॥ अब श्रीहरिरायजी कह
त हैं जो भगवदीया कालदोष ने अपने धर्म की
रक्षा राखे उपस्थापति की रीति दुःसंग दोष कहे थ
क कालदोष कहत हैं जो यह काल के सो हो भगवद
में में महाबाधक है जैसे ब्राह्मण को वालक कों ध
र्मके परीक्षित राजा कों श्राप दीयो सो यह कार्य
कालदोष ते भयो सो आगे कहत हैं। ७ श्लोक॥ अब
सत्सङ्ग मागत्य महाभक्तपरीक्षितनां तथा दुर्वचवाक्
क श्रेरितो घृतिनामसः ८ याको अर्थ॥ अब श्रीहरि

सर्पलेकेंसमीकरिषकेकंठमेंडारिदीयो।यहवात्तश्रंगी
रिषीनेंसुनीसोक्रोधकरिकेंतत्तकथायवेकोश्राप
दीयो।सोयहसववेकार्यकालदोषतेंभयो।कांहेतेंमहा
भक्तपरीक्षितकोंयहकालदोषतेंयहवुद्धिभई।तेसेंई
कालदोषतेंइजेनकेवचनसर्पदपीहोंहें।जिनकोंता
मसकेंआवेसमेंअनपथावोलें।सोकालदोषजात
नों।क्रोधतामसयहकालदोषतेंव्यापेहे।तिनकों
संगमहाबाधकहे।श्लोक।।अविज्ञयाइवचनैरधि
क्षेपनमामयाइवकमाभौतिकोदुःखःसमाधमःसक्रि
योनितिमि।।टीका।।अर्थ।।अवश्रीहरिरायजीकह
तहें।जोयहकलिकालमेंजीवस्वभावतेंदुःखभरे
हें।तामेंतीनप्रकारकेदुःखहें।एकभौतिक।१।अध्या
त्मक।२।आधिभौतिक।३।तामेंअध्यात्म।।अवभौ
तिकदुःखोंकोंकहतहें।भगवद्धर्ममेंअनआवें।एसेंआधिदै
विकदुःखकोंसाधककहतहें।जोश्रेष्ठनीत्याकेसेंजा
नेंजाय।ताकीरीतितीन्योंकेलक्षणन्यारेन्यारेकहत
हें।अनेकदुर्वचनकहें।अपनेतेंवडोहोइ।तथाभगव
द्भक्तहोइ।गुरुहोइ।सोअपनेकों।अवज्ञाकरें।दुर्व
चनसोंअपनेमनकोंविक्षेपकरें।अथवामनकोंवि
क्षेपकरें।औरपरीक्षितदुःखकमेंकरें।पापाचरणकरें।सो
यहभौतिकदुःखहें।अवसदुःखकोंजवआछौभगवदी
यकों(सत्संग)जवहोइतवसत्क्रियाभगवदीयकोंदिक्क
याकरैंकठिनवोलिवोकुदृष्टिनाइमनकोंविक्षेपदृष्
टिजाय।भगवदीयकेसमानभक्ति।भौतिकदुःखकोंसंगाही
र्या।।अवअध्यात्मकदुःखकेलक्षणश्रीहरिरा
इजीकहतहें।श्लोक।।अध्यात्मिकोज्ञानशून्योयस्य
याज्ञानवानपिकष्टसाध्यःकथंदाचित्तत्त्ववोध
नशुध्यती।१।।टीका।।अर्थ।।अध्यात्मकदुःखज्ञानकरि

सून्यहोय सगरो। कार्य करत नतें करें ताकों जवकों
ज्ञानवान वडो भगवदीय मिले वोहोत दिनलों स
त्संग होइ वोहोत कष्ट करि सत्संग। तौ भगवदीय अने
क भांति समुझायकें वोध करें तव वहुत दिनमें अध्या
त्मक दुःख सुद्ध होइ १ अव आधिदैविक दुःख कहत हैं
जो कवहूं सुद्ध न होइ॥ श्लोक॥ प्रीतिशून्यो महादुःखम
साध्यः कथंचन॥ यथा नपुंसको नैव स्त्रीयधीः पुरुषो
भवेत्॥११॥ याको अर्थ॥ प्रीति विनाके सून्य सो महादुःख सो
आधिदैविक वडो दुःख कहत हैं जो कवहूं शुद्ध न होइ असाध्य
कोटिकल्पलों सत्संग होइ केसेंहू ज्ञान वाके हृदयमें न
लगे। केवल प्रवाही आसुरी ताको मन भगवानमें भग
वानमें भगवद्धर्ममें कवहूं न लगे ताको लौकिक दृष्टांत
कहत हैं जैसें नपुंसक होइ और वाको कोटि स्त्री समर्पें हूं
परंतु कोई प्रकार वह पुरुष न होइ वामें पुरुषार्थ न हो
इ तैसेंही आधिदैविक महादुःख को भगवत्संवंधी
ज्ञान न लगे॥११॥ श्लोक॥ यथा त्रिदोषग्रस्तो न कथं
चिद्दोषिजीवनि॥ प्रीतिशून्यो निरासश्च न तथा श्रवणा
दिभिः॥१२॥ याको अर्थ॥ अव वेद्यो रहे लौकिक दृष्टांत कहे
त हैं। जैसें त्रिदोषग्रस्यो रोगी कफवातपित्तग्रस्यो रोगी को
ई प्रकार न जीवे ताको कछु औषध न लागे। तैसेंही प्री
शून्य महादुःख निरास हैं। सो कितनी हू भगवत्कथाके
श्रवणादि करो। परंतु रंचक हृदयमें भगवानमें मनन हो
इ। सो प्रवाही आसुरी जीव। सो पुष्टिप्रवाहमर्यादामें श्री
आचार्यजी महाप्रभु कहत हैं। चर्षणीसब्दवाच्यास्ते
सर्वे सर्ववर्त्मसु॥ ऐसे प्रवाही आसुरजीवकी नाइं ज
न्मजन्ममें संसारासक्तिमें परे रहे हैं। याको भगवत्प्र

अपनेचरण

सारपथरकोंलेकैंजाएवर्षलौंजलमेंडारिराखैपरंतु
पानीउहपथरकोनभेदेंजवनिकासैंतबसूकिजायतै
सेंप्रीतिशून्यव्याघ्रिदेवकमहादुष्टयहपुष्टिमार्गकों
मनापूर्वकसेंगुणहूसुनै॥परंतुवेवहूंरंचकेहृदयमेंभ
गवद्धर्मकोलेसहूनआवै॥ऐसेवहमुखप्रीतिसून्यनि
रसरसकरिरहितहैं॥१२॥ऐसेंबहोतपूनरहैं॥श्लो॥
प्रायसआसुराजीवायस्मिन्प्रीतिरसंभवः।ताद्रृसै
र्नित्यसंगोनभवेदासुरभावना॥१३॥या॥श्लो॥ को अर्थ॥ आसु
रकहैं।ऐसीप्रीतिशून्यमहादुष्टहोय॥ताकोंआसुरीजी
वजाननो॥उहजीवमेंप्रीतिकीसंभावनाहूनाहीं॥ऐसे
प्रीतिशून्यजीवसोंसंभवहमकोंसंगआयकेमिलो
हैं॥तातेताद्रृसीभगवदीयकेसंगविनाआसुरभाव
नित्यहोतहैं॥जबनित्यताद्रृसीकोसंगहोयतबयह
आसुरभावनिवर्तहोउ॥सोश्रीभागवतएकादसस्कं
धमेंभगवानउद्धवजीप्रतिकहैहैं॥श्लो॥ निरोधय
तिमायोगानसांख्यंधर्मउद्धव॥नस्वाध्यायस्तपस्त्या
गोनेष्टापूर्तंनदक्षिणा॥१॥व्रतानियज्ञछंदांसितीर्था
निनियमायमा॥यथावरुंधेसत्संगःसर्वसंगापहोहि
मा॥२॥सत्संगेनहिदैतेयायातुधानाखगामृगाः॥
गंधर्वाप्सरसोनागाःसिद्धचारणगुह्यकाः॥३॥इति व
चनात॥भगवानकहैहैं॥उद्धवमोकोयोगनाहींव
सकरतहैं॥सांख्यधर्मनेस्वाध्यायध्यानतपनत्यागवश
नयज्ञछंदतीर्थनियमइत्यादिकोसबवसनाहीं
होतहैं॥एकसत्संगवासिकैमेंवसहोतहों॥सत्संग
कोप्रतापऐसोहैं॥दैत्यराक्षसखगमृगगंधर्वअ
प्सराहस्तीसिद्धचारणगुह्यकइत्यादिसबमोकों
पायो॥ऐसोसत्संगहैं॥तातेंश्रीहरिरायजीकहत
हैं॥जोनित्यताद्रृसीकेसंगविनाआसुरभावहोत

सो दुःसंग होयतेसो मैं कहा करूं ॥ अत्र श्लोक ॥ दुष्टसोक
संदुष्टः स्यात तज्ञानेदुष्टोननादयी। प्रीतिशून्यो भक्तिदुष्ट
त्मार्गोपात त्यजेत ॥ २४ ॥ याकोअर्थ । अब श्री हरिरायजी
कहतहैं जो दुष्ट मोहे दुष्टसंग करतहैं। सो भौतिकदुष्ट
औरज्ञानदुष्टहैं होयपुष्टिमार्गी तोनहोय। सत्संगकेभ
यतेकछुभगवद्धर्मआवे हृनाय होय। औरप्रीतिशून्यजो
भक्तिदुष्ट है। आसुरी ऐसे होतोयह पुष्टिमार्गीयवैष्ण
वसर्वथाहीत्यागकरै। तब भगवद्धर्म रहैं यह निश्चयसि
द्धांत है। काहेतें ऐसे आसुरके संबंधसें सबधर्मबुद्धिनास
होयजाय। अन्याश्रय होय। सोयहपुष्टिमार्गमें महा
बाधक है। तातें श्री हरिरायजी सगरे पुष्टिमार्गीयवै
ष्णवकों सिक्षा करतहैं। जोभक्तिदुष्टको त्यागही कर्तव्य
है। इति श्री हरिरायजी कृत सिक्षापत्र पंचविंस ताकी
टीका श्री गो। पेमपुरजी कृत संपूर्ण ॥ २५ ॥ अब कहेंजो
ऐसे दुःसंगको छोडें तब भगवद्धर्म रहै तेसैंही तो चिंता
चिंता हु छोडि तब प्रभु हृदयमें पधारें सो चिंता निव
त्तिको प्रकार अब कहत हैं ॥ श्लोक ॥ नैवचिंता प्रकर्त
व्यालौकिके भक्तिमार्गगैः। चिंताचिंताकुलेहृत्कथं
मानविशतेगुणे ॥ १ ॥ याकोअर्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कह
त हैं। सगरे पुष्टिमार्गीयवैष्णवको सिक्षा करत हैं। जो
हे सगरे पुष्टिमार्गीयवैष्णवतुमकं यह तो चिंता चिं
तानाही कर्तव्य है। काहेतें। चिंतामें जाके चिंताकरिव्या
कुल हो ॥ ॥ ताके हृदयमें सकल गुणसंयुक्त ऐसे श्रीकृ
ष्ण वेसैं आयवसैं काहेतें। चिंता महादोषरूप सकल
दोषनकी चिंता माता है। जहां चिंता आई तहां सकल
दोष आयो। सो दोषजब हृदयमें होय। तब सकल गु
हृदयमें कोन प्रकार आवे। ताहीतें श्री आ

न॰ कार्या निवेदितात्मभिः कदापि ॥ सो निवेदितात्म वैस्ण
३ वज्ञ्पनो समग्रो परराख्य आत्मनिवेदन भगवान को
कीयो पाछैं चिंता कों वृत हैं ॥ सर्वथा चिंता न करी भग
वान धनी साथे हैं ॥ सर्व करण सामर्थ्य तातें लौकिक
चिंता कछु नाही कर्तव्य है ॥ श्लोक ॥ यथा ग्रहे गृहप
तिः शुद्धं संमार्जनादिभिः रक्षयत्यन्यथा तु परा
वर्त्तन सर्वथा ॥ रूपा ॥ स्व ॥ अवलौकिक रक्षा तातें
कहत हैं जैसैं लौकिक में यह गृह को धनी गृह कों सु
द्ध करिकें मार्जन करि सगरो कूड़ा बाहिर निकारि के अ
छो सुद्ध करि घर में रहत है सो लौकिक में प्रसिद्ध ही
है तैसैं श्रीकृष्ण जा वैष्णव को हृदय रूपी घर सुद्ध रूपी
घर देखत हैं ॥ चिंता को दोष जाके हृदय में नाहीं है त
व प्रभु वह वैष्णवन के हृदय में पधारत हैं ॥ काहे ते ॥ चिंता
लौकिक है ॥ सो श्रीकृष्ण के चरणारविंद के विस्मारक है
काहे ते ॥ चिंत भये तब प्रभु को स्मरण भजन कैसें करें
गो हृदय में तो लौकिक आवेस भरि रह्यो है तब प्रभु हृद
य में कैसें पधारेंगे ॥ तातें श्रीआचार्यजी द्वारा निवेदन
कीये पाछैं सगरी चिंता का मूल को धर्म सम छुटा पर
हृदय में कूड़ा मेलत है ॥ ताकों निकासि के यह स्वरूप ना हृ
दय सुद्ध करि सो न चिंता करि के श्रीकृष्ण ही को आ
श्रय करि हैं तब प्रभु वैष्णव को हृदय सुद्ध देखि के प्रस
न्न ह्वै हृदय में पधारें ॥ आपने स्वरूपानंद को अनुभव कृपा
करि के करावें ॥ अब आगें कहत हैं ॥ श्लोक ॥ ३ ॥ उक्तं च प्र
भुमिस्तस्य मान्यवरन्तु पादुभिः चिन्तान्यविनियो
गापि चिंता का स्वस्य सोपि चेत् ॥ स्या ॥ ख्या ॥ न ह
कोई कहे जो अन्य विनियोग होत है यह प्रभु की सेवा
रहन न बने तब तो चिंता करनी तहां श्री हरिराइ जी
कहत हैं जो हमारे श्री वल्लभाचार्यजी परम कृपाल हैं

सोनकल ग्रंथमें निरूपणकीयोहे॥ जो अपनेतें अन्यवि
विनियोग होइ तब कछु चिंता न करें काहेतें॥ प्रभु मन
पे रिकें अपने जीवनको अपनेई विनियोग करावेंगे
या भांति चिंता छोडि एक प्रभुको आश्रय दृढ हृदयमें
राखनो॥३॥ अब और हू कहत हें॥ श्लोक॥ सर्वमार्गेवि
चारापि कलौ कृतैव लिप्यते॥ न संसर्गकृतो दोषस्त
था कलियुगे भवेत॥४॥ याको अर्थ॥ अब श्रीहरिरायजी
कहत हें जो धर्ममार्ग विचारे धर्मसास्त्र आदिमें यह लिख
वृरस्र हे हें जो कलिमें दुष्ट करें ताहीको दोष लिग
होय अन्यथा औरको सर्वथा दोष न लगे यह कलि
युगकी मर्यादा हें तातें संबंधी कछु भक्तिरीति छोडिके
अन्य विनियोग अन्याश्रय करे तो हू यह चिंता करे
जाने इनकीयो हे सोई ये भोगेंगे॥ तो कों कहा बाधक हे
ऐसे विचारि आपु अपने धर्ममें सावधान रहे॥४॥ श्लो॥
क॥ युगांतरेत्वथैवायं पंचमत्वेन गम्यते॥ ध्रुयुन
निजाचार्यैस्थैर्यं नावेक्ष्यते सह॥५॥ याको अर्थ॥ यु
गांतर बीते कलियुग आवत हे॥ यह प्रथम सास्त्रव
हकी मर्यादा हें॥ त सों प्रथम सतयुग॥१ त्रेता॥२॥
द्वापुर॥३॥ कलियुग॥४॥ ये चार भये॥ सो यह स्त्रव यह
वर्तमान कलियुग हे॥ सो पंचमो॥ उनमत्तेउनस
गिननो॥ यह लाग्यो युगमें नाही हें॥ काहेतें या युग
में श्रीवल्लभाचार्यजी पूर्णपुरुषोत्तमको प्रागट्य
हे॥ तातें रासीन भई॥ सो श्रीगुसांईजी सूसत्तकी
मध्य हे हें॥ श्लोक॥ मायावादकरीन्द्रदर्पदलनेन
स्पृदुराजोत्सत्ता॥ श्रीमद्भागवताख्यदुग्धभसुधा
वर्षेणा वेदोक्तिभिः॥ राधावल्लभसेव्यतां तदु चिंतं
प्रेमा पदेशोरपि॥ श्रीमद्वल्लभनामधेयसद्दूसं
भावेन भूतोत्स्यपि॥ इति प्रवचनात॥ तो रवधा

मेंकहेहें॥ ऐसी भई न होइहें कबहूं जेसी अवनिधिआई
रा भावनते एसो मनमें जाननो॥ जो एसो कलियुगके
न हूं नाही भयो॥ और न आगे होइगो॥ ताते अवरेवी
सृष्टिके उद्धारार्थ पहलें श्री आचार्यजी महाप्रभु पधा
रे पुष्टिमार्ग प्रगट कीये हैं तातें श्री आचार्यजी महाप्र
भु प्रगट होइ कीये हैं जो जीव अन्याविनियोगमें स्थित न
होइ॥ अन्याश्रय सर्वथा न करे॥ यह सिद्धांतरहस्योपर
हे यवन आदि कहत हैं पहलो॥१॥ तथा विवेकसंको
वको व्यास्त्वग्रहीने॥ मनः स्थाप्य तन्निवृतो समय
तन्निवर्तने॥ श्लो॥२॥ अर्थ॥ अव श्री हरिरायजी कहत
हें जो कोई वैष्णवको आवे तक लोकसंबंधी संकोचव
हवादिको आय पड़े वो हीन दुख होत जाने तो उनही
कूं वैमें स्थित होइ के सवो होन न करे॥ निवर्तके री
य अर्थ॥ परंतु अपने मनको स्थिति न करे॥ जब समय
आय पड़े तब उनको छोड़ि देइ॥ जो कुलवी अपने समझा
य तें पुष्टिमार्गके धर्ममें आवे तो उनइको ल्यावे॥ जो वे
न आवे तो उनको तत्काल छोड़ि देइ मर्यादाले उपाय
करि फेर अपने पुष्टिमार्गकी रीतिसों प्रमान स्वाभा
ग करे॥ धूसलो॥ ॥ तत्काले तत्प्रयत्नेन तु रागमपवाइव
दिवेतु अंतःकार्यप्रनेरेव प्रतिबंधनिवर्तने॥३॥ या
ख्य॥ ॥ अव श्री हरिरायजी कहत हैं॥ दुःसंगको संकोचा
दिमहा आयावेस होइ तो उनही मैं मिलि करे हैं परंतुम
हा रोगसमान उनको दुःखरूप जाने॥ उनके त्यागकी
भावना मनमें राखे॥ जैसे रोगादिको अनेक आयथक
रि दूरि करियत है॥ तैसे ई तत्काल अनेक उपाइ करि
न सबंधवकरे॥ ताको त्याग करिये कहेत पहलो आ
मेंकहेहें॥ जो भगवद्धर्ममें अनुकूल न होइ तासों मिलि
के भजन स्मरण करिये॥ जो औरकोमनसेवामें न होइ

तो आपुही करिये ताके पीछे महाप्रसाद धरि लीजिये औ
र जो प्रतिबंध करै ताको त्याग ही करिये जो एकवार त्या
ग न होइ तो सनै सनै उह प्रतिबंध को निवर्त्त करिये या भां
ति पुष्टिमारगीय वैष्णव सेवा स्मरण करैं अब और हू क
हत हैं ७ श्लोक ॥ वृथा चिंता न कर्त्तव्या स्वमनो मोह का
रणी यथा सछिद्र कलसात् जलं श्रवति सर्वशः ८ या
को अर्थ ॥ अब श्री हरिराइ जी कहत हैं जो वृथा चिं
ता सर्वथा ही नाही कर्तव्य है काहे तें मन को मोह
होइ मोह को कारन एक वृथा ही चिंता है यह निश्च
य ही जाननो ताको दृष्टांत कहत हैं जैसे कलस के पे
दे मैं छिद्र भये कलस ते जल सगरो जल बाहिर व
हि जात है तैसे ई वृथा चिंता सैं मन को मोह उपजत
है भगवद्भजन नाही बनि आवत यह मनुष्य देह आ
पु परम भजन जलवत प्रभु की सेवा योग्य है सो सगरी
आयु सर्व निज जात है सो एकादस स्कंध में राजा जनक
ने कही है श्लोक ॥ दुर्लभो मानुषो देहो देहीनां क्ष
णभंगुरः तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुंठप्रियदर्शनं १
इति वचनात् यह मनुष्य देह है सो महा दुर्लभ है दे
वतान को हू दुर्लभ है और रह न सके भंगुर है परंतु भगवं
त सन्मुख तो दुर्लभ है सो यह देह पाय कै प्रभु को आश्र
य करै तो इन की सिद्धि होय बैकुंठ नाथ श्री ठाकुर के
दरसन को बसत है ताते वृथा करि कै यह देह को मो
ह करि कैं वृथा संसार मैं जात है अब और हू कहत हैं
श्लोक ॥ यथा सुमतनं यांति नाश्यते न प्रहस्थिते १
वे हि गाठ तथा पुष्य तं सैव विश्लेषयेत् ॥ ९ ॥ याको
अर्थ ॥

जानें जो कीरो पदस्य

वहसुंसदुसंगीमिलेहैं।एभगवद्धर्ममेंसदांवाधकहो
करेंगे।याभांतिप्रतिबंधरूपहोइतोतिनकोंजतका
खनाहेंलगात्यागकरिकेंभाजिजाय।एकछणहूं
विलंबनकरें।काहेतें देहछूटनकोंप्रमाननाहीहै
सोश्रीभागवतमेंप्रहलादजीवालकनसोंकहेहैं।श्लो
क।कौमारआचरेत्प्राज्ञोधर्मान्भागवतानिह
दुर्लभंमानुषंजन्मतदप्यध्रुवमर्थदं।१।इतिवच
नात प्रहलादजीकहतहैं हेवालक यह भगवद्ध
र्मकेमारअवस्थाहीतेंआचरनकर्तव्यहै।काहेतें
मनुष्यदेहमहादुर्लभहै सोनिश्चयनाहीहै तो अव
एकक्षणमेंनासहोइजाइगी।तातेंयहवालककोमार
अवस्थाहीतेंप्रभुकोस्मरनकर्तव्यहै।यहविचारिकेंप्रति
बंधरूपयहसंबंधीकुटंबकौतत्कालहीत्यागकर्तव्य
है।एकक्षणहूंउनकेसंगविलंबनकरें।काहेतें दुःसंगते
चितमनबिगरिजाइ।सोयहसंसारासक्तिहोयजाय।
तातेंताहीक्षणउनकौसीघ्रहीत्यागकरें।अवआगें
हूंकहतहैं।श्लो।। भगवच्चरणेचेतःस्थापणीयं
विचक्षणैः।शरीरंपाहृतंतद्धिहन्यन्येसर्वथामतौ।१।
याकोअर्थ।ऊपरकहेहैंएसेप्रतिबंधकोछोडिकें कह
करें।भगवान श्रीकृष्णकेचरणकमलतें अपनेचित्त
कोस्थापनकरें।विचक्षणरीतिसों।ताकोयहअर्थ
है जोपुष्टिमार्गीयकीरीतिसोंकहतहैं।भगवान्के
आचरणकोस्मरणज्ञानीहूंमर्यादामार्गीयहूंभ
जनकरतहैं।तिनतेंविचक्षणपुष्टिमार्गकीरीतिसों
नित्यश्रीकृष्णकीसेवादिकमेंसर्वेंद्रियदेहमन
सर्वभगवानकेचरणमेंलगावें।सोकहवेनें
सर्वआपनेसरीरकोपावनजानें।यहदेहकेपोष
नमेंदेहकोमोहनहोइ।तवमनलगाइकें तनुजा

जासेवा करौं तातें सरीरकों प्राकृत जानौं और जीव
नित्य सदा प्रभुकों दास जानौं ।। तातें यह देहलौं भांउ
पशु जो लिये या मजलि ले तो पोहोच्यि तैसे यह जानैं
यह देह एक छिन नास होगी ।। यह भावना कीयि
भगवद्सेवा करिलेहु जीवकों सदा नित्य जानैं ।। २ ।। अ
और हूं कहत हैं ।। श्लोक ।। नत्संबंधाधि विद्यालस्त
ताहं ममताभ्यां संसाररत्नलूत सर्वः संबंधोपि ममयाम
ना ।। २ ।। याको अर्थ ।। अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो जी
वकों और देहलौं संबंध कोउ कालमें नाहीं है। जीव
तो आदि च्यिनाहित हैं। और कोटानकोटि वार चौरासी
लक्ष योनि भुगत्यो है तहां काऊ सरीरसों संबंध नाहीं
हैं। काहेते। यह देह प्राकृत पंचतत्व करिकें है। पंचत
त्व प्राकृत हैं। ताकौ रज प्राकृत है। और जीव सद
एकु रस अखंड है। ताकों अग्नि न जरावै सस्त्र नष्ट
हवैं। सो ऐसो नित्य है परंतु अविद्या जो लगी हैं। ता
करि अपनो सरीर जानत है। अहंता ममता माया स्व
जीवकों लागी है। या भांति सगरो संसार अहंता ममत
करि विधयो है। सो यह लौकिक संबंध सगरो नठौइय
रहें। अज्ञानकरि स्यि अहंता ममता अविद्याके वस होइ
अपनो मान्यो है। स्यिदक्षो रहें कहत हैं ।। ११ ।। श्लोक ।। न
संबंधरूनेरहनहिमें तव्यमुनमें ।। प्रतिबंध निव
थे हरिशरणं मावृजेत ।। १२ ।। याको अर्थ ।। तातें य
लौकिक संबंध मिथ्या है। लेउनमें मन लगावै ।। ह
जनमें याको दुख ही उपजे ।। तातें जनम भगवदीय
जनमजन हीं ।। सो यह लौकिक संबंध जनमता हीस
नत है।

वहसुखदुःसंगी मिले हैं। एभगवद्धर्ममें सब्बां बाधक ही
करेंगे। यामों तिप्रतिबंधरूप हैं। जो तिनकों नका
रवनाशे लक्षणत्याग करिकें भाजि जाय। एवं लक्षणहू
विलंब न करे। सो काहेतें देहछूटनकौ प्रमान नाहीहै
सो श्रीभागवतमें प्रह्लादजी बालकसों कहे हैं। कौ
मार आचरेत प्राज्ञो धर्मान् भागवतानिह
दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवमर्थदं।१। इति वच
नात् प्रह्लादजी कहत हैं हे बालक यह भगवद्ध
र्मके कौमार अवस्थातें आचरन कर्तव्य है। काहेते
मनुष्य देह महादुर्लभ है। सो निश्चय नाही है। जो कब
एक लक्षणमें नाश होइ जाइगी। तातें यह बालक कौमार
अवस्था तें प्रभु को स्मरन कर्तव्य है। यह विचारिकें प्रति
बंधरूप यह संबंधी कुटुंब को तत्काल ही त्याग कर्तव्य
है। एवंलक्षणहू उनके संग विलंब न करो। कहू दुःसंग दे
खतें मन फिरि जाय। सो यह संसारासक्ति होय जाय
तातें ताही लक्षण उनकों सीघ्र ही त्याग करो। अब और
हू कहत हैं श्लोक। भगवद्धर्मशरणे भावः स्थापनीति
विचक्षणैः शरीरं पालयेतद्धि स्नपनैः सर्वथा मतः।१।
याको अर्थ। रूप कहे हैं एसे प्रतिबंधकों छोडिकें कह
तें भगवान श्रीकृष्णके चरणारविंदनमें अपने चित्त
को स्थापन करे। विचक्षण रीतिसों ताको यह स्वार्थ
है। जो पुष्टिमार्गीयकी रीतिसों कहत हैं। भगवानके
आचरणको स्मरण ज्ञानी हू सब दोषमार्गीय हू भ
क्त करत हैं। तिनसों विचक्षण पुष्टिमार्ग की रीतिसों
नित्य श्री ठाकुरकी सेवादिक करै सर्व इंद्रिय देह मन
सर्व भगवानके चरणमें लगावै। सो कर्तव्य है। मे
भव अपने सरीरको पालन जाने। यह देहके पोष
नमें देहको मोह न होइ। तब मन लगाइ कें तनु जो

जासेवाकरौ।तातैंसरीरकोंप्राकृतजानौ।औरजीव
नित्यसदाप्रभुकोंदासजानौ।तातेंयहदेहलोभाउ
पशुजानिलेय।मजलिलौपोहोचितेसेय जानै
यहदेहदाकरिननासहोइगी।
भगवद्धर्मकरिलेहु।जीवकोसदानित्यजानो।२
औरहूकहतहैं।श्लोक॥ नतसंबंधोपिविद्यालस्त
ाहंममतात्मकः।संसारस्तत्कृतःसर्वःसंबंधो
न।१।याकोअर्थ॥अवश्रीहरिरायजीकहै
नकोऔरदेहसोसंबंधकोऊकालमेंनाहीं
नोआश्रिनाहितेहें।औरकोटानकोटि
नत्रयोनिभुगतीहें।तहांकाऊसरीरसोंसंबंधनाहीं
हें।कातेंतें।एदेहप्राकृतपंचतत्वकरिकेहे।पंचत
विहप्राकृतहें।तोकारजप्राकृतहे।
एकरसअखंडहे।ताकोंअविनजरावै
नकरै।सोहतो।नित्यहैपरंतुअविद्याजोलगीहैंता
करि।अपनोसरीरजानतहैं।अहंताममतामाया
तीवकोलागीहे।याभांतिसगरोसंसारअहंताम
करिबंधोहे।सोयहलौकिकसंबंधसगरोजठाहे
रहे।अज्ञानकरिअहंताममताअविद्याकेवसहे
अपनोमानीहें।यहश्लोकहकहतहें। ।श्लो ॥न
संबंधहनेंदुखनहिमेंतआमुनमें।
श्रेहरिशरणमावहजेत।।२।याको
लौकिकसंबंधमिथ्याहें।सोउनमेंमनलगावें।
अंतमेंयाकोंदुखहीउपजे।
उत्तमजनहें।सोयहलौकिकसंबंधउत्तमता
नतहें।तातेंअहंताममताप्रतिबंधरूपजा
सरगाजाननहें।जहांजहांअहंताममता
सर्वेप्रभुकोहें।समर्पनकरिदिरिकोस

तब यह पतिवंधइ रिहो नहीं सो नवमस्कंधमें कहे हैं
श्लोक ॥ ये दारागारपुत्राप्तान् प्राणान्वित्तमिमं परं ॥ हि
त्वा मां शरणं याताः कथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥ १ ॥ और एका
दसस्कंधमें कहे हैं श्लोक ॥ ये दारागारपुत्राप्तान् प्रा
न्वित्तमिमं परं ॥ हित्वा मां शरणं याताः कथं तांस्त्यक्तुमु
त्सहे ॥ १ ॥ और एकादसस्कंधमें कहे हैं ॥ कायेन वाचा
मनसेंद्रियैर्वा बुध्यात्मना वानुसृतस्वभावात् ॥ करो
मि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत् ॥ २
इष्टं दत्तं जपो तप्तं वृत्तं यच्चात्मनः प्रियं ॥ दारान् गृहा
न् सुतान् प्राणान् यत्परस्मै निवेदनं ॥ ३ ॥ इष्टं दत्तं जपो
तप्तं वृत्तं यच्चात्मनः प्रियं ॥ इत्यादि वचनके अनुसार
पुष्टिमार्गमें श्री आचार्यजी द्वारा प्रभुमें समर्पन करि
कें प्रभु ही की सरनकों आश्रय करे तो है ॥ और ह
कहत हैं १ श्लो ॥ भक्तदुःखासहिष्णुत्वात्तदेवाहि
निवर्तयेत ॥ अस्य श्रीहरिर्वास्तियथमेव प्रभोर्वचः
॥ १ ॥ या श्लोकको अर्थ ॥ ऊपर कहे जो सर्वपदार्थकुटंबादिकों
प्रभुमें समर्पन करि भगवद्भजन हरिकी सरन लीने
न वसंसारके संबंधी दुख देहि ता तिनको दुख होइ तथा ए
कलो है रोगादिक दुख होइ तथा द्रव्यादिकी हानि हो
इ तथा लोभादिक संगको भगा होइ तथा राजादिक
देइ तथा याधानथानको संबंध अनेक दुःखमय है
अवे कैसे हैं तब सहायया की कोन करे या भांति संदेह
होइ तहां श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह भगवद्भज
न सब छांडि हरिकी सरन जाइ तहांको दुख अविना
को सहै ॥ तब श्रीठाकुरजी भक्तको दुख नाही सहि सक
त हैं तातें भक्तको दुख पावन न देवेंगे ॥ तव तत्काल दुख
दूरि निवर्तन करेंगे सो विवेकधैर्याश्रयमें श्री आचा
र्यजी महाप्रभु कहे हैं ॥ अस्य को हरिर्वास्ति सर्वमात्म

यतोभवेत तथा अस्मकैर्वा सुस्कैर्वा सर्वथा सरणं हरिः १
याभांति हरिकी सरन दृढ राखते। प्रभु सर्वथा रक्षा करे
गे। प्रसन्नास्नै हरिकी सरनकी नीनी दुःख सहे न व भगवान दु
ख सहे न व भगवान प्रतिवंध दूरि कीये। भक्त की रक्षा ईक
री सो गीताजीमें भगवान आपजे न प्रतिव है है। स्लोक। सर्व
धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपा
पेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच। १। याभांति भगवान कौ सर
न जाय प्रभु दे आश्रय करे ताकी रक्षा प्रभु करत है। यों
भक्ति वर्द्धनीमें श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं बाधसं
भावनायां तु नैकांते वासइष्यते। हरिस्तु सर्वतो रक्षां क
रिष्यति न संशयः। १। हरि ताको होइ अपने मनको एकां
तमें वास करि हरि सरन है। यते प्रभु रक्षा सर्व प्रकार
री। यामें संशय नाही है। तातें सर्व प्रकार हरिही को आ
श्रय करे। २३। अव ओर कहत है। स्लोक॥ यावद्धति
प्रकार्ते वो ह्युपायस्तु निवर्तेत प्रतिकूले तु नत्याग पर्य
तं विशिष्टं पुन। २४। याको अर्थ॥ याभांति स्वय
ह्मे प्रभु की सरन के उपायमें रहे। प्रतिबंध रूप घरको त्या
गमें मन राखे॥ जो कोई कुटंबी प्रतिकूल होय स्त्री पु
त्रादि माता पिता तिनको त्याग करें। जो अनुकूल
होय नो अपनो धर्म चले तो ऐसो करे। साधु जनके
मर्स प्रसाद प्रसादी वस्त्र दे पोषन करे। जो वित्तरत प
तिबंध रूप भगवद् धर्मते हेय राखतो उनको त्याग क
रे। काहेतें भगवान आत्मसंबंधी जन्म जन्मके प्रभु
है। ओर ये देह संबंधी है। जहां मन देह न होतो संबं
ध है। ताहीते देह संबंधी केली ये आत्मसंबंध न ह
इनो। याभांति प्रतिकूल के त्याग करें न व हि न हो
अव ओर कहत है। २५। स्लोक॥ सर्वथा स्वस्वाचार
तो हरि रेव हि रक्ष। स्वकीयचिन्तासु हृदं न सक्त

रिथ्यनिरूपया कौ अर्थ श्री हरिरायजी कहत हैं जो स
वेथा यह जीव अपने प्रभु श्रीकृष्णचंद्र के चरणकम
लमें आसक होइ ताको लौकिक सर्व दुःख नौ आपने
की निजभक्तन की चिंता आपगोतें की रख्या होय सरख
रत हैं औ वकोरसौ तीनों कालमें बनत हैं भक्तनको ना
ही भूलत हैं सो संन्यासनिर्णयमें श्रीआचार्यजी म
हाप्रभु कहे हैं श्लोक॥ अन्यथा मातरो वालान्नस्तनैः
पुपुषुः क्वचित्॥ माता अपने वालक पुत्रंकों स्तनप्रति
प्रीति सों प्यावत हैं नप्यावे सो एसी माता न हैं कब
हु वालककी रक्षा हीं पालन करत हैं तैसें भगव
न भक्तकी चिंता सर्वथा न करो जा भांति भक्तकों हित
होइ सोइ प्रभु करत हैं यह निश्चय जानने अब श्री
रहे कहत हैं ९ श्लोक॥ स्वयंसि मर्थकतेव्यापितो
न विरस्थिते नवहीति कृपापूर्णो सेवकं सर्वदापि
तं ११ याकौ अर्थ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं जोज
न पुष्टिमार्गीय वैष्णवकों चिंता करनी है काहे
तें श्रीआचार्यजी श्रीकृष्णचंद्र माथे पर वैठे हैं तिन
कौं काहेकी चिंता है काहेतें यह लौकिकमें वालवले
माय पिता वैठे होय सो वालककौं कहा चिंता होय
हतो लौकिक औ श्रीकृष्ण तो ईश्वर के ईश्वर हैं सर्व
सामर्थ्ययुक्त हैं एसे वैष्णवके माथे पर पुष्टिमार्गमें
विराजत हैं सदा एकरस जिनकी कृपादृष्टि भक्तनप
रहें एसो वैष्णव के अर्थकी चिंता न करे तातें प्रभु
नित्य विराजत हैं एसे प्रभुके सेवक मन वचन कर्म
रिकें आश्रय ही करै यह सिद्धांत सबोपर है अब श्री
रहे कहत हैं १२ श्लोक॥ आचार्यचरणं तस्य चिंता
लेवापितैवदी तस्माच्छ्रीवल्लभाचार्यचरणाब्जद्व
यामित्ते २७ याकौ अर्थ॥ अब श्री हरिरायजी कहत

जोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनसें।स्मरनहैनाममात्र
है तिनको चिंताकोलेसहूनाहीं
सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभु विज्ञप्तिमेंकहेहें
श्लोक॥ यदुक्तं तात चरणैः श्रीकृष्णस्मरणं मम: ततश्चि
न्तानैमित्त्यमैहिकंपारलौकिकं॥१॥ इत्यादि वचनक
रि चिंता सर्वथा पुष्टिमार्गीयवैष्णवकोंनाहींकरनी
है अवश्रीआपकहतहैं श्लोक॥ नकापिचिंताकर्तव्या
कृष्णसेवाविनापुनः॥ निवेदनानुसंधानेचिंतामात्रंवि
धीयते॥१८॥ याकौ अर्थ॥ कृष्णकहेंजो चिंता कौ प्रकार
नाहींकर्तव्यहैनहीं कोऊकहेजोंकछुचिंतानाहीं
करनीहै तबजीवभगवद्धर्मकीचिंतानाहींकरनी
है तबजीवभगवद्धर्मकीचिंताऊनकरेगो औरभग
वद्धर्महूनकरेगो प्रथमजीवकोंभगवद्धर्ममें मनहूनाहीं
है।याते तुमचि कीकहत
त हतहैं
क यहैतो
कि वैदिकफलकी तौ अपनेप्रभुकीनौंचिंतानाहीं
कर्तव्यहै। श्रीकृष्णकीसेवाविनानौयहपुष्टिमार्गमें
वौपरफलहैं।सोयहचिंताकौआवस्यकहीकर्तव्यहै
तातेंश्रीकृष्णकीसेवाकरैं निवेदनकोअनुसंधान
अहर्निसराखेंजोमेंकितनेकालकौंप्रभुसौंभूल्योह
तो।अबश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीकीकृपातेंसंबंधभ
योहै।मैंदासहौंमोकौंअवकहाकर्तव्यहै।मैंसर्वसमर्प
णकीयेहौं।यामेंआपनीसत्तासर्वथाहीनकरनी।सर्व
प्रभुकोहै।याभांतिनिवेदनकोअनुसंधानराखें।सर्व
चिंतामात्रमनमेंकछुनल्यावें।अबयोरहूकहतहैं श्लो
क॥ तेवैस्यास्यंतथावैदेहतिश्रीमत्प्रभोर्वचः॥ अन
सीघ्रेहरिस्थाप्सानिवनेसेवनार्थिभी॥१९॥याकोअर्थ

अब श्रीहरिरायजी कहत हैं जो हमारे प्रभु श्रीवल्लभा
चार्यजी श्रीनवरत्न ग्रंथमें कहे हैं श्लोक ॥ लोके स्वा
स्थ्यं तथा वेदे हरिस्तु न करिष्यति ॥ १ ॥ इति वचनात् श्री
ठाकुर ऐसे हैं अपने जनको लौकिक वैदिक में स्थिति
न करें तो अपने जनको कोई लौकिक में वैदिक में स्थि
ति नैं करें होइ तो श्री सब लौकिक वैदिक कार्य
सिद्धि नाहीं करत हैं या भांति प्रभु को गुण माने म
न में चिंता दुःख न पावे जो मैं अब कहा करूं मेरो नि
र्वाह कैसे होइगो लौकिक तो सिद्धि नाहीं होत यह
चिंता रंच कहूं न करे सो ही प्रभु को चिंतन करे जो मे
रे ऊपर प्रभु प्रसन्न नहीं हैं जैसे संतदासजी श्री आचार्यजी
के सेवक प्रथम बहुत प्रसन्न हते सो द्रव्य गयो तीस २०
टका की रुजगार नदाई पैसा में निर्वाह करते पाछें ना
रायनदासनें १०० मोहोर पठाई सो न राखे प्रभु के आ
नुसार रहे या भांति वैष्णव प्रभु के गुन ही मानें ॥ १८ ॥
[illegible] श्री [illegible] रायजी [illegible] न [illegible] ला [illegible] न [illegible] व [illegible] सो [illegible] की [illegible] का
श्री [illegible] प [illegible] र [illegible] ल [illegible] स [illegible] ॥ २ ॥ अब ऊपर कहे जो चि
तान करनी और निःसाधन होइ तब फलप्राप्ति होइ सो
निःसाधन की भावना कौन प्रकार करें सो आगे कहत हैं
श्लोक ॥ न सुद्ध भावो नैवास्ति सर्वे भावेन हीयते नास्ति
परलोके विश्वासो न चास्ति परमार्थः ॥ १ ॥ या श्लोक को अर्थ
श्रीहरिरायजी कहत हैं जो या भांति निःसाधन जीव हो
इ तो प्रभु विनी विषय फल दान करें सो मेरे में निःसाधन
ता नाहीं है प्रथम तो सुद्ध भाव होइ तब प्रभु कृपा करें
सो सुद्ध भाव मेरे में तो नाहीं है मन में कपट छल इर्षा
इत्यादिक भरि रह्यो है ताते श्रीवल्लभ में एक सुद्ध निर्म
ल भावना नाहीं है और सब भाव हूं प्रभु में नाहीं हैं
ते चतुःश्लोकी में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं

दा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः रसेट्टनके अ
धिपति श्री ठुसतिनको भजन सेवा यदा सर्वभाव
कपिके कर्तव्य है सो मोसो नाही बनत है इनके करत हो
इ ही मन नाही स्वात मन मे विचार हो तब देखते
बनत मन वचन सब स्वे भाव है प्रभु मे नाही है
वै तब दैन्य ता ही करो तब
रे मैं तो रंच क हू दैन्यता नाही है
विश्वास मे कहे हो श्लोक॥ श्रो
तें न्यत्वतोष साधनं॥ हे मोरे आचार्य वर
नश्री सु नीजी मे कहे हैं जो प्रभु प्रसन्न करिवे को
साधन एक दैन्य ही सर्वोपरि है सो मेरे मे दैन्यता नाही है
अश्रो जो प्रकार श्री आचार्यजी महाप्रभु की आ गा॥ है
सो ग्रंथ मे सब कहे हैं सो दने तो ऊ प्रसन्न होइ सो पुष्टि
मार्ग की रीति है ता अनुसार आगण पालन ऊ मो मे ना
ही है॥ ४॥ औरयेह पुष्टिमार्ग मे चात्रक पक्षी की नाई वि
श्वास राखे यह सर्वोपरि है॥ विश्वास विना कछु सिद्धि
नाही है सो मेरे मे विश्वास हू नाही है॥ ५॥ और प्रभु मे ची
ह नाही है यस मपी तिम्मा रहे हो यतो प्रभु विना चोर
ठोर मन न लगावे सो प्रभु मे आर एक हू नाही है॥ ६॥ सब
और कहत हैं॥ श्लोक॥ न सत्संगो न कीर्तनं न चिंतनं
न स्मृति॥ नो अप्येन विवेको धैर्य न स्मरण स्थिति:॥
याको अर्थ॥ यह श्री हरिरायजी कहत हैं जो और सा
धन होय न होय तो सत्संग करि पुष्टिमार्ग को फल
स्व और अनुभव होय सो मो को पुष्टिमार्गीय को संग
हू नाही है॥ ७॥ सत्संग होय तो भगवद्सेवा मे अष्टप्र
हर मन होइ तो मानसी फल सिद्ध होय सो मेरे मे तो तनु
जो वित्तजा यही सेवा नाही बनत है सो मानसी पर
म दुर्लभ है यह मार्ग मे जो सेवा विना वे स्मवता ई जाय

प० ९६ तें सें त्रास पाय श्रीनजपतें त्रस्त न ताय तेसें वैस
वसेवा न करें तो वैष्णवता जाइ सो मेरें में से बात नाहीं है
ए और निवेदन को अनुसंधान यह पुष्टिमार्ग में सर्वथा
चाहिये सो निवेदन श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं नि
वेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः सो मेरे कों तादृ
सी को संग हे और निवेदन की स्मृति ह नाही है ८ एक आ
श्रय को आश्रय पहले मन में यह दृढ़ समाधान है सो विवेक
धैर्याश्रय में कहे हैं श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं स्लो
क अशक्ये हरिरेवास्ति सर्वमाश्रयतो भवेत् या भांति
सो एक भी मन ही को आश्रय नाही है १० निवेदन कहे
सो विवेक चाहिये सो विवेक तो ह सर्वलौकिक शानः क
रिष्यति इत्यादि मन में विचार है यह सो प्रभु आपनी इ
च्छा ते सर्व करत है जीव को कीयो कछु ह नाही है इ
त्यादि भाव वैष्णव को चाहिये सो विवेक ह नाही है ११
वैष्णव को दुखसुख में धैर्य चाहिये सो श्री आचार्यजी
कहे हैं त्रिदुःखसहनं धैर्यमामृतेः सर्वतः सदा तक्रवद्दे
हवद्भाव्यं जडवद्गोपभार्यवत् इत्यादि आधि दैवि
क सुख आध्यात्मिक भौतिक तीनों प्रकार के दुःख को
सहन वैष्णव करे तेसें गोपीजन दुख सहन करे तव मार
न लिये सन्हे जु सें गोपभार्या दुखसह्यो यह प्रकार दु
ख सहे तन वधे देखि प्रभु प्रसन्न होत हैं यह लौकिक वै
ना टेक चाहिये सो मेरे में धैर्य ह नाही है १२ तथा दार
वी सरणागति नहीं है या भांति राखिये परलोके
च सर्वथा सरणं हरिः दुखहानौ तथा पापे भये का
माद्यपूरणे भक्तद्रोहे भक्त्यभावे भक्तैश्चातिक्रमे कृते
अशक्ये वा सुसाध्ये वा सर्वथा सरणं हरिः या भांति
सरण है और कला आश्रय में कहे हैं श्री आचार्य प्रभु
ऐहलौकिक पारलौकिक सर्वथा ताते श्री कृष्ण की सरण है इ

तो प्रभु उद्धार करौं। सो गीता में भगवान कहे हैं सर्वधर्मान्
परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्ष
यिष्यामि मा शुचः॥१॥ या भांति प्रभु की शरन होइ तौ हू प
सो में शरणमार्ग में हू स्थिति नाहीं है॥१३॥ अब श्री
कहत हैं। श्लोकान्न माहात्म्य परिस्फूर्ती स्नेहस्तु
न चित्त आसक्ति व्यसनो दीनो कथापि स्वल्पदु
र्थया॥ अर्थ॥ श्री हरि को माहात्म्य स्फुर्ति इहृदय
होइ तो ऊ प्रीति होइ। जो हो अपने प्रमेयबलते ग
यो सो पापी ऐसेनि। साधन को फल सिद्धि भयो है अ
ना मिलाइ पुत्र भाव के नाम तें नारायण हो है। ऐसे विश्वास प
र तन कौं एक क्षण मैं नाश किये भक्तन की अविद्या दूरि
कीनी है। यह पुष्टिमार्ग में श्री महादिक न को उद्धार
श्रीमहाप्रभुजी की रीति हैं। स्वकृपा दृष्टि तें भक्तन कौ सर्व
कार्य सिद्ध होत है सो मो को कहा डर है। या भांति माहा
त्म्य की स्फुर्ति नाहीं है॥१४॥ चित्त में स्नेह होइ यह बडो
प्रभु प्रसन्न करिवे कौ साधन है। काहे तें प्रथम स्नेह
होइ पीछे आसक्ति होइ पीछे व्यसन होइ। तब अ
नुभव होय। स्नेह सो श्रीकृष्णचंद्र के चरणकमल में
प्रेम सो ई नाहीं है। सो तो आसक्ति व्यसनादि कीनों क
था कहन कौ ऊ दुर्लभ है। सो प्रेम आसक्ति व्यसन कब
होइ सो विधि नामावली में श्रीआचार्यजी महा
प्रभु कहे हैं। बाललीला नाम पाठात् श्रीकृष्ण प्रेम जा
यते आसक्तिः प्रौढलीलायां नाम्नां पाठाद्भविष्यति
व्यसनं कृष्णचरणे राजलीलाभिधानतः तस्मात्त्री
न्त्रयं जाप्यं भक्तिप्राप्तिं इच्छुभिः सदा॥ या भांति बा
ललीला की नामावली पाठ तें प्रेम होय। पाछें राज
लीला की नामावली पाठ ते व्यसन होइ। ता पाछें
पुष्टिभक्ति होइ। सो तीन पाठ मन लगाइवे करें

नमें पुष्टिभक्ति निश्चय होय और भक्ति वर्द्धनी में श्रीआ
चार्यजी कहेहैं तत्रैव मनतथा सक्तिर्येसनेच यदाभवेत
सो मेरे में स्नेह रूप नाही हैं १५ ताकहि कैं श्री हरि के चर
नमें आसक्ति नाहीं हैं १६ औरव्यसनादिक की कथा
हु धर्म हैं १७ अवऔर कहत हैं अस्तोए भक्ति
मार्ग प्रवेश नलोकधर्म न थिति दृशाधिसु भावे
नकाल दोष लवे १८ या अर्थ अव श्री हरि
रजी कहत हैं जो यह पुष्टिमार्ग सर्वोपर तासमें प्रवे
श होनाहीं हैं याहीतें श्रीवल्लभाचार्यजी ये भक्ति
मार्ग है तामे ब्रह्मादि शिवादिको प्रवेश नाहीं है गोगो
पालदास वल्लभाख्यानमें गाये हैं यह मारग वल्लभ
वरको नहीं नहीं प्रवेश विधि करनो ऐसो मार्ग शुद्ध
नाके मेरो एको साधन नाहीं पनेम
नमें जानत हो जो यह सर्वोपर भक्ति
को प्रवेश नाहीं हैं १८ और लोक
नाहीं हैं तातें यह मनमें जानत हो
र भक्ति मार्ग तो भलो हूं क्योंकि मेंना
हीं हैं सो लौकिक में तो थिति होइ सो मैं ग
हादिक के धर्म में हू थिति नाहीं है १९ देशादि
कको आलय नाहीं कितने जीव जैसे शुद्ध स्थान तीर्थको
सेवन करत हैं काशी प्रयाग तथा वृजहु सो ऐसे
हु सब को आश्रय नाहीं हैं २० वैदिक धर्म का हू काल
दोषतें सिद्धि नाहीं है सो मार्ग
में कहे हैं सो कालदोषतें वैदिक धर्म सिद्धि नाहीं
कर्ममार्गतें उत्पत्ति गोहि फल शास्त्र में कहे हैं
दोषतें वैदिक धर्म सिद्धि ना सो संन्यास
में श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे कर्मा
वो सुनरो कलिकालता

हैं। नानावादविनष्टेषु सर्वमार्गरतादिषु याभां
तिकलिकालपायकें मर्यादामार्गके साधनसबन
भये सो मैं वैदिककार्यमें हू नाहीं हों। अब और हू क
हत हैं ४। श्लोक॥ न च व्यावृत्तिराहित्यं व्यावृत्तो न हि
तामनः। न त्यागः श्रापि सेवार्थी। स्वतंत्रस्य तु लौक
था। भाषा को अर्थ॥ अब श्रीहरिरायजी कहत हैं
जो मैं अव्यावृत हू नाहीं हों। श्री आचार्यजी महाप्रभु
कहें। अव्यावृत्तो भजेत्कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः
याभांति अव्यावृत्त भगवद्धर्म सेवा करि कथा सुनें
सो अव्यावृत नाहीं हों २। मन तथा व्यावृत्ति करि मैं ह
यमें चित चहिये सो ऊ करे हैं व्यावृत्तोपि हरौ चित्तं श्रवणा
दौ यतेत्सदा। या प्रकार व्यावृत करत भगवानमें हू मेरो
मन नाहीं है। जैसें संतदासजीको डीवे चतेः काऊनें
लतें नाहीं २। अब और भगवदसेवार्थ देह इंद्री मनतें लौकि
क वैदिक त्याग नाहीं हैं सो सेवाफलमें श्री आचार्य
जी महाप्रभु कहे हैं जो त्याग न होय तो सेवा न बनें उ
द्वेग प्रतिबंधो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकं॥ बाधकानां
परित्यागो भोगेप्येकं तथापरः उद्वेग प्रतिबंध भोगको
मूल एक विषय खानपान आछादन हें सो भगवत्से
वार्थ त्याग हू नाहीं हों ३। स्वतंत्र नाहीं हों इंद्रियादि
देहसंबंधी को सबू होय। काहेतें विषयादि भोगको
त्याग नाहीं हें ताको स्वतंत्रको कियाक हीहै। या भां
ति मनस्वतंत्र लौकिक वैदिक तें स्वतंत्र होय प्रभु
परमनाहीं हों ४। अब और हू कहत हें। श्लोक॥ न
ष्ठेम विरहस्मृति संयमो न वचोगणौ नो दासीत्य
भिमतेषु नानायातिगृहादिषु ५ इयाकौ अर्थ॥ श्री

काहेतें विरहतें दैन्य होय जैसें रासपंचाध्याई में प्रभु अं
तर्ध्यान भये हैं ॥ हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभु
ज ॥ दासस्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिं ॥ तथा श्री
रहूं कहत हैं ॥ कुरु दुःसुखं राजन्य स्येन त्वात
मा नाम सामा विरम्य ष्ठोरि ॥ या भांति विप्रयोग विरह
तें प्रभु प्रगटे ॥ सो वह पुष्टिमार्ग में केवल विप्रयोग
ई फलरूप है ॥ सो श्री हरि के विरह की स्फूर्ति हू नाहीं है
२६ ॥ और वाणी को नेत्रन को संयम नाहीं है ॥ श्री भाग
वत में कहे हैं ॥ जो वाणी भगवद् नाम गुण नाहीं लेत
सो सदाहू खेत रहत हैं ॥ नानेत्र सो प्रभु श्री दरसन ना
हीं करत ॥ लोगन के रूप देखत है ॥ सो मोर की चंद्रिका
वत ॥ काहेतें यह होय बहुत बाधक है ॥ एक तो मुख्य
होय २ ॥ और नेत्रन सो रूप देखने ॥ हृदय दोष रूप दो
त हैं ॥ तातें वाणी नेत्रन को आवश्य निग्रह स्थापिये सो
मेरे मन नाहीं हैं ॥ २७ ॥ और भगवदीय भक्त सों उदासीन है
और पुष्टिमार्ग में भगवदीय के संग ते यह पुष्टिमा
र्ग को फल सिद्ध होत है ॥ यह निश्चय सिद्धांत है ॥ सो मो
में भगवदीयसों स्नेह नाहीं है ॥ उलटो उदासीन हों
सो मो को यह मार्ग में कैसें आवे सबदारूगो ॥ २८ ॥ और
गृह आदिक कार्य में मन की आसक्ति है ॥ यह महा बा
धक है ॥ काहेतें गृहादि लौकिक में आसक्ति भगवद्
धर्म में बाधक है ॥ सो श्री आचार्य जी महाप्रभु ठौर ठौर
में कहत हैं ॥ सब ठौर प्रसिद्ध है ॥ जो गृहादि कार्य
लौकिक में आसक्त है ॥ तिनको भगवान के धर्म दुर्ल
भ हैं ॥ सो मैं गृहासक्त हों ॥ २९ ॥ अब और हू कहत हैं
श्लोक ॥ नाहं कोणिहिराहित्यं नस्वधर्मपरिग्रह ना
न्यधर्मनिवृत्यर्थं किं करिष्यामि मत्प्रभुः ७ या श्री

थे॥ अहंकार भक्तिमार्गमें बाधक है। सो विवेकधैर्या
श्रयमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं। अभिमानस्य
संत्याज्यत्वात्पराधीनत्वभावनात्॥ अभिमान अहंकार
सो स्वामीको बाधक है। स्वतंत्र होई सो करें॥ और दास
कोधर्म नाही है। सो दास होके अहंकार अभिमान करे तो
दासधर्मतें जात है। तातें दासको तो अपने स्वामी श्रीकृष्ण
तिनके आधीनत्वकी भावना कर्तव्य है। तातें यह अ
हंकार बाधक है। तातें यह अहंकार बाधक है। सो मैं अ
हंकार करि रहित नाही हों॥४॥ और पुष्टिमार्गीय
वैष्णवको अपने स्वधर्मको परिग्रह न चहिये। इतनो
अनन्यता जैसें बीरबलनें करी। छीतस्वामी सो जो तु
मपरसें श्रीगुसांईजीको ठाकुरजीको रूप करिकें गावत
हो। सो देसाधिपति सुनैगो तो कहा कहेगो। इतनो सु
नत ही छीतस्वामी कहें जो मेरे भाग तो तुमही मलेछ
हो। जो आजु पाछें तेरो मुख न देखोंगो। वरसोदी छो
डि चले आए। या भांति अपने स्वधर्मकी रक्षा करें। स
गाहिं तिन रक्षा करें काम क्रोध मद मत्सर नाइ
तें अपनी रक्षा करें। सो मैं तो कोई प्रकार अपने स्वध
परिग्रह नाही करत हों॥५॥ और यह पु
अन्यधर्म जितने हैं सो सगरे या पुष्टिमार्गीय वैष्णव
को बाधक ही हैं पर्वोपर सिद्ध ही होय। तातें अन्यधर्म 34।
तें निवर्तनो ही
को बाधक है सो मैं अन्यधर्मतें निवर्तनो नाही
ऐसौ बत्तीस दोष संयुक्त मैं हों। सो ऐसौ करोगे के अंगीकार कर
मी हों। जो मेरो कहा करोगे। रत है
गो। ऐसो मोकों जानि नाही पड़त है
२॥ श्लोक ॥ मयि दोषनिधाने तु सर्वस
साधने त्वमेव ही स्वयं नित्यं विभाव
यो अब श्रीहरिरायजी कहत हैं॥ श्री

ऊपर वत्तीस लक्षण वत्तीस दोष मुख्य कहे सो इतने ही प्रतिभाति यों अपार दोष है मे मो दोष को निधा न हों जाको पार गिनत नाहीं है और सुंदर गुण क रि रहित हों एक हू गुण मेरे मे नाही है या भांतिसे निःसा धनकी भावनानित्य हीं करनी य है या भांति निःसाधन होय तिनके हृदय में प्रभु पधारि अनुभव करावे श्री हरि [illegible] जी कृत [illegible] प [illegible] म [illegible] त्रि [illegible] ना [illegible] की श्री पे [illegible] सं पूर्ण ३७ अब कहा कहे जो अपने दोष की भावना करि निःसाधन होय प्रार्थना करें तो श्री उर्द्धव कौ कहा फल होइ यह ब्रज मे भावात्मक रसात्मक पूर्ण पुरुषोत्तम श्री कृष्ण सदा भक्त न के संग लीला करत हैं ऐसे श्री कृष्ण वो पर तिनको अनुभव होय सो श्री कृष्ण ब्रज में सदा विराजत हैं सो कैसे हैं सो आगे सब वर्णन करत हैं श्लो [illegible] कृष्ण रसा त्मक नित्य गोपिका मंडल स्थिते यमुना पुलिनांत स्थ वृंदावन विराजिते १ या [illegible] श्री [illegible] अब श्री हरिरायजी पर श्री वल्लभाचार्यजी के पुष्टिमार्ग में सेव्य ऐसे श्री कृष्ण रसात्मक सो कौन प्रकार ब्रज में विराजत हैं सो क हत हैं जो गोपीजन ब्रजभक्त स्वामिनी के मंडल में स्थि ति है श्री कृष्ण रसात्मक या भांति नित्य स्वामिनी संग रासादिक लीला करत हैं सो लीला कौन सी ठौर करत हैं सो कहत हैं जो श्री यमुनाजी की पुलिन के मध्य श्री वृंदावन में विराजत हैं सो जैसे श्री कृष्ण और रसा त्मक हैं तैसे श्री यमुना जी रसात्मक हैं तैसे श्री यमु नाजी की पुलिन रसात्मक हैं तहां भक्तन सहित श्री कृष्ण विराजत हैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभु यमुना ष्टक में कहे हैं श्री यमुनाजी के तट श्री तट स्थान वे को नमस्कार

वृजितः इतिवचनात्॥ याभांतिश्रीयमुनाजीकेतटपुलि
नमध्यवृंदावनमेंप्रभुविराजिकेदोयप्रकारकीलीला
करतहैं॥ प्रथमथलक्रीडामेंश्रममयेतेंजलक्रीडायाभां
तिसदासर्वदाविराजतहैं॥ यहस्मरणकरतव्यहै॥ स्मृ
तेः गोपिकावृंदेक्रीडन्वृंदावनेस्थितः श्रीवृंदावनमें
स्थितिगोपीजनकेवृंदतिनकेसंगश्रीप्रभुक्रीडाकर
तहैं कौनभांति॥ सोआगेजाप्रकारलीलाकरतहैं सोक
हतहैं॥ श्लोकः॥ नित्यंगानरसाविष्टविशिष्टेतरनैरा
ष्ट भावैकगम्यसर्वत्रप्रसिद्धपुरुषोत्तमोः॥ आको अर्थ
श्रीयमुनाजीकेतीरनित्यगानरासादिलीला [illegible] जनक
नकेसाथअत्यंतरसाविष्टहोयकरतहैं॥ [illegible] नित्य
लीलाकेदोयप्रकारहैं॥ एकअवतारलीला॥ एकमूल
लीला अवतारलीलामेंत्र महैं॥ प्रमानप्रमेयसाधन
फल सोश्रीभागवतमेंनिरूपणकीएहैं॥ प्रथमश्रीठा
कुरजीकेप्रागट्यपर्यंततपस्याप्रमानरीतिसोंजेसें
अमेंकहैं॥ तापाछैंअनुग्रहहोयवरदीए॥ प्रमेयजन्म
॥ पाछैंवसुदेवदेवकीजीकेइच्छापूर्वसहितसंयोग
त्मकस्वरूपप्रगटे॥ सोश्रीनंदरायजीश्रीयसोदाजी
केइहां विप्रयोगात्मकभावप्रगटे॥ सोप्रमेयबलप्रग
टकरिअनेकलीलाकरिसुखदीए॥ माखनचोरीइत्या
दिलीलापाछेंकात्यायनीकोअर्चनादिकप्रभुमेंप्रेममि
लिवेकोकामना॥ यहसाधनपाछैंपंचाध्याईमेंफल
अवताररसामेंमूललीलामेंसदानित्यलीलासोल
हींहिपवतत्वलगतजबप्रभुकोअसइतसोकौनतें
पुरुषोत्तमअक्षरसोश्रीगीतामेंभागवतमेंलक्षअक्षर
तेंश्रेष्ठ॥ सोश्रीगीतामेंप्रसिद्धिपुरुषोत्तमकहेहैं॥ सोभ
क्तिजानेजानतहैं॥ औरसाधनबलतेंनाहीं॥ सोऽ
पसावतारपुरुषश्रीदोवेवमाइविग्रहनमोगारा

रूप बत्तीस लक्षण बत्तीस दोष मुख्य कहे सो इनते
ही मति जानियो आपमें दोष हैं मैं तो दोष को निधा
न हों जाको पार जिन तन नाही है और सुंदर गुणा क
रि रहित हों एक हू गुण मेरे मैं नाही है या भांति मैं निसा
धनकी भावना नित्य हीय कर तेरा है या भांति नित्य सान्न
होय तिनके हृदय मैं प्रभु पधारि के अनुभव करावे ३
श्री ... ... त्रि ... ना ... ही
श्री ... पे ... ... २७ और कहकहे जो
आपने दोषकी भावना करि निःसाधन होय रहे है न्य
करें तो आगें ३ दैन्य को कहा फल होइ यह हम्से
भावात्मक रसात्मक पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्ण सदा भक्त
न के संग लीला करत हैं ऐसे श्रीकृष्ण सबोपर तिनको
अनुभव होय सो श्रीकृष्ण व्रजमें सदा विराजत हैं सो
कैसें है सो आगें सब वर्नन करत हैं ... ... हृष्ण रसात्म
के नित्य गोपिका मंडल स्थित ते यमुना पुलिनं तस्थ
वृंदावन विराजते १ या ... ... श्री हरिरायजी
यह श्रीवल्लभाचार्यजी के पुष्टिमार्ग में सेव्य हैं सो श्री
कृष्ण रसात्मक सो कौन प्रकार व्रजमें विराजत है सो क
हत हैं जो गोपीजन व्रजभक्त स्वामिनी के मंडल में स्थि
ति है श्रीकृष्ण रसात्मक या भांति नित्य स्वामिनी संग
रासादिक लीला करत हैं सो लीला ... न सो ठौर करत
है सो कहत है जो श्री यमुनाजी की पुलिन के मध्य
श्रीवृंदावन में विराजत है सो जैसे श्रीकृष्ण और रसा
त्मक है तैसे श्रीयमुनाजी रसात्मक है तैसे श्रीयमु
नाजी की पुलिन रसात्मक है तहां भक्तन सहित श्री
कृष्ण विराजत हैं सो श्री आचार्यजी महाप्रभु यमुना
ष्टक में कहे है श्रीयमुनाजी के तट श्रीवृंदावन हैं
तट स्थन को ... ... मोद पुष्पां बुना सुरासुर

वृजितः इतिवचनात्॥याभांतिश्रीयमुनाजीकेतटपुलि
नमध्यवृंदावनमेंप्रभुविराजिकेंदोयप्रकारकीलीला
करतहेंप्रथमथलक्रीडामेंश्रमभयेतेंजलक्रीडायाभां
तिसदासदावृंदाविराजतहैंयहस्मरणकरतव्यहैं।स्म
तेगोगोपिकावृतेक्रीडनवृंदावनेस्थितः श्रीवृंदावनमें
स्थितिगोपीजननकेवृंदतिनकेसंगश्रीवृंदक्रीडाकर
तहेंकौनभांति।सोआगेजाप्रकारलीलाकरतहें सोक
हतहें॥श्लोक॥नित्यंगोनरसाविष्टविशिष्टरतनेलरा
ट्‌ भावैकगम्यसर्वत्रप्रसिद्धपुरुषोत्तमोऽस्त्या॥ अर्थ
श्रीयमुनाजीकेतीरनित्यगानरासादिलीला ... नभक
नकेसंगअत्यंतरसाविष्टहोयकरतहें ... नित्य
लीलाकेदोयप्रकारहें॥एकअवतारलीला॥एकमूल
लीला अवतारलीलामेंप्रमानप्रमेयसाधन
फलसोश्रीभागवतमेंनिरूपणकीयेहें।प्रथमश्रीप्र
भुजीकेप्रागट्यपर्यंततपस्याप्रमानरीतिसोंजेसेंसा
धनकरेंहेतापाछेंप्रभुप्रागट्यहोयवरदीयो॥प्रमेयजन
कोपाछेंवसुदेवदेवकीजीकेंइहांव्यूहसहितसंयोगा
त्मकस्वरूपप्रगटे।सोश्रीनंदरायजीश्रीयसोदाजी
केइहांविप्रयोगात्मकभावप्रगटे।सोप्रमेयवरलप्रग
टकरिअनेकलीलाकरिसुखदीयो।माखनचोरीइंग
लीलापाछेंकात्यायनीकोअर्चनादिकप्रभुमेंप्रेमभ
क्तिवेकीकामनायहसाधनपाछेंपंचाध्याइमेंफल
अवताररसामेंमूललीलामेंसदानित्यलीलासोलि
येहांदिपचतत्वलयातजयप्रभुकोअंसइनसोंकनते
पुरुषोत्तमश्रेष्ठसोश्रीगीतामेंभागवतमेंदशअवतार
तेश्रेष्ठ।सोश्रीगीतामेंप्रसिद्धपुरुषोत्तमकहेहें।सोभ
क्तकरिजानेजानतहे।॥औरसाधनबलतेंनाहीं

वये भूमो मत्स्याद्या गति बुध्यतां ॥ अथा के चयो ॥ ऐसे
रसात्मक पुरुषोत्तमकौ एक अवतार वैराटस्वरूप है
ताकौं श्री भागवत गीता में प्रत्यक्ष कहत हैं ॥ यह ब्रह्मा
ण्ड रूप विग्रह श्री अंग है ॥ अपार मस्तक ॥ और अपार भुजा
अपार चरन तथा आकास मस्तक और पाताल चरण
रहा ॥ रोमावली समस्त ब्रह्माण्ड है मत्स्य यह प्रभु कौ
आद्य अवतार है ॥ तो अर्जुन कौं सब दिखायो ॥ तब युद्ध
कीयो ॥ ऐसे वैराट स्वरूप के अंस अवतार मत्स्यादि कूर्म अ
वतार कारन काज रूप हैं ॥ जितनो काज होय तितनो
काज करिकै माहात्म्य जतावे ॥ जैसें समुद्र मथन समु
द्र में छिपी वस्तु बन लागयो ॥ तब कछ रूप होइ धारन कौ
॥ और ये चार अवतार भक्तोद्धारक कौ ॥ वामनजी
२ नृसिंहजी ॥ ३ श्रीरामचंद्रजी ॥ ४ और चतुर्व्यूह संयुक्त
वसुदेव देवकीजी के ॥ इहां तातें ये चार नयनी के भक्तजन
मानत हैं ॥ और अवतार कौं नाही या प्रकार पृथ्वी पर अ
नेक अवतार ले प्रभु लीला करी ॥ अपनो माहात्म्य प्रग
ट करत हैं भक्तन के अर्थ ॥ अब और हृदक कहत हैं ॥ सो
अक्षरं धाम वैकुंठ व्यापि वैकुंठ संज्ञितं ॥ अस्तानन्त
त्र लक्ष्मी पूर्णानंदो हरिः स्वयं ॥ ४ ॥ रमावैकुंठवासीतु वि
भूतिर्यस्य वैष्णवी रमानुपालिका तत्र शक्तिरूपं वग
म्यतां ॥ ५ ॥ या ॥ और अक्षर धाम है सो वैकुंठ
है भीतर प्रभु विराजत हैं ॥ सो लोकालोक पर्वत तें
परे तहां जो नके लोक गोटै ॥ सो सर्व वैदरसवन कोम
ल है ॥ सो व्यापि वैकुंठ को संगी है ॥ जैसें व्यापि वैकुंठ स
वको व्यापक है ॥ तहां पुष्टिमार्गीय रीति सो विराजे
नहीं ॥ व्यापि वैकुंठ सो इस्त्री जाको अनुभव सोई सो भि
पर है ॥ और सबन तें न्यारो है ॥ जैसें ईश्वर रस वेमें व्याप
क है सबन तें न्यारो है ॥ आधार कौ नाई ताही तें ज्ञानी

अक्षरधाममवैकुंठआपिवैकुंठकहतहैं।ओरभक्तनकेमन
मेंव्यापिवैकुंठवारेहैंअपारहैं।रानीसवठोरव्यापकमा
नतहैं।तातैंदासभावछुटिजातहैं।भक्तजनहैंप्रभुकोदे
खितहैंमानतहैं।अपनेकोदासमानतहैं।एसेअक्षरधा
मवैकुंठमेंब्रह्मानंदरूपलक्ष्मीजीहैं।तातेंअक्षरब्रह्म
केउपासनावारेलक्ष्मीआदिमेंसर्वेनहंब्रह्मानंदरूप
औरपूर्णानंदरूपिभगवानविराजतहैं।तहांकेअधि
कारीब्रह्मानंदरूपलक्ष्मीहैं।तातेंअक्षरब्रह्मकेउपा
सनावारेकोंब्रह्मानंदमोक्षरूपीमयोरभक्तकोहोत
हैं।ओरएकरमावैकुंठरूपहैं।तहांसनकादिकमें
आपजयविजयकोटीरहें।यहवैकुंठअक्षरधामकी
विभूतिहैं।तहांकेवासीजोवैष्णवीमूर्तिसोविष्णुपाल
नकर्तासोयहश्रीभागवतमेंकहेहैं।तातेंतहांकील
क्ष्मीपालिकाशक्तिहैं।क्षीरसागरतिपुरुषोत्तमकीहैं
तामेंयहपालिकाशक्तिहैं।सोअतिगंभीरहैं।याप्रका
रसोतहांजेसोंप्रभुविराजतहैं।तहांतिनकोंसेवार्थ
तैसेईलक्ष्मीविराजतहैं।

अवश्रीलक्ष्मावतारसबको
मूलभूतहैंसोप्रकारआगेकहतहैं।५।श्लोक॥ मू
लभूतस्यावतारोमूर्तिर्व्यूहोविधीयते।प्रद्युम्नो
वासुदेवश्चानिरुद्धोऽनंतएवचाहयाकोअर्थ।अ
वश्रीवसुदेवजीकेइहांप्रगटहैं।सोकहततहां।सबअ
वतारकोमूलभूतयहहैं।मूर्तिरूपमूर्तिजोए
औरचतुर्व्यूहप्रगटभये।सोनामकहतहैं।चतु
र्व्यूहप्रद्युम्न।वासुदेव।अनिरुद्धऔरअनंतजोसं
कर्षणएककहें।पीछेंचकारधरोतहांयहजाननो
चिन्तवेसओरश्यामकेरक्तहीसहितअष्टप्रकार
स्वरूपप्रगटभये।६२

पृ. ६५ थें सप्रयोर्थ भक्तनकी रक्षाकरनार्थ इत्यादिअनेक
कारन हैं सो इन चारयूहनके भीतर पुरुषोत्तम हैं ति
नको जन्म अवतार नाहीं हैं सो श्रीमद्भागवत में क
हे हैं यथा तिग्मनिवासो हे कवी जन्म वादेष्म स्वरूप
रिषतस्थैर्भिस्य स्वधर्म: स्थिर चिरस्वज घ्रस्यपि
त: श्रीमुखेन रूनपुर्वाति तानावर्षे यकामदेवाः इति
वचनात् याप्रकार देवकीके उदरतें जन्म वात् जैसें
रवैरहिमातें चंद्रसूर्य प्रगटे ध्रु यवं चारों व्यूह कहत हैं
सो चतुर्व्यूहविग्रह सयस्तत्र स्थाप्यते प्राप्यते नयः
तथैतेरावतेः श्लोकनवतारे वाग्यतेः यथा कोश
याप्रकार चतुर्व्यूहकी राचिवे श्रापु श्रीकृष्णउन
के भीतर स्थापित विराजत हैं तहां कोई कहें जो रा
से श्रीकृष्णसंयुक्त व्यूह हैं सो चतुर्व्यूहको पूजनकारि
ये इतने श्रीकृष्णहीको भयो याप्रकार कोई संदेह कर
तहां कहत हैं जो जद्यपि व्यूहकारि आवत श्रीकृष्ण मि
ले हैं तऊ इन चारि व्यूहस्वरूपनकी उपासना पूजन
श्रीकृष्ण अवगाहें न जाय काहेतें पुरुषोत्तम
श्रीकृष्ण केवल हैं और सब व्यूह न्यारे हैं तातें व्यूह हैं सो पु
रुषोत्तमके आगेपाकारी हैं जिननी प्रभुकी आज्ञा है ति
नको कार्य करिकें फेरि अपने धाममें पधारेंगे और श्री
कृष्ण तो नित्यलीला विनोद करत हैं तातें व्यूहकी उपा
सना करि स्वर्गलोक नया सुखफल मोक्षादि चार प्रका
रकी मुक्ति सारूप्य सामीप्य सायुज्य सालोक्य और भ
क्ति रसकी प्राप्ति नाहीं तातें सर्वोपरि श्रीकृष्णही तिनही
की न्यारी भक्ति कहें सिलम भक्तिके फलको नूनना
प्राप्त होत हैं याप्रकार जगत में जीव सत्संग विना श्री
कृष्णके माहात्म्यको जानत नाहीं हैं सो कहत हैं
७ अत एव जनामूढा: प्राकृत ते वदंती हीं श्रीकाये

मूलरूपे कल्पयेत्तस्तोतान्॥ याको अर्थ॥ श्रीह
रिरायजी कहत हैं जो या प्रकार येसे जो चतुर्व्यूह सो अ
नेक प्रकार स्वरूप की लीला जगत में करत है॥ मथुरा
तें भाजि पै रहि हैं सो उद्धव करतैं। काहू की रक्षा करत हैं अ
नेक प्रकार के विचार करत हैं। मिलि कै पहली लाटे रि
वै कि तिनें जन जीव जो अपनी हैं सो समरमो है कै वस
ते माहात्म्य की जानी श्रीकृष्ण को जानत है॥ सो ऐश्वर्य
लिके जीव की कहा है अवतार दिसा में वेइ एक भग
वदीय प्रभु को जानत हैं औ जगत में कोऊ न आनत
काहे तें संभूत भावनार की लीला कार्य देखि सब को इय
हकहते जो श्रीकृष्ण जे परकार्य कीयो सो मूलरूप
श्रीकृष्ण को नाम मिथ्या कल्पना करि अज्ञान सों क
हत हैं नाहीं तें स्वन को नास भयो॥ एक जन्म जीभत
हते सो आपने पूर्व नाने भांति श्रीकृष्ण की हानी य
ति दुःख भये श्रीकृष्ण को केवल आनंद रस पूर्ण रसात्म
क लीला कर्त्ता जानें॥ चौरासी जे सो कार्य नें स्वरूप
की लीला जानें। यह भाव दृढ़ है तब श्रीकृष्ण में भाव
उपजे सो श्रीकृष्ण वसे हैं॥ सो आगे अवतार वरनन करत हैं
श्लोक॥ कृष्णस्तु केवलं लीला करोति स्वरूपिणी
भूभारहरणं चैव कलाभ्यामेव सर्वथा॥ टीका॥ अ
र्थ॥ श्रीहरिरायजी कहत हैं॥ जो श्रीकृष्ण तो सदा सर्वदा
व्रजभक्तन के संग लीला करत हैं॥ स्वरूप सो लीला क
हिवे में नाहीं आवत हैं॥ जो निज जन श्री आचार्य
जी महाप्रभु के हैं अनन्य रंगी तिन के मन में अनुभव क
रिवे के योग्य है॥ तातें स्वरूप लीला कहे माना विहा
रादि या भांति श्रीकृष्ण तो सदा सर्वदा वृन्दावन में वि
राजत हैं। और पृथ्वी पर है नपाल सर्वोपाय होत
सो भूभार हरना है। कलावतार श्रीकृष्ण

हैमादिक देवतानकी प्रभु रक्षा करत हैं या भांति व्रजमें नि
त्य रसलीला है क्योंकि इन्द्रादिकोंको कार्य करत हैं ६
ता ॥ पसमाने रसानुस्वरूपेणेति निश्चय ॥ व्रजस्थ एवस
नेपुरस्थो वा क्रमापर ॥ १ ॥ या ॥ कौ ॥ अर्थ ॥ अब श्रीमहाराजजी
करत हैं सो परमानंदको दान तो सदा व्रजमें लीला क
ते रसे श्रीकृष्ण हीतें हो ॥ और स्वरूप आदि अन्यका
के आश्रयतें निश्चय यही ॥ ताकु श्रीकृष्ण व्रजस्थायई
स्वरूप सो होय ॥ यह सिद्धांत सर्वोपरि निश्चय जो नंदनों
रसे श्रीकृष्ण सदा व्रजही में नंदनंदन निरंतर स्थिति है
और जो पुरी मधुपुरी तथा द्वारिकामें स्थिति सो स्वरू
प हैं तिनको स्वरूपावेशो फल सो नाहि हैं पुष्टिमार्गको फ
ल नाहीं है ताते जो जीव मथुरास्थ श्रीकृष्णको आश्र
य करत है तिनकोही श्रीकृष्ण अपनो आनंददान नाहीं
देत हैं उनपुरीके स्वरूप दरावे सोई फल मर्यादामार्गी
यनको दान करत हैं सो भगवद्गीतामें कहे हैं ये यथा मां
प्रपद्यंते तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ ता स्वरूपकी जो भावसों
जीव प्रभुको आश्रय करै तिनको तैसोई फल सिद्धि
होत है प्रभुहू ताही भावसों ता जीवको भजत हैं तैसोई
फल प्राप्ति होत है ॥ अब आगे कहत हैं ॥ १० ॥ श्लो ॥ तत्रा
पि रूपभेदेन क्रीडा नित्य तथा रस ॥ अधुना त्वमर्यादा
रहितं केवलं व्रजे ॥ ११ ॥ या ॥ कौ ॥ अर्थ ॥ याभांति श्रीकृष्ण
अपने अनेक स्वरूप धरि क्रीडा जगतमें ठौर ठौर करत
हैं जहां जैसो स्थल है तहां तैसोई स्वरूप है तहांते सो
इ रस है ताते व्रजमें धर्मी स्वरूप और व्रज बिना धर्मरू
प मर्यादा सहित है ताको मर्यादा रसको दान है श्री
र व्रजमें धर्मी स्वरूप केवल पुष्टि पुष्टिमर्यादा सहित
अमर्यादा लीलाको लेके वेदातीत रसों रसात्मक
स्वरूप सदा सर्वदा व्रजमें विहार करत हैं ॥ अब आगे कह

हतहैं ॥ श्लोक ॥ सर्वधर्मविशिष्टेनु मर्यादपुरेसतं
तु छ्रूरवलीलानुयास्वीलावैवलेनकूजे हुता ॥२२॥ याको
अर्थ ॥ सर्वधर्मसहित मर्यादापुरुषोत्तम ॥ मथुराद्वारि
कापुरीमें विराजमान हैं और श्रीकृष्णलीलाक्लुललित
रसराससेवे वल्लपुष्टिपुष्टिपुरुषोत्तमसो व्रजमें लीलाक
रतहैं तातें मधुपुरी द्वारिकापुरीके स्वरूपमें और व्रजमें
कृष्णरूपमें वहैं तहीं फेर हैं इनके फलमें हू फेर हैं तातें व्र
जस्थस्वरूपकी भावना कर्तव्य हैं अब और हू कहत हैं श्लो
क ॥ परमानंदरूपा सा बाल्यलीलादिभेदतः सर्वत्ररसरी
त्यालोकदभावेन वर्णिता ॥२३॥ याको अर्थ ॥ अब श्री ह
रिराइजी व्रजस्थस्वरूपकी लीला वर्णन करत हैं जो व्रजमें श्री
यसोदोत्संगलालित श्रीकृष्णके सेहैं परमानंदरूप हैं
बाललीला आदि पौगंड किसोर यह सगरी लीला सब
तेरासरूपही हैं सो श्रीगुसांईजी पुनरसग्रंथमें कहे हैं ॥
ता भावसों सगरी लीला रसरूप ही जाननी ॥ सो गरसमय
ह भाव श्रवणनमें न आवे अंतरंगी भक्तनके मनमें अनुभव
करनमें योग्य हैं ॥ ऐसो स्वरूप स्वरूप व्रजमें विराजत हैं य
ह्यो आरे कहत हैं ॥२४॥ श्लोक ॥ कामरूपनपाष्टेनयोनरि
नियामकं एतादृशमूलरूपे मूललीलासमन्वितः ॥२५॥
याको अर्थ ॥ व्रजमें श्रीकृष्णके सेहैं सो कोटिकामस्वरूप व्रजभ
क्तनको सुख देनार्थे प्रगटे हैं साक्षात्मन्मथमन्मथः या
भांति रासपंचाध्याईमें कहे हैं ऐसे कोटिकामस्वरूप तहां
वय अवस्थाके नियम नाही हैं जो किसोर ही होय नवरस
होय न करेगी यह नियम नाही हैं जन्मानही स्फटकानकी
ऐ सो श्रीभागवतमें कहे हैं ॥ जयति जननिवासो दे

तिनकौं कामकी वृद्धि करत हैं और श्रीगुसांईजी पाल
नाकी रीत है तासें कहे हैं मानती मानहरण श्रीयसोदा
जीके श्रीगोपाल ताके ललन हैं और श्रीस्वामिनी कों मा
न हू मनावत हैं मानहरण याभांति बालकलीलाही में
एककालावछिन्न समस्त लीला करत हैं यह विरुद्ध
धर्माश्रय स्वरूप व्रजमें हैं सो गुसांईजी में श्रीगुसांईजी क
हत हैं एतादृसस्य श्रीकृष्णस्य सकल लीला समन्वि
तो व्रजमें है जैसें श्रीकृष्ण मूलस्वरूप सदा एकरस व्रजमें
लीला करत हैं तैसें ही मूलरूप सदा लीला हू करत हैं ए
करस यह कहिवे को यह जताए जैसें श्रीकृष्ण नित्य हैं तै
सें श्रीकृष्णकी लीला हू मूलरूपा एकरस हैं याभांति सर्व
लीलासंयुक्त व्रजमें विराजत हैं अब और हू कहत हैं
१४ श्लो० चित्ते निरंतरं स्थाप्यं सेवसेवा स्वमार्गगा त
स्मिन्प्रयत्नः कर्तव्यो चित्ते नापि विधीयतां १४ याको अ
र्थ श्रीहरिरायजी आपने भाई श्रीगोपेश्वरजी सों कहत हैं
जो कुमारवलो तासें श्रीकृष्णकी सेवाके मूलरूपा लीलायें
इनकों अपने चित्तमें निरंतर स्थापन करत हैं और
सो साधन श्रीकृष्णकी सेवा अपने स्वमार्गमें है ता
कों चित्तमें निरंतर सप्रभुकी लीलासंयुक्त अनुभव
करावे सो मानसी सेवाके सिद्धयर्थ सरीरसों वित्तसों त
नुजा वित्तजा सेवा नित्य नेमपूर्वक करनीय है सो सि
द्धांतमुक्तावलीमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे हैं कृ
ष्णसेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता चेतस्तत्प्रवणं से
वा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा इति वचनात् श्रीकृष्णकी से
वा तनुजा वित्तजा सदा नित्य नेम स्वीकार करत मान
सी सिद्धि होय यह पुष्टिमार्गकी रीति है अब और हू कहत
हैं १५ श्लो० निवेदनानुसंधानं विधेयं तदहं सदै
सं सेगात्वकर्तव्यो विश्वासः स्थाप्यतां दृढः १६ या

कोश्यो।। एसेंश्रीकृष्णमें भावप्रगटहोइगतांस्येतादृस्
वैलक्षणमिलिकें निवेदनकोंअनुसंधानकोंसें ताते
सत्संगऊं नित्यनेमसोंकरों।औरभगवदीयकेकहेकों
वचनकों अपनेमननमेंदृढविस्वासराखेंवात्रकपटी
वनतनयएसेंश्रीकृष्णस्वरूपानंदको अनुभवहोइ अ
वश्योरहवदनमें।।श्लोक।। कृष्णःकृपापराधीनोदीना
नामनुपेक्षकः।स्वकीयानांमन्यभावात्करिष्यतिवनस्व
ना।२७।याकोअर्थ श्रीकृष्णकैसेहैं कृपाकेकिंअपनेदी
मकेआधीनहैं भगवदीयगारोहैं।भक्तविरस्कानस्वरू
पामयडोलतेपाछेंलागे।एसेंश्रीकृष्णहैं।प्रसिद्धहीहैं
यजेनवोरयदीकतहेंपोइवनकेआग्याकारीभए औ
रकृष्णभक्तनसोंतौएकलोएवनविनारह्योनाहीजाते
होयाभांतिश्रीकृष्णकृपाकरिकेंअपनेभक्तनकेआधी
नहैं।तातेंजोयस्पुष्टिमार्गमेंश्रीआचार्यजीद्वारासर
नहोयनिसाधनहोयदैन्यकरिरहेंहैंएसेभक्तकीउ
पेक्षाकबहूंश्रीकृष्णनाहीकरतहैं।औरजेसंसारासक्त
जीवहैंतेविकर्वेस्विकमेंमहादुखपावतहैं।तिनकौ
उपेक्षाहीप्रभुकीरहेहैकाहेतेसंसारमेंहोयफलहै
सुखऔरदुखसोपापकोफलदुखऔरपुन्यको
फलसुखसोविकतिनकौउपेक्षाहै।औरअपने
स्वकीयनिजभक्तकौअन्यथाभावकोइकालमेंक
बहूंश्रीकृष्णनाहींकरतहैं।सहभावकीरक्षाहीक
रतहैंआगेहीऔररक्षाकरतहैं।औरद्वाराहीक
रावेंगे।स्वतंत्रआपुभक्तनकीरक्षाकरतहैंएसेंकौ
पालश्रीलक्ष्मणहैं।अववश्यौरहकंदनहैं।रक्षाजोधर्म
जोप्रवृत्तिसुचिंतगुआम्याहदरो।मानिस्यालेवपा
नदर्थेस्वयथेष्टानो।एकयाकौअर्थजेसेंधर्ममा
वतिमयनेचिंतसुदृहोनहैं।निश्चय

भगवानके भाव हैं तिनके भावकी रक्षा करत हैं धर्ममार्गते
चित्तकी शुद्धभावते प्रभुवश ते से पाखंडकी यतें मति
जो बुद्धि को नाश सर्वथा होइ है ॥ अब और हू कहत हैं ॥ श्लो
कः ॥ मार्गप्रवर्तकाचार्य चरणेषु निरंतरं ॥ विश्वासः सुदृ
ढ कार्यस्तत्र सर्वं फलिष्यति ॥ २ ॥ याको अर्थ ॥ विशेष पु
वैगानद्धनदासके पत्रते जानीयो ॥ विमधिके यह पुष्टि
मार्गीयके प्रवर्तकर्ता श्रीवल्लभाचार्यजी हैं तिनके है
चरणकमलको दृढ आश्रय करनो मनमें दृढ आ
श्रय दृढ विश्वास जो वैष्णवको होइगो सो सदा निरं
तर ताको सिगरो फल तिनको निश्चय सी सिद्ध होइ
गो यामें संदेह नाही है ताते सर्वोपरि सिद्धांत यह है जो
श्रीआचार्यजीके चरणकमलको दृढ विश्वास करनो
विशेष समाचार गोवर्द्धनदासके पत्रतें जानियो ॥ २६ ॥
इति श्री हरिरायजी कृत अर्थ शिक्षापत्र ताकी
टीका श्री गोपेश्वरजी कृत संपूर्णो ॥ ३८ ॥ अब [illegible] पुष्टि
मार्गमें सेव्यप्रभु श्रीकृष्ण स्वामिके स्वरूपको वर्णन कीनो
तिनकी सेवा करनी भावदीयको संग करनो ताम
कार त्यागो कहत हैं ॥ श्लोक ॥ सत्संगेन प्रभो चित्ते स्था
पनीयं निरंतरं ॥ पूर्वोक्तानामर्थानामनुसंधानमाद
रात् ॥ १ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं तो
प्रसंग करि प्रभु जो श्रीकृष्ण तिनको अपने चित्तमें स्था
पन करे निरंतर सो नवरत्न ग्रंथमें श्री आचार्यजी महा
प्रभु कहे हैं निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैरपि नामा
ति निवेदनको स्मरण तादृसी पुष्टिमार्गीय भगवदीय
संग मिलिके परे ॥ तब चित्तमें निरंतर भगवान निरंत
राखिये तिहोय निश्चय सो एक दृसकै धर्मे भगवान
निरंतर आपुस्वरूपने श्रीमुखसों कहे हैं उद्धवजी प्रति
कहे हैं ॥ श्लोक ॥ निरोधयन्ति मायोगो न सांख्यं धर्म उद्धव

नस्वाध्यायतपस्त्यागोनेश्वापूर्तैनस्तृणा ॥ ९ ॥ इनानिपजनं
हासिनीथोनिनियमाय्यमा ॥ यथावर्हईसत्संगामर्थसंगाप
हि॥ इमिं ॥ स्तुतिवहनानं ॥ आयोन्नहेतहैंजोमेस्तनेनाय
अनतेनाहीवसहोतहो॥ योगतथासांख्यनस्वाध्यायतप
त्यागनेश्वम्र्तापिपसस्तूतीर्थेनियमइत्यादिअनं
नेकसाधनतेमोकोनिरोधनाहीवरतहैंजैसेयतंगा
मोकोरोकरहतहैंताकेवलहोइजानहैंतातैसतसंगा
वडोवडोपदार्थहै॥ तातैपुष्टिमारगीयनेसत्संगकोमनन
गानिनिरकहैंतेहैं॥ श्रीरघवेजेगुरुवल्लभपुत्रपग
नामनिवेदनसुन्योहैं॥ ग्रथोसरसपायुतनाथकेनाम
कोग्रर्थसहितअनुसंधानग्याहरपूर्वकसंगतेजोनाप
हैंश्रीकृष्णकोसोसारवेस्पाल्ल्वकेसोरपायमात्म
कहैं॥ ऐसेश्रीकृष्णवेमिसरनहे॥ पहनामश्रीयाचा
र्जीसागभासभाखई याभातिभक्तिनोचपिनामंमपा
सयुरसरासेंवस्वरूपप्रदरहीयोवर [illegible]
रैसो॥ आफनेस्वनेपस्यविश्यपितिनि [illegible]
स्वादिसमाधानेश्रमसेंववपक्या॥ [illegible]
गकेसेवाकरैसम्यक् [illegible]
स्नापुष्टिमार्गकीरीतिहैं नभिति [illegible]
करै [illegible]
यसेवासीपासमा॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

भगवानके भावरूपहिकें भावकीरक्षाकरतहैं धर्ममार्गमें
प. ८२ चित्तकी शुद्धभावते प्रभुवश ॥ तेसे पाखंडकीयतें मति
जो बुद्धिको नास सर्वथा होइहै ॥ अब और हू कहत हैं ॥ श्लो
क ॥ मार्गप्रवर्तकाचार्ये चरणेषु निरंतरं ॥ विश्वासः सुदृ
ढः कार्यस्तत्सर्वं फलिष्यति ॥ १८ ॥ याको अर्थ ॥ विशेष व
र्द्धनदासके पत्रते जानीयो ॥ विमर्षिवं ॥ यह पुष्टि
मार्गीयके प्रवर्तक तो श्रीवल्लभाचार्यजी हैं ॥ तिनके च
रणकमलको दृढ आश्रय करनो ॥ मनमें दृढ आ
श्रय दृढ विश्वास जा वैष्णवको होयगो ॥ सो सदा निरं
तर तादृश फल तिनको निश्चय यही सिद्ध होइ
गो यामें संदेह नाहीं है ॥ तातें सर्वोपरि सिद्धांत यह है जो
श्रीआचार्यजीके चरणकमलको दृढ विश्वास करनो
विशेष समाचार गोवर्द्धनदासके पत्रतें जानियो ॥ १८ ॥
इति श्री हरिरायजी कृत अष्टादश शिक्षापत्र ताकी
टीका श्री गोपेश्वरजी कृत संपूर्णम् ॥ ३८ ॥ अथ पुष्टि
मार्गमें सेव्य प्रभु श्रीकृष्ण रसात्मक स्वरूपको वर्णन कीनो
तिनकी सेवा करनी भगवदीयको संग करनो सो प्र
कार चागोक हत हैं ॥ श्लोक ॥ सत्संगेन प्रभोश्चित्ते स्था
पनीयं निरंतरं ॥ पूर्वं श्रुतानामर्थानामनुसंधानमाद
रात् ॥ १ ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री हरिरायजी कहत हैं जो
सत्संग करिकें जो श्रीकृष्ण तिनको अपने चित्तमें स्था
पन करो निरंतर सो नवरत्न ग्रंथमें श्री आचार्यजी महा
प्रभु कहे हैं निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः ॥ सो भा
ति निवेदनको स्मरण तादृसी पुष्टिमार्गीय भगवदीय
के संग मिलिकें करें ॥ तब चित्तमें निरंतर भगवान निरंत
र स्थिति होय यह निश्चय ॥ सो एकादश स्कंधमें भगवान
निरंतर आप अपने श्रीमुखसों कहे हैं उद्धवजी प्रति
कहे हैं श्लोक ॥ निरोधयति मा योगो न सांख्यं धर्म उद्ध

है। हिमासर्ह तिवचनानि भगवानकहत हैं जो मेरतनेस
धनतेनाहीवसहोत हैं। योगतथासांख्यनस्वाध्यायतप
त्यागतेशब्दतादिपरासुदत्तीर्थेनियमइत्यादि औरअ
नेकसाधनतेमोको निरोधनाहीकरतहैं जैसेसतसंग
मोकोरोकरहतहैं ताकेवलहोइजातहै तातेसत्संग
बड़ोबड़ोपदार्थहै तातेपुष्टिमार्गीयवैस्नवकोसत्सं
गनिरंतरकरतेहैं। औरपर्वजोगुरुवल्लभकुलद्वारा म
नामनिवेदनसुन्योहैं अष्टाक्षरमहामंत्रताकेनाम
कोअर्थसहितअनुसंधानआदरपूर्वककरोतोनाम
हैश्रीकृष्णकोसोसारवैस्नवकोसारपरमरसात्म
कहैं। एसेश्रीकृष्णकोस्मरनहैं। यहनामस्मीर्याचा
पैजीहराप्राप्तभयोहै याभांतिभावनाकरिनामसेपर
मआदरराखै अष्टप्रहरलीयोकरो अवऔरएककहतहैं
रस्तोत्र॥भगवत्सेवनंसम्यग्विधेयमितिनिश्चितैर्यै
श्रवादिसमाधानैस्तत्सेवैवसर्वथा॥२॥याकोअर्थ॥भ
गवत्सेवाकरैंसम्यकप्रकारअत्यंतप्रीतिपूर्वकऔरजा
प्रकारपुष्टिमार्गकीरीतिहै तारीतिपूर्वकभगवत्सेवा
करैं इतिनिश्चय यहपुष्टिमार्गीयभगवदीयकोनिश्च
यसेवाहीपरमसाधनहै सोनवमस्कंधमेंभगवानक
हेहैं मत्सेवयाप्रतीतंचसालोक्यादिचतुष्टयंनेछंति
सेवयापूर्णाकुतान्यन्नकालविद्रुतं॥२॥तृतीयस्कंधमेंक
हेहैं अहोबकीयंस्तनकालकूटंजिघांसयापाययद
प्यसाध्वी लेभेगतिंधात्र्युचितांततोन्यंकंवादयालुं
शरणंव्रजेम॥२॥प्रथमस्कंधसारखानोनरोमंत्रावसेच
नात्एवमाराधनंविसोसर्वथामात्मनश्चहि॥२॥इत्या
दिवचनकोनामविचारभगवत्सेवासर्वोपरमुख्य

धर्मत्वाति प्रीतिपूर्वक नित्य नेम सों करै और महाप्रसाद
दि प्रसादी वस्त्रादि सो श्री नेतिन तो वैष्णवन को समाधा
न करै जैसे प्रीतिपूर्वक वैष्णव की सेवा करै तैसे ही प्री
तिपूर्वक तादृशी भगवदीयन को प्रसादादि वस्तु सों समा
धान करै या प्रकार पुष्टिमार्ग में वैष्णव रहे तो प्रभु कृपा
करें और अंगीकार करत हैं श्लो० ६ अतः परं न मे प्रति दि
वसं तैकार्थकरणात् सेवयैव हि संतुष्ट सुखसेव्यः प्र
भुर्भवेत् ॥ ७ ॥ याको अर्थ ॥ प्रभु प्राप्ति करै प्रार्थना दैन्य होय
वी नानीकार प्रभु को रिझावे भक्ति की वृद्धि होय सो
श्री गुसांईं जी विज्ञप्ति में कहे हैं श्लो० ॥ यदैन्य त्वत्कृपाहे
तुर्न तदस्ति ममाण्वपि तां कृपां कुरु राधेश यया तद्दैन्य
माप्नुयात् ॥ १ ॥ श्री ति से ग ... हित्वा सर्वमनोरथाः नि
रपत्रयतां सिद्धिं जीवामि सहितः सा प्रसीद ॥ २ ॥ चित्तेन दुष्टः
वचसापि दुष्टः कायेन दुष्ट क्रियया च दुष्टः ज्ञानेन दुष्टो
भजनेन दुष्टः ममापराधः कतिधा विचार्यः ॥ ३ ॥ विज्ञप्तो
नापराधे वापारखंडे वाम यत्कृत ... पर्ये वस्यति कुत्रे
त्रिनजानेहं विमदधी ॥ ४ ॥ वलिष्ठा चापि मद्दोषात्वत्कृ
पा ग्रति दुर्बला तस्मात्कृष्णधर्मत्वाद्दृष्यानाजीवधर्मेन
... त्वस्त्रोन विद्दीनस्य त्वदीयस्य तु जीवितं यथैव य
... नाथ दुर्भगाया न वैव य ॥ ५ ॥ या भांति अनेक भाव सों
प्रार्थना करै ... हौं तुम मेरे प्रभु सों श्री आचार्य जी
द्वारा संबंध भयो है सो मो पर कृपा करो ॥ या भांति दैन्यता
ते प्रभु को रिझावे भाव की वृद्धि होइ का दैते भाव वृ
द्धि को कारन एक दैन्यता प्राप्ति ही है याभांति दैन्य है
तु श्री हरि की सेवा करो तब श्री हरि संतुष्ट होय याभां
ति ... सेवा करो प्रभु संतुष्ट होय जाय तो वैष्णव को
प्रभु सुखसेव्य है कछु सेवा में प्रतिबंध न करै वा कछु री
प्रादि बाधा न करै तब भगवत् प्रभु की सेवा निर्विघ्नतो

सो होय सो श्रीगुसांईजी कहे हैं सुख सेव्यो। ऐसे वैष्णवकों महा
प्रभुजी सुख सेव्य ही हैं। अथ च चौरहके स्तन हैं। श्लोक। दुराराध्य
समैवैव श्रीकरणस्थनं। हलसेवा स्तुवेनो भाषवेनो ज
नामता। ॥५॥ याको अर्थ। श्रीकृष्णके से हैं अन्य तो दुराराध्य है
असाध्य दिशि वा दिकों उपेक्षानकों। स्विरयमें अनेक साध
नसमाध्यमें कष्टे माप्रिय हेतत हैं। ऐसे जीवतो अनेक के
बकरि भयो दूरहे या याते तिनकों दुराराध्य हैं तिनको
दुराराध्य हैं वड़े हैं यो जी अपने हृदयमें वान्यना करत हैं
आसान करत हैं मुनीजन अनेक प्रयत्न करत हैं तिनकों दु
राध्य हैं प्रभु हैं तो जी कलिकाल वात हैं तउ तोसेवी जीव
श्रीआचार्यजी महाप्रभु सरासरणागति आरष्ठि मार्ग
की रीति अनुसार भावसेवा करत हैं न्य हायप्री
साधन करि एसे दुराराध्य श्रीकृष्णसों ते भक्तनकों सुलभ
त हैं सो श्रीहरिरायजी कहत हैं जो यह पुष्टिमार्गमें श्रीआ
चार्यजी द्वारा सरन आयके मार्गकी रीति अनुसार भाव
सेवा करत हैं सो परम भाग्य के भगवद्जन नहीं पास व
डभागी हैं उनहीं कौ जन्म सुफल है सो इहु स्कंध श्री
सुबोधिनी में हैं। श्लोक। देवोऽपि मनुष्या वा पलोग
वेष्वच भक्तसुखस्य रागभवति सात्म्या ग्याय्य। भ
योऽरूढ वास्तु नारायणपरास्सर्वे न कुतश्चन बिभ्यति। च
गोपकोन रवं स्वपित्त लाघ्ये रुचिनः ॥ देवता मनुष्य
असुर यक्ष साधवादिकों इने प्रभु मुकुंद भावो नवें स्वगाव
भक्तकी सेवाय रे सब ऐसे ताव ता सब कों नाहीं। पद
श्रीनारायन श्रीकृष्ण की भक्ति सबों कजाति, स्वगर्व
अपवर्ग जो मोक्ष न या नक्के तुन्य सीतिने। एसे अनन्य भ
क्तमानको नाहीं हैं स्वोन। जिन्ना ह सेन चाहिके
स्वहिसिध्यतो अत्र तपवृत्ति समस्त वाद्दिष्टदि क्रियतः
॥ यात्रा अथ अव नी हरिरायजी कृत।

नकरतहैं जो इमनकारिकेसर्वोपरश्रीकृष्णतिनकी
ाही प्रीतिपूर्वककर्तव्यहै सोश्रीभागवतमेंकहेहैं
ह्लादवाक्यो नदाननतपोनेत्यानसोचनवृतानिच
ीयते मलया भक्त्याहरिरन्यद्विडंवनं ।१। उद्धवजीकहे
दानव्रततपोहोमजपस्वाध्यायसंयमैः श्रेयोभिर्विवि
धैःशुभैर्भक्तिर्हिसाध्यते ।१। एकादशस्कंधमेंश्रीकृ
ष्णचंद्रकहेभक्तियोगेन मद्भक्तो लभतेंजसा स्वर्गा
पवर्गं मद्धाम कथंचिद्यदिवांछति ।१। यांभांतिश्रीकृष्णकी
भक्तिसर्वोपरहै दानतपसोंचजो क्रियासत्तहोमजप
स्वाध्यायसंयमः इत्यादिरसिकीभक्तिविना विडंवनाहै
सगरेतातेनिष्पक्षहोइश्रीकृष्णचंद्रकीभांतिसुवाही
मनलगाइकैकर्तव्यहै योइहोहमारेआगेवर्तमान
हैं जो जो हमकोजीतहैं [illegible] लिखायसो विसखारिहूस
[illegible] जानोगे पाला [illegible] श्रीविठ्ठल
पत्रमेंलिखेहैं सोवाचिकेजानोगे [illegible] तिनतोलिखो वि
प्रमोदो सस्यामदाससहस्थितः तत्रत्यवृतांतोलिख्यो
[illegible] श्रीगोकुलनाथ
लेख्य किमधिकं ॥ पा [illegible] स्यामदाससहि
पुत्रश्रीविठ्ठलरायजीतिनकोदासस्यामदाससहि
तैसमस्तसेवकवैष्णवयहसमाचारजानोगेप्रति
[illegible] अखिलसमाचारकहावेहो
विजारसहितलिखोगे किमधिकं [illegible] श्री [illegible]
य सोसवेलिखोगे [illegible] की [illegible] श्री [illegible] प
[illegible] न [illegible] हो [illegible] सवकउपरवकहेजोयहपुष्टिमार्गमें
[illegible] स [illegible] कर्तव्यहै सो
कृष्णकीसेवासर्वोपरहै सोमन [illegible] कहतहैं श्री [illegible] प
सवकरतहो परमभागपहै सोश्रागोकहतहैं [illegible]
रापकारोदेस्वदुखबिलि निवेदनं मत्तराक्षेचालितेसु
गोबुमवस्तुव ।१। या [illegible] श्रीहरिरायजीआप
हैमार्गश्रीगोपेश्वरजीसोकहतहैं जोमैंआपनोइस्व
दूराकिवेदनकरतहो काहेतेंतुमसवेलायकहै

प्रियभातासों। तातेंदुखसुखतुमकोलिखो। ओरदूसरोकिनसें
कहों। ओरतुमदूरिहौ जोपासहोतेतोदुखमेंसहायहीकरते
ओरमोकोदुखदीनहोतो तुमारेसंगतें तातेंयहपत्रद्वारामे
रोदुखजानोगे महातरगसीहै आसाजाकी ऐसेभगव
दीयमेरेपासतेंअपनेकार्यार्थचले। सोइगायेमोकोछो
डिकें अबउनकेमिलनकी आसामोकोनाहीहै ओर
तुमहूंइहांतेंदूरिहौ तातेंपत्रद्वाराआपनोदुखलिखेहों
वावाचिकेंसमाचारजानोगेजी। रास्तोय। तानामिति,
नमार्गस्थधर्मकिंचित्समावस्थातनदासिद्धिं नहल्के
तांकोसेदूरिकरिघ्यति।। याको अ ऐ।। श्रीहरिरायजी
करतहैं जोश्रीआचार्यजीश्रीगुसांईजीकीकृपावरन
तोकिंचित्कछुथोडोसोअपनेयहनिजमार्गपुष्टिमार्ग
कोधमेंसिद्धिनभयो। काहेतें परमभगवदीयसो तो अप
नेकार्यार्थपरदेसगये। ओरअबयहदुर्दसाहोयके
यहपुष्टिमार्गीयधर्ममेंसर्वोपरसोसिद्धिभयो। ताके
खिमेरेहृदयमेंअत्यंतदुखक्लेसभयोहै। सोयह
कलेसमेरोदूरिकरोगे। सोमोकोजानिनाहीपड
तकाहेतें मैंसर्वसाधनसुधर्मकार्यरहितहों
ओरअनेकदोषभरयोहों। तातेंमेरेदुखदेखिकेंमे
रेदुखक्लेसकोदूरिकरोगे। तातेंमेरोधीरजहृदयमें
नाहीरहतहै अपनीछांहदेखिकेंडरपावतहों
ब्रजमेंवसोहों सोआपोंकहतहों। सोसो माय
पारखंडमुख्यहें हरिरायहूहैं चितितिनां। कृपापात्रपरमपु
रूपामेंकुरतेहीनवस्रस्वः। रुः याकोअवया। श्रीहरिरा
जीतिन्पताहोयवेकेरतहूंया। अपनेसेवकनकोपुष्टि

अपनेमुख

सोकहाकहों।

कोपाखंडीयाकोसुखियाजानतहैं काहेतें हरितो
सर्वदुखहर्त्तापरमदयालदीनवत्सलहैं तअमेरीउपे
क्षाकीनीहैं तातेंमेंजानतहों जोमोकोमहापाखंडी
जानिकेमेरीउपेक्षाकीनी मेरात्यागकीयोहै सोअव
मेंकहाकरूं याभांतिदैन्यकर्त्तव्यहै सोश्रीगुसांईजी
कहेहैं चिंतनेदुष्टोवचसापिदुष्टकोहंनदुष्टक्रिया
वदुष्टः ज्ञानेनदुष्टोभजनेनदुष्टोमन्मापराधदिनधा
विचार्यः १ सोतामेंमेंदभागपोहंयथैगोकुलेश्वरः
नलेके शास्त्रहितुस्वंस्वभावंकुरुनेत्पथा २ श्रीगुसां
ईजीश्रीगोवर्द्धननाथजीसोंकहतहैं जोमैं चिंतकरि
केदुष्टहों वानीकरिकैंदुष्टहों कायासौंकरिदुष्टहों
क्रियाकरिदुष्टहों पाखंडीतिसौंदुष्टनासोंहनवत्त
हों ऐसोमेरो अपराधकहांताईविचारोगे तातेंअपरा
धमतिविचारो औरमेरोपरमसमदभागपहैं सोमैंयातें ज
नोहैं गोकुलेश्वरयहैसधानजो आपतें गायगोपगो
पीसमेतव्रजकीरक्षाकरीहै तुमहीगोकुलकेरक्षक
प्रभुहो ऐसोपरमदयालतुमारोस्वभावहै सोछांडि
दीमाक्योंसमनोजोभक्तनकेक्लेसन्यबुसहनेलागे
सोतुमईश्वरहो केतुंअकर्तुमन्यथाकर्तुंसर्वसामर्थ्ययुत
हो तुमचाहोसोकरो तातेंतुमकोंकहाकहियें मेंमंदभा
गीहों जो ऐसो अबतुमकोभयो आपनोउहदयाल
स्वभावफेरिमेरेलीयेतुमकोंकठोरहोनोपर्यो भक्त
केदुखकोसहनेलागे याभांतिदैन्यपुष्टिमार्गमेंसाध
नहै भगवदीयनके एगारेहैं होपतितनकोराजा
होपतितनकोईस होपतितनकोनायक इत्यादिहैं
न्पकरिजीवनकोस्वरूपप्रगटकीए सोभगवांनसों
नाहींपडेनयहस्मरि तातैंश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुकहेहैं जीवोस्वभावतोदुष्टइतिवचनात्

याभांतिश्रीहरिराइजीश्री आचार्यजीश्रीगुसांईजीनि
भाव चतुसारकरत हैं जोसे पाखंडीमें मुख्य हो ये
सोमोको अभुयपने चितमें चिंतन करिके जद्यपि श्री
हरसदयालहैं कृपालहैं दीनवत्सलहैं तऊ मेरीउ
पेक्षाकीये हैं न हो कोई कहै जो प्रभुजो श्रीवल्लभ तो
भक्तकी उपेक्षा नाहीं करतहैं यह साक्षपुराणगीता
भागवतगीतामें प्रसिद्ध हैं और तुम मतें कैसें जानी जो
मेरी उपेक्षा याभांतिकिऊ भांति उनस्कार न होत करतहैं
श्लोक ॥ उपेक्षितस्य हरिणा नहीं येर्युपेक्ष्यते अन
क्याम्यसरणं कस्यचविश्वसंतार्थया ॥ अर्थ। श्री
श्रीहरिराइजी कहतहैं जो मैं याते जान्यो जो हरि भगवा
न मेरी उपेक्षा कीये हैं जो मोको पुष्टिमार्गीयत्वही यमोको
ज्ञोठिदीए सो मैं आगे वडे नके श्रीमुखद्वारा शास्त्रत्यनी
सुनी है जो भगवान प्रसन्न भए ऐवकजीनि यें जूकभग

अवक्किन्कीसरनकरू

सदैं तुमप्रभुको टोयछ्ठराये

प. कोपाखंडीयाकोसुखियाजाननतहैंकाहेतेंहरितो
१० सर्वदुखहर्त्तापरमदयालदीनवत्सलहैं तऊमेरीउपे
क्षाकीनीहैं तातेंमेंजानतहोंजोमोसोमहापाखंडी
जानिकेंमेरीउपेक्षाकीनी मेरात्यागकीयोहै सोश्रव
मेंकहाकरुं याभांतिदैन्यकर्तव्यहैं सोश्रीगुसांईजी
कहेहैं चित्तेनदुष्टोवचसापिदुष्टःकायेनदुष्टःक्रिया
वदुष्टः ज्ञानेनदुष्टोभजनेनदुष्टोमूमापराधदितिधा
विचार्य १ सोनामनिवेदभाग्योहैंयथैगोकुलेश्वरः
नत्वेवेयास्त्रहिसुर्देस्वभावंकुरुतेतथा २ श्रीगुसां
ईजीश्रीगोवर्द्धननाथजीसोंकहतहैंजोमेंचित्तकरि
केंदुष्टहोंवानीकरिकेंदुष्टहोंकायाशरीरकरिदुष्टहों
क्रियाकरिदुष्टहोंपाखंडीतिसोंदुष्टनसोंहेतकरत
हों एसोमेरोअपराधकहांताइविचारोगे तातेंअपरा
धमतिविचारो श्रीमेरोपरमसमर्थभाग्यहैं सोमैंयातेंज
नायोहैं गोकुलेश्वरयहसमर्थाजो आपतोगायगोपगो
पीसमस्तव्रजकीरक्षाकरीहैं तुमहीतोपुत्रवकूरलक
नभूहों एसोपरमदयालुतुमारोस्वभावहैं सोछाँडि
दीयोकहांहोभरेजोभक्तनकोक्लेसअसहनकरोगे
सोतुमईश्वरहोकेतुम्हेंकहुअन्यथाकर्तुंसर्वसामर्थ्यपुन
ह तुमसाहासकरो तातेंतुमकोकहाकहियेमेंमेंश्रा
गीहों जोमेरेश्रमतुमकोभयो अपनोउहदयाल
स्वभावफेरिमेरेतांईतुमकोकठोर होनोपर्‍यो भक्त
केदुखकोसहनकरनहारो याभांतिदैन्यपुष्टिमार्गमेंसाध
नहैं भगवदीयदैन्यकारणहैं होपतितनकोराजा
होपतितनकोभूप होपतितनकोनायकइत्यादिदै
न्यकरिजीवनकोस्वरूपसरणकीयो सोभगवानस्वभा
न्यारपडेनवदछमाहै तातेंश्रीआचार्यजीमहा
प्रभुकहेहैं जीवोस्वभावतोदुष्टइतिवचनात्

इतनी श्री आचार्यजी श्रीगुसांईजी वि
अनुसार करत हैं। जो मैं पाखंडी मैं मुख्य हौं औ
तैसे चिंतन करि कै जद्यपि श्री
याल हैं कृपाल हैं दीनवत्सल हैं। तऊ मेरी उ
पेक्षा की है। नहीं कोऊ कहै जो प्रभु जो श्री हस्त तो
की उपेक्षा नाहीं करत हैं यह सास्त्र पुराण श्री
भगवत गीता में प्रसिद्ध है। और तुम तें कैसें जानी जो
मेरी उपेक्षा या भांति कोउ प्रति उन स्वरं नहीं कहत हैं
श्लोक ॥ उपेक्षितोऽपि हरिणा नदीयेऽस्यानुपेक्ष्यते। अन
न्ययासि स्मरणं कस्य अद्य विक्षता भ्रमया ॥ अर्थ। श्री
श्री हरिराय जी कहत हैं जो मैं या तें जान्यो जो हरि भगवा
न मेरी उपेक्षा की है जो मोको पुष्टिमार्गीय तदीय मोको
छोड़ि रहे। सो मैं आगे वडे नके श्रीमुख द्वारा शास्त्र वानी
सुनी है जो भगवान प्रसन्न भये विना जानिये जव भग
वदीय मिलाप होइ और भगवान उदासीन भये विना जा
निये जव भगवदीय छोड़ि जाइ ता तें मैं जानत हौं जो मे
री भगवान उपेक्षा करि मोको छोड़ि गये हैं तो अव मैं
काह करूं कि नकी सरन जाऊं यह चिन्ता मोको वडी हृदय
में भई है जो भगवान भगवदीय दोऊ मेरी उपेक्षा की
ये अव किनकी सरन करूं सो जैसे कोई गामी वन में
भटकि पड़ै तव तिनकी और जाइ कहूं गैल सूझै नाहीं
तव वड़ी चिन्ता होइ तैसें मोकों चिन्ता वहुत भई है तु
हांको कहै जो प्रभु ने उपेक्षा करी तव भगवदीय हू उपे
क्षा करि छोड़ि गये तो यह दोष तुम प्रभु ही को तु मक्त
न तें हो सो यह भक्ति मार्ग की रीति कहत हैं प्रभु ना किये
वहैं तुम प्रभु को दोष कहा ये या भांति कोई कहै नहीं
कहत हैं ॥ श्लोक ॥ प्रभोरपि न्य वे दोषो गुणत्वेनैव कि
तो मपि विस्मृत्य दोषं निश्चयं ग्रहीयाद्

भ.पा. श्री हरिरायजी कहत हैं जो प्रभु को दोष नो रं
७१ चक हू नाहीं है यह सगरो दोष मेरो है जो मेरे में गुण को ले
स हू नाहीं है और दोषन ने सिखा पर्यंत मेरे में भर्यो है
सो अपनो दोष में बिसरि गयो हों और गुन नाहीं है सो
आपने को महा गुणवंत जानत हों यह अपराध मे
रे में है सो मेरो है सगरो दोष है और प्रभु तो सदा गुणरू
प हैं सो या को अज्ञान करि भुलायो है अब और हू कह
त हैं ५ ॥ श्री हरिरायजी कहत हैं जो जैसे सुं
दर भेष आभूषण वस्त्र पुरुष को पहराये और वह पु
रुष को श्वास नाहीं है तब वस्त्र आभूषण वस्त्र पुरुष भेष
वृथा है श्वास बिना प्रेत समान है सुन्दर ताहू वृथा
है तैसें ही भाव बिना सेवा कथादि भाव कों कहा सो
जो भाव नाहीं है ताते भाव को सेवादिक कथा कहा जे
से पुरुष को प्राण श्वास होय तो भेष सब आछो लगे सो
श्वास बिना वृथा है ताते भाव होय तो कथादि सेवा
दिक रस को अनुभव होय भाव बिना क्रिया वृथा
से कहा सो या में भाव नाहीं है अब जीव द्वारा आपुने हु
कहत हैं ताते भाव को कछु कहत नाहीं है कछु ना
ही ताते भाव को दुर्लभ कहत हैं अब और हू कहत हैं श्लो
क यथा यैवं नैषा मति यावति निष्टत्तिनो हरि नवानुभाव
कुरुते निजं मार्गाभिधं मपि ७ या ॥ ताते जी
व श्री हरि की कथादि सेवादि सें यह जीव नाहीं थि
ति है तब भाव हृदय में कहा ते ति श्ये भगवदीयद
र्शन करे तब हृदय में भाव सिद्ध होय सो श्री भाग
वत द्वितीय स्कंध में श्री शुकदेवजी कहे हैं श्लोक प्रवि
ष्टः कर्णरंध्रेण स्वानां भाव सरोरुहं धुनोति शमलं कृष्ण
सलिलस्य यथा शरत् १ सप्तम स्कंधे शुक वाक्यं त
स्मात् सौविंद माहात्म्य भाव दर्शन सुंदर श्रण्याक्की

तेयेनित्यंयत्कृथोन्संशय ॥२॥ इतिवचनात् भग
वानकीकथाकैसीनिर्मलहैजैसेंगंगाजललावे
तेय आसपासके सबपवित्र होइ तैसेंहीकहैकहावे
औरजोसुनेपाछेंअनमोदनेकरेसोसबसुद्धहोइ ता
तेंश्रीहरिरायजीकृतहोतत्याश्रवनविनाहृदयमें
भाववैसेंतिष्ठे सर्वथानतिष्ठें औरजहांनहांलौकिक
देहसंबंधीकार्यमेंतेमनकोत्यागनहोइ तहांताईश्री
कृष्णकेस्वरूपकोअनुभवकहातेंहोइ ताहीतेंमनक
रिकेंभावसिद्धहोइहैसोमनतोलौकिकसंसारादिमें
व्यावेसभयो अनुभवकहातेंसिद्धहोइ सोसंन्यासनि
र्णयमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं विषयाक्रांतदे
हानांनावेशःसर्वथाहरेः जाकीदेहहृदयमेंविषयादि
कीभावनांकामनाभरीहै ताकेहृदयमेंभगवदावेस
कहांतेंहोइ सर्वथाहीनहोइ सोमेरेमेंमननोकछुलौ
किकवैदिकत्यागनाहीहैं ताकरिअनुभवकहातेंहोय
अक्योरहैकहनहैं श्लोक ॥ सेवानुप्रतिबंधोवाभोगो
माद्दिनाथकेगेह विनाहिकोशांतिकथंसामानसी
सेवा यथाकोअः ॥ औरभगवदसेवाननुजाकिजा
हीमेंअनेकप्रतिबंधहैं सरीरइंद्रियकेविषयकीकाम
नाउठेतबसेवाकरतमेंउद्वेगहोइ जोअबसेवाकरिलु
कोपीछेंखानपानकरूं याभांतिप्रथमविषयादिकवि
भोगकीकामनाहीइ तबमनमेंउद्वेगहोइसेवामेंम
ननलागे तबप्रभुकोबुरोलागे तबप्रतिबंधहोइ
जामेंसेवाहीनबनिआवे तबरसादिकार्यवितइ
आदिकमेंआसक्तिहोइ तबमानसीकहांतेंसिद्ध
होइ सोस्वापकरनमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुकहेहैं
उद्वेगःप्रतिबंधोवाभोगोवास्यात्तुबाधकं इतिवचना
त् देहसंबंधीखानपानविषयभोगासेंसावासक्तिप

हसेवामेंबाधकरैं उद्धावरावतहैं तवतनुजावितजा
सेवानभई लौकिकसंसारासक्तभयो तबमानसीय
कौंकहातेसिद्धहोइगी सोयाप्रकारमेंलौकिकभोग
मेंआसक्तहूहैं तिनकौमानसीतोपरमदुर्लभहैं तनु
जावितजासेवानाहीसिद्धहैं॥ यामेंश्लोकहूकहतहैं श्लो
॥ तातपादसुतातेषुदुर्भगस्यपराहतः॥ तत्सुसर्वे
सुयातेषुहसोऽहसमहंस्थितः ॥ ९॥ या श्लो॰ श्रीहरिरा
इजीकहतहैं जोमेरीयहअवस्थाहैं तातेंश्रीआचार्य
जीश्रीगुसांईजीतथाश्रीगोकुलनाथजीतथाश्रीक
ल्याणराइजीयेहमारेपितृसमानहैं श्रीआचार्यजी
मार्गप्रगटकर्ता श्रीगुसांईजीयहपुष्टिमार्गकेप्रकाश
कर्ता यासतेवल्लभकुलतथाहमारेपुष्टिमार्गीयवै
ष्णवपिताहीहैं यहभावश्रीगोकुलनाथजीद्वारानाम
निवेदनभयोहैं सोमेंगुरुचरणपिताहीहैं औरक
ल्याणरायजीहमारेपितातिनचरणजगतप्रसिद्धहैं ताते
मेंतातचरणजगतप्रसिद्धहैं तातेमैंतातचरणतेन्या
रोदूरिपरयोमोकोपरोहतहैं सोयासमयमेंयादुःखमेंमेरी
कौनसहायकरेगो तातेमैंवडोदुर्भागीहूं मेरेभागफू
टभयोहैं औरसततजोतुमसगरीवस्तुकेजाननवारेहो
तथापुष्टिमार्गीयभगवदीयसर्वगुणयुक्ततिनदू
तेमैंदूरिपरयोहूं तुमतें दूरिस्थितहौं भगवदीयहमा
तें दूरिस्थितहैं सोअवमैंकहाकरूं तातेयहजानतहौं
जोदूरभयोहौं यादुःखमेंमेरेपाससतपुरुषकोऊनाही
है जोमेरोरंचकउसमाधाननकरै तातेमैंकहाकरूं दुःख
रूपावतहौं अवश्लोकहूकहतहैं श्लो॰ श्रीभागव
तचिंतामुनिविनाश्रातःसतां मनस्थोत्पनविह्व
लानबाधराणभावनं १०॥ याश्लोककोअर्थ श्रीके
हेजोतुमतोवडेसज्ञानहो सत्संगनाहीहैं तोकहा

भयो। श्रीभागवतको अवलोकन करौ। ताई करिकें स
कल चिंता दुःख क्लेस दूरि होइगो। या भांति कोई कहै तहां
श्रीहरिराइजी कहत हैं जो ताको यह चित्त होय तव श्री
भागवतकी खवरि पड़ै मनतो में चिंता क्लेस करिकें दु
खित हृदय होय रह्यो है ताकुं श्रीभागवतको भाव
मालो कहांते दीसेगो। और ताहूसी भगवदी सतपुरुष
होय वे श्रीभागवतको भावरूप करिके देखता वे तव
जान्यो जाय। अरु जो में हूंसि हृदय चित्त युक्त श्रीभागव
तमें कैसें होइगो। संतोष नहां कोई कहे जो हरि दीअर
न की भावना करौ। श्रीआचार्यजी महाप्रभु विवेकधै
र्यमें कहे हैं। अंसके वा सुखके वा सर्वथा सरणं हरि।
तथा भगवद्गीतामें भगवान् अर्जुन प्रति कहे हैं सर्व
धर्मान् परित्यज्य मामेकं सरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपा
पेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः। या भांति सरनकी भाव
नाते सगरो कार्य सिद्ध होइगो या भांति कोई कहै तहां श्री
हरिराइजी कहत हैं जो मेरे मनमें अन्यत विक्षेप होय
रह्यो है ताकरिकें सरणकी भावना कहांते होइ १४ अव और
हूं कहत हैं। श्लोक। ज्ञानांतरस्तिप्रेमाणा अथाहूतस
नोजय: महत्त्वमत्यज्लोकानां अपत्यास्य नासन
११ या ... अ ... नहां कोई कहै जो औरन्कूं तो येथार

१५ हृनो अपराधको जपनाहीवनततोदैन्यभाव
१३ करोनोनाहीकरिप्रभुप्रसन्नहोइगो सोश्रीआचा
र्यजीकहेहैदैन्यतेहरितोषयांस्वदीयनोभगवानसे
वपालैयाभांतिकोउकहैनहीकहतहैजोलौकिकमें
लोगानमेंअपनीमहत्वबडाईहैतामेंपरममता
जोमेंबहुतसमझतहोमेंमेंबहुतअधमहुंताकोदैन्य
ताकोनासहैसोलोकनकीबडाईपरमहत्वतामेंजन्म
नफूल्योफिरतहैताकोदैन्यनतोनासहैसोलोक
नकीवडाईविहमहत्वफूल्योफिरतहैताकोदैन्यता
नासहैतातेंमैंवरावरु अवश्यकहतहैं सो [illegible] ति
वेदनानुसंधानंहि सकलापेक्ष्यंकेवलं [illegible] सर्व
त्यागाभावाच्चदुःखेभ २२ या [illegible] अवकहैजोनि
वेदनको अनुसंधानराखो ताहीकरि सबैसिद्ध है
तहांश्रीहरिरायजीकहतहैं सदाभाति पुष्टिमार्गीय
भगवदीयतिनकोमनतेजिसीया अवनिवेदनको अ
नुसंधानके सेवकरू निवेदनको अनुसंधानके से
करू निवेदनको अनुसंधान [illegible] भगवदीयसों
मिलिवोकर्तव्यहै सोश्रीआचार्यजीमहाप्रभुनवा
लग्रंथमेंकहेहैं निवेदनंतुस्मर्तव्यंसर्वथाताहृशैर
पिः इत्यादिवचनकरि भगवदीयविनाअकेलोमे
केसेंरहो तहांकोउकहैजोकेवलप्रभुकी सम्प्रकरि
श्रीहस्तप्रियमेंश्रीआचार्यजीमहाप्रभुसर्वमार्ग
प्रगटकरि स्मरनसिद्धिकीनीहै सोइकरो याभांतिको
इकहै तहांश्रीहरिराइजीकहतहैं केवलस्मरन
तासवलाविवावे अपनीथर्यनकर्म इत्यादि
सर्वत्यागमनमेंहोइ तबस्मरनहढहोइ सोमेरोमनतोलौ
किकवैदिककार्यमेंलगिरह्योहै सर्वत्यागकोअभावहै
तातेंस्मरनकहातेहोइ माकोतोकेवलश्रीहरिसकौ सङ्ग

त्नपरमदुःखभई हैं तातें मैं कहा करों। अन्त्र वश्री।। हरि,
हैं श्लोक।। चो चेताश्चितनसः खुचदूकस्त्तःनपसात्मयः
ववकधैर्येनद्दुमरवाधीरस्यमेव, था१ अ्यानुत्यव श्री
हत हैं जो मेरो चित्त को विकसैं हम वैधी म,
व्रति चंचल है यरहो है ताकरिकैं श्री कृष्ण कें, प
लमें आश्रय दृढ़ नाहीं है सो आश्रय नाके। स्तात
म हैं आश्रय को साधन विवेक धैर्य सो ऊ सिद्धि
ही हैं तो अश्रय की कहा कहूं श्री आचार्य जी महा
प्रु विवेक धैर्य सो ऊ सिद्धि नाहीं हैं तो आश्रय की कहा
प्रुश्री आचार्यजी महाप्रभु विवेक धैर्याश्रय में तीनों
कारक है हैं सो साधन मेरे मैं कहां विवेक धैर्य सततै
नत्याश्रम: इति वचनात विवेक धैर्य की निरं
तर ताकरिकें तब श्रीकृष्ण को आश्रय दृढ़ है
धीरमें राजा है ऐसो अरु
नैं सिद्ध होइ ताकरिकैं आश्रय
वयोरहू कहत हैं श्लोक।। भावो वस्तुभावे
सिसक्तितः स्नावजभुवक्तस्य चरणौ
स्होस्नता।१४।या कौ अर्थ। अब श्री हरिराइजी कहत
अबको ई कहै जो कहुनाही बने तो व्रजलीला की
ताकरि अनुभव होइगो। या भांति कोई व
तहां श्री हरिराइजी कहत हैं जो भाव को अनुभव को
लीला सामग्री व्रजसंबंधी देखत होय
होते मैं निकासि कैं बाहिर प्रदेश में स्थित हो हा
कै भाव उत्पन्न होय या भांति अपन पेवो निसो
नाकरत करतें दैन्य भयो है न्यात
यो सो है दानुसं
श्री लीला तन्मय होइकै कहत हैं तत: वह
भूमिका राहै तहां श्री हस्तसमारी लीला

पं. ७४

कैसेगकरीहै एसीद्रजभूमिकहाहै व्रजभूमिके ठौरठौ
र चरणारविंदकहाहैं ध्वजांकुशादिसोडशचिन्ह गोप
दि ऐजेयू २ मत्स्य ३ धनुष ४ त्रिकोण ५ अर्धचंद्र ६ त्र्या
कार ७ व्योम वामचरणके चिन्ह है ध्वज १ अंकुश २ कम
ल ३ वज्र ४ साथीय ५ अष्टकोण ६ जव ७ ऊर्ध्वरेखा द
कलस ६ हल गोचरणाकृ मलके षोडशचिन्हसंयुक्त
व्रजभूमिकहाहै १४ अब आगे कहतहैं श्लो० कृपो
ल हस्तत्रासायो पुलिंदी भाव पोषका: हरिसेश्रीयमुना
स्यात्री त्रासविनाशिका १५ या० अब गरुडोलव
हाहै कस्यत्रासरतनको नाम रहै गिरराजजी परसदया
नजो पुलिंदिनी साद्रिकौवै भावको पनकीयो गिरि
राजके संगाते पुलिंदीको भावउत्पन्न भयो ऐसे गिर
राजजी सर्वांगते प्रभुकी सेवाकरतहैं सर्वे ऋतुमें प्रभु
कोसुखदेतहैं गायसुखपावतहैं एसो गिरराजजी कहा
है भावको पोषक अरु श्रीयमुनाजी कहाहैं कुमारी
केमनोरथपूरनकर्ता श्रीयमुनाजी तहांविराजतहैं ए
से कहाहै यमुनाजी कहाहैं सोकहतहै त्री त्रासवि
नाशिकाहैं इनके आश्रयतें श्रीकृष्णकी लीलाको अ
नुभवहोइ एसीश्रीयमुनाजी कहाहै अब आगे कह
तहैं १५ श्लो० इतिवेणुरवायैवो समाकृष्टा व्रजस्थि
ता: व्रजनाथकराभोज प्रोच्छ्रिताखंगवागण १६ या०
अब श्रीहरिरायजी कहतहैं जोयह वेणुको
रव श्रीकृष्णको वेणुनादकरि समस्त व्रजभक्तनकोआ
व श्रीकृष्णको वेणुनादकरि समस्तव्रजभक्तनकोए
सन्मान करतहैं स्थावरजंगम सबधाम सोपूरितहैं
तनमें कृष्ण व्रजकहाहै सर्वोपरि श्रीकृष्ण व्रजकेनाथ
आपने कराभुजसोपोछतहैं सगरीगाइनकोसुख
देइ पालनकरतहैं एसीगायकहाहै अनेकमाय

केगुणसमहस्योंहसहितयोवहाहैअवओर क
२तहेंस्लोक। अनंतलीलाधारास्तेगुना: क्वचिपिन
।विनुनादपरायसभुजादद्युधयास्तिणा।२
अनंतजीलाजहाभक्तनकेसगआहिलकरतहैं।
वृदावनकेकुमसुंदरनामेतेवेनुनादमुनिमधुकी
राअवतहेंरसेवृहत्कहाहैओरवेणुनादके
रनमेंपरायणपक्षीव्रलादिकीसाखाभुजादप
परआरूढहोइवेठेहैंअपनीचंचलस्वभावत्यागके
नकीनाईवेठेहैंऐसेपलीकहाहेसोजुगलगी
जस्थरूजेभक्तश्रुतिरूपाकुमारिकीसगरेहिन
तजुगलगीतगायगायकेनिर्वाहकरतहें।।
तोगविहगापुनयोवनिस्मिनक्षणलदु
करवेणुगीतोग्भारुद्यपेदुमभुजानरुचिरप्रवार
एवंति मिलितादृशोविगतान्यवचा।धिया
तगावतहैताइभावमेंश्रीहरिसाइजीमगहोय
भावनाकरतहें अवश्रीओरहूकहतहेंस्लोक
चरणाभोजरेणुचक्रध्वजस्थिताहृधिनि
हेनेश्रवणमंगलाधीयावोश्रये। २
इजीकहतहेंजोव्रजस्त्रीकेचरण
वजमेंस्थितिहेंसोमोकोवहाजेसेउद्धवजी
।आसामहोचरणरेणुजुषामहंस्यातवृंदा
गुल्मलतोषधीनाभाग
त्याभेजेमुकुंदपदवीश्रुतिभिर्विमृग्या।
होयकहेंओरप्रात:कालदधिमथन
नकोपरममात्तरूपसोकहेहे
लोकागोपोसमुत्थायनि
न्यथदधिन्यमंथानांत
गुरजोविकमकुजेकंका

व. वसलन हाकुंडलतिपत्कपो लाहलकुंकुमायलो उ
५ ष्टीपतीनामराधिकहृदौ दधेनेत्र गागनादि वनसंपत्त्या
धनिमिषदृष्टि मग्न निमेष याद सिध्यतो निरखत तेपे
नदी साम मंगल येप भावै मैं मग्न हे श्रीहरिराय जी
कहत हैं । अथ श्लोकार्थं कहत हैं श्लोक में यमुनावा
लुका देह संबंध: कुलजल संस्पर्शे: वृदमुखि लसात ते
तदीय लच्च महतः ॥२॥ ... अथ श्री हरिराय
जी कहत हैं जो श्री यमुना जी की वालुका कहा है ए
सी वालुका के संबंध तें स्पर्श जो कि कहत है य तथा
श्री यमुना जी के जल परमलीला रस संयुक्त स्प
र्श जल ता तें जल और वालुका के संबंध तें स्पर्श लो
कि कहत हैं सिद्धि होइ सो जल और वालुका कहा सो
श्री गुसांई जी यमुनाष्टक के पद में कहत हैं नवनग
त वालुका संकुलानि जो गायगनामुदा करि ... य
लीलानुसार भाव सिद्ध भयो है या भांति व्रज की ली
ला को अनुभव विप्रयोग भाव सो कारिपौ है न्यव रत
है जो सें निरंतर वह सुखदी होत नाहीं तें मोको पुष्टिमार
गीय भगवदीय को मिलाप सो कहा ...
व तदीय के संग तें सिद्धि होइ सो तदीय तो जहां यह
भाव की जो पंता होय तिनके संग स्थिति होत है मै
सें तत वह सुख होत नातें मोको भगवदीय को मिलाप
कहां ... अथ श्लोक कहत हैं श्लोक परमानंद रूप
... पोषक भाव को ... दृढ लो
चार्य ... परमानंद श्री गोवर्धन
... श्री विट्ठलनाथजी पुष्टिमार्ग में
परमानंद रूप श्री ... रसात्मक सेवा है ऐसे श्री वल्लभ
... मेरे चित्त में निरंतर दुखा रहित हैं
दृष्टि सो ... नाके संग होय एक मेरे मन भाव

नाहीहैं औरहूसोकोऊ भगवदीयके भावके पोषनकू
तोहूनाहीहैं औरश्रीवल्लभाचार्यजीके चरणकमलको
हृदयमें आश्रयमोमेंनाहीहै ताकरिकैंमेनिरंतरदुःखीपा
वतहों अबश्रीहरिकहतहैं ॥१०॥ श्लोक ॥ विषयाभिनिवेश
नपैहाणणविशतिप्रभो ज्ञातोश्रिशामत्तसर्वसाधनाभ
ववान्॥११॥ याको अर्थ ॥ श्रीहरिरायजीकहतहैं मेंके
सोहों विषयावेशकरिकैं नगाईं सोप्रभुमोको विषया
वेसदेखिकैं मेरेहृदयमेंनाहीवासकरतहैं सोश्रीआचा
र्यजीमहाप्रभुसंन्यासनिर्णयग्रंथमेंकहेहैं विषया
क्रांतदेहानांनावेशःसर्वथाहरेः याको अर्थ विषयको
आवेशदेखिकैं प्रभुहृदयमेंनाहीस्थितहोतहैं औ
रविषयकेआवेसतेंदर्शनकीइच्छाआतिनाही
होतहै तोप्रभुहृदयमेंकैसें आवेंगे याबातिसर्वसाध
नकेअभावकरिकैं तुमारेस्वनसुखमेंनाहीआयस
कततांकरिकैं भावकहांतें सिद्धहोय तातेंमेंविषया
वेशीसाधननकरिरहितहों भगवद्भावकोलेसहूमे
रेमेंनाहीहै अबश्रीहरिकहतहैं ॥१२॥ श्लोक ॥ निःसाधनत्वे
भावेनुविद्यमानेप्रयोजकं तद्भावंकेवलंयेसोयायेव
नचान्यथा॥१२॥ याको अर्थ ॥ मेंकेसोहूं श्रीहरिरायजीक
हतहैं भावविनानिसाधनहोयवेगो सासारसत्कार्यभ
गवद्धर्मेहूं छोडिदीयोहैं सोऔसोनिःसाधनअप्रयोज
कहैं जोमोमेंकछुसामर्थ्यनाहीहैं सोप्रसिद्धहीजगतमेंदि
ख्यातहैं भगवद्धर्मसंसारीनाहीकरतहैं सोवहांनिसा
धनहैं तैसेईऔरसंसारीकीनाई लौकिकसत्तिनिसाध
नमेंहूहों ताकरिकछुसिद्धिनाहीहै कारणतें जगतमें
कोऊस्वतकमेंसेवाश्ररण प्रभुकीनाहीकरत तातेंव
हनिसाधनहैं तातेंभगवानमेंतद्रूपतस्भावभगवि
नासत्कार्यछोडे सोकेदलदोषरूपहीहैं सोएसेमेंहूं

न नाथ्या वनाय कै नाहीं करनलौं ॥ गयो है वरूप मैं ही
नेमि मैं भाव है नाही है ॥ स्या कै और हू कहन है लो
क ॥ सखी रेनाथ्यू सनाथ्य क्रिया को नाथ सेनानी यथा
यो वधिरी मकौ विलल : प गुसुन नार श्या कौ प्र
सखी में सामर्थ्य है य तो क्रिया कौ विकच लौ विक
वनै तै से भाव विना पकल साधन जु होय है ताकौ दृष्टा
त कहत है ॥ ते सै अंध है सो कौन प्रकार हैं सो ॥ औ रव
कहा सुन ॥ और गूंगो कहा बोलै ॥ और हस्त विना क
क्रिया करै ॥ और पग विना कैसे चलै ॥ तैसे ही उनमत्त
जो है उन भाव सो रहित : क्यो कि कासा क्रिया भा
प्रकार पावै ॥ यत्न करे ॥ भ और भाव वि
य फल कौ सिद्धि नाही है ॥ सो भाव ही पगारो है ॥
नगरो ॥ भजि साधि भाव भाव विवश्वा ॥ कोटि साध
को उन ऊन भाने सेवा ॥ र धूम कै नदु मार मार गयो ॥ वो न
मारगामी ति पुरुष ते ते भाव जय जो सवै वलटी री
ति ॥ वसन भूषण पल हि पहर भाव सो स्या ॥ उल
टि मुद्रा रंग कौ नि च वस्त्र घे है ॥ या ॥ वे स विधि कौ ने
म नाही प्रीति कौ पहचानि ॥ हे जब धुन स कछी ॥ मोहन
सूर सवै सु जा न्यो ॥ या प्रकार भाव ही ते सब सिद्धि है ॥
सो मेरि मे भाव कौ लेस नाही है ॥ ताते मोको कछु हू सि
नाही है ॥ सो मेरे में भाव कौ लेस ना ही है ॥
कछु हू सिद्धि नाही है ॥ सो ॥ आ ॥ यवका ॥ नका ॥ भविलसो
हरि ॥ ण ॥ पेल नो भवे ॥ विस गामि सहस्र नका ॥ नि मे
विस्या ति ॥ र ॥ अयाता ॥ न्यायो ॥ भगवद का
मनोरथ प्रभु स्वा सं बंधी ता कौ रिराहित है ॥ प्रभु की
सेवा कल्याण हू मन में मेरो ना ही लागत है ॥ यो र लौ किक
मना विषया रि न था तै देह वे भरण पोषण मे देह सं ब
धी भरन पोषन में पद है ताको र सित है ॥ ता कर हि

रिजोश्रीकृष्णसोमेरीउपेक्षाकीएहैं।मेरीबुद्धिनाहीलेन
हैमैंमहादोषकोसमुद्रहौं।तातेंमेरोत्यागकीएहैं।और
प्यकहोयसहायमेरेऐसेहैंसर्वोपरभारीहैं।तातेंप्रभुमोकोछो
ड़िसोसतजनजेभगवदीयहैंसोसदाऐरवाभावकरि
केंरहितहैं।जैसेंविभीषणकोरामचन्द्रनेपरसोप्रहारकी
योतऊविभीषणविनतीकीयो।भलीबातकही।औररूप
दासनेंश्रीगुसांईजीकेदरसननांहीकीयो।परंतुश्रीगुसांई
जीरूपदासकोंभरतोईकीएरहेतीतिसोभगवदीयरहे
तोप्रभुप्रसन्नहोई।सोमैंभगवदीयकीरक्षामेंतत्परहोंत
तेमेरोत्यागप्रभुकीएहैं।सोअबमैंकहाजाऊं।औरकहा
करुं।अबमेंकोनगतिहैनदारहे।यहकहिकेदुखमेंरहे
अबऔरहूकहतहैं।।१।।श्लोक।विरक्तवेषेणस्माक
मधिकारस्तुतापुनः।कृतंयुवतिवशेनकायमेकमनी
ष्यां।।२।।श्रीयाकोअर्थ।भगवद्धर्मसंबंधीरूपवनामेरेरह
यमेंवीहोतहतो।औरलौकिकवरावहूरवआयवेंप्राद
भयोहैं।सोकहतहैं।जोहमारोअधिकारीविरक्तवेराग
गतमेंनावीबहुतबडाईहै।औरमेंबहुतहूपापपात्रहो
निवेंवाकोसंगकीयो।अपनेपासराख्यो।सोविरक्तअधि
कारीकामनीजोपरस्त्रीकोदेखिकेंमोहितहोतभयो
सोपरकलिमेंयुवतीमहामोहनीहैं।काहूकोधीरज
ज्ञानविवेकराखतनाहीहैं।तातेंयुवतीवसअधिक
सीहोतभयो।अथवाविरक्तहोइकेंअधिकारलीयो।ता
करिकेंयुवतीकेवसभयो।कामहृदयमेंबढतभयो।अ
वऔरहूकहतहैं।श्लोक।कस्माविस्तरनियामविघ
वायास्वसामान्तोदुष्टेनस्थापितोगर्भःपतितस्यन
थीयहश्लोक।२।श्रीयाकोअर्थ।याप्रकारयुवतीकेवसहो
इकोईकालमेंसमयपायसंबंधकरतभयो।सोवाको
ईयहबातकोजाननतनाहीं।सोवहविधवास्त्रीके
संताविषयहोनभयो।सोवहस्त्रीकोगर्भरहियो

प.
७

नाकरिकैंवहस्यौ ओरमेरो अधिकारीमहामनमेंदुखी
भयो जोअबकेसीहैदुरीपाछैं औरअधिनकरिहोउ
सिलिकेंगामगिरावनभये सोयहवातसबठौरप्रसिद्ध
नाहिंहैंसबकों आवनभए अबयोरहूंकहतहैंसो
मरणाचोभयोमध्येकस्यचित्स्यान्तसेंगयो प्रले
नप्रेमजीनाम्ना महापतिर्निवारिना ॥ या अर्थ श्री
ठाकुरकेंगामगिरायो सोमनवृहोइकेगिस्यो नाकरि
केंराजमेंहाविमयो खबरिभई सोमनुसमानदुखही
नभयो याहुसमयनाही ओरकहांताईमेंलिखों सोप्रेम
जीविसबमेंसंगरहतो सोअनेकयत्नकरिकेंमेरीआपु
तदुखनिवारनकरनभयो राजद्वारको समाधानकी
यो ओरमेरोऊ सानुकरिसाधनाकीयो सोजानोगे अब
ओरहूंकहनहैंसो विश्वासःकस्यकर्त्तव्यइतिखिन्न
मनोमम:यद्धकार्येनचलन्तिमनुष्याणांमभावतःस्व
या अर्थ नातेंअैसीवातरिखिकेंअबकोविस्वासको
नकोकरिये सोविपदुखसंबंधकेनीरायस्यकोछो
डिविनममानीवकेंसबकोंमंगवायों तातेंतोयहा
तिहैमभई अबकोंनकों आपनेपासराखिये अबको
नकोविस्वासकरियें सोमनुष्यमिलतनाहींहैं सोय
हवडोईदुखहै परहमसेंजान्योमनुष्यचहियें सो
मिलेनाहीं ओरविस्वासकाहूकेऊपरआवतनाहीं
ओरविस्वासबिनासुखनाहींहोतहैं ॥ अबओर
हूंकहनहैंसो अतःस्निग्धोपिकार्येलु
स्मीतःसदा प्रायपरःप्रेमजीनाम्ना
वनरहैया
अतिहीहि प्रें
दसमोंलोग
हीहोनहैंहमारी
रिखिकेंसबओरतेमनमें

है। ऐसो भगवद्धर्म मेरे संग में एक प्रेम जीही है सो केव
ल विरक्त कों नाहीं रहत हैं। जितनी वनन है तितनी ह
मारी एक लवरी लौकिक तें न्यारी रहत हैं। है गृहस्थ प
तु विरक्त वत जैसें विरक्त के धर्म साधन में रहें हैं। तरह
रहत हैं। ऐसी इन की दिसा है इन के संग तें कछुक म
नोदिका नें रहन नहीं। तदवनर खत हैं। सो अब एमेरे पास
ने चलिवे को विचार कीयो है। सो मो कों महा दुःख भयो है
सो या ऐक हरन हैं। इस्यैं श्लोक॥ यस्मिन् युक्ते नैसमा
श्रेष्ठा वस्तु समाहितः ॥ तो तो पराध सर्वो पि मत्वा औ
ध वश्यात मः॥ ३॥ श्या कौ अर्थ। या प्रकार प्रेम जी हमेरे प
न तें चले अवम के कौन प्रकार सौं निर्वाह करोगे तो
तें या प्रकार समान व कछुक अपनो दुःख तुमकों लि
खि है सो वो हो न धारखें जानियो। कहा तो इ लिख
यें सो वो हो नकास्कें जानियो। कहा तो इ लिखें ए
वातनो लिखवे मैं नाही आवें। ता में लिख्यो। सो मेरा
अपराध क्षमा करियो। और अधिकारी विरक्त जु
मारे पास आवत हैं। सो या उ को अपराध क्षमा क
रियो काहे तें जीव है सो दोष निधान हैं। ता तें को
ध मति करियो। काहे तें तुम परम चतुर हो इसी है
ता तें क्रिया क्रोध के वस ता इसी होय तो ये उपवडे
दोष है। ता तें तुम क्रोध वस मति हूजियो। यह श्लोक द
ह सो उ वाडालक को स्वरूप है। भगवद्धर्म में बाधक
है। क्रोध तें भगवद्भाव सदूरि होय जात है। सूक्ष्म और
स्थूल तें हैं। ३४॥ श्लोक॥ इत्थं [illegible]
तिस्तु सर्वथा भवद्भिः सर्व[illegible]
इत्य ॥ ३१॥ या लो अर्थ।

[illegible] 'पूर्व'

रा.प. तें हम परहे सबै आनें कभांतिको दुखपावत हैं मेरो चि
१८ त्तकिकाहेनारी हैं तातें कछु मेरी वानी अपने मन में
मति ल्याईयो और तुम सब प्रभु के सानिध्य हो सब मो
प्रभु संबंधी तुमको कार्य कर्नें श्रम हें तातें तुम चित
को ठिकानें राखियो प्रसन्न मन राखियो और य
ह विरक्त अधिकारी के ऊपर जैसे पूर्व कृपा राखत
हते ताई भांतिया ऊपर स्नेह राखियो मन में कछु दु
ख पाय याकू मति विचारियो एक रस अपने मन की
कृत्य सर्वथा आछे राखियो और दाय जने आप
ने घर में तथा सेवक सहस्त्र वासव सो मिलिके स
बके न्यारे न्यारे समाचार सब ठांगे हे पत्र लिखिके
पठाये। अथ और एक हस्त है २० श्लोक। अति प्र
सन्नया चित्त पथ्या तथ्या हि भवेत् सुखेरापि समीची
नो मुख्य दोष विवर्जितं ॥१॥ या श्लो … अ … और यह वि
रक्त अधिकारी को समाधान भली भांति सो करियो अ
त्यंत प्रसन्नता सो याकी प्रसंसा करि याके चित्त को
समाधान करियो अत्यंत प्रसन्नता सो याकी प्रसंसा
करि याके चित्त को प्रसन्न करियो काहेतें इहां तें दुख
पाइके गयो है सो तुम कछु उहां कहोगे तो मन में म
हा दुख पावेगो सो मन के के ग्राम में कछु भाव अम ना
ही वनि आवत हैं तातें एसी भांति राखियो जो चि
त्त में प्रसन्न होय तब याको चित्त स्थिर होइगो और
तुम कछु कहोगे तो यह दुख पावेगो और तुमको सुख
न होइगो और कछु देतें तुमारे हाथ कछु मि
लेगो नाहीं और यह सुख नाहीं रख्यो है सो सब दोषन
सों मुख्य है तातें इह प्रकास में घन श्री आचार्य जी पे यही
मांगो जो सुख नाही रखजाय तातें सुख नाही रखन हो
हु यही … सर्वथा करियो सो कि कवानी वो लन

कोंनिरोधहीमनसोंवरज्यौं उचितहें॥ श्रवण और स्व
हृतहें। स्लोक। वैयर्थेन प्रहेयस्य विशेयपरितोषणात
भावत्सेवा त्वहेयस्व नितः पुनर्हस्थित ॥२॥ याको अ
र्थ। जो यह विरक्त अधिकारी हैं सो अपने घरसेवे यहै स
गरी अपधरे सबकी जानत हैं तातें अपने घरके कामकौं
हें तातें विषय भलीभांतिसों याको परितोष करयो श्री
र्यालो रोषमनमें मति विचारी। यों काहेतें सो अपु
रागमें कहे हैं। या जीवको जैसी गति होय जैसे संग
तिसैंही कायमैं जीव तत्पर होइजाइ तैसें संगकरि
कस्व तोगो स्कपरको घटे पाछे गिरे तैसें जीव भग
वत्धर्मकेमें सत्संग करिकें तत्पर होइ संगविना दुसं
ग होय ते फिरि गिरें तातें जीवको कहा होय सें प्रभुकी इ
च्छा न्हाजेसो ईहीन हैं तासें तसोई संग ते सोई साधन
वनिष्ठा चाहिये तातें हम अपने हृदयमें वस्तु होय मति
वरियो सर्वप्राणीमात्रको भलोइ मनमें धारनकरियो
याप्रकार सिक्षा जीव अपने मनमें धरें ताको कल्यान
श्रीमहाप्रभुजी श्रीहरिरायजीकृत सिक्षापत्र चालीसमो
ताकी टी। का श्रीगोपेश्वरजीकृत संपूर्ण॥ अथ याप्रका
ऊपरके सिक्षापत्रमें अपनो दुख तुमको पत्रद्वारा लिखि
नकहो नाथस्तिुमारे हैं मनमें दुख आयो होइगो काहेतें
तुमहमेरसंबंधी परमहितकारी हो। तातें आवश्यह पत्रमें
सगरो पुष्टिमारगीय सिद्धांतवार्ता नकरत हो। सो वाचि
कें अपने मनमें धारनकरियो और जे पुष्टिमारगीय भ
गवदीय हैं तिनके धारनकरिवेयोग्य है सो॥ तो वि
सकलं कार्यं प्रभुसेवोपयोजनात् पां सर्वत्र पूर्वोरिस्म
चिंपोनन्लौकिकं च त्याज्यो अर्थ॥ अब श्री हरिरायजी
पुष्टिमारगीय धर्म सर्वोपयोग करत हैं जो भगवदीय हैं स
तिनतो लौकिक कार्य है सो प्रभुकी सेवा में विनियो

नरै यह सर्वोपरि मुख्य धर्म है। घर उ भगवत्सेवा
हस वे थी कह्यै व इंद्रिय यह सब भगव
तथा वा उमें लेह सौं
लभाति पुत्र होइ यह भाव सौं करै जैसे निरोध लक्ष
श्री आचार्यजी कहे हैं भगवद्धर्म सेवा में प्रतिबं
ता को त्याग करै अनुकूल होय ताको संग्रह करै जहां
जहां मन की वृत्ति रहै जो प्रभु नें जो रहे वे सो प्रभु की लो
लाही क्रीडा भाड जानें अपने प्रभु को ही चिंतन करै
सबे छोडि कै जैसे पर्वत ऊपर को स्थिर रहे चित्त लौकि
क मन में न विचारै तब प्रभु प्रसन्न होय है तहां कोई म
हस्व रो जो लौकिक तो अन्यत्र प्रसन्न हैं और लौकिक की
राविनी वनका नाशी है तातें लौकिक के समय तो विसर्क
रै भाव सेवा के विषै चित्त बांधै तो निर्वाह होय सो तो
विकसत थुई है सो कहा प्रयोजन है प्रभु ने कृपाल
है थोड़े सो वचन बहुत मानें गी या प्रकार कोई से हस्त
रै लो चित्त में लावैं तहां कहत हैं सो
रखा नो लौकिकाः सात्विकापि जनाः न रोचन्ते ह
सिद्धान्त परि लौकिकों ... श्रान्तस्य न
कहत है अपने स्वकीय भक्त हैं ... अपन श्री हरिरायजी
को नाही सुहाय तब प्रभु उपेक्षा करैं सो लौकिक वारे तो प्रभु
नाइ तब सेवा में मन को उद्वेग होइ उदासी न होइ
रै तब प्रभु प्रतिबंधक है जो होइ अनेक कार्य में मन
तो सेवा फल श्री आचार्यजी भगवत्सेवा न बने प्र
तिबंधो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकं महाप्रभु कहे हैं उद्वे
गो भोगो अपेक्षा तथापि बाधक तो परि
गरै खान पान विषय इंद्रिय यह सब के मन के सेवा थी
यह न चाहै तब भगवत्सेवा न को सुख देह को सु
रसो सेवा थी भाये मन न रावै भली भांति सो ब ने
म मन को राखें तो सेवा में उद्वेग होइ तथा देह संबंधी
होइ पाके ...

३ प्रतिबंध करैं सो सेवा अन्य नें। और प्रभु कों छो
नौ विकरो व्यासक्ति होय। कार्य करो। सो अकार्य
सो नाना प्रकार के दुःख कों दे कोपावे। ना
कों सर्वथा दीन करें। प्रभु की से
करैं। ३। यह निश्चय सिद्धांत रहस्य
सुभाव: प्रभोस्याप्यानचा
श्रे तिमा
३ याको प्र वे स्वभाव कों स्था
ए ति काहू कों दिखावे
माहिंन स्नेह
गार करैं न पपाद श्री आठी आई वानी
यह सब सब चतुराई जाननो। नाहिंन कोई न होइ
धारन करैं नो श्री गुसांई जी श्री आगरे पधारे
तब खवे स्वरूप पधार्यो। अपने घर सेवा चतुराई सों करि
तहं श्री गुसांई जी चित्रावन वंनक हैं ताते चतुराई है
सो सब अप्रयोजक मिथ्या हैं तामें वस्तु फल सिद्धि न
हीं हैं तामें वस्तु फल सिद्धि नाहीं हैं केवल प्रतिष्ठा मात्र
है सो लोक प्रतिष्ठा भाव द्रव्य की नास करनो हैं प्रभु स
वे के रूप की जानत हैं अंतर्यामी हैं तहां मन को व
पट वस्तु चलत नाहीं हैं सो विवेक धैर्याश्रय ग्रंथ में
श्री आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं सर्वत्र सर्वतस्माद्धि
सर्वसामर्थ्यमेव च। इति वचनात् प्रभु सर्व हैं सर्वसाम
र्थ्ययुक्त हैं या भाव सों करैं सो जानिके वे सोई फल देइ
ताते जो भाव प्रतिष्ठा पर के कपट सयुक्त न करनो
जितनी रीति वधी हैं तितनी पुष्टिमार्ग की मर्यादा
रीति सों करनो। लौकिक वैदिक कछु काम नाम मनमें
न राखनो। अनचोरह करत है। श्लोक। सद्भावेन
तरीयं तुलो विकेसाधयेत्स्वयं। तत्साधितमविज्ञे
नस्वसिद्धतिनामन्यथा। ४। याको अर्थ। नहां कोई व

है जो शुद्ध भाव प्रभु मैं राखि सर्व प्रभु मैं निवेदन करै
पाछै लौकिक दुःख होइ तो सेवा को न प्रकार करै
यह सेवैं रहे होइ तहां करनो है जो पर्व सब शुद्ध भा
व ते प्रभु में मन लगाइ तत्पर होइ जो को सेवा कर
न है ताको शुद्ध भाव प्रभु में राखिवे तो लौकिक वैदिक स
वल कार्य सिद्ध करत है सो संतदास की वार्ता में प्रसि
द्ध ही वर्णन है जो चोवीस रूपा की पूजी में प्रभु सर्व कार्य
सिद्ध करते पद्मनाभदास के ठाकुर मैं सकल पदार्थ सिद्ध
करते ताते शुद्ध भाव सो करै तहां कोई कहै जो लौकिक
वैदिक वार लोक विघ्न करै तहां कैसे करै यह संदेह
होय तहां कहत है जो श्री आचार्य जी भक्ति वर्द्धनी में क
हे हैं सेवायां वा कथायां वा यस्यासक्तिर्दृढा भवेत् याव
जीवं तस्य नाशो न क्वापीति मतिर्मम १ बाधसंभावना
यां तु नैकान्ते वास इष्यते हरिस्तु सर्वतो रक्षां करिष्यति
न संशयः २ प्रभु के कार्य मैं सेवा हि मैं दृढ भाव है यह स
वे और तें अपनो मन राखि तत्पर रहिके तब काहू की भली
बुरी न देखे तातें भक्त की निश्चय प्रभु सर्व ओर तें रक्षा क
रे जैसे अंबरीष को दुर्वासा के श्राप तें रक्षा करी तातें
निर्विघ्न सो मन लगाइ प्रभु के धर्म में तत्पर होइ अन्य
था और कार्य नाही करनो यह सब प्रभु ही यह
लोक में पायो है वही ता न राखे सब और तें कहत हैं
४ लौकिक आवश्यके हि कर्तव्ये सति लौकिकप्रय:
अनासक्तो लौकिकं तु वदन्ति न तु बाधते ५ या को अ
र्थ श्री हरिराइ जी कहत हैं जो मुख्य तो यही है जो लौ
किक वैदिक न करे तो छूटे आवश्यक होय सो लौकि
क करै तामैं आसक्ति न होय आसक्ति मन की होय
यही बाधक है आसक्ति विना अन्य लौकिक कृति
होवै सो बाधक सर्वथा ही न करै सो श्री आचार्य जी
कहे हैं गृहे सर्वात्मना त्याज्यं तच्चेत्त्यक्तुं न शक्यते कृष्ण

नुगोविंदमः संसारमोचकः १
हैं॥ अथ त्यागतो भजेत्सर्वं पूजया श्रवणादिभिः त्यागतो वि
श्रवणादिषु यत्नेस्सदा २॥ इति वचनात्॥ जो तौ गृह
नभक्त होय तो सर्वत्याग पूर्वक प्रभुको भजन जो त्याग न है
इसके तो सगरो घरश्री हरिकी सेवामें विनियोग करै॥
भावत्मरसी वरैगामें हरिमें निरंतर चित रहै॥ या प्रकार र
हे तो बाधक न होइ नाही तो बाधक करै त्याग कहत हैं
लोक॥ अन्यथा बद्धमाप्येत तद्बाधनेनदुपेक्षया॥ लक्ष्मे
कै विषयेसुखं चैतोनिभीयतां ई॥ याको अर्थ॥ लौकि
क वैदिकमें जो चित बहुत नहीं बंदे सो प्रभुनो ग्रंथः करन
मैं बिराजत है॥ जब लौकिकमें उद्वेग आसक्ति देखे तब
उपेक्षा करि उदासीन होय जाय॥ सो संन्यास निर्णयमें
श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे हैं॥ विषयाक्रांत देहानां
नावेसस्सर्वथा हरेः॥ तब लौकिक विषयमें आसक्ति मन
की इंद्रियकी देहेसिप्रभु देखे॥ तब श्रपत्नो भगवद्भाव
रूपरसको आवेस स्वामने ये चिले ३॥ ताको सर्वथा प्रभु
की लीलाके स्वरूपको भगवद्धर्मको आवेसक बहुत न
हे भावद्धमें करन उद्वेग मन नमें रहै या छु प्रतिबंध होइ
तब बहुत छूटि जाय केवल लौकिकी आसक्ति होय तब प्रभु
वाको उपेक्षा करि त्याग करि देइ ताते अन्यथा लौकिक
विषयते आसक्ति मन न करै प्रभुकी सेवा संबंधी कार्य
तो निज प्रभु संबंधी विषय धारणा करै जो फल ले उद्ध
को यह बद्दियो ता अर्थ यत्न करै फलनी सामग्री
भु आरोगे तो आछो फलानो वागा वस्त्र आभूष
वस्त्र प्रभुमें विनियोग हो यतो भली॥ या भांति हरि
सूपकरगा होय जा प्रकार सोई बात मनमें धरे
कि यह एसी सुने जाबे सुनेते लौकिकमें वैराग्य
होइ औरप्रभु के धर्ममें अनुराग दृढ होइ ताते

है जो भागवतीयन को संग होइ तो संसार मा वन्ध
नाही है जाको लोकिक संग होइ सो जलवत
... तिनके संग ते भगवत्स्वरूप
... तातें भगवदीयनको संग नित्य
... और यह पुष्टि मार्ग में आरत है सो इ
है तातें प्रभुके दरसनकी आर्ति होय मन नाहीं लगे सरा
सो निरोध लक्षण में कहे है लोक ... मानानुज
... यदा भवेत्तदा सर्वे ... नंद हृदि स्थ
गतं वशी सर्वानंदमयस्यापि कृपानंद सुदुर्लभः
... जैसे काष्ठ के भीतर अग्नि है मथन ते वा
... प्रभु ... करे तो वाहर प्रगट
... प्रभु सर्व ठौर है और कृपानंद सुदुर्लभः
... करन है तातें दरसनकी आ
... है ... जो दि
... करुणानिधि ... ते पि
धरि ... नेमन नि
सि लौकिक आर्ति ... दुख ... तब
... तब प्रभु तौ करुनानिधि
... अनुभव सदा ... न
... सो भगवान तब ... प्रति वहे है ... त्वं तु
न्यजस्वेदस्व जन वंधुषु मेयावेशमनः
... हे उद्धव तो सर्व त्याग करि के
ने बंधु ... आदि ... सव
... विचार तुमको ... भय नाही है ताते
... जो तदीय को अपनी चिंता न
संबंधी यह लोक परलोक की कछु चिंता नाहीं व
... काहे ते तुम जैसे पिता पुत्र को पालन करे चिं ता
पुत्र को कछु भय नाहीं या प्रकार प्रभु अपने भक्तव

[illegible] सिताहैयन
[illegible] तो मेरी
[illegible] यत्नवहोहै
[illegible] पीवास्तैभावक्ष
[illegible] सोयहजी ति
[illegible] वालक तिनहीकेत्र
[illegible] सोसमातन्त्र
[illegible] पुष्टिमार्गीयसेव
[illegible] सेवाप्रभुतातोभक्त
[illegible] श्रीहरि
जीकहतहैं जो पुष्टिमार्गीयजीवहतहैं तिनको
[illegible] नाप्रभुको आश्रय
[illegible] प्रभुकीसेवाहै तासेप
[illegible] सेवाविनाफलको न्य
[illegible] तातेयहसबमैजानतो जोके मे
[illegible] तिनकोसदाहीकल्यानहोय
[illegible] पुष्टिमार्गीयकोफलइहहै
हैं [illegible] सिद्धभये। ऐसेश्रीगो
[illegible] हरिजीवनदासतिहारेह
दय मैं श्रीहरिरायजी आइ सेरो दुखदूरिकीयो
[illegible] पत्रकोटीकासेरीठानतिजानियो
[illegible] श्रीहरिरायजीकीरीतैं तातें
[illegible] श्रीआचार्यजी श्रीगुसा
ईजी [illegible] विराजतहैं। तातैंयहभावप्रगटभयो
हैं सो तुम [illegible] रहो। ऐसेतगोप्यपहर
रियो काहू [illegible] यो ग्यनाहीहै। २२ [illegible]
[illegible]